रूहेलखंड-कुमायुं जैन डायरेक्टरी

(रुहेलखंड-कुमायुं-गढ़वाल के जैनों के इतिहास एवं वर्तमान की अपूर्व परिचायिका)

संयोजक एवं संग्रहकर्त्ता :

श्री उग्रसेन जैन

सम्पादक :

डा० ज्योति प्रसाद जैन

एम.ए., एल-एल.बी., पी-एच.डी., 'इतिहासरत्न'

प्रकाशक :

रूहेलखंड-कुमायुं जैन परिषद्

कार्यालय : काशीपुर (नैनीताल)

प्राप्ति स्थान :

१ श्री उग्रसेन जैन
ई-८, रेलवे स्टेशन,
हापुड़ (मेरठ)

२ विष्णुकान्त जैन वैद्य
बाजार अमरोहा,
मुरादाबाद

मुद्रक :
३ श्री जिनेन्द्र चंद जैन
हिन्द मैन्यू० एण्ड प्रिंटिङ्ग वर्क्स,
कोठी ला० मुन्नेलाल कागजी,
यहियागंज, लखनऊ–३
फोन २६३३१

दो शब्द

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् डा० ज्योति प्रसाद जी जैन ने बड़ी खोज के बाद यह सिद्ध किया है कि उत्तर प्रदेश में रुहेलखण्ड-कुमायूं का भाग प्राचीन काल से जैन संस्कृति का केन्द्र रहा है। जिला बिजनौर के ग्राम बढ़ापुर में पारसनाथ का ऐतिहासिक किला, वहाँ से निकली प्राचीन काल की जैन मूर्तियां, मन्दिरों के खंडरात और उसके कुछ दूर मोरध्वज का किला तथा जिला बरेली के ग्राम रामनगर—अहिक्षेत्र में भगवान पार्श्वनाथ का उपसर्ग और वहाँ का प्राचीन किला आदि-आदि बातों से पता लगता है कि भगवान पार्श्वनाथ ने जिला बरेली, बिजनौर, नैनीताल, गढ़वाल आदि में विहार करके जैन धर्म का प्रचार किया था।

भगवान आदिनाथ, जिन्होंने कैलाश पर्वत से निर्वाण प्राप्त किया, उनका विहार भी पहले इसी क्षेत्र से हुआ होगा क्योंकि कैलाश पर्वत पर जाने का यही मार्ग है। इस तरह रुहेलखण्ड-कुमायूं प्राचीन काल से किसी न किसी रूप में जैन संस्कृति का केन्द्र रहा है।

मगर बहुत समय से इस क्षेत्र में जैन साधुओं के न आने और धर्म का प्रचार न होने से अनेक जैन परिवार अजैन हो गये, और जैनों की संख्या कम होने से जैन मन्दिरों की व्यवस्था भी ठीक न रही।

सन् १९६० में काशीपुर वेदी प्रतिष्ठा के अवसर पर इस क्षेत्र के जैन भाइयों का संगठन बनाने के लिए बाबू रतनलालजी जैन, बिजनौर, की अध्यक्षता में रुहेलखण्ड-कुमायूं जैन परिषद् की स्थापना की गई और १९६४-६५ में रुहेलखण्ड-कुमायूं की जैन जनगणना कराई गई। इस बीच में जनगणना की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है, अतः डायरेक्टरी में दिये गये जनगणना के आंकड़ों को १९६४-६५ की दृष्टि से ही समझना चाहिए। जनगणना का दोबारा कराना बड़ा कठिन काम था।

डायरेक्टरी में प्रत्येक स्थान के जैन परिवारों, मन्दिरों, शिक्षण संस्थाओं आदि के जो विवरण दिये गये हैं वे टाइप करा कर हर स्थान के प्रमुख-प्रमुख भाइयों के पास देखने और ठीक करने के लिए भेजे गये, उसके बाद डायरेक्टरी में दिये गये हैं। यदि कोई त्रुटि और कमी रह गई हो तो पाठकगण उस पर ध्यान न देंगे।

इस क्षेत्र के विगत महानुभावों के जो चित्र और उन की समाज सेवाओं के जितने भी विवरण मिल सके हैं उनको डायरेक्टरी में देने का पूरा प्रयत्न किया गया है। अगर किसी सज्जन का परिचय या चित्र देने से रह गया है तो उसके लिए मजबूरी है।

डायरेक्टरी को तैयार करने का मुख्य उद्देश्य जैन समाज की विगत और वर्तमान स्थिति को समाज के सामने रखकर भविष्य के लिए समाज की उन्नति पर विचार करना और उसके उपाय करना है।

डायरेक्टरी की तैयारी में बाबू रतनलालजी बिजनौर, पं० विष्णुकान्तजी वैद्य मुरादाबाद, श्री रमेशचन्दजी जैन एम० ए०, श्रीनगर, श्री कल्याण कुमार जी 'शशि', रामपुर, आदि-आदि विद्वानों और कार्यकर्ताओं ने जो सहयोग दिया है तथा डायरेक्टरी के प्रकाशन के लिए जिन-जिन

महानुभावों ने आर्थिक सहायता प्रदान की है उन सबको हार्दिक धन्यवाद है। डा० ज्योति प्रसाद जी को किन शब्दों में धन्यवाद दिया जाये जिन्होंने डायरेक्टरी की भूमिका ऐतिहासिक ढंग से पूरी खोज के साथ लिखकर डायरेक्टरी का महत्व बढ़ा दिया है और बड़े श्रम से डायरेक्टरी का समुचित ढंग से संशोधन, सम्पादन आदि करके उसे अत्यन्त उपयोगी एवं पठनीय बना दिया है। प्रूफ संशोधन व मुद्रण की प्रगति में भी उन्होंने अमूल्य योग दिया। लखनऊ निवासी श्री जिनेन्द्र चन्द्र जी ने बड़ी लगन के साथ डायरेक्टरी का मुद्रण किया है। अपने वर्तमान रूप में यह डायरेक्टरी ऐसी बन गई है कि केवल रुहेलखण्ड-कुमायूं-गढ़वाल के जैनियों के लिए ही नहीं बल्कि जैनी मात्र के लिए पढ़ने और संग्रह करने योग्य है

रुहेलखण्ड-कुमायूँ की कुछ समस्यायें

१. बच्चों की प्रारम्भिक और धार्मिक शिक्षा के लिए पाठशालायें और रात्रिशाला स्थापित करना
२. वर्तमान जैन शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा चालू करके जैन संस्कृति का प्रचार करना।
३. निर्धन और होनहार बच्चों की सहायता करना
४. जहाँ जैन मन्दिर नहीं हैं वहाँ जैन चैत्यालय स्थापित करना
५. रुहेलखण्ड-कुमायूं जैन परिषद् के संगठन को दृढ़ करके धर्म प्रचार का सुचारु रूप से प्रबन्ध करना
६. आवश्यक और एक महान कार्य

बढ़ापुर के पार्श्वनाथ किले से जैन मूर्तियों, शिलालेखों तथा अन्य मूल्यवान सामग्री के निकलने की पूरी सम्भावना है। भारतवर्ष में ही नहीं भारतवर्ष से बाहर जैसे काबुल आदि स्थानों में जैन मूर्तियों का होना बतलाया जाता है। यदि जैन समाज और धनी वर्ग वास्तव में अपने धन का सदुपयोग और मान प्रतिष्ठा चाहता है तो समय की आवश्यकता के अनुसार उन्हें प्राचीन जैन खंडरात की खुदाई कराकर पृथ्वी के नीचे दबी जैन मूर्तियां और कला सम्पत्ति को निकलवाना चाहिए। इससे जैन धर्म की प्राचीनता का संसार को पता चलेगा। अब पूजा प्रतिष्ठाओं और नये मन्दिरों पर खर्च करने का समय नहीं रहा। पूजा प्रतिष्ठायें केवल चार दिन का मनोरंजन बन गई हैं, जिन पर जैन समाज का लाखों रुपया हर साल बरबाद ही नहीं हो रहा बल्कि दूसरे लोगों पर उनका बुरा प्रभाव पड़ रहा है। क्या प्रतिष्ठाचार्य महोदय और दानी सज्जन इस पर ठंडे दिल से विचार करेंगे ?

कानपुर
२७-८-१९६९

उग्रसेन जैन

श्री उग्रसेन जैन

रुहेलखण्ड-कुमायूं-गढ़वाल प्रदेश के निवासी जैनों की, इस प्रदेश के जैन तीर्थों, प्राचीन सांस्कृतिक स्थलों एवं स्मारकों की और वर्तमान जैन केन्द्रों एवं संस्थाओं आदि की परिचायिका यह विवरण-पुस्तिका, अथवा डायरेक्टरी, रुहेलखण्ड-कुमायूं जैन परिषद् का एक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण उपलब्धि है। अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद् के एक स्तम्भ और समाज के वयोवृद्ध कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री उग्रसेन जी ने अपने काशीपुर निवास के समय उक्त प्रादेशिक परिषद् की स्थापना करायी और इस प्रदेश की जैन जनता में प्रभूत जागृति उत्पन्न की। उन्हीं की प्रेरणा, लगन, परिश्रम एवं अथक प्रयत्नो के फलस्वरूप इस डायरेक्टरी का निर्माण एवं प्रकाशन हुआ। डायरेक्टरी के निर्माण में—आंकड़ों एवं परिचयादि के संकलन आदि में—इस प्रदेश के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में निवास करने वाले विभिन्न समाज सेवी सज्जनों ने प्रशंसनीय योग दिया है। आदरणीय उग्रसेन जी का इस कार्य के प्रारम्भ से ही यह आग्रह रहा कि मैं इस डायरेक्टरी के लिए संग्रहीत सूचनाओं को व्यवस्थित रूप देकर उसका सम्पादन करूँ, उसके लिए एक अच्छी परिचायक भूमिका भी लिखूं और उसका मुद्रण प्रकाशन भी अपनी देख-रेख में कर ऊँ। स्वास्थ्य उतना अच्छा नहीं रहता और अन्य व्यस्तताओं के कारण समयाभाव भी रहता है, किन्तु वह जिस कार्य के पीछे पड़ जाते हैं, पूरा करके ही दम लेते हैं। उनसे पिंड छुड़ाना कठिन होता है। अतएव उनकी आज्ञा का पालन किया गया और इस कार्य को यथाशक्य सम्पन्न किया गया। हिन्द मैनुफैक्चरिंग एण्ड प्रिंटिंग वर्क्स, लखनऊ, के मालिक ला० जिनेन्द्र चन्द्र जी ने पुस्तक के मुद्रण, साज-सज्जा आदि में हार्दिक योग दिया है।

अब यह डायरेक्टरी जैसी कुछ है, पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इसमें अनेक त्रुटियाँ भी रही हो सकती हैं जिनके लिए, आशा है, सहृदय पाठक क्षमा करेंगे और इस डायरेक्टरी से जितनी प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है और इसका जितना लाभ उठाया जा सकता है वह उठाकर इसके निर्माण एवं प्रकाशन को सार्थक करने की कृपा करेंगे।

अन्त में सभी महानुभावों का, जिन्होंने इस डायरेक्टरी के निर्माण, संकलन, सम्पादन, मुद्रण, प्रकाशन आदि में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से कुछ भी योग दिया है हृदय से आभार मानता हूँ।

—ज्योति प्रसाद जैन

ज्योति निकुंज
चारबाग, लखनऊ-४
दि० ५-५-१९७० ई०

डा० ज्योति प्रसाद जैन, लखनऊ

विषयानुक्रम

प्रथम खंड

लेख विभाग

पार्श्व-जिन स्तवन

नमोऽस्तु पार्श्वनाथाय, विघ्नविच्छेदकारिणे ।

नागेन्द्र कृतच्छत्राय, सर्वादेयाय ॐ नमः ॥

तमाल-नीलैः सधनुस्तडिद्गुणैः, प्रकीर्ण-भीमाऽशनि-वायु-वृष्टिभिः ।

बलाहकैर्वैरि-वशैरुपद्रुतो, महामना यो न चचाल योगतः ॥

बृहत्फणा-मण्डल-मण्डपेन, यं स्फुरत्तडित्पिङ्ग-रुचोपसर्गिणम् ।

जुगूह नागो धरणो धराधरं, विराग सन्ध्या-तडिदम्बुदो यथा ॥

स सत्य-विद्या-तपसां प्रणायकः, समग्रधीरुग्रकुलाऽम्बरांशुमान् ।

मया सदा पार्श्व जिनः प्रणम्यते, विलीन-मिथ्या पथ-दृष्टि-विभ्रमः ॥

रूहेलखंड-कुमायुं और जैन धर्म

डा० ज्योति प्रसाद जैन,
एम०ए०, एल-एल०बी०, पी-एच०डी०, लखनऊ

'कलौ संघे शक्ति :', यह उक्ति आज के युग में प्रायः सर्वत्र चरितार्थ हुई दृष्टिगोचर होती है। जो समाज या समुदाय संगठित नहीं होता वह निर्बल हो जाता है। वह अपने स्वत्वों और अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकता। लोक की दृष्टि में उसका मान नहीं रहता। फलस्वरूप, उक्त समाज का और उसकी निजी संस्कृति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है।

सामाजिक सगठन का मूलाधार भावात्मक एकता होती है जो न केवल उक्त सगठन को संभव बनाती है वरन् उसका पोषण करती रहती है तथा उसे सुदृढ़ बनाये रखती है। और, भावात्मक एकता का सम्पादन करने के लिये यह आवश्यक है कि जिन व्यक्तियों या समुदायों को संगठित करना है उनमें से प्रत्येक एक दूसरे से भली प्रकार परिचित हो, उसकी उपलब्धियों और गुणों से, दोषों और कमियों से भी परिचित हो और वे परस्पर आत्मौपम्य स्थापित करने के लिये लालायित हों।

इसी उद्देश्य को लेकर ग्राम, नगर या स्थान विशेष, अथवा जिला, प्रदेश या देश विशेष के निवासी समानधर्मा या सजातीय व्यक्तियों की परिचायिकाएँ, विवरण पुस्तिकाएँ, डायरेक्टरी, गजेटियर आदि बनाये जाते हैं। अबसे लगभग साठ वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन समाज के तत्कालीन नेता बम्बई निवासी सेठ माणिकचन्द झवेरी ने एक दिगम्बर जैन डायरेक्टरी का संकलन एवं प्रकाशन कराया था। यह डायरेक्टरी समाज के संगठन एवं जागृति में पर्याप्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। तदनन्तर श्वेताम्बर नेताओं ने भी श्वेताम्बर समाज के सम्बन्ध में इस प्रकार के कतिपय उपक्रम किये। पिछले दो-तीन दशकों में दिगम्बर समाज में अवध डायरेक्टरी, पद्मावतपुरवाल

डायरेक्टरी आदि कई इस कोटि के प्रकाशन हुये हैं। दिगम्बर जैन परिषद् के वयोवृद्ध कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री उग्रसेन जी ने काशीपुर में रहते हुये कुमायुं-रुहेलखण्ड जैन परिषद् की स्थापना कराई और उक्त क्षेत्र के जैन बन्धुओं में जागृति उत्पन्न करने तथा संगठन स्थापित करने की दिशा में सद्प्रयास किये। इसी उद्देश्य को लेकर उन्होंने प्रस्तुत डायरेक्टरी के निर्माण एवं प्रकाशन की योजना बनाई। प्रसन्नता की बात है कि उनकी यह योजना कार्यान्वित होकर समाज के सन्मुख उपस्थित है।

क्षेत्र परिचय व जनसंख्या

रुहेलखण्ड-कुमायुं नाम से सूचित जिस भूखंड की यह जैन परिचायिका (डायरेक्टरी) प्रकाशित की जा रही है वह वर्तमान सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र-जनतन्त्र भारतीय संघ के उत्तर प्रदेश राज्य का पश्चिमोत्तर भाग है और वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था के अनुसार गढ़वाल, कुमायुं और बरेली (रुहेलखंड) नाम की तीन कमिश्नरियों में विभाजित है। इस सम्पूर्ण भूभाग के उत्तर में तिब्बत देश है, उत्तर-पूर्व में नैपाल राज्य है, पूर्व में अवध प्रान्त की लखनऊ कमिश्नरी है, दक्षिण में गंगा नदी और तदनन्तर अन्तर्वेद (गंगा-यमुना दोआब) के जिले हैं, पश्चिम में गंगा नदी तथा उसके पार मेरठ कमिश्नरी है और उत्तर-पश्चिम में हिमाचल प्रदेश है। सन् १९६१ की राजकीय जनगणना के अनुसार इस पूरे भूभाग की सम्पूर्ण जनसंख्या १,११,७९,७२४ है जिसमें जैन केवल ४,४०२ अर्थात्, .०४ प्रतिशत अथवा १०,००० पीछे ४ के अनुपात से हैं। इनमें २,५६७ पुरुष और १,८३५ स्त्रियाँ हैं, तथा १,५३७ व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं और २,८६५ शहरी क्षेत्रों में।

इस भूभाग का धुर उत्तरी भाग उत्तराखंड कहलाता है और पूर्णतया मध्य हिमालय के अन्तर्गिरि की उत्तुंग-हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियों में स्थित है। २५ जनवरी सन् १९६९ तक यह एक पृथक कमिश्नरी थी और इसमें तीन उत्तरी जिले थे। गढ़वाल-कुमायुं कमिश्नरियों के शेष जिले मध्य-हिमालय की दक्षिणी उपगिरि की नीची बाह्य पर्वत श्रेणियों में स्थित हैं, केवल नैनीताल जिले के पर्वतांचल (भावर) और तराई क्षेत्र उनके बाहर नीचे की ओर स्थित है। रुहेलखंड या बरेली कमिश्नरी के जिले गंगा नदी और हिमालयी पर्वतांचल के मध्यवर्ती तराई एवं मैदानी भाग में बसे हैं।

उत्तराखंड कमिश्नरी में उत्तरकाशी, चमोली और पिथौरागढ़ नाम के तीन जिले थे जो वर्तमान भारत देश तथा उसके उत्तर प्रदेश राज्य की धुर उत्तरी सीमा पर स्थित हैं। इन जिलों का भौगोलिक एवं राजनीतिक महत्व तो है ही, सांस्कृतिक महत्व भी प्रभूत है। पर्वतराज कैलास

(अष्टापद) तथा परमपुनीत मानसरोवर के मार्ग पर स्थित, तीर्थंकरों, बुद्धों, ऋषियों और मुनियों की पावन तपस्थली तथा यक्ष, ऋक्ष, नाग, गंधर्व, किन्नर, अप्सरा आदि की आद्य आवास भूमि यह प्रदेश सम्पूर्ण भारत के लोक मानस में सहस्त्राब्दियों से परमपूज्य दर्शनीय तीर्थ भूमि रहता आया है। उत्तरकाशी जिले में भारतवर्ष की प्रसिद्ध महानदियों गंगा और यमुना के उद्गम स्थान, गंगोत्री और यमुनोत्री नाम से प्रसिद्ध हैं। चमोली जिले में यक्षराज कुबेर की अलकापुरी का स्थान, जैन हरिवंश पुराण आदि में उल्लेखित गंधमादन पर्वत, अलकनंदा और भागीरथी के पंचप्रयाग, बद्रीनाथ का सुप्रसिद्ध वैष्णव धाम और केदारनाथ का सर्वप्रसिद्ध शैवधाम हैं। पिथौरागढ़ जिले में काली (शारदा या घाघरा), सरयू, रामगंगा आदि नदियों के स्रोत, और नन्दादेवी, त्रिशूली आदि प्रसिद्ध पर्वत शिखर तथा कैलास और मानसरोवर के लिये निकटतम् पार्वतीय मार्ग हैं जिनसे होकर भारतीय तीर्थ यात्री चिरकाल से उक्त दोनों पवित्र स्थानों के दर्शनार्थ जाते रहे हैं। सन् १९६१ की जनगणना के अनुसार उत्तराखंड डिवीजन और उसके जिलों की जैन जनसंख्या निम्न प्रकार थी:—

उत्तरकाशी	—	२५ (पुरुष १८, स्त्रियाँ ७)
चमोली	—	११ (पुरुष ८, स्त्रियाँ ३)
पिथौरागढ़	—	८ (पुरुष ३, स्त्रियाँ ५)
सम्पूर्ण उत्तराखंड डिवीजन	—	४४ (पुरुष २९ स्त्रियाँ १५)

ये समस्त जैन इन जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में ही निवास करते हैं। इन जिलों की वास्तविक जैन जनसंख्या तथा यहां के जैनों का कोई परिचय प्रस्तुत डायरेक्टरी में नहीं दिया जा सका। वर्तमान में वहां कोई प्राचीन या अर्वाचीन जैन मन्दिर, स्मारक आदि भी रहा ज्ञात नहीं होता। वैसे चमोली जिले के परम वैष्णवधाम बद्रीनाथ मन्दिर की मूलनायक मूर्ति के जैन तीर्थंकर प्रतिमा होने की अनुश्रुतियाँ चली आती हैं। अनेक आधुनिक पर्यटकों एवं लेखकों ने भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ऐसे संकेत किये हैं कि संभवतः वह मूर्ति मूलतः एक जिन प्रतिमा ही है। मूर्ति के भली प्रकार दर्शन नहीं हो पाते। वह वस्त्राभूषणों से लदी है और अंधेरे गर्भगृह में विराजमान है। सामान्य दर्शनार्थी को कठिनाई से उसकी झलकमात्र देख मिलती है। फिर भी इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि वह कृष्णपाषाण की एक ध्यानस्थ-पद्मासनस्थ योगि की मूर्ति है और अपने मूलरूप में संभवतया पूर्णतया दिगम्बर है। मूर्ति के यह वर्णन जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं पर ही विशेष रूप से घटित होते हैं। क्या आश्चर्य है कि उक्त स्थान में मूलतः कोई जिन मन्दिर रहा हो जिसकी मूलनायक प्रतिमा तीर्थंकर ऋषभ या पार्श्व की रही हो और जब ९वीं शती ई० के प्रारम्भ के लगभग शंकराचार्य यहां आये तो उन्होंने इस मन्दिर और मूर्ति को बद्रीविशाल के नाम से

प्रसिद्ध करके उनका वैष्णवीकरण कर दिया हो। उस काल में उक्त प्रदेश में जैनों का अभाव इस क्रिया में सहायक रहा होगा।

कुमायुं कमिश्नरी में टिहरीगढ़वाल, पौड़ीगढ़वाल या गढ़वाल, अल्मोड़ा और नैनीताल नाम के चार जिले थे। १९६१ की जनगणना के अनुसार इन जिलों की जैन जनसंख्या निम्न प्रकार थी :

टिहरी गढ़वाल	—	६८	(पुरुष ३४, स्त्रियाँ ३४)
पौड़ी गढ़वाल	—	६८	(पुरुष ४४, स्त्रियाँ २४)
अल्मोड़ा	—	५	(पुरुष ३, स्त्रियाँ २)
नैनीताल	—	२९७	(पुरुष १५३, स्त्रियाँ १४४)

सम्पूर्ण कुमायुं डिवीजन में ४३८ (पुरुष २३४, स्त्रियां २०४) जैन हैं, जिनमें से १५० व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्रों में और २८८ शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं। गढ़वाल तथा नैनीताल में अधिकांश जैन शहरी क्षेत्रों में रहते हैं, नैनीताल के ग्रामीण क्षेत्रों में भी १३२ जैन रहते हैं। इस सम्बन्ध में यह ध्यान देने की बात है कि १९६७ में प्रस्तुत डायरेक्टरी के लिये एकत्रित आँकड़ों के अनुसार केवल नैनीताल जिले की जैन जनसंख्या ३६१ है अर्थात् सरकारी संख्या से लगभग २२ प्रतिशत अधिक। अन्य जिलों में भी वह सरकारी आँकड़ों से अधिक ही है।

कुमायुँ-गढ़वाल

उपरोक्त उत्तराखंड और कुमायुं कमिश्नरियों के सातों जिलों स व्याप्त क्षेत्र परम्परा से दो प्रमुख भागों में बँटा चला आया है, जो कि मध्यकाल के प्रायः प्रारम्भ से ही क्रमशः गढ़वाल और कुमायुं के नाम से प्रसिद्ध रहते आये हैं। पश्चिमी भाग का नाम गढ़वाल है जिसके अन्तर्गत टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, उत्तरकाशी और चमोली जिले विद्यमान हैं। पूर्वी भाग का नाम कुमायुं है जिसमें पिथौरागढ़, अल्मोड़ा और नैनीताल जिले पड़ते हैं। उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ने जनवरी १९६९ में इन जिलों का फिर से पुनर्गठन करके परंपरागत गढ़वाल और कुमायुं नाम की ही दो कमिश्नरियां बना दी हैं, पहली में गढ़वाल के चारों जिले और दूसरी में कुमायुं के तीनों जिले सम्मिलित करके उत्तराखंड कमिश्नरी को समाप्त कर दिया है।

गढ़वाल, गढ़वान, गढ़पाल या गढ़देश के नामकरण का कारण यह है कि प्राचीन काल में इस प्रदेश में ५२ गढ़ या दुर्ग थे जिन पर छोटे-छोटे स्थानीय पहाड़ी राजाओं का अधिकार था।

इनमें से प्रत्येक गढ़पाल अपने दुर्ग या गढ़ी से आसपास की पहाड़ियों और घाटियों पर शासन करता था। बावन गढ़ों के कारण इस देश को बावनी भी कहते थे। चमोली जिले के जोशीमठ के आसपास एक छोटा सा क्षत्रिय राज्य भी था जहां इन्द्रप्रस्थ के कुरुवंशियों की एक शाखा शासन करती थी। अन्तिम राजा भानुप्रताप ने अपनी पुत्री का विवाह मालवा के एक परमार राजकुमार के साथ कर दिया और उसे ही अपना राज्य भी सौंप दिया। इस राजपुत्र का नाम कनकपाल था और वर्तमान चमोली जिले में स्थित चांदपुरगढ़ी को उसने अपनी राजधानी बनाया था। कुछ समय बाद इस वंश की राजधानी देवलगढ़ में स्थानान्तरित हुई। इन परमार राजाओं ने शनैः शनैः शक्ति संचय की और १२ वीं शती के उपरान्त एक-एक करके विभिन्न गढ़पालों को अपने अधीन कर उन्होंने द्रुतवेग से अपना राज्य विस्तार करना प्रारम्भ किया। १५ वीं शताब्दी आते-आते सम्पूर्ण गढ़देश पर उनका एकच्छत्र शासन हो गया और राजधानी भी बदल कर वर्तमान गढ़वाल जिले के श्रीनगर में स्थापित हो गई। आगामी तीन शताब्दियों में श्रीनगर का यह परमार राज्य अपनी शक्ति और वैभव के चरम शिखर पर था। किन्तु १९ वीं शती के प्रारम्भ में नैपाल के गोरखों ने आक्रमण करके परमार राजा सुदर्शन साह को मार भगाया और गढ़देश पर अपना अधिकार कर लिया। १८१५ ई० में अंग्रेजों ने गोरखों को पराजित करके उनसे यह प्रदेश जीत लिया और सुदर्शन साह को पश्चिमी भाग, जिसमें वर्तमान टिहरी गढ़वाल और उत्तरकाशी जिले हैं, वापस कर दिया तथा शेष भाग को अपने शासन में ले लिया। सुदर्शन साह ने अंग्रेजों के अधीनस्थ-नरेश के रूप में टिहरी नगर को अपनी राजधानी बनाकर राज्य करना प्रारम्भ किया जहाँ १९४९ में उक्त राज्य के भारतीय संघ में विलयन पर्यन्त उसके वंशज राज्य करते रहे। इस टिहरी राज्य के उत्तरी भाग (उत्तरकाशी जिले) में तो जैनी जन, एकाध अपवाद को छोड़कर, शायद कभी भी जाकर ढंग से नहीं बसे, किन्तु टिहरी में उक्त राज्य की स्थापना के समय (१८१५ ई०) से ही बिजनौर आदि निकटवर्ती मैदानी जिलों के अनेक जैनी जाकर बस गये और लेन-देन एवं व्यापार व्यवसाय द्वारा उन्होंने वहां अपनी स्थिति अच्छी बना ली। अब भी कई जैन परिवार वहां प्रतिष्ठित हैं। उक्त जिले के नरेन्द्रनगर, देवप्रयाग आदि कस्बों में भी कई जैन परिवार हैं। उत्तरकाशी की ही भाँति ब्रिटिश गढ़वाल के चमौली जिले में भी, कतिपय अपवादों को छोड़कर, मध्यकाल से लेकर अब तक जैनी कभी ढंग से जाकर नहीं बसे। एक तो वह प्रदेश बड़ी ऊँचाई पर है, हिमाच्छादित है, दूसरे शैवों और वैष्णवों का प्रसिद्ध गढ़ शताब्दियों से रहता आया है। अतएव प्राचीन कुरुवंशियों, कत्यूरियों और प्रारम्भिक परमारों के समय में भले ही कुछ मैदानी जैन सैनिक, व्यापारी आदि वहां गये और रहे हो सकते हैं, किन्तु राजधानी के श्रीनगर में स्थानांतरित हो जाने के बाद वे श्रीनगर में ही व्यवस्थित रूप से बसे। इस नगर में कई जैन परिवार सैकड़ों वर्ष से बसे हैं, जिनमें कई पर्याप्त समृद्ध एवं प्रतिष्ठित हैं। श्रीनगर में एक अच्छा शिखरबन्द जैन मन्दिर भी है। १८९४ ई० में एक भयंकर बाढ़ में पूरा श्रीनगर बह गया था और उसकी अधिकांश इमारतें ध्वस्त हो गई थीं, उन्ही में वहां का प्राचीन जैन मन्दिर भी ध्वस्त हो गया था, जो कई शती पूर्व, संभवतया १६ वीं या १७ वीं शती में बना था। वर्तमान मंदिर १९०० ई० के लगभग बना है।

विष्णु के कूर्मावतार की अनुश्रुति से सम्बन्ध होने के कारण अल्मोड़ा जिले की चम्पावत तहसील में स्थित कानादेव नामक पहाड़ी कूर्म शिला या कूर्माचल कहलाई और वह वनखंड कूर्मवन कहलाया, कुमार कार्त्तिकेय का जन्मस्थान होने से वह कुमार वन भी कहलाया। इन्हीं शब्दों का अपभ्रष्ट रूप कुमायुं हुआ। प्रारम्भ में उक्त जिले के उक्त पूर्वी भाग (वर्तमान चम्पावत तहसील) का नाम ही कर्माचल प्रदेश, कूर्मदेश, कूर्मप्रस्थ या कुमायुं था, जो काली नदी का तटवर्ती होने से काली-कुमायुं प्रायः अव तक कहलाता है। इसी प्रदेश में १० वीं शती के मध्य के लगभग चन्द्रवंशी चांद राजपूतों का छोटा सा राज्य स्थापित हुआ। किन्तु जव १४ वीं-१५वीं शताब्दी से उक्त राज्य का द्रुत विस्तार हुआ और शनैः-शनैः उत्तर में तिब्वत की सीमा से लेकर दक्षिण में तराई तर्यन्त वह फैल गया तव से यह सारा ही प्रदेश कुमायुं कहलाने लगा।

कुमायुं के पिथौरागढ़ जिले में भी, उत्तरकाशी और चमोली की भांति ही, जैनी कभी ढंग से वसे नहीं लगते। किन्तु अल्मोड़ा जिला अति प्राचीन काल से सभ्यता का केन्द्र रहा है। मौर्यकाल से गुप्तकाल पर्यन्त यहां कुणिन्दो का राज्य था। इस जिले से सर्व प्राचीन मुद्राय कुणिन्दों की ही प्राप्त हुई हैं और उन पर चैत्यवृक्ष, नन्द्यावर्त आदि चिन्ह उत्कीर्ण मिले हैं जो जैन प्रभाव के सूचक हो सकते हैं। तदनन्तर यहां ब्रह्मपुर के पौरववंशी राज्य का उत्कर्ष हुआ। ६३५ ई० में चीनी यात्री हुएनसांग भी इस राज्य में आया था। ब्रह्मपुर राज्य के पतन के वाद कत्यूरी राजाओं का शासन ७वीं-८वीं शती से १२ वीं शती के लगभग तक रहा। वैजनाथ-कार्त्तिकेयपुर, द्वाराहाट, लखन-पुर आदि उनके प्रमुख नगर थे। इन स्थानों में तथा जिले के अन्य अनेक स्थानों में उस काल के अनेक मन्दिर, देवमूर्तियाँ, स्तंभ, चबूतरे, नौले या वावड़ियाँ आदि के अवशेष विद्यमान हैं। इन्हीं भग्नावशेषों में, विशेषकर द्वाराहाट में, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, प्रोफेसर कृष्णदत्त वाजपेयी आदि विद्वानों ने उस काल की कई खंडित-अखंडित जैन प्रतिमाएँ भी देखी थीं। एक प्रतिमा लगभग सवा फुट ऊँची, स्थानीय भूरे पत्थर की खड्गासन दिगम्वर वहां के खोलाभीतर मुहल्ले में स्थित हरिसिद्धि देवी के मन्दिर में देखी गई, जिसे कला की दृष्टि से प्रो० वाजपेयी ने ११वीं शती ई० की अर्थात् कत्यूरी काल की ही अनुमान की है। एक अन्य राहुल जी ने द्वाराहाट की एक ब्राह्मणी पुजारिन के घर में देखी थी। अन्य कई जिन प्रतिमाएँ भी खंडित रूप में यत्र-तत्र दृष्टिगोचर हुई। इससे प्रतीत होता है कि कुमायुं के मध्य भाग में जैन धर्म और जैनों का अल्पाधिक अस्तित्व संभवतया कुणिन्द और पौरव युगों से ही था और कत्यूरी काल में तो वहां जैन मन्दिर भी निर्मापित हुये थे। कत्युरी राजाओं की अवनति होने पर इस जिले में चांद वंश की स्थापना और उत्कर्ष हुआ। मध्यकाल में यह राजपूत वंश ही धीरे-धीरे सम्पूर्ण कुमायुं का एकच्छत्र शासक हो गया, जिसका अन्त १८ वीं शती के अन्त में गोरखा आक्रमण ने किया। गोरखों को अंग्रेजों ने निकाल भगाया और १८१५ ई० में सम्पूर्ण कुमायुं को अपने राज्य में मिला लिया। चांद राजाओं के समय में भी जैन वणिक इस जिले में पर्याप्त संख्या में रहे प्रतीत होते हैं। वस्तुतः, कुमायुं में साह जाति मध्यकाल में पर्याप्त प्रभावशाली रही है। वर्तमान में इस जाति के कुछ लोग अपने को शाह कहने

लगे हैं और स्वयं को मूलत: राजपूत वताते हैं, राजपूत कन्याओं से विवाह करते हैं और मद्यमांस का भी सेवन करते हैं, किन्तु मुख्यतया वणिकवृत्ति ही करते हैं। यहीं के कुछ अन्य शाह अपने को अग्रवाल वैश्यों का वंशज कहते हैं, उनके गोत्र भी अग्रवालों की भाँति गर्ग, गोयल आदि हैं, सलीमगढ़िया प्रभृति उनकी उपजातियाँ भी अग्रवाल सम्वन्ध की सूचक हैं। दोनों ही प्रकार के इन कुमैया साहों की अव एक पृथक पहाड़ी जाति वन गई है और यह जाति मुख्यतया साहुकारा, व्यापार, व्यवसाय आदि में ही संलग्न रहती आई है। पूर्वकाल में इनका फैलाव पिथौरागढ़ जिले के अन्तर्गत शोर के वमराज्य तक था और इनके कई वंशों की उपाधि चौधरी थी। अल्मोड़ा जिले में ही द्वाराहाट के चौधरी किसी समय वड़े प्रभावशाली थे। चांद राजाओं के राज्यकाल में इन चौधरियों और साहुओं ने उच्च राजकीय पद भी प्राप्त किये और राज्य की प्रभूत सेवायें कीं। ऐसा लगता है कि प्राचीन काल से ही विजनौर, मुरादावाद आदि मैदानी जिलों के अनेक अग्रवाल जैनी साहू लोग कुमायुं में व्यापार-वाणिज्य के अर्थ अथवा राजाओं के निमन्त्रण पर जाकर वसते रहे। कालान्तर में मैदानी जिलों और वहां रहने वाले साधर्मी अथवा सजातीयों के साथ सम्पर्क विच्छेद हो जाने से वे पहाड़ी जनता के ही अंग वन गये, और शनैः शनैः स्थानीय वहुसंख्या के प्रभाव से जैनधर्म से विमुख होकर शैव-वैष्णवादि वन गये। अल्मोड़ा के दक्षिण में स्थित नैनीताल जिले में तो आज भी जैनीजन पर्याप्त संख्या में निवास करते हैं। इस जिले के मुक्तेश्वर, ढिकौली, उज्जैनी (काशीपुर के निकट प्राचीन गोविषाण जनपद) आदि प्राचीन स्थलों की खुदाई एवं शोध में जैन पुरातत्व मिलने की पूरी संभावना है। स्वयं नैनीताल के प्रसिद्ध नैनादेवी के मन्दिर में श्री उग्रसेन जी तथा अन्य कई सज्जनों ने कुछ वर्ष हुये एक मनोज्ञ जैन तीर्थंकर प्रतिमा देखी थी। वाद में वह वहां नहीं रही और यह वताया गया कि कतिपय अन्य मूर्तियों के साथ वह भी चोरी चली गई है। वैसे वर्तमान में काशीपुर, जसपुर और हलद्वानी में जैन मन्दिर विद्यमान हैं और जिले के नैनीताल, काशीपुर, हलद्वानी, टनकपुर, जसपुर, रामनगर, वाजपुर, गदरपुर, रुद्रपुर, धनौरी आदि प्रमुख नगरों एवं कस्वों में जैनी जन पाये जाते हैं। कृषि फार्मों तथा फैक्ट्रियों आदि के सिलसिले से जिले के देहाती क्षेत्रों में भी कुछ जैनी रहते हैं।

रुहेलखंड

उत्तर प्रदेश राज्य की वरेली कमिश्नरी में विजनौर, मुरादावाद, वदायुं, रामपुर, पीलीभीत, वरेली और शाहजहांपुर नाम के सात जिले हैं। इन सातों जिलों से व्याप्त भूभाग ही १८ वीं शती के मध्य के लगभग रुहेले पठानों के संसर्ग के कारण रुहेलखंड कहलाने लगा। उसके पूर्व लगभग आठ-नौ सौ वर्षों से यही प्रदेश कटेहरिया राजपूतों के सम्वन्ध से कटेहर देश अथवा मुल्क कटेहर कहलाता था। उसके भी पूर्व, प्रायः महाभारत काल से लेकर, वह उत्तर पांचाल अथवा पांचाल देश कहलाता रहा था। यह प्राचीन कालीन पांचाल महाजनपद का उत्तरी भाग था। इस प्रदेश के विभिन्न भागों

में अति प्राचीन काल से जैनों का आवास, जैन सांस्कृतिक केन्द्र, धर्मायतन, तीर्थस्थान आदि रहते आये हैं। वर्तमान में इस कमिश्नरी के जिलों की जैन जनसंख्या निम्न प्रकार है:

जिला	१९६१ की जनगणना	प्रस्तुत डायरेक्टरी के अनुसार १९६७ में
बिजनौर	१२३७ (पु० ५८६, स्त्री ६५१)	१८७०
मुरादाबाद	१०९३ (पु० ५७३, स्त्री ५२०)	१५५४
बदायुं	१४४ (पु० ६६, स्त्री ७८)	४५८
रामपुर	५३७ (पु० २९७, स्त्री २४०)	६५८
बरेली	१९४ (पु० १०६, स्त्री ८८)	१८५
पीलीभीत	५४३ (पु० ५३४, स्त्री ९)	४८
शाहजहांपुर	१७२ (पु० १४२, स्त्री ३०)	३३
योग—	३९२० (पु० २३०४, स्त्री १६१६)	४८०६

इन दोनों प्रकार के आँकड़ों में परस्पर जो अन्तर हैं उनके कारण हैं। प्रथम तो १९६१ के और १९६७ के बीच भारतवर्ष की जनसंख्या में सामान्यत: वृद्धि हुई है और वह जैनों की संख्या में भी हुई है। दूसरे, सरकारी जनगणना में प्राय: सर्वत्र एवं सदैव अनेक जैन हिन्दुओं के अन्तर्गत परिगणित होते रहे हैं, जिसका कारण जनगणना कर्मचारियों की अनभिज्ञता और स्वयं जैनों का प्रमाद होता है। तीसरे, इस डायरेक्टरी में संकलित आंकड़े भी पूर्ण नहीं हैं। उत्तराखंड कमिश्नरी के तीनों जिलों और कुमायुं कमिश्नरी के नैनीताल को छोड़कर शेष तीन जिलों के आंकड़े एकत्रित ही नहीं किये गये। और जिन जिलों के आंकड़े एकत्रित भी किये गये हैं उनमें भी पश्चिमी पाकिस्तान के उन विस्थापित श्वेताम्बर अथवा स्थानकवासी जैन बन्धुओं की संख्या और विवरण बहुधा संकलित नहीं हो पाये हैं। बरेली, पीलीभीत और शाहजहांपुर के आँकड़ों से यह तथ्य स्पष्ट है। तराई क्षेत्रों में जो कृषि का नया विकास हुआ है और अनेक छोटे-बड़े फार्म खुले हैं उनमें तथा अन्य अनेक ग्रामों में भी जैन रहे हो सकते हैं। अस्तु इस डायरेक्टरी में विविक्षित पूरे प्रदेश की जैन संख्या जो १९६१ की जनगणना के अनुसार ४४०२ और डायरेक्टरी के अनुसार ५१९७ आती है तथा पीलीभीत, बरेली और शाहजहांपुर की अतिरिक्त संख्या को जोड़कर ५४४९ आती है, सब मिलाकर छ: हजार से कुछ अधिक ही होनी चाहिये।

क्षेत्रीय समाज की प्रगति के पथ-चिन्ह

रुहेलखंड-कुमायुं की जैन समाज अपेक्षाकृत अत्यल्पसंख्यक है और इस क्षेत्र के थोड़े से ही नगरों, कस्बों एवं ग्रामों में सीमित है। तथापि, वर्तमान शताब्दी के प्रारंभ से ही अखिल भारतीय जैन समाज की प्रगति में उसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है और उसके आधुनिकयुगीन इतिहास की कई ऐसी घटनाओं से घनिष्ट सम्बंध रहा है जो क्षेत्रीय समाज की प्रगति के ज्वलंत पथ-चिन्ह बन गये हैं।

सन् १८९१ में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की स्थापना हुई। यह सभा दिगम्बर जैन समाज की सर्वप्रथम अखिल भारतवर्षीय संस्था थी और इसके संस्थापकों में सर्वप्रमुख इसी क्षेत्र के मुरादाबाद निवासी पं० चुन्नीलाल जी तथा मुंशी मुकन्दलाल जी थे। इस महासभा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रारंभिक अधिवेशन सन् १९०० में मथुरा नगर में हुआ था और उसकी कार्यवाही में सक्रिय भाग लेने वाले प्रमुख नेताओं में से एक मुरादाबाद के ही बाबूलाल जी वकील थे।

सन् १९२१ में ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी के उद्योग से दिगम्बर जैनों की संयुक्त प्रान्तीय (उ० प्र०) सभा की स्थापना हुई जिसका प्रथम अधिवेशन इस क्षेत्र के बरेली जिले में स्थित अहिच्छत्र जी तीर्थ क्षेत्र पर २२-२४ मार्च, १९२२ ई० को हुआ। अधिवेशन के सभापति देशभक्त वकील झूमनलाल जी एम० ए० थे और अधिवेशन में इस क्षेत्र के प्राय: सभी जैन नेता—रा० ब० साहू जुगमंदरदास नजीबाबाद, रा० ब० द्वारिका प्रसाद नहटौर, श्री कुंजबिहारी लाल जमींदार कंदरकी (मुरादाबाद), बाबूलाल जी वकील मुरादाबाद, अशर्फीलाल जी वकील रामपुर, रतनलाल जी वकील बिजनौर, पं० रघुनाथदास सरनऊ, पं० कुंवरलाल जी इत्यादि—तथा क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से लगभग डेढ़ हजार अन्य सज्जन पधारे थे। इस अधिवेशन में पारित कतिपय प्रस्ताव निम्न प्रकार थे :—

(१) यह दि० जै० संयुक्त-प्रांतीय सभा निश्चित करती है कि प्राय: रेशम की तैयारी कीड़ों को मार कर की जाती है। अत: रेशमी वस्त्रों का व्यवहार अहिंसात्मक धर्म विरुद्ध है। ऐसे वस्त्र धार्मिक लौकिक कार्यों में व्यवहार में न लाये जावें। (२) यह सभा ऐसे विवाह को वर्जित करती है जिसमें वर-कन्या की अवस्था में २ वर्ष से कम या २० वर्ष से अधिक अन्तर हो। और इस निर्णय को कार्य रूप में परिणित करने के अर्थ प्रस्ताव करती है कि जनता से निम्न प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर कराये जावें— "मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि ऐसे विवाह में सम्मिलित न होऊँगा जिसमें वर-कन्या की अवस्था में २० वर्ष से अधिक अन्तर हो।" (३) कन्या विक्रय के कुत्सित व्यवहार को यह सभा घृणा की दृष्टि से देखती है और पंचायतों को सम्मति देती है कि कन्या बेचने वाले, खरीदने वाले और उनके दलालों को जाति से पृथक कर दें। (४) यह सभा प्रस्ताव करती है कि दि० जैन शास्त्रों का मुद्रण ऐसे शुद्ध प्रेस में कराया जाय जिसमें सरेस का बेलन काम में न लाया जाता हो।

और ऐसे शुद्ध प्रेस को इस प्रांत में खोलने का प्रयत्न किया जावे। (५) यह सभा प्रकट करती है कि अहिंसात्मक धर्म प्रचार और देश की आर्थिक उन्नति के लिये खद्दर का प्रचार अवश्य किया जावे। (६) यह सभा इस प्रांत के सेठ पद्मराज जी रानीवाले, कुंवर दिग्विजय सिंह जी, महात्मा भगवानदीन जी, श्री चांदमल जी आदि सज्जनों को हार्दिक बधाई देती है कि देश सेवा के लिये जेल के कष्ट धैर्य से सहन करके उन्होंने जैन जाति का मुख समुज्जवल किया, और उन प्रान्तीय जैन महानुभावों को भी धन्यवाद देती है जो वकालत आदि स्वार्थ त्याग करके देश सेवा के पवित्र कार्य में यथाशक्ति भाग लेकर अपना कर्त्तव्य पालन कर रहे हैं।

इस प्रकार प्रान्तीय जैन समाज के प्रतिनिधियों के इस समुदाय ने अहिच्छेत्र में हुए अपने प्रथम अधिवेशन में ही यह स्पष्ट रूप से प्रगट कर दिया था कि देश के स्वतन्त्रता संग्राम में तथा उसकी राष्ट्रीय, आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति में तत्कालीन जैन समाज तन-मन-धन से योग दे रही थी। इसके अतिरिक्त इस सभा की स्थापना और उसका यह अहिच्छत्रा अधिवेशन अगले वर्ष (१९२३ में) दिल्ली पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर स्थापित होने वाली समाज की सुधार प्रधान एवं प्रगतिवादी अखिल भारतीय संस्था—श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद— के पूर्वाभास थे। उक्त परिषद के प्रमुख जन्मदाता भी ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी ही थे और उसकी स्थापना एवं प्रगति में भी रूहेलखंड क्षेत्र के जैन नेताओं का प्रमुख योगदान रहा है। परिषद का प्रथम अधिवेशन सन् १९२४ में मुजफ्फरनगर में हुआ था, किन्तु उस अधिवेशन के अध्यक्ष इसी क्षेत्र के नजीबाबाद निवासी साहु जुगमंदरदास जी थे। बिजनौर के बा० रतनलाल जी वकील व बा० राजेन्द्र कुमार जी, नजीबाबाद के साहु श्रेयांस प्रसाद एवं साहु शान्ति प्रसाद जी, प्रभृति अनेक सज्जन परिषद के स्थायी स्तंभ रहते आये हैं।

सन् १९६० में श्री उग्रसेन जी, जो उस समय काशीपुर में निवास करते थे, के प्रयत्न से रूहेलखंड-कुमायुं जैन परिषद की स्थापना हुई। इसके सर्वप्रथम अध्यक्ष देशभक्त बा० रतनलाल जी वकील बिजनौर निर्वाचित हुए और कार्यवाहक अध्यक्ष परिषद-परीक्षा बोर्ड के मन्त्री उपरोक्त उग्रसेन जी। उन्हीं के प्रयत्नों से १९६३-६४ में इस क्षेत्र की जैन जनगणना हुई और यह डायरेक्टरी निर्मित एवं प्रकाशित हुई। उक्त क्षेत्रीय परिषद की स्थापना के उपरान्त क्षेत्र के विभिन्न स्थानों की जैन समाजों में शिक्षा संस्थाओं की स्थापना, समाज सुधार एवं सामाजिक संगठन, धर्मायतनों का निर्माण एवं संरक्षण, अहिच्छत्रा तीर्थ की उन्नति, इत्यादि विभिन्न दिशाओं में प्रगति की है।

रूहेलखंड-कुमायुँ क्षेत्र और जैन संस्कृति

जैन संस्कृति के साथ इस क्षेत्र का सम्बन्ध भारतीय इतिहास के प्रायः प्रारम्भ से ही रहा है। वर्तमान कल्पकाल में भरतक्षेत्र में मानवी सभ्यता और कर्मभूमि अथवा कर्मयुग का ॐ नमः प्रथम तीर्थंकर आदिपुरुष भगवान ऋषभदेव ने किया था जो महादेव थे, प्रजापति थे, स्वयंभू थे और

मनु भी थे। अयोध्या में उनका जन्म हुआ था। उन्होंने ही सर्व प्रथम मानवों को असि-मसि-कृषि-शिल्प-वाणिज्य आदि कर्मों की शिक्षा दी, अक्षरज्ञान एवं अंकज्ञान दिया, नगरों का निर्माण किया, देशों का विभाजन किया और राज्य व्यवस्था की। तदनन्तर पुत्रों को राज्य सौंपकर उन्होंने समस्त वैभव एवं परिग्रह का परित्याग करके निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनि के रूप में दुर्द्धर तपश्चरण किया जिसके फलस्वरूप केवलज्ञान एवं अर्हन्त अवस्था प्राप्त की और फिर देश-विदेश में विहार करके समस्त लोक के कल्याणार्थ सद्धर्म का अथक उपदेश दिया एवं धर्मतीर्थ का प्रवर्त्तन किया। अपने मुनिजीवन में उन्होंने मध्य-हिमालय के इन पार्वतीय प्रदेशों में तपश्चरण किया और केवल ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त इस सम्पूर्ण प्रदेश में 'विहार करके धर्मोपदेश दिया। गढ़वाल का परम धाम बद्रीनाथ जिस पर्वत शिखर पर स्थित है उसके एक ओर 'नर' पर्वत है और दूसरी ओर 'नारायण' पर्वत है। नर पर्वत भगवान आदि देव की तपोभूमि है, नारायण उनकी देशना भूमि है। वह नर से नारायण, आत्मा से परमात्मा हो गये थे, इसी तथ्य के प्रतीक रूप से उक्त शिखरों के ये नाम प्रसिद्ध हुये लगते हैं। स्वयं बद्रीनाथ की मूर्ति को जैनी जन तीर्थंकर प्रतिमा ही जानते मानते रहे हैं और दर्शनार्थ उस धाम की यात्रा भी करते रहे हैं। अन्त में, भगवान वर्तमान रूहेलखंड के मैदानी भागों में होते हुये, कुमायुं-गढ़वाल के पार्वतीय प्रदेशों में विचरते हुये, अनेक शिष्य मुनियों सहित उत्तरीय हिमश्रृंखला को पार करके पर्वतराज कैलास, अपरनाम अष्टापद, पर पहुंचे। उक्त पर्वत-शिखर से ही इन वृषभलांछित, जटाजूटधारी महादेव ऋषभनाथ ने निर्वाण एवं सिद्धत्व लाभ किया। अन्य अनेक मुनियों ने भी भगवान के साथ ही उसी स्थान से निर्वाण प्राप्त किया था। यह कैलास पर्वत पूर्वकाल में भारतदेश की उत्तरी सीमा के भीतर ही अवस्थित था, किन्तु वर्तमान में वह चीनाधिकृत तिब्बत देश में स्थित है। भगवान के निर्वाण का समाचार ज्ञात होते ही उनके ज्येष्ठ पुत्र, भारत के आदिसम्राट एवं प्रथम चक्रवर्ती, महामना भरत जिनके नाम पर ही इस महादेश का नाम भारतवर्ष प्रसिद्ध हुआ इस रूहेलखंड-कुमायु के मार्ग से ही सपरिवार कैलाश पर्वत पर गये और वहाँ ससमारोह भगवान का निर्वाण पूजोत्सव मनाया। अपनी दिग्विजय के प्रसंग में भी भरत चक्रवर्ती की सेना इन समस्त प्रदेशों में विचरी और उन्हें विजय किया। आचार्यप्रवर जिनसेन स्वामि ने आदिपुराण में इन प्रसांगों का वर्णन निम्न प्रकार किया है :

पर्व १६ श्लोक १५३ में भगवान ने जिन विभिन्न देशों की स्थापना की थी उनमें पांचाल देश (वर्तमान रूहेलखंड) का भी उल्लेख है, यथा "काश्मीरोशीनरानर्त्त वत्स पांचाल मालवा:" आदि।

पर्व २५श्लोक २८७ में भगवान ने सन्मार्ग का उपदेश देने के अर्थ जिन विभिन्न देशों में विहार किया था उनमें भी पांचाल देश का उल्लेख है, यथा "पांचाल मालव दशार्ण विदर्भ देशान्, सन्मार्गदेशन परो विजहार धीर:"। और तदनन्तर श्लोक २८८ में कथन किया गया है कि 'इस प्रकार वह भगवान ऋषभदेव जो प्रशान्त चरित थे और तीनों लोकों के गुरु थे, अनेक देशों में बहु-संख्यक भव्यजीवों को प्रतिबोधित करते हुये अन्त में चन्द्रोपम उज्वल, अत्युच्च एवं अपना अनुकरण करने वाले कैलास पर्वत पर पहुंचे (विधुवीध्र मुच्चै:, कैलासमात्मयशसो नुकृति दधानम्)।

पर्व २९ श्लोक ४० में भरतेश्वर चक्रवर्ती की दिग्विजय के प्रसंग में उसके सेनापति द्वारा पांचाल देश की विजय का वर्णन है, श्लोक ४६ में हिमवान पर्वत के निचले भाग (पादमूल) में भरतेश के विजयी हाथियों के घूमते रहने का उल्लेख है, श्लोक ४८ में चक्रवर्ती के सेनापति के कुलिन्द, कालकूट, किरातविषय और मल्लदेश में विजयार्थ जाने का उल्लेख है। इनमें से कुलिन्द देश तो कुमायुं-गढ़वाल के निचले पहाड़ी भाग की संज्ञा थी, कालकूट संभवतया काली कुमायुं की पहाड़ियों का द्योतक है और किरात मंडल या किरात देश कुमायुं का पूर्वोत्तर भाग था। मल्लदेश से आशय नैपाल का है। आगामी श्लोकों में उल्लिखित गंगा, गोमती, कौशिकी, कालतोया आदि नदियां भी इसी पार्वतीय प्रदेश की ओर इंगित करती हैं।

पर्व ३२ श्लोक ७८ में फ़िर चक्रवर्ती का सेनासहित हिमवन पर्वत के किनारे-किनारे (हिमाद्रितटाव) गमन करने का उल्लेख हैं। श्लोक ८३-८९ में उसके हिमवत्कूट पर पहुंचने का वर्णन है। श्लोक ९२ में उस हिमवत् पर्वत को अत्यन्त ऊँचा तथा जो साधारण मनुष्यों द्वारा अनुल्लंघनीय है ऐसा बताया गया है। आगे भी श्लोक १३० पर्यन्त भरत द्वारा इस हिमालय के विभिन्न शिखरों की विजय, इस सुरम्य पर्वतराज और उसके विभिन्न प्रदेशों की भूरि-भूरि प्रशंसा, उसे देव, अप्सरा, विद्याधर, किन्नर, नाग आदि का निवास स्थान बताना आदि प्रभूत वर्णन है। यह वर्णन प्रायः वैसा ही है जैसा कि ब्राह्मणीय आदि अन्य ग्रन्थों में हिमालय का बहुधा मिलता है। अतएव इस विषय में कोई सन्देह नहीं है कि उक्त जैन महापुराण में वर्णित हिमवन् प्रदेश यह कुमायुं-गढ़वाल के पार्वतीय प्रदेश ही हैं जो दक्षिण में तराई-भावर से लेकर उत्तर में कैलाश एवं मानसरोवर पर्यन्त फैले हुये हैं। पुराणकार के आगे के कथन से यह भी स्पष्ट है कि भरतेश्वर उत्तरकाशी जिले के उत्तर में स्थित गंगोत्री और गोमुख नामक स्थलों तक पहुंचे थे। पर्व ३३ में भरतचक्री के पुनः कैलास पर्वत पर जाकर जिनेन्द्र ऋषभदेव का पूजन करने का वर्णन है, स्वयं कैलास पर्वत का भी सुन्दर वर्णन है। इसी पर्व के श्लोक ५६ में कैलास पर्वत का अपरनाम अष्टापद सूचित किया गया है। पर्व४७ में भी महाराज भरत के भगवान का दर्शन करने और उपदेश सुनने के लिये कैलास पर्वत पर जाने का तथा अन्त में उनका निर्वाण होने पर निर्वाणोत्सव मनाने जाने के वर्णन हैं। हरिवंश पुराण (सर्ग ११) में भी पांचाल देश और उसके उत्तरवर्ती इन हिमालयस्थ पहाड़ी प्रदेशों का वर्णन है।

इस प्रकार महापुराण आदि के उपरोक्त उद्धरणों से यह सुस्पष्ट है कि वर्तमान रुहेलखंड तथा कुमायुं-गढ़वाल के साथ जैन धर्म और संस्कृति का घनिष्ट सम्बन्ध भ० ऋषभदेव के समय से ही, अर्थात भारतीय इतिहास के प्रारम्भ काल से ही है।

भ० ऋषभदेव के उपरान्त होने वाले तीर्थकरों का भी विहार इस भूभाग में हुआ और भरत चक्रवर्ती के पश्चात आने वाले जैन परम्परा के शेष ग्यारह चक्रवर्तियों ने भी अपनी-अपनी दिग्विजय के प्रसंग में इस सम्पूर्ण क्षेत्र को विजय किया। २२ वें तीर्थकर भ० नेमिनाथ का रुहेलखंड की

भूमि से कुछ विशेष सम्बन्ध रहा दीखता है, क्योंकि जिनप्रभसूरि के विविधतीर्थकल्प के अनुसार इस पांचाल देश की महानगरी शंखावती में, जो वाद में अहिच्छत्रा के नाम से प्रसिद्ध हुई, भगवान नेमिनाथ का प्राचीन तीर्थ था और वहां तीर्थंकर नेमिनाथ की प्रतिमा के साथ ही साथ उनकी शासन देवी सिंहवाहिनी अम्बिका देवी की मूर्ति भी प्रतिष्ठित थी ।।

२३ वें तीर्थंकर भ० पार्श्वनाथ की तो यह नगरी ज्ञान कल्याणक भूमि है । भ० पार्श्वनाथ का जन्म ईसा से ८७७ वर्ष पूर्व काशीदेश की वाराणसी नगरी में उरगवंशी काश्यपगोत्री महाराज अश्वसेन की धर्मपत्नी वामादेवी की कुक्षि से हुआ था । भ० पार्श्व वालब्रह्मचारी रहे । कुमारावस्था में ही उन्होंने संसार का त्याग करके जैनेश्वरी दीक्षा ले ली थी । वह वाल्यावस्था से ही अत्यन्त शान्त-चित्त, दयालु, मेधावी एवं चिन्तनशील थे, किन्तु साथ ही अतुल वीर्य-शौर्य के धनी एवं परम पराक्रमी भी थे । उनके मातुल, कान्यकुब्ज नरेश, पर जव एक प्रवल आततायी ने आक्रमण किया तो कुमार पार्श्व तुरन्त सेना लेकर उनकी सहायता के लिए गये और उन्होंने भीषण युद्ध करके शत्रु को पराजित किया और वन्दी वना लिया । कृतज्ञ मामा ने उन्हें साग्रह कुछ दिन अपना अतिथि वनाये रखा । इसी वीच एक दिन वन विहार करते हुए उन्होंने तापसियों का एक आश्रम देखा और एक भयंकर तापसी से एक नाग-नागी युगल की रक्षा की । इसी घटना से भ० पार्श्व को वैराग्य हो गया और आत्मशोधनार्थ तपश्चरण करने के लिए वह वन में चले गये । साधिक चार मास पर्यन्त उन्होंने कठोर साधना की । इस साधना के मध्य कुरुदेश की महानगरी हस्तिनापुर में पारणा करके वह विचरते हुये गंगा के किनारे-किनारे उस स्थान पर आये जो वाद में 'पारसनाथ किला' के नाम से प्रसिद्ध हुआ और वर्तमान में विजनौर जिले के वढ़ापुर ग्राम के आसपास जिसके भग्नावशेष विखरे पड़े हैं । यहाँ से आगे चलकर वह उत्तर पांचाल राज्य की राजधानी, जो उस समय पाँचालपुरी, परिचक्रा और शंखावती नामों से प्रसिद्ध थी और वाद में अहिच्छत्रा कहलाई तथा वर्तमान में वरेली जिले की आँवला तहसील के रामनगर नामक कस्वे के वाहर जिसके भग्नावशेष फैले पड़े हैं, के निकटवर्ती भीमाटवी नाम महावन में जा विराजे । यहाँ वह योग धारण करके एक स्थान में कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानस्थ हो गये । इसी अवस्था में और इसी स्थल पर शंवर नामक एक दुष्ट असुर ने उन पर भीषण उपसर्ग किये । नागराज धरणेन्द्र और यक्षेश्वरी पद्मावती ने उक्त उपसर्ग के निवारण का यथाशक्य प्रयत्न किया । किन्तु शुद्धात्म स्वरूप में लवलीन जिनेन्द्र का तो इन वातों की ओर ध्यान ही नहीं था । फलस्वरूप घातिया कर्मों का क्षय करके उसी समय उन्होंने केवल ज्ञान एवं अर्हन्त पद प्राप्त किया । उनके परमभक्त धरणेन्द्र और पद्मावती ने हर्षोन्मत्त होकर भगवान की पूजा की, और वह दोनों भगवान पार्श्व के परम अनुचर, उनके शासन के रक्षक एवं परम प्रभावक शासन देवता कहलाये । इन्द्रादिक देवों ने आकर इस स्थान में ही प्रभु का ज्ञान कल्याणक अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया । भ० पार्श्व के केवल ज्ञान प्राप्ति और तीर्थोत्पत्ति का स्थल होने के कारण यह भूमि धन्य हुई और जैन धर्म का एक पुनीत धर्मतीर्थ वनी । नागराज (अहि) धरणेन्द्र ने उपसर्ग निवारणार्थ भगवान के सिर के ऊपर जो छत्राकार सहस्त्रफणा मंडप वनाया था उसी के कारण यह नगरी, जो तव तक शंखावती, परिचक्रा, पांचालपुरी आदि नामों से जानी जाती थी, अव अहिच्छत्रा नाम से

लोक प्रसिद्ध हुई। इस घटना के प्रतीकात्मक अंकन के रूप में ही तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ सप्तफरणे छत्र से मण्डित पाई जाती हैं, किन्हीं प्रतिमाओं में यह छत्र पंचफरणा या नवफरणा भी होता है और कहीं-कहीं सहस्त्रफरणा भी पाया गया है।

उपसर्ग वर्णन

भ० पार्श्वनाथ के इस अभूतपूर्व उपसर्ग का वर्णन पार्श्वपुराण के विभिन्न संस्करणों में प्राप्त होता है। सर्वाधिक विस्तृत वर्णन आचार्य पद्मकीर्ति विरचित अपभ्रंश 'पासणाह चरिउ' में है, जिसका संक्षिप्त सार निम्न प्रकार है:—

कुशस्यलपुर (कन्नौज) पर आक्रमण करने वाले दर्पोद्भट यवनराज को भीषण संग्राम में पराजित करके तथा वन्दी वनाकर अश्वसेननन्दन कुमार पार्श्व ने उक्त राज्य पर अपने मातुल महाराज रविकीर्ति को पुनः स्थापित किया (संधि १२, १३)। उसी समय वसन्त ऋतु का आगमन हुआ और रविकीर्ति ने अपनी कन्या प्रभावती के साथ कुमार पार्श्व का विवाह करने का विचार किया, और इस सम्वन्ध के लिये कुमार ने भी अपनी स्वीकृति दे दी (१३/४-९)। किन्तु इसी बीच कुमार को ज्ञात हुआ कि कुशस्थलपुर के उत्तर-पश्चिम एक योजन दूर भीषण वन में अनेक मिथ्यात्वी तापसी अज्ञान तपों में लीन हैं। कौतूहलवश कुमार उन्हें देखने वहां गये। वहां उनकी मुठभेड़ कमठ नाम के एक उग्र तापसी से हुई जो कि एक वड़े लक्कड़ को पंचाग्नि में डालने जा रहा था। कुमार नें उसे ऐसा करने से रोका और कहा कि उक्त लक्कड़ में एक जीवित सर्प है। तापसी ने विश्वास नहीं किया और क्रोधित होकर तीक्ष्ण कुठार से उक्त लक्कड़ को फाड़ डाला। उसमें से एक विपधर भुजंग निकला किन्तु तापसी के प्रहारों से वह क्षत विक्षत हो चुका था। कुमार ने उक्त मरते हुये सर्प के कान में मन्त्र दिया और वह स्थिर मन से देह का त्याग करके धरणेन्द्र नामक नागदेव की पर्याय को प्राप्त हुआ। तापसी का सवने उपहास किया और वह भी जीव हिंसा के त्याग पूर्वक अनशन करके मरण को प्राप्त हुआ और असुर जातीय देव पर्याय को प्राप्त हुआ। इधर कुमार पार्श्व को संसार की यह असारता देखकर संसार-देह-भोगों से वैराग्य हो गया और उन्होंने तत्काल दीक्षा ले ली (१३/१०-१४)। इस घटना से रविकीर्ति को, राजकुमारी प्रभावती को, महाराज अश्वसेन और माता वामादेवी को अत्यन्त दुःख हुआ। दीक्षा के उपरान्त जगतगुरू परम तपस्वी पार्श्वप्रभु ने परिहारविशुद्धि संयम धारण किया, मौनव्रत से देह की परिशुद्धि की और आठ दिन का उपवास लिया। इस अवस्था में विहार करते हुये वह गजपुर (हस्तिनापुर) पहुंचे और वहां वरदत्त के गृह में पारणा किया (१३/१४-२०)।

'तदन्तर वह तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ, जो तीन दण्ड, तीन शल्य और तीन दोषों से रहित थे, जिनका शरीर १००८ लक्षणों से युक्त था, जो चार संज्ञाओं से मुक्त थे और तीन गुप्तियों से

गुप्त थे, शीलों से समन्वित थे, जिनका शरीर सम्यक्त्व रत्न से विभुषित था, जो क्षोभ और मोह से रहित एवं अनन्त वीर थे, बाईस परीषहों को सहना जिनका स्वभाव था, सोलह कषायों को जिन्होंने सहज ही उखाड़ फेंका था, जो कामरूपी मदोन्मत्त गज के लिये प्रचण्ड सिंह थे तथा प्रचुर कर्मरूपी पर्वत के लिये वज्र थे, जो चार ज्ञानों से विभूषित थे, दोषहीन थे और भट्टारक थे, क्रम से सरित, खेड, नगर, कर्वट, प्रदेश, द्रोणमुह, चत्वर, ग्राम, देश, उद्यान, विचित्र घोष समूह, उत्कृष्ट तथा रम्य पर्वत तथा अन्य स्थानों में विहार करते हुये भीमाटवी नामक विशाल वन में पहुंचे। वह वन नाना जाति के सघन वृक्षों से रमणीक और अच्छादित था, भीषण था, उसमें संचार करना कठिन था, वह अनेक वन्य पशुओं से व्याप्त था और पक्षियों के समूह से भरापूरा था, दुस्सह था और दुष्प्रवेश्य था (१४/१-२)।

उक्त वनस्थली के मध्य भूभाग में समस्त दोषों से रहित पार्श्वप्रभ कायोत्सर्ग मुद्रा में स्थित हो गये। वह मुनीन्द्र ध्यानाग्नि से पूर्ण मन के साथ गिरिवत अविचल हो गये। उनके करतल विस्तृत थे, दृष्टि नासाग्र पर टिकी थी, उनके लिये मणि कांचन धूरिवत थे, शत्रु और मित्र तथा रोष और तोष समान थे, सुख और दुःख में समत्व भाव था, मोक्ष उनका लक्ष्य था और वह शुद्धात्म चिन्तन में लीन थे (१४/३)।

उसी अवसर पर शंवर अपरनाम मेघमाली नाम के असुरेन्द्र का आकाशचारी विमान उधर से निकला, किन्तु पार्श्व प्रभु के ऊपर पहुंचते ही वह अकस्मात स्थगित एवं गतिहीन हो गया। अपने विमान को इस प्रकार अटका देख कर वह असुर अत्यन्त क्रोधित हुआ। विभंगावधि के बल से उसे पार्श्व प्रभु के साथ अपने पूर्वभवों के वैरभाव का ज्ञान हुआ और उन्हें ही अब भी अपने इस पराभव का कारण जानकर वह जैसे भी हो उन्हें नष्ट करने के लिये तत्पर हुआ (१४/४-६)। इन्द्र की आज्ञा से वहां जिनवर के अंगरक्षक के रूप में सौमनस नाम का यक्ष रहता था। उसने असुर को समझाने का भरसक प्रयत्न किया और उपसर्ग से होने वाले दुष्परिणामों का वर्णन किया। किन्तु उस दुष्ट ने उलटे सौमनस की भर्त्सना की और अपने घृणित निश्चय को कार्यान्वित करने में जुट गया (१४/७-९)।

"सर्व प्रथम वह असुर दोनों हाथों में वज्र लेकर तीर्थंकर के शरीर पर प्रहार करने के लिये झपटा, किन्तु निकट आते ही उनके तप-तेज से संत्रस्त होकर वह शस्त्र उसके हाथ से छूट गया और स्वयं व्याकुल हुआ। तदन्तर उसने अपनी माया से गगनमण्डल पर नाना प्रकार के चित्र-विचित्र मेघों का निर्माण किया और दुस्सह, दारुण, भीषण, प्रवल, गरजता हुआ अति प्रचंड पवन प्रवाहित किया। उस महाभयंकर आंधी ने प्रलयन्कर दृश्य उपस्थित कर दिया, किन्तु देवाधिदेव पार्श्व प्रभु तनिक भी विचलित नहीं हुये (१४/१०-१२)। जब प्रवल, भीषण और दुस्सह ध्वनि से युक्त पवन द्वारा भी प्रभु ध्यान से चलित न हुए तो असुर ने शर, उझसर, शक्ति, सव्वल, मुदगर, मुसंठि, कराल

रेवगि, परशु, घन, कनक, चक्र आदि अनेक चमचमाते घातक शस्त्रास्त्र जिनवर के ऊपर चलाये, किन्तु वे उनके शरीर तक पहुंचते-पहुंचते सुरभित कोमल पुष्प मालाओं में परिवर्तित हो जाते थे (१४/१३)। तव असुर ने अनेक मनोहारिणी, लावण्य-रूप और यौवन से परिपूर्ण, समस्त कलाओं में पारंगत अप्सराओं का प्रदुर्भाव किया जिन्होंने नाना कामचेष्टाओं से जिनेन्द्र को ध्यान से विचलित करने का भरसक, किन्तु सर्वथा विफल प्रयास किया (१४/१४)। तदन्तर असुर ने सहस्त्रों ज्वालाओं के तेज़ से विस्तीर्ण, समस्त दिशाओं को दग्ध करती हुई प्रचंड अग्नि का प्रदर्शन किया (१४/१५,) भयानक अशोष्य, दुस्तर, अत्यन्त विक्षुब्ध समुद्र का सृजन किया (१४/१६), अनगिनत भयंकर, हिंसक पशुओं की रौद्रता से भगवान को भयभीत करने का प्रयत्न किया (१४/१७), श्वापदों के भयंकर उपसर्ग के निष्फल रहने पर उसने विशालकाय एवं अत्यन्त वीभत्स भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, वैताल आदि की रचना की, किन्तु वे सव भी भगवान पर दृष्टि पड़ते ही स्तब्ध रह गये (१४/१८)। अव उक्त मेघमाली असुर ने अभूतपूर्व भयंकर वृष्टि करने का निश्चय किया। डरावने ढंग से संचार करने वाले अत्यन्त घने कृष्णमेघों से समस्त आकाश व्याप्त हो गया। मेघों की सतत वृद्धि से समस्त पृथ्वी अंधकारमय हो गई। प्रमाण रहित, गर्जन तर्जन करती विपुल भीषण वर्षा ने पृथ्वी को जलमग्न कर दिया। मूसल जैसी स्थूल, असंख्य धाराओं से सात दिन पर्यन्त गिरते रहने वाला वह जलौघ सर्वव्यापी हो गया (१४/१९-२३)। यह भीषण उपसर्ग भी धीर वीर पार्श्व जिनेन्द्र के चित्त को चलायमान करने में सर्वथा असमर्थ रहा। जव जल उनके कन्धों से ऊपर पहुंचने लगा तो धरणेन्द्र का आसन कम्पित हुआ। अवधिज्ञान के वल से उसने तत्काल कारण जान लिया और क्षणमात्र में वह अनेक नागकन्याओं से घिरा हुआ और मंगल ध्वनि करता हुआ उपसर्ग स्थल पर आ पहुंचा। उसने एक विशाल कोमल, सुगन्धित एवं अति सुन्दर कमलपुष्प निर्माण किया और उस पर आरुढ़ होकर उक्त अहिराज ने पार्श्वजिन की प्रदक्षिणा की, चरणों में प्रणाम किया और अत्यन्त भक्ति एवं विनयपूर्वक उनको जल से उवार कर उनके चरणों को अपनी गोद में लिया और उनके शिर के ऊपर अपना विशाल फणमंडल छत्राकार फैला दिया। आकाश से गिरते हुये जल का अवरोध करता हुआ और भगवान की देह की उक्त वृष्टि से पूर्णतया रक्षा करता हुआ अहिराज धरणेन्द्र उनके द्वारा पूर्वकृत उपकार का स्मरण करता रहा और स्वयं को धन्य हुआ मानता रहा (१४/२४-२६)। उक्त अवसर पर श्वेतच्छत्र धारिणी कमलासना पद्मावती देवी भी जिनेन्द्र की विजय की माला करों में लिये हुये उनकी विनय भक्ति करती हुई वहां उपस्थित थी। दुष्ट असुर ने अहिराज को चेतावनी दी, डांटा डपटा, उसपर अनेक शस्त्रों से प्रहार किया और भगवान की सेवा से विचलित करने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु उसके समस्त प्रयत्न व्यर्थ गये। शुक्ल ध्यान में लीन स्वयं जिनेन्द्र पार्श्वनाथ पर तो उक्त घोर उपसर्गों का कोई प्रभाव ही नहीं था, प्रत्युत उसी समय उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। वे अर्हन्त केवली हो गये (१४/२७-३०)। तत्काल सुरेन्द्र का आसन कम्पायमान हुआ और वह अपने परिवार तथा चतुर निकाय के अन्य देव देवियों के साथ हर्षित हुआ भगवान का ज्ञान कल्याणक उत्सव मनाने के लिये आ पहुँचा। दुष्ट कमठासुर के मन में भय का संचार हुआ। भीमाटवी को जलमग्न देख, असुर द्वारा उपसर्ग किया गया था यह जानकर इन्द्र उस पर अत्यन्त कुपित हुआ। उसने

अपने वज्ररूपी महायुध को गगन में घुमाकर और पृथ्वी पर पटक कर छोड़ा। परिणामस्वरूप असुर का साहस छूट गया, वह दशों दिशाओं में भागा और पूरे संसार में भ्रमण करता फिरा। अन्तत: वह भ० पार्श्वनाथ की ही शरण में आया और सच्चे मन से अपने दुष्कृत के लिये अनुताप करता हुआ उनके चरणों में लोटकर भयमुक्त हुआ। इन्द्र का वज्र भी कृतार्थ हो नभ में चला गया (१५/१-६)। इन्द्र ने भगवान की ज्ञान कल्याणक पूजा की और उसी स्थान में उनके समवशरण की रचना की तथा भक्ति विव्हल होकर उनकी स्तुति की। गजपुर नरेश स्वयंभू ने भगवान के निकट दीक्षा ग्रहण की और वह उनका मुख्य गणधर हुआ। राजकुमारी प्रभावती प्रधान आर्यिका हुई। धरणेन्द्र भगवान का अनुचर यक्ष हुआ और पद्मावती शासनदेवता वनी (१५/७-१२)।"

श्वेताम्वर परम्परा सम्मत आगमों में आचारांग निर्युक्ति को छोंड़कर अन्यत्र अहिच्छत्रा विषयक विशेष वर्णन नहीं प्राप्त होता। आंचरांग निर्युक्ति के अनुसार "भ० पार्श्वनाथ प्रव्रजित होकर तपस्या करते हुये एक समय कुरुजांगल देश में पधारे। वहाँ संखावती नगरी के निकटवर्ती निर्जन वन में वह ध्यानारुढ़ स्थित हुए। उनके पूर्वभव के वैरी कमठ नाम के असुर ने घनघोर वृष्टि द्वारा उन्हें जलमग्न करके ध्यान से च्युत करने का अथक प्रयास किया। नागराज धरणेन्द्र उसी अवसर पर भगवान की वन्दना करने के लिए वहाँ आ निकला। इस अकाल मूसलाधार वृष्टि से भगवान की रक्षा करने के लिए उसने उनके सिर के ऊपर अपने फणों का छत्र बनाया और असुर की उसके दुष्कृत्य के लिए घोर भर्त्सना की। असुर पराजित हुआ, उसने धरणेन्द्र से क्षमा माँगी, उपसर्ग समाप्त किया और भगवान के चरणों में शीश नवाया। उपसर्ग की उपशान्ति के पश्चात नागराज ने अपनी दिव्य शक्ति से भगवान की वहुत विनय भक्ति और प्रभावना की। कालान्तर में उक्त स्थान में भक्तजनों ने एक उत्तम जिन मन्दिर वनाकर उसमें तीर्थन्कर पार्श्वनाथ की नागफण-छत्रालंकृत प्रतिभा प्रतिष्ठित की। यह तीर्थ अहिच्छत्रा पार्श्वनाथ के नाम से लोक प्रसिद्ध हुआ और निकटवर्ती संखावती नगरी का नाम तभी से अहिच्छत्रा नगरी पड़ा।'

अहिच्छत्रा, इतिहास के आलोक में

२३ वें तीर्थन्कर पार्श्वनाथ एक वास्तविक, ऐतिहासिक पुरुष हुए हैं और उनकी जीवन की परम्पराज्ञात घटनायें सत्य हैं, इस विषय में स्वयं जैनों को तो कभी कोई सन्देह हुआ ही नहीं, किन्तु जैनेतर विद्वान, प्राच्यविद और इतिहासकार वर्तमान युग में वहुत समय तक अन्तिम तीर्थन्कर भ० महावीर को ही जैन धर्म का संस्थापक मानते रहे। शनैः शनैः जैन साहित्य, जैनधर्म और जैन इतिहास के तुलनात्मक अध्ययन तथा पुरातात्विक खोजों ने उनके मत में परिवर्तन कर दिया और अव प्राय: सव ही देशी एवं विदेशी विद्वानों ने भ० पार्श्वनाथ की ऐतिहासिकता को मान्य कर लिया है। (देखिये हमारी पुस्तक—जैनिज्म दी ओल्डेस्ट लिविंग रिलीजन, पृष्ठ १४-२०)। इसमें भी प्राय:

कोई विवाद नहीं है कि भ० पार्श्वनाथ का निर्वाण सम्मेद शिखर से भ० महावीर के निर्वाण से २५० वर्ष पूर्व हुआ था। महावीर-निर्वाण की तिथि ५२७ ई० पूर्व है और भ० पार्श्व की आयु १०० वर्ष की थी, अतः भ० पार्श्व का जीवनकाल ईसापूर्व ८७७-७७७ निश्चित होता है। ऐसी स्थिति में भ० पार्श्वनाथ के पौराणिक चरित्र में तथ्यांश होने ही चाहिएँ, उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनायें, तत्सम्वन्धित अधिकांश व्यक्ति और स्थान भी इतिहास सम्मत होने चाहियें। जन्म स्थान वाराणसी नगरी, दीक्षास्थान कुशस्थलपुर अपरनाम कन्नौज नगर, पारणास्थान हस्तिनापुर, उपसर्ग एवं केवल ज्ञान स्थल अहिच्छत्रा नगरी और निर्वाणस्थल सम्मेदशिखर वास्तविक स्थान हैं ही और आज भी वे उन्हीं नामों से प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत प्रसंग में अहिच्छत्रा नगरी ही अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। किन्तु क्योंकि लगभग एक हजार वर्ष से यह नगरी सर्वथा उजाड़ पड़ी रही आई लोक मानस में वह विस्मृत सी हो गयी। सुदूर दक्षिण में अधिकांशतः रचे जाने वाले पूर्वमध्यकालीन एवं मध्यकालीन दिगम्बर साहित्य में तथा प्रायः उसी काल में गुजरात सौराष्ट्र में रचे जाने वाले श्वेताम्बरी साहित्य में वह प्रायः उपेक्षित रही। और आज भी श्वे० मुनि कल्याण विजय जैसे खोजी विद्वानों को यह लिखना पड़ा कि उपर्युक्त अहिच्छत्रा तीर्थस्थान वर्तमान में कुरुदेश के किसी भूमि भाग में खण्डहरों के रूप में भी विद्यमान है या नहीं इसका विद्वानों को पता लगाना चाहिये।'

इसके यह भी अर्थ नहीं है कि सभी जैन इस तीर्थ को सर्वथा भूल चुके और यह कहाँ है यह बात जानते ही नहीं। उत्तर प्रदेश राज्य की रुहेलखंड कमिश्नरी के बरेली जिले की आंवला तहसील के अन्तर्गत रामनगर कस्बे के निकटवर्ती जंगल में फैले हुये प्राचीन खंडहर उसी अहिच्छत्रा के हैं, इस बात को रुहेलखंड के निवासी जैनीजनों ने जीवित बनाये रक्खा है। रुहेलखंड के इस भाग में चिरकाल से श्वेताम्बरजन प्रायः नहीं रहे और अहिच्छत्रा के आस-पास दिगम्बरों का आवास भी अपेक्षाकृत अति विरल रहा जिसके कारण इस स्थान की प्रसिद्धि कम हुई। तथापि अब से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व जनरल कनिंघम की पुरातात्विक पर्यवेक्षण रिपोर्टों में, एटकिन्सन के रुहेलखंड गजेटियर में, फुहरर के ग्रन्थ में तथा नेविल के बरेली जिला-गजेटियर आदि से प्रकट है कि इस स्थान के एक जैन तीर्थ होने की तथा भ० पार्श्वनाथ का उसके साथ सम्बन्ध होने की मान्यता मध्यकाल में बनी रही और अविच्छिन्न रूप से वर्तमान पर्यन्त चली आई है। गत कई दशकों में तो अहिच्छत्रा के खंडहरों की खुदाई, शोध-खोज और भी अधिक हुई और इस स्थान की प्राचीनता का और लगभग दो हजार वर्ष से अहिच्छत्रा नाम से ही प्रसिद्ध रहे आने की बात का पूर्णतया समर्थन हुआ। मध्य काल में रचित दिगम्बरी हरिषेणकृत बृहत्कथाकोश (१०वीं शती), प्रभाचन्द्र कृत आराधनासत्कथा प्रबंध (११वीं शती), नागराजकृत पुण्यास्त्रवकथाकोश (१४वीं शती), ब्रह्मनेमिदत्तकृत आराधनासार कथाकोश (१६वीं शती), आदि की कई कथाओं में अहिच्छत्रा के उल्लेख आये हैं। इनमें से सम्यक्त्व-उद्योत के दृष्टान्त स्वरूप पात्रकेसरि मुनि (७वीं शती) की कथा पर्याप्त प्रसिद्ध है। १७८४ ई० में कवि आसाराम ने 'अहिच्छत्र पार्श्वनाथ स्तोत्र' की रचना की थी। इन सब कथादिकों से तथा श्वे० जिनप्रभसूरि के विविध-तीर्थ-कल्प (१४वीं शती) से यह बात

भली प्रकार सिद्ध है कि दसवीं से अठारहवीं शती पर्यन्त भी जैनी जन इस स्थान से भली प्रकार परिचित थे।

विविध तीर्थकल्प के अहिच्छत्रा कल्प में लिखा है कि जम्बूदीप के भारतवर्ष के मध्यखंड में कुरुजंगल जनपद में शंखावती (संखावई) नाम ऋद्धि-समृद्धियुक्त नगरी थी, वहाँ पार्श्व स्वामी छद्मस्थ अवस्था में विहार करते हुए पहुँचे और कायोत्सर्ग तिष्ठे। पूर्वनिबद्ध वैर के कारण कमठासुर ने उनके ऊपर अविच्छिन्न जल वरसाया। चारों ओर जल ही जल हो गया, भगवान आकण्ठ उसमें निमग्न हो गये। नागराज धरणेन्द्र अपनी अग्रमहिषी (पद्मावती देवी) सहित वहाँ आया और उसने अपने सहस्त्र फण से उनके सिर के ऊपर छत्रमंडल बनाकर उपसर्ग का निवारण किया। उस समय से वह नगरी अहिच्छत्रा नाम से प्रसिद्ध हुई। नगर के प्राकार में स्थान-स्थान पर सर्प रूपी धरणेन्द्र की कुंडली के चिन्ह बन गये, जो आज भी उस प्राकार (के भग्नांशों) में दीख पड़ते हैं। वह जल सात कुंडों में भर गया, जो यहाँ विद्यमान हैं। उन कुंडों के जल में स्नान करने वाली मृतवत्सा (जिनके बच्चे जीवित नहीं रहते) स्त्रियों की संतान जीवित रहतीं हैं। उन कुण्डों की मिट्टी से धातुवादी लोग सुवर्ण सिद्ध होना बताते हैं। यहां एक सिद्धरसकूपिका भी दिखाई पड़ती है जिसका मुंह पाषाण सिला से ढका हुआ है। उसे खोलने के लिये एक म्लेच्छ राजा ने बहुत प्रयत्न किया, तीव्र अग्नि जलाकर भी उसे तोड़ना चाहा, किन्तु वह विफल प्रयत्न हुआ। इस नगरी के भीतर, बाहर, निकट व दिशाओं में सवालाख कूप हैं। पार्श्वनाथ की यात्रा करने आये हुये यात्रीगण अब भी जब भगवान का न्हवन उत्सव करते हैं तो दुष्ट कमठ प्रचण्ड पवन और घनघटा आदि द्वारा दुर्दिन कर देता है। मूलचैत्य से नातिदूर सिद्धक्षेत्र में धरणेन्द्र-पद्मावती समन्वित पार्श्वजिनालय बना हुआ है। नगर प्राकार के समीप नेमिनाथ की प्रतिमा से संशोभित, सिद्ध-बुद्ध नामक दो बालक रूपों से समन्वित सिंहवाहिनी अम्बिकादेवी की मूर्ति स्थित है। यहां उत्तरा नाम की एक निर्मल जल से भरी बावड़ी है जिसमें नहाने से और जिसकी मिट्टी का लेपन करने से कुष्ट रोग दूर हो जाता हैं। यहां के धन्वंतरी कूप की पीली मिट्टी से धातु विशेषज्ञ सोना बना सकते हैं। यहां के ब्रह्मकुंड के किनारे उत्पन्न मंडूकपर्णी ब्राह्मी के पत्तों का चूर्ण एकवर्गी गाय के दूध के साथ सेवन करने से बुद्धि और निरोगता बढ़ती है और स्वर गन्धर्व जैसा मधुर हो जाता है। अहिच्छत्रा के उपवनों में प्राय: सभी वृक्षों पर विभिन्न कार्यसाधक वन्दाक उगे मिलते हैं, और इन वनों में जयंती, नागदमनी, सहदेवी, अपराजिता, लक्ष्मणा, त्रिपर्णी, नकुली, सकुली, सर्पाक्षी, सुवर्णशिला, मोहिनी, श्यामा, रविभक्ता (सूर्यमुखी), निर्विर्श्री मयूरशिखा, शल्या, विशल्या आदि अनेक महौषधियां मिलती हैं। अहिच्छत्रा में विष्णु, शिव, ब्रह्मा, चण्डिकादि के मन्दिर तथा ब्रह्मकुण्ड आदि लौकिक (अजैन) तीर्थ भी हैं। यह नगरी कन्ह ऋषि की जन्म भूमि भी है।

जिनप्रभसूरि गुजरात के श्वेताम्बर यति थे और १३३० ई० के लगभग उन्होंने उत्तर प्रदेश के तीर्थों की यात्रा करते हुये इस अहिच्छत्रा तीर्थ की भी यात्रा की थी। उनका कुछ कथन परम्परा से सुना सुनाया, कुछ दन्तकथाओं पर आधारित और बहुत स्वयं देखा हुआ है। वर्तमान

अहिच्छत्रा के विषय में पुरातात्विक शोध-खोज से जो कुछ ज्ञात है और जो कुछ वर्तमान है उससे इस विषय में तनिक भी सन्देह नहीं रहता कि उन्होंने इसी अहिच्छत्रा की यात्रा की थी। तदुपरान्त श्वेताम्बर यात्री इधर आये नहीं लगते, इसी से वे इसे भूल गये। आसपास के निवासी दिगम्बरों ने ही उसे धर्मतीर्थ बनाये रक्खा।

अहिच्छत्रा नगर का ध्वंस १००४ ई० के कुछ काल उपरान्त ११वीं शती ई० में ही हो गया लगता है, क्योंकि उक्त वर्ष का एक शिलालेख ही वहां से प्राप्त अन्तिम शिलालेख है। उसी समय के लगभग जैन महाकवि वाग्भट ने इसी नगर में अपना सुन्दर संस्कृत ग्रन्थ, 'नेमिनिर्वाण काव्य', रचा था, जैसा कि उक्त काव्य की अन्त्य प्रशस्ति के एक पद्य—

अहिच्छत्र पुरोत्पन्न प्राग्वाट कुल शालिनः।
छाहडस्य सुतश्चक्रे प्रबन्धं वाग्भट्टः कविः॥

से प्रगट है (देखिये जैन सन्देश-शोधांक १८, पृष्ठ २८०-२८२)। यह जैन कवि वाग्भट प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य वाग्भट से भिन्न हैं, जो सिन्धुदेश के निवासी थे।

छठीं-सातवीं शती ई० में स्वामि पात्रकेसरि ने, जो मूलतः एक प्रकाण्ड ब्राह्मण विद्वान थे, इसी अहिच्छत्रा के जिनालय में पद्मावतीसमन्वित फणमंडलालंकृत भ० पार्श्वनाथ की प्रतिमा के दर्शन करके अपनी न्यायशास्त्र विषयक शंका का समाधान प्राप्त किया था और सम्यग्दृष्टि प्राप्त की थी। तभी उन्होंने अपने सुप्रसिद्ध पात्रकेसरिस्तोत्र की रचना की थी। सातवीं शती में ही, लगभग ६३० ई० में, चीनी यात्री हुएनसांग ने इसी अहिच्छत्रा की यात्रा की थी। उसने इसका नाम 'ओहि-चितालो' लिखा है, जो उस नाम का चीनी रुपान्तर है। उस समय यह एक समृद्ध नगर था। उस समय यहां बौद्ध स्तूप और कई बौद्ध विहार थे, जैनों और शैवादिकों के भी कई मन्दिर थे और उन लोगों की यहां बहुतायत थी। इस यात्री ने भी यहां के कुंडों और कूपों का वर्णन किया है। उसने यह भी लिखा है कि जब महात्मा बुद्ध इस नगर में आये थे तो यहां एक नागराज ने उनके ऊपर अपने फण की छाया की थी और यह कि उसी से इस स्थान का नाम अहिच्छत्रा पड़ा। किन्तु इस कथन का अन्य कोई साहित्यिक या पुरातात्विक आधार नहीं है। पार्श्वनाथ सम्बन्धी अनुश्रुति को ही बौद्धों ने यह रूप दे दिया लगता है और इसे या तो हुएनसांग ने स्वयं घड़ा है अथवा सुनी सुनाई स्थानीय बौद्ध किंवदन्ती के आधार पर लिखा है।

इसी प्रकार उत्तर काल के स्थानीय शैव-वैष्णवादि में यह किम्वदंती चल पड़ी कि कौरव-पाडवों के युद्धविद्यागुरु द्रोणाचार्य का अनुचर 'आदि' नाम का एक अहीर था। एक दिन वह जंगल में पड़ा सो रहा था और नाग उसके ऊपर फण की छाया किये हुये था। द्रोण ने यह दृश्य देखा और भविष्यवाणी की कि यह व्यक्ति राजा होगा। जब द्रोण ने उत्तर पांचाल राज्य जीता तो उस अहीर को अपने प्रतिनिधि के रूप में उसका राज्य सौंप दिया। इस आदि राजा के नाम से ही यहां का प्राचीन किला आदिकोट कहलाया और यह स्थान आदिक्षेत्र या अहिक्षेत्र अथवा अहिच्छत्रा

कहलाया। किन्तु इस किवंदन्ती का भी कोई साहित्यिक या पुरातात्विक अन्य आधार नहीं है। पार्श्व सम्बन्धी जैन अनुश्रुति को ही अपनी-अपनी परम्परा के साथ जोड़ने के लिये यह कहानियां घड़ी गई लगती हैं। महाभारत ग्रन्थ में अहिच्छत्रा का नमोल्लेख अवश्य हुआ है किन्तु उसके नामकरण का कोई कारण अथवा आदि अहीर के प्रसंग का कोई संकेत भी वहां नहीं है। महाभारत ग्रन्थ के मूल दशसहस्त्रीरूप की रचना भी ईस्वी सन् के प्रारम्भ से दो-एक शती पूर्व ही हुई मानी जाती है, भले ही उसमें उसके हजार बारह सौ वर्ष पूर्व की घटनाओं का वर्णन है। अतएव पार्श्वसम्बन्धी अनुश्रुति और उसके आधार पर नगर का अहिच्छत्रा नाम उपलब्ध महाभारत की रचना के समय भी लगभग छः सात सौ वर्ष पुराना हो चुका था। उस समय भी वह इसी नाम से प्रसिद्ध एक समृद्ध राजधानी थी। स्वभावतः महाभारतकार ने उसका इस नाम से उल्लेख किया।

हुएनसांग के समकालीन सम्राट हर्षवर्द्धन के साम्राज्य में अहिच्छत्रा एक भुक्ति (सूबा) थी। उसके पूर्व, गुप्त साम्राज्य की भी यह एक महत्वपूर्ण भुक्ति रही थी और उसका शासक एक कुमारामात्य होता था। सम्राट समुद्रगुप्त ने ३५० ई० के लगभग अहिच्छत्रा के नागनरेश अच्युतनन्दि को पराजित करके उसके राज्य को अपने साम्राज्य में मिलाया था। गुप्तकाल का एक शिलालेख अहिच्छत्रा के कोत्तरिखेड़ा नामक टीले से प्राप्त हुआ है जो उस काल में उस स्थान पर स्थित भ० पार्श्वनाथ के मन्दिर के एक वेदिकास्तम्भ पर उत्कीर्ण है और जिसमें महाचार्य इन्द्रनंदि के शिष्य महादरि के द्वारा पार्श्वपति के मन्दिर में दान देने का उल्लेख है। गुप्तकाल में इस नगर में, विशेषकर उसके कोत्तरिखेड़ा क्षेत्र में, कई जिनायतन थे, जिनमें से कुछ उसी काल में बने और कुछ और भी प्राचीन काल से चले आते थे। वहां एक प्राचीन जैन स्तूप भी था। ऐसा लगता है कि यह स्थान ही इस नगर का मुख्यतः जैन केन्द्र था और संभवतया उक्त स्तूप उस स्थान पर ही निर्मित किया गया था जहां भ० पार्श्वनाथ पर उपसर्ग हुआ था, उन्हें केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था और उनका प्रथम समवशरण रचा गया था। यहां के एक प्राचीन मन्दिर की एक वेदी के सम्बन्ध में तो एक पुरानी किम्वदंती यह चली आती है कि उसे रातोरात देवताओं ने बना दिया था। यह अनुश्रुति अब से सौ-डेढ़ सौ वर्ष पूर्व भी स्थानीय लोगों में प्रचलित थी और कनिंघम आदि पिछली शती के अंग्रेज लेखकों ने भी उसका उल्लेख किया है। इसी वेदी में स्थित प्राचीन जिनप्रतिमा को ही संभवतया वर्तमान में 'तिखालवाले बाबा' कहते हैं।

समुद्रगुप्त-द्वारा पराजित अच्युतनाग ने अथवा उसके किसी पूर्वज ने अहिच्छत्रा के अन्तिम मित्रवंशी नरेश से यह राज्य हस्तगत किया लगता है। इन नरेशों का, जिन्हें प्रायः सामान्यः 'मित्र राजे' नाम दिया जाता है, अहिच्छत्रा पर मौर्य साम्राज्य के अन्तिम दिनों, ईसापूर्व ३री शती के अन्त के लगभग से ही, स्वतन्त्र राज्य था। २री शती ई० में लगभग सौ-सवा सौ वर्ष इन्हें कुषाण सम्राटों की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी, तदनन्तर ये फिर स्वतन्त्र हो गये। किन्तु इस काल में भी यहां के राजे जैन धर्म के प्रश्रयदाता रहे थे, यह बात उन अनेक तीर्थंकर प्रतिमाओं से सिद्ध होती है जिनकी प्रतिष्ठा उन पर उत्कीर्ण लेखों के अनुसार सन् ईस्वी ९६ से १५२ के बीच हुई थी। इन मूर्तियों में भी अधिकतर पार्श्वनाथ और नेमिनाथ की ही हैं। उस समय यहां ईंटों से निर्मित एक

प्राचीन जैन स्तूप भी था। यह स्तूप इस स्थान के मुख्य पार्श्व जिनालय के पूर्व की ओर स्थित था और एक अपेक्षाकृत छोटा जिन मन्दिर उक्त बड़े मन्दिर के उत्तर की ओर स्थित था। कोत्तरिखेड़े की खुदाई एवं शोध-खोज में कुषाणकालीन उपरोक्त मन्दिरों, मूर्तियों, स्तूप आदि के अवशेष मिले हैं। कुछ विद्वानों ने इस कोत्तरिखेड़ा को कोट्टारि या कुटारी खेड़ा लिखा है। उसी कुषाणकाल की इसी क्षेत्र में प्राप्त एक यक्षमूर्ति पर नगर का 'अहिच्छत्रा' नाम २री शती ई० की लिपि में स्पष्ट रूप से लिखा मिला है।

ऐसा लगता है कि दूसरी शती ई० के उत्तरार्ध में इस अहिच्छत्रपुर का राजा ईक्ष्वाकुवंशी, काण्वायनगोत्री पद्मनाभ था जो जैन धर्मावलम्बी था। जब उसके राज्य पर एक प्रबल शत्रु ने आक्रमण किया तो उसने अपने दोनों पुत्रों और छोटी बहिन को अमूल्य पारवारिक रत्नों सहित ४० विश्वस्त सेवकों की सुरक्षा में दक्षिण भारत में भेज दिया। यह दोनों कुमार भी, जो दद्दिग और माधव नाम से प्रसिद्ध हुये, परम जिनभक्त थे और इन पर पद्मावतीदेवी की कृपा थी। कर्णाटक देश में पहुंचने पर इन्हें काणरगण के आचार्य सिंहनन्दि के दर्शन प्राप्त हुये। उक्त गुरु के आशीर्वाद, सहायता और उपदेश से उक्त राजकुमारों ने १८८ ई० में गंगवाड़ि राज्य की स्थापना की। मैसूर का वर्तमान राज्यवंश उन्हीं की परम्परा में है। यह गंग राज्यवंश अत्यन्त दीर्घजीवि रहा और प्रायः सदैव जिनभक्त बना रहा। मैसूर राज्य में प्राप्त अनेक शिलालेखों से उक्त गंगवंश की अहिच्छत्रा के इन राजकुमारों द्वारा स्थापना किये जाने के वर्णन मिलते हैं।

इस घटना के भी लगभग ४०० वर्ष पूर्व (ईसा पूर्व २री शती में) अहिच्छत्रा का राजा आषाढ़सेन था, जो भागवत और वैहिदरी का पुत्र, वंगपाल और तेवणी का पौत्र तथा अहिच्छत्रा के ही राजा शोनकायन का प्रपौत्र था। यह आषाढ़सेन भी जैन था और इसने अपनी बहिन गोपाली के पुत्र, कौशांबी नरेश बहसतिमित्र के राज्य में स्थित पभोसा के जैन तीर्थस्थान पर मुनियों के लिये गुफायें बनवाई थीं—वहीं से उसके दान का उल्लेख करने वाला शिलालेख मिला है, जिसमें उसके वंश का परिचय तथा अहिच्छत्रा से उसका सम्बन्ध दिया हुआ है। संभवतया आषाढ़सेन का पुत्र या वंशज वह राजा वसुपाल था जिसने अहिच्छत्रा में प्राचीनकाल में भ० पार्श्वनाथ का मन्दिर बनवाया बताया जाता है।

इस प्रकार मौर्य काल तक अर्थात भ० पार्श्वनाथ के निर्वाण की ५वीं-६ठीं शती तक अहिच्छत्रा की प्राचीनता और उसके साथ जैनों का सम्बन्ध इतिहास प्रसिद्ध है।

नंदों और मौर्यों के समय में यह प्रदेश मगध राज्य का अंग था, किन्तु उसके पूर्व उत्तर-पांचाल की राजधानी इस अहिच्छत्रापुरी में स्वतंत्र राजे राज्य करते थे। इस बात की पूरी संभावना है कि लगभग ईसा पूर्व १०वीं शती से ईसापूर्व ५वीं शती पर्यन्त इस स्थान में नाग राजाओं का राज्य था और भ० पार्श्वनाथ के समय में इस नगर का राजा नागराज धरणेन्द्र था और उसकी अग्रमहिषि यक्षकन्या पद्मावती थी।

वस्तुतः यक्ष, भृक्ष, असुर, दैत्य, नाग, किन्नर, गन्धर्व इत्यादि भारतवर्ष के विभिन्न भागों में निवास करने वाली अति प्राचीन मनुष्य जातियां थीं। कालदोष से वह जातियां समाप्त हो गईं अथवा नवागत-नवोदित जातियों में विलीन हो गई और उनकी स्मृति ही शेष रह गई। क्योंकि अपने समय में उन्होंने सभ्यता, भौतिक संस्कृति, विज्ञान आदि में अत्यधिक उन्नति कर ली थी, लोक स्मृति में वे अनेक चमत्कारी शक्तियों से युक्त रही समझी जाती रहीं, और इसीलिये संभवतया उत्तर काल के जैन, ब्राह्मण, बौद्ध आदि पुराणकारों ने उन्हें अलौकिक शक्ति सम्पन्न देवयोनि के जीव प्रतिपादित कर दिया। ऋग्वेदादि से पता चलता है कि जब वैदिक आर्यशक्ति का इस देश में उदय हुआ और उत्तरी भारत में उक्त आर्यों ने फैलना प्रारम्भ किया तो उन्हें यहाँ के उक्त पूर्व निवासियों के साथ पग-पग पर घोर संघर्ष करना पड़ा। इन वैदिक आर्यों ने अपने उक्त शत्रुओं को दास, दस्यु, आदि घृणासूचक संज्ञायें दीं। इस रुहेलखंड या उत्तरपांचाल प्रदेश पर आर्यों के पौरव-वंश की भारत शाखा की त्रित्सु उपशाखा के क्षत्रियों ने सर्वप्रथम अपने पैर जमाये थे। इस वंश के दिवोदास और सुदास को शंवर नाम के एक दुर्दमनीय असुरनरेश से लोहा लेना पड़ा था। उक्त दैत्यराज शंवर असुर के ९९ दृढ़ दुर्ग, जो अष्टधातु के बने बताये जाते हैं, रुहेलखंड की तराई और भावर में तथा कुमायुं-गढ़वाल की पहाड़ियों में फैले हुये थे। दिवोदास और सुदास ने उक्त दुर्गों पर सैकड़ों बार आक्रमण किया। शनैः शनैः इन आर्य क्षत्रियों की शक्ति बढ़ती गई और यक्ष, असुर नाग आदि जातियां तराई के बीहड़ वनों और हिमालय के पार्वतीय प्रदेशों में सिमटती गईं। प्रारम्भ में यक्षों का प्रभुत्व था, फिर असुरों का हुआ, तदनन्तर नागों का हुआ और उनके बाद किरातों और किन्नरों का हुआ। अन्त में इन पार्वतीय प्रदेशों में खस-कुणिदों का प्रभुत्व स्थापित हो गया। बचे खुचे नाग, यक्ष, असुर आदि ने तराई के वनों में शरण ली। यक्ष और असुर तो महावीर और बुद्ध के समय तक समाप्तप्रायः हो गये, किन्तु नाग जाति फिर से भारतवर्ष के विभिन्न भागों में फैल गई और अनेक स्थानों में सत्तारूढ़ हुई। नागों का अस्तित्व तो गुप्तकाल के कुछ उपरान्त भी बना रहा। अस्तु, आदि अहीर वाली किम्वदन्ती में यदि कुछ तथ्य है तो इतना ही शायद है कि जब द्रोणाचार्य ने अपने शिष्यों, हस्तिनापुर के पांडव एवं कौरव राजकुमारों, की सहायता से अपने पूर्व किन्तु अभिमानी मित्र, पांचाल नरेश पृषत् के पुत्र एवं उत्तराधिकारी राजा द्रुपद को पराजित करके पांचाल देश के दो भाग किये, और दक्षिण पांचाल (राजधानी काम्पिल्य) को द्रुपद को लौटाकर, उत्तर पांचाल और उसकी राजधानी परिचक्रा (पांचालपुरी या शंखावती) पर अपना अधिकार रक्खा तो उसने अपने अनुचर आदि को यहां अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। आदि संभवतया कोई यदुवंशी राजकुमार था जिसने अपने राज्य और सगोत्रियों का किसी कारण से परित्याग करके विपन्नावस्था में इस प्रदेश में शरण ली थी और द्रोण का आश्रय प्राप्त किया था। कुछ काल तक आदि और उसके वंशजों ने यहां राज्य किया, तदुपरान्त उनका उच्छेद करके नागों ने यहां अपनी सत्ता स्थापित की। पार्श्वनाथ के समय में धरणेन्द्र नाम का नाग यहां का राजा था। उसने किसी पुराने यक्ष सर्दार की कन्या पद्मावती से विवाह किया। जब पार्श्वकुमार कान्यकुब्ज नगर में थे तो शायद यह दम्पति अकेले यात्रा करते हुये कमठ नामक एक दुष्ट तापसी के कोपभाजन बन गये, जिसने छल से इन्हें

विवश वन्दी वनाकर इनका वध करने का उपक्रम किया। वीर एवं दयालु पार्श्वकुमार ने इन्हें उस दुष्ट आततायी के वन्धन से छुड़ाकर अपना चिरउपकृत वना लिया। संभव है, वह कमठतापसी छद्मवेष में शंवर नाम का असुर सर्दार हो। यह ऋग्वेद वाला शंवर नहीं था, किन्तु उसका वंशज था और शायद कुलपरम्परा से इस वंश के असुर सर्दार की उपाधि 'शंवर' रहती आयी हो, इसी से उसका शंवर नाम से जैन अनुश्रुतियों में उल्लेख हुआ। उस असुर का मूल निवास स्थान भी तराई के यह भयंकर वन ही रहे प्रतीत होते हैं, जिनके एक भाग का नाम भीमाटवी था। संयोग से उस वन में विचरते हुये उस असुर ने पार्श्व मुनि को ध्यानारूढ़ देखा और उन्हें अपने पूर्व पराभव एवं अपमान का कारण जानकर उन पर नाना प्रकार के उपसर्ग करने प्रारम्भ किये। वन में आग लगा देना, अस्त्र-शस्त्रों से प्रहार करना, अनेक प्रकार उधम मचाना जव सव व्यर्थ हुआ तो उसने किसी नदी या जलाशय का बांध तोड़कर जलप्लावन किया, कृत्रिम वर्षा यदि वह कर सकता होगा तो वह भी की। उसी समय निकटवर्ती शंखावती के नागराज (अहिराज) धरणेन्द्र और उसकी प्रिया पद्मावती को भी अपने उपकारी एवं पूज्य भगवान के निकटवर्ती भीमाटवी में आने का समाचार मिला। वह तुरन्त उनके दर्शनार्थ सपत्नीक वहां पहुंचा। शंवर असुर के कुकृत्य को देखकर वह कुपित हुआ। वह भी विद्या-बुद्धि वल में उक्त असुर से कुछ अधिक ही था, अतएव उसने उसे पराजित किया, उसकी भर्त्सना की और उसे भगवान से क्षमा मांगने पर विवश किया। साथ ही जलप्लावन से भगवान को अंक में लेकर वाहर निकला और उनके शिर पर भी अपने नाग ध्वजांकित छत्र से छाया की। उपसर्ग दूर हुआ, भगवान को केवलज्ञान हुआ। धरणेन्द्र पद्मावती उनके परम भक्त, उपासक और प्रभावक वने। भगवान के समवशरण की सभा के भी मुख्य प्रवन्धक, व्यवस्थापक और प्रचारक वही थे। भगवान का लोकोपकारी दिव्य उपदेश सुनने के लिये आने वाले भव्य जनसमूह का आतिथ्य भार भी उन्होंने उठाया। और इन्हीं सव सुकृत्यों के कारण वह दम्पति परम्परा अनुश्रुति में भगवान पार्श्व के शासन-देवता और उनके शासन के रक्षक रूप में अमर हुये। इतना ही नहीं, मनुष्य से ऊपर उठाकर उन्हें देव-देवी वना दिया गया। पौराणिक कथनों की पौराणिकता निकालकर शुद्ध ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करने पर यह सव कुछ प्रायः इसी प्रकार घटित हुआ लगता है। कई विभिन्न नामों और नामरूपों वाली तथा नौ-नौ वार वसने-उजड़ने वाली यह अहिच्छत्रा महानगरी और नगरी न रहने पर भी जहां वह वसी थी वह भूमि और जिस प्रदेश में वह रही वह पांचाल या रूहेलखंड प्रदेश भी इस घटना के कारण धन्य हुआ और कम से कम भ० पार्श्व के उपासक जैनों का पुनीत तीर्थस्थल वना।

वैसे तो तीर्थंकर पार्श्वनाथ सम्पूर्ण विश्व के अहेतु परमवन्धु थे, अतएव उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना का स्मारक होने से यह अहिच्छत्रा मानव मात्र का तीर्थधाम है और अपने को भ० पार्श्व का उपासक एवं अनुयायी कहने वाले जैनी मात्र का, विना किसी साम्प्रदायिक भेदभाव के, परम पुनीत एवं वन्दनीय तीर्थस्थल है। तथापि यह भी एक तथ्य है कि इसके भग्नावशेषों में प्राप्त समस्त जिन प्रतिमायें दिगम्बर हैं और इस तीर्थ को जीवित वनाये रखने और चिरकाल से

वर्तमान पर्यन्त उसकी रक्षा करते रहने का श्रेय भी मुख्यतः रूहेलखंड-कुमायुं के बरेली, रामपुर, मुरादाबाद, नैनीताल आदि जिलों के निवासी दिगम्बर जैनों को ही है। उन्होंने इस तीर्थ की उन्नति और प्रवन्ध के लिये एक तीर्थक्षेत्र कमेटी भी बनाई हुई है। इन बन्धुओं के सद्प्रयत्नों का अनुमान इस तीर्थ के वर्तमान रूप के साथ उसके उस रूप की तुलना करने से सहज ही लगाया जा सकता है जो सन् १९१३ में दिगम्बर जैन डायरेक्टरी के साथ बम्बई से प्रकाशित 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन यात्रा दर्पण' पुस्तक के पृष्ठ २ पर लिखा मिलता है, यथा 'श्री अतिशय क्षेत्र, अहिक्षतजी सहारनपुर और लखनऊ के बीच रेलवे स्टेशन आंवला नाम का है। यहां से अहिक्षताजी ६ मील हैं। गांव का नाम रामनगर है। इस क्षेत्र पर श्री पार्श्वनाथ भगवान को तप के समय कमठ के जीव ने बहुत बड़ा उपसर्ग किया था और श्री भगवान को केवल ज्ञान हुआ था। हर साल चैत्रवदी ८ से १२ तक बड़ा मेला होता है। यात्रियों के ठहरने को रामनगर से बाहर एक बड़ी धर्मशाला है। वहां एक मकान में चरणपादुका हैं और यही स्थान अहिक्षतजी कहलाता है। गांव में एक माली के घर में जिनप्रतिमा भी विराजमान है।, इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि उपरोक्त मेले की परम्परा भी कम से कम लगभग दो सौ वर्ष से मिलती है जैसा कि कनिघम आदि के कथनों तथा कवि आसाराम विरचित अहिछित-पार्श्वनाथ स्तोत्र (१७८५ ई०) से पता चलता है, वैसे १४वीं शती के जिनप्रभसूरि भी अहिच्छत्रा के वार्षिक मेले की ओर संकेत करते हैं। यह ध्यातव्य है कि १८वीं शती ई० के उत्तरार्ध में, रूहेले पठानों के शासनकाल में भी, जिनकी प्रारंभिक राजधानी आंवला में थी और अहिच्छत्रा के किले का जीर्णोद्धार करने का भी जिन्होंने विफल प्रयत्न किया था, यह जैन तीर्थ जीवित बना रहा।

पारसनाथ किला

ऐसा प्रतीत होता है कि अहिच्छत्रा से विहार करके तीर्थंकर पार्श्वनाथ निकटवर्ती बिजनौर जिले के अन्तर्गत उस स्थान पर पहुंचे जो चिरकाल से 'पारसनाथ किला' नाम से लोक प्रसिद्ध रहता आया है। वहां उनका समवशरण तो आया ही लगता है, केवल ज्ञान के पूर्व हस्तिना-पुर से पारणोपरान्त विहार करके अहिच्छत्रा की भीमाटवी में पहुंचने के पूर्व भी वह कुछ समय इस स्थान पर तिष्ठे और तपस्या की थी। अतएव यह उनकी तपोभूमि और देशनाभूमि रही प्रतीत होती है।

बिजनौर जिले के नगीना नामक कस्बे के उत्तर पूर्व ९ मील बढ़ापुर नाम का छोटा सा कस्बा है, जिसके ३ मील पूर्व दिशा में किसी अति प्राचीन बस्ती के खंडहरों से युक्त कई टीले हैं। ये टीले दो-डेढ़ वर्ग मील के क्षेत्र में फैले हैं और ये खंडहर ही 'पारसनाथ किला' नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें से मुख्य बड़े टीले पर एक सुदृढ़ प्राचीन दुर्ग के भग्नावशेष प्राप्त हुये हैं और विशेष रूप से यह किला ही पारसनाथ किला कहलाता रहा है। इस स्थान की व्यवस्थित रूप से पुरातात्विक शोध-खोज तो अभी नहीं हुई है, किन्तु जितनी कुछ भी हुई है उसके फलस्वरूप

यहां से अनेक खंडित-अखंडित तीर्थन्कर प्रतिमाय, कलापूर्ण तीर्थकर पट्ट, मानस्थंभ, जिन मूर्तियों से अलंकृत दरवाजों के सिरदल, तथा अन्य अनेक कलाकृतियां प्राप्त हुई हैं। एकाकी तीर्थन्कर प्रतिमाओं में भगवान पार्श्वनाथ की एक विशालकाय भग्न प्रतिमा है जो बढ़ापुर गांव में प्राप्त हुई थी, तथा तीर्थन्कर ऋषभदेव, संभवनाथ, चन्द्रप्रभु, शान्तिनाथ, नेमिनाथ और महावीर की भी प्रतिमायें हैं। एक खन्डित किन्तु अत्यन्त कलापूर्ण शिलापट्ट पर केन्द्र में एक तीर्थन्कर पद्मासनस्थ हैं। उनके बायें ओर कोष्ठक में दो खड्गासन तीर्थन्कर प्रतिमायें हैं जिनमें से एक सप्तफणालंकृत है अतएव निश्चित रूप से तीर्थकर-पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। दूसरी संभव है नेमिनाथ की हो। दायें भाग में भी उसी प्रकार दो प्रतिमायें होंगी, किन्तु वह भाग टूट गया है। पूरा पट्ट पंचजिनेन्द्र-पट्ट अथवा पंचवालयति-पट्ट रहा होगा। एक अन्य अत्यन्त कलापूर्ण पट्ट पर मध्य में कमलांकित आसन पर भ० महावीर विराजमान हैं, उनके एक ओर नेमिनाथ की तथा दूसरी ओर चन्द्रप्रभु की खड्गासन प्रतिमायें हैं। उत्फुल्ल कमलों से मन्डित प्रभामंडल, शिर के ऊपर छत्रत्रय, आजू-बाजू सुसज्जित गजयुगल, कल्पवृक्ष, चौरीवाहक, मालावाहक, पीठ पीछे कलापूर्ण स्तम्भ, कुवेर, अम्बिका आदि से समन्वित यह मूर्त्तान्कन अत्यन्त मनोज्ञ एव दर्शनीय हैं। पट्ट के पादमूल में एक पंक्ति का लेख भी है— 'श्री विरद्धमान सामिदेव सम १०६७ राणलसुत भरत प्रतिमा प्रठपि'। लेख की भाषा अपभ्रष्ट संस्कृत अथवा प्राकृत जैसी है और लिपि ब्राह्मी है। प्रो० कृष्णदत्त जी वाजपेयी ने इसे विक्रम संवत् १०६७ अर्थात सन् १०१० ई० का अनुमान किया है। किन्तु लेख को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि संभव है वह भगवान महावीर का संवत्—महावीरनिर्वाण संवत् हो, जिसके अनुसार यह लेख एवं प्रतिमापट्ट सन् ५४० ई० का होना चाहिये। लेख की भाषा और लिपि भी ११वीं शती की न होकर गुप्तोत्तर काल, ६ठीं-७वीं शती, की जैसी प्रतीत होती हैं। इस स्थान से गंगा-यमुना की मूर्ति युक्त द्वार की चौखट
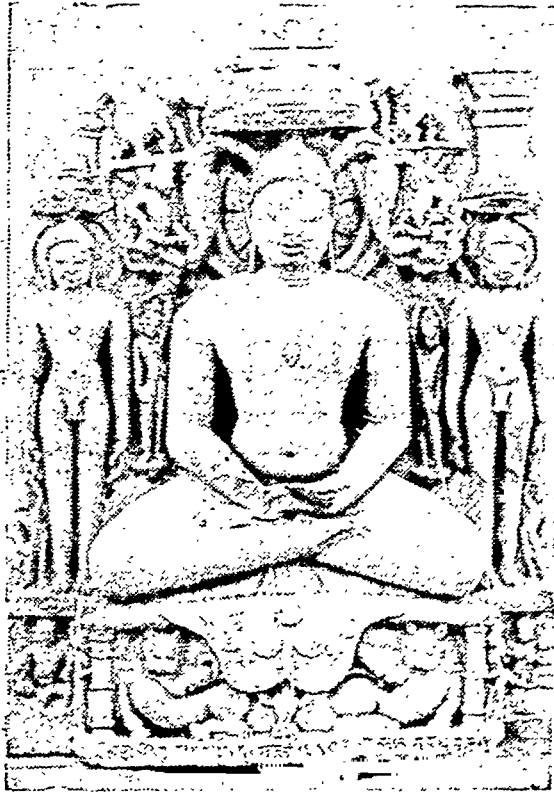
प्राचीन तीर्थङ्कर प्रतिमा (पारसनाथ किला, जिला विजनौर)

के अंश भी मिले हैं, जिनका प्रचलन गुप्तकाल में हुआ था। गुप्त शैली की अन्य कई कलाकृतियाँ भी इस स्थान में प्राप्त हुई हैं। अतएव यह स्थान गुप्तकाल जितना प्राचीन तो है ही। और ११वीं-१२वीं शती तक यहाँ अच्छी बस्ती रही प्रतीत होती है। ये विविध तथा अनेक जैन कलाकृतियां, कई जैन मन्दिरों के तथा एक अच्छे जैन अधिष्ठान (मठ या विहार) के चिन्ह यह सूचित करते हैं कि गुप्तोत्तर काल में यह स्थान एक समृद्ध एवं प्रसिद्ध जैन केन्द्र रहा होगा। इस स्थान से प्राप्त तीर्थन्कर प्रतिमायें भी सभी दिगम्बर हैं, जैसा कि मध्यकाल से पूर्व प्रायः सभी जिन प्रतिमायें होती थीं। पूर्वोक्त बढ़ापुर वाली विशालकाय पार्श्वप्रतिमा धरणेन्द्र पद्मावती समन्वित है, उसका घटाटोप फणमंडल भी दर्शनीय है और सिंहासन पर भी सर्प की एड़दार कुंडलियां दिखाई गई हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पारसनाथ किला के मुख्य जिनप्रासाद की मूलनायक प्रतिमा यही होगी। और जिस समय यह प्रतिष्ठित की गई होगी उस समय तक भ० पार्श्वनाथ के उपसर्ग की घटना तथा इस स्थान के साथ भी उनका सम्बन्ध रहे होने की बात स्थानीय जनता की स्मृति में सुरक्षित थी। संभव है कि भ० पार्श्वनाथ के समय से ही यह स्थान उनके नाम से प्रसिद्ध हो चला हो।

पूर्व मध्यकाल में इस प्रदेश में ध्वजवंशी नरेशों का शासन रहा अनुमान किया गया है। उनके मयूरध्वज, पीतध्वज, सीरध्वज, सुहिलध्वज आदि नाम प्राचीन स्थानीय अनुश्रुतियों में प्राप्त होते हैं। कनिघम, एटकिन्सन आदि पुराविदों के अनुसार ये ध्वजवंशी राजे जैनधर्म के अनुयायी थे। संभव है कि इसी वंश के जैन नरेशों के समय में यह जैन केन्द्र सर्वाधिक फला-फूला हो। यह भी हो सकता है कि इस वंश का संस्थापक भ० पार्श्वनाथ का परम भक्त रहा हो और इसी कारण उसने अपनी राजधानी अथवा प्रधान दुर्ग का नाम पार्श्वनाथदुर्ग रक्खा हो जो मध्यकाल में पारसनाथ किला कहलाने लगा। इस स्थान से अनेक जैन मूर्तियाँ तथा अन्य कलाकृतियां आस-पास के बिजनौर, नगीना आदि नगरों और ग्रामों के मन्दिरों में भी पहुंच गयीं और शैलीसादृश्य से वे बहुधा सहज ही चीन्ह भी ली जाती हैं। व्यक्तिगत रूप से भी न जाने कितनी सामग्री यहाँ से स्थानान्तरित होकर लोगों के मकानों आदि के बनाने में काम आ गई होंगी।

किला मोरध्वज

ध्वजवंश का सर्व प्रसिद्ध नरेश, जो संभवतया इस वंश का संस्थापक भी हो, मयूरध्वज था। लोक कथाओं में वह मोरधज के नाम से प्रसिद्ध है। कुछ उसे महाभारत काल में हुआ मानते हैं और कुछ पूर्व मध्यकाल में। इस राजा के नाम पर एक प्राचीन दुर्ग के भग्नावशेष प्रसिद्ध हैं। रूहेलखंड तराई के कूल पर, बिजनौर जिले के नजीबाबाद नगर से ६ मील उत्तरपूर्व में, कोटद्वारा जाने वाली सड़क के पूर्व की ओर, ८०० फुट × ६२५ फट परिमाण के एक अंडाकार भग्न

दुग को किला-मोरधज नाम से पुकारा जाता रहा है। इस किले के भीतर पूर्वी दीवार के मध्य के निकट स्थित एक ऊँचे टीले को शीगिरि नाम से पुकारा जाता है। संभव है यह श्री गिरि या श्री गृह का अपभ्रष्ट रूप हो और उक्त स्थान पर एक उत्तुंग जिनालय रहा हो। किले के खण्डहरों में अनेक प्राचीन कलावशेष, जिनमें देव मूर्तियां भी हैं, प्राप्त हुये हैं। इस स्थान की भग्न मूर्तियों और पाषाणखंडों से ही निकटवर्ती पत्थरगढ़ नाम का किला निर्मित हुआ बताया जाता है। बिजनौर जिले के मंडावर नामक स्थान को हुएनसांग कालीन मतिपुर नगर से चीन्हा जाता है।

तराई क्षेत्र में ही, नैनीताल और रामपुर जिलों की मध्यवर्ती सीमा के निकट, चतुर्भुज नाम का ध्वस्त नगर है। यह नाम अर्वाचीन है और वहाँ से प्राप्त एक चतुर्भुज मूर्ति के कारण प्रसिद्ध हो गया। स्थान का प्राचीन मूल नाम क्या था, यह ज्ञात नहीं है, किन्तु वहाँ भी अनेक टीले बिखरे पड़े हैं और उनमें भी विभिन्न धर्मों से सम्बन्धित पुरातत्वावशेष मिलते रहे हैं। बदायुं जिले के मुख्य नगर बदायुं का मूल नाम बोदमयूत था और मुसलमानों के आगमन से पूर्व यहां राष्ट्रकूट वंशी नरेशों का राज्य था। पीलीभीत जिले में देवल नामक स्थान छिन्दुवंशी नरेशों की राजधानी ८वीं से १०वीं शती पर्यन्त रही। यह वंश नागवंश की ही एक शाखा रहा प्रतीत होता है। मुरादाबाद जिले में आम्रोद्यानपुर (अमरोहा), चौमुत्रा (मुरादाबाद) और संभलक-पुर (संभल) प्राचीन स्थान हैं।

इस प्रकार वर्तमान रूहेलखंड या बरेली कमिश्नरी के विभिन्न जिलों में अनेक प्राचीन स्थल हैं जिनमें से बहुत से उजड़ गये और अब टीलों-खेड़ों आदि के रूप में उनके भग्नावशेष ही शेष हैं। कुछ एक बच रहे, बसे रहे, किन्तु मुस्लिम शासन काल में उनके प्राचीन जैन, बौद्ध, शैव-वैष्णवादि धर्मायतन विध्वंस कर दिये गये। सभी प्राचीन स्थलों की सन्तोषजनक शोध-खोज भी नहीं हुई है। तथापि जितना कुछ हुआ है उससे इस विषय में तनिक भी सन्देह नहीं रहता कि इस सम्पूर्ण क्षेत्र के साथ और इसके प्रायः सभी प्रमुख प्राचीन स्थानों के साथ जैनों का और जैन संस्कृति का अल्पाधिक घनिष्ट सम्बन्ध अत्यन्त प्राचीन काल से रहता आया है।

जैन धर्म की प्राचीनता

धर्मतत्व शाश्वत है, उसका न कोई आदि है और न अन्त। किन्तु अमुक-अमुक नामांकित धर्म-परम्पराओं में आपेक्षिक प्राचीनता-अर्वाचीनता का विकल्प ऐतिहासिक दृष्टि से होता ही है। यह भी आवश्यक नहीं है कि जो धार्मिक सम्प्रदाय जितना अधिक प्राचीन होगा वह उतना ही श्रेष्ठ और सर्वग्राह्य होगा। तथापि, जो धर्मपरम्परा श्रेष्ठ और सर्वग्राह्य होने के साथ-साथ प्राचीन भी सिद्ध हो तो वह उसकी एक अतिरिक्त विशेषता ही है। जैन परम्परा की प्राचीनता उपरोक्त वर्णन एवं विवेचन से ईसा से लगभग एक सहस्त्र वर्ष पूर्व तक तो आधुनिक इतिहासकारों द्वारा प्रायः

स्वीकृत ही हो चुकी है। तथाकथित हिन्दूधर्म की शैव, शाक्त, वैष्णवादि परम्पराओं का तथा बौद्ध धर्म का उदय २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के पश्चाद्वर्ती काल की ही घटनायें हैं। भ० पार्श्व के समय में वैदिक धर्म अपने जीवन के संध्याकाल में था और श्रमण तीर्थंकरों के विचारों के प्रभाव से उसमें औपनिषदिक अध्यात्मवाद का उस समय विशेष प्राबल्य हो चला था।

भ० पार्श्व के पूर्ववर्ती २२वें तीर्थंकर नेमिनाथ अपरनाम अरिष्टनेमि महाभारतकालीन नारायण कृष्ण और हस्तिनापुर के कुरुवंशी कौरवों एवं पांडवों के समकालीन थे। वह स्वयं कृष्ण के ताऊजात भाई थे और यदुवंशियों (हरिवंशियों) की प्रारम्भिक राजधानी शौरिपुर में महाराज समुद्रविजय की रानी शिवादेवी की कुक्षि से उनका जन्म हुआ था। शौरिपुर का त्याग करके यादवों ने पश्चिम समुद्रतटवर्ती द्वारका को राजधानी बनाया। वहीं निकटवर्ती जूनागढ़ की राजकुमारी राजुलदेवी के साथ नेमिनाथ के विवाह के अवसर पर मूक पशुओं की दशा से द्रवित नेमिकुमार ने भोग-ऐश्वर्य का त्याग करके गिरिनगर (उर्ज्जयंत पर्वत) के शिखर पर तपस्या की और वहीं से निर्वाण लाभ किया। महाभारत में वर्णित मूल घटनाओं तथा उसके कृष्ण आदि पात्रों को अब ऐतिहासिक स्वीकार किया जाने लगा है और इस प्रकार २२वें तीर्थंकर नेमिनाथ की ऐतिहासिक... भी स्वतः सिद्ध हो जाती है। ईसा पूर्व १०वीं-९वीं शती के गिरनार से प्राप्त एक अभिलेख में खिल्दिया (मध्य एशिया) के तत्कालीन शासक नेबुचेदनजर द्वार 'गिरनार के स्वामि नेमिनाथ' की पूजार्थ दान देने का उल्लेख है। यह तथ्य भी तीर्थंकर नेमिनाथ की ऐतिहासिकता का समर्थक है। यजुर्वेद आदि में भी अरिष्टनेमि का उल्लेख है। रामायण में वर्णित अयोध्यापति रघुवंशी महाराज रामचन्द्र के समकाकीन २०वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ थे। स्वयं राम भी तपश्चरण करके अर्हंतकेवलि और मोक्षगामी सिद्ध परमात्मा हुये। जैन पद्मपुराण में उन्हीं के चरित्र का वर्णन है। हिन्दू पुराणों में काकन्दीनगरी में उत्पन्न ९वें तीर्थंकर पुष्पदत्त का काकुत्स्थ नाम से वर्णन है और प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को तो विष्णु का अवतार ही प्रतिपादन किया गया है और उनके ज्येष्ठ पुत्र भरतचक्रवर्ती के नाम पर ही इस देश का भारतवर्ष नाम पड़ा, यह स्पष्ट कथन किया गया है। भ० ऋषभदेव का उल्लेख ब्राह्मण परम्परा के सर्वप्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में भी है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि शैव परम्परा के महादेव, शंकर और शिव तथा प्राचीन योगिपरम्परा के प्रवर्त्तक आदिदेव भी यह आदि तीर्थंकर ऋषभदेव ही हैं। सिन्धु घाटी की प्रागैतिहासिक एवं,प्राग्-आर्य सभ्यता के जो अत्यन्त प्राचीन अवशेष मोहन्जोदड़ों, हड़प्पा आदि स्थानों में प्रकाश में आये हैं उनसे भी यह प्रमाणित होता है कि उस काल और उस प्रदेश में भी वृषभलांछन दिगम्बर योगिराज आदितीर्थंकर ऋषभदेव की पूजा प्रचलित थी। वस्तुतः भगवान ऋषभदेव का जन्म जिस सुदूर अतीत काल में हुआ था उस समय भोगभूमि की व्यवस्था थी। मनुष्य का जीवन प्रायः पूर्णतया प्रकृत्याश्रित था, कर्म करना उसने अभी सीखा ही नहीं था। मनुष्य की अधुनाज्ञात प्राचीनतम प्रागैतिहासिक सभ्यताओं का भी संभवतया तब तक उदय नहीं हुआ था। १५वें कुलकर एवं मनु और प्रथम तीर्थंकर आदिपुरुष भगवान ऋषभदेव ने ही इस कल्पकाल में सर्वप्रथम मानवी सभ्यता का ॐ नमः किया, मनुष्यों को असि, मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य आदि कर्म सिखायें, अक्षरज्ञान एवं अंक ज्ञान दिया, ग्राम नगर

आदि वसाये, देश विभाजन और राज्यव्यवस्था की तथा अन्त में मोक्षमार्ग का उपदेश दिया, और स्वयं उक्त मार्ग पर चलकर मोक्षगामी हुए। उन्हीं की परम्परा में समय-समय पर २३ अन्य तीर्थंकर हुये जिनमें वर्द्धमान महावीर (छठी शती ईसा पूर्व) अन्तिम थे। भ० महावीर ने ही जैनधर्म को उसका वर्तमान रूप प्रदान किया। गत अढ़ाई सहस्त्र वर्ष से उन्हीं का धर्मशासन प्रवर्तित है। किन्तु महावीर जैनधर्म के संस्थापक नहीं है। उन्होंने किसी नवीन धर्म का प्रवर्त्तन नहीं किया, वरन् वृषभादि पार्श्वनाथ पर्यन्त पूर्ववर्ती २३ तीर्थंकरों द्वारा उपदेशित धर्म का ही जनभाषा में समयानुकूल उपदेश दिया और प्रचार किया।

इस प्रकार जैन परम्परा की प्राचीनता मानवी सभ्यता के आद्य युग तक पहुंचती है। अहिंसावादी, निवृत्तिप्रधान, आत्मधर्मी अर्हतों की यह आर्हत परम्परा विशुद्ध भारतीय एवं प्राग्वैदिक तथा प्रागार्य है। जब वैदिकधर्म का उदय हुआ तो इस आर्हत परम्परा से उसका भिन्नत्व सूचित करने के लिये उक्त वैदिक परम्परा को वार्हत परम्परा कहा गया। वैदिक परम्परा में ब्राह्मणों का प्राबल्य हुआ तो वह ब्राह्मण परम्परा कहलाने लगी। आर्हत परम्परा के पुरस्कर्त्ता मुख्यतया क्षत्रिय थे जो श्रमपूर्वक आत्म शोधन पर तथा व्रतचारित्ररूप संयम पर बल देते थे। अतएव वैदिक साहित्य में उन्हें व्रात्य कहा गया और उत्तर वैदिक साहित्य में श्रमण। श्रमण-ब्राह्मण संघर्ष चिरकाल तक चला, भारतीय संस्कृति की इन दोनों धाराओं में परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया और आदान-प्रदान भी होते रहे। कालान्तर में श्रमण परम्परा में आजीविक, बौद्ध आदि अन्य कई सम्प्रदाय भी उत्पन्न हुये। ब्राह्मण वैदिक परम्परा ने भी शनैः शनैः भागवत्धर्म तथा पौराणिक या सनातन हिन्दू धर्म का रूप लिया। और उक्त आर्हत, व्रात्य अथवा श्रमण परम्परा की मूलधारा का प्रतिनिधित्व निर्ग्रन्थ अथवा जैनधर्म करता रहा और आज भी कर रहा है।

जैन धर्म के मुख्य सिद्धान्त

समस्त आत्मीक विकारों को पूर्णतया जीतकर जो परमात्मा बन गये हैं उन्हें जिन, जिनेन्द्र या जिनेश कहते हैं। उनके द्वारा आचरित एवं उपदेशित धर्म को जैनधर्म कहते हैं और उसके अनुयायियों को जैन या जैनी। आत्मा-परमात्मा, लोक-परलोक, पुण्य-पाप और उनके फलाफल में आस्था रखने के कारण जैन धर्म एक सर्वथा आस्तिक धर्म है।

यह चराचर जगत या विश्व स्वतः सिद्ध, वास्तविक और अनादिनिधन है। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल, छः द्रव्य हैं, जो सभी शाश्वत और अविनश्वर हैं तथा इस विश्व के उपादान हैं। इनमें से जीव चेतनद्रव्य है, उसे ही आत्मा कहते हैं, शेष पांच जड़, अजीव अथवा अचेतन द्रव्य हैं। जीवात्मायें अनन्त हैं। प्रत्येक आत्मा की स्वतन्त्र सत्ता है। आत्मीक गुण-धर्म की दृष्टि से समस्त आत्मायें समान हैं, किन्तु विकासक्रम तथा उक्त गुणों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से इनमें परस्पर भिन्नता है। तथापि प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति निहित है।

आत्मायें मुख्यत: दो वर्गों में विभाजित हैं—मुक्त आत्मा और संसारी आत्मा। जिन आत्माओं ने स्वपुरुषार्थ द्वारा स्वयं को संसार के बन्धनों से सर्वथा स्वतन्त्र करके पूर्णत्व, परमात्मत्व एवं सिद्धत्व प्राप्त कर लिया है उन्हें मुक्तात्मा या सिद्ध परमेष्टि कहते हैं। शेष समस्त आत्मायें संसारी हैं और वे कर्मपुद्गल से बद्ध होने के कारण देव-नारक-मनुष्य-तिर्यन्च नामक चतुर्गतिरूप संसार में जन्म-मरण रूप संसरण करती रहती हैं।

जीव-अजीव के अनादि सम्बन्ध और क्रिया-प्रतिक्रिया के परिणाम स्वरूप जीव-अजीव आस्रव-बंध-संवर-निर्जरा-मोक्ष, इन सात तत्वों की निष्पत्ति होती है। इनमें पुण्य और पाप मिलाने से ये ही नव पदार्थ कहलाते हैं।

वस्तुस्वभाव का नाम धर्म है। जो जिस वस्तु का परानपेक्ष निजी स्वभाव है वही उसका धर्म है। जीव या आत्मा एक ज्ञान-विशिष्ट चेतन तत्व है। उसका अपना स्वभाव या धर्म शुद्ध, बुद्ध, निरन्जन, निर्विकार, ज्ञानदर्शनमयी है, किन्तु संसार, अजीव अथवा कर्मबन्धन में बंधे रहने के कारण उसका यह स्वभाव या धर्म प्रगट नहीं हो पाता। अतएव इस धर्म को प्राप्त कराने का जो मार्ग है उसे ही धर्ममार्ग या मोक्षमार्ग कहते हैं। इस मार्ग पर चलने से और उसके अनुसार साधना एवं आत्मशोधन करने से संसारी आत्मा बन्धन से निकल कर स्वतन्त्र एवं मुक्त हो जाती है, आत्मा परमात्मा बन जाती है। अपने जीवन में ही जो इस परमप्राप्तव्य को प्राप्त कर लेते हैं वही सकल परमात्मा, केवलि, जिन या अर्हत परमेष्ठि कहलाते हैं। उन्हीं में से कोई-कोई धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने के कारण तीर्थन्कर कहलाते हैं। उनके अनुयायीं निर्ग्रन्थ मुनियों में आचार्य, उपाध्याय और साधुसामान्य भेद करके इन तीनों को भी परमेष्टि संज्ञा दी जाती हैं। इस प्रकार अर्हत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु नामक पन्चपरमेष्टि ही मोक्ष मार्ग के प्रवर्त्तक, साधक, प्रेरक एवं रक्षक होने के कारण परम पूजनीय, श्लाधनीय एवं वन्दनीय हैं। उनकी पूजा, उपासना और भक्ति द्वारा ही मुमुक्ष को मोक्षमार्ग में रुचि उत्पन्न होती है और उस पर चलने की प्रेरणा मिलती है। परमेष्टि की भक्ति ही सर्वकल्याणकारी तथा नि:श्रेयस एवं अभ्युदय सुख प्रदान करने वाली है।

मोक्ष का मार्ग सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चरित्र रूप रत्नत्रयी की अराधना एवं प्राप्ति में निहित है। सभी व्यक्ति अपनी अपनी शक्ति और सामर्थ्य अथवा परिस्थितियों के अनुसार इस मार्ग का अवलम्बन ले सकते हैं। जो संसारदेह-भोगों से विरक्त होकर और समस्त परिग्रह का त्याग करके एकनिष्टता के साथ इस मोक्षमार्ग की साधना में रत होते हैं, उन साधुओं और साध्वियों की आचारसंहिता उच्चकोटि की होती है। किन्तु जो गृहस्थ श्रावक-श्राविका हैं और लौकिक जीवन यापन करते हैं उनके लिये श्रावकाचार के नियम और विधान हैं।

देवपूजा-गुरुपास्ति-स्वाध्याय-संयम-तप-दान रूप षट् दैनिक आवश्यक कर्मों का पालन, अहिंसा (संकल्पी हिंसा का त्याग)-सत्य-अचौर्य-शील (स्वदार सन्तोष अथवा स्वपुरुष सन्तोष)-परिग्रह

परिमाण नामक पांच अणुव्रतों का ग्रहण, मद्य-मांस-जुआ-चोरी-शिकार-वेश्यासेवन-परस्त्री (या परपुरुष) सेवन नामक सात व्यसनों का त्याग, क्षमा-मार्दव-आर्जव-सत्य-शौच-संयम-तप-त्याग-आकिन्चन-ब्रह्मचर्य नामक दशलाक्षण धर्म का आराधन एवं साधन, मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ नामक भावनाओं का मनन, धर्मपूर्वक काम और अर्थ पुरुषार्थों का सेवन, जो कुछ स्वयं के साथ घटता है उसे अपने ही किये गये शुभाशुभ कर्मों का फल जानकर समभाव से सहन करना और इस बात के लिये प्रयत्नशील रहना कि वर्तमान और भविष्य में ऐसे कार्य मन-वचन-काय से न करें जिनके फलस्वरूप अनिष्ट एवं अप्रिय घटनायें घटें, पुरूषार्थ प्रधान और आशावादी होते हुये आत्मविश्वास के साथ आत्मिक विकास के पथ पर अग्रसर होते जाना, सहिष्णुता, परोपकार और प्राणिमात्र की कल्याण कामना करते रहना-साधारणतया एक जैन गृहस्थ से यह सब अपेक्षित है। जैन धर्म का यही उपदेश है।
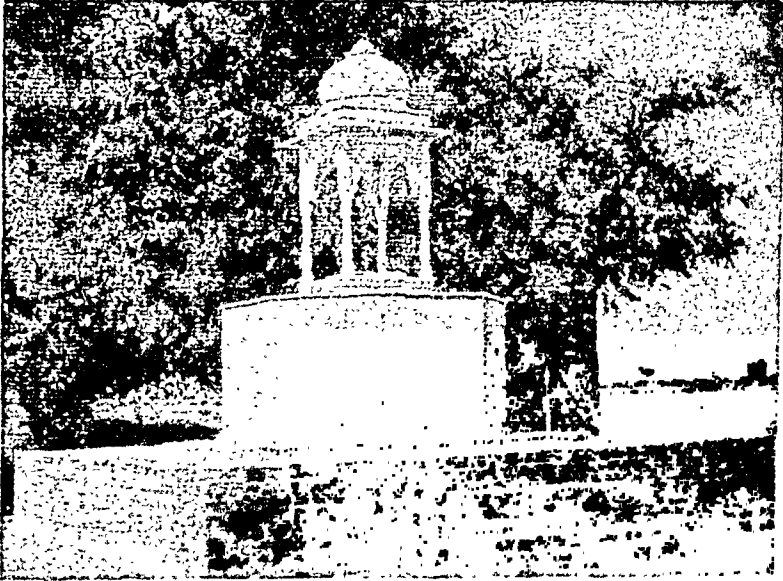
चरणपादुका (अहिच्छत्रा)
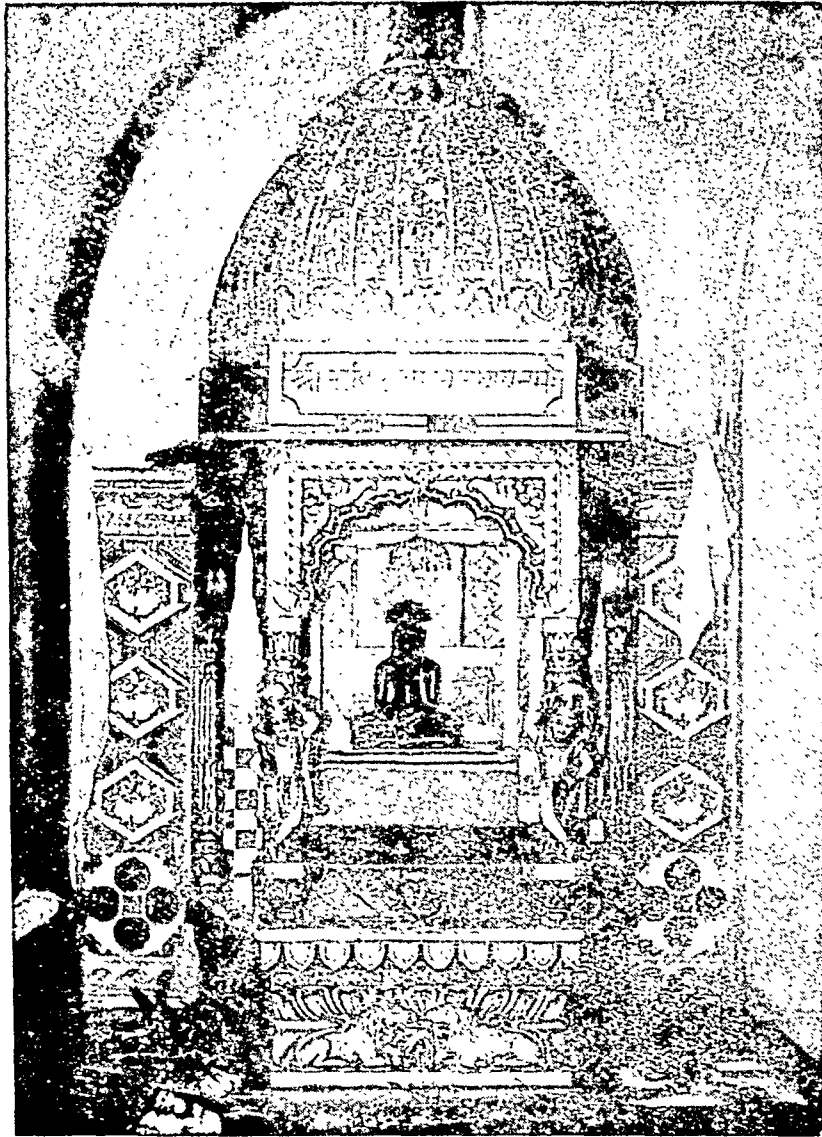
श्री दि० जैन मंदिर अहिच्छत्रा की मुख्य वेदी
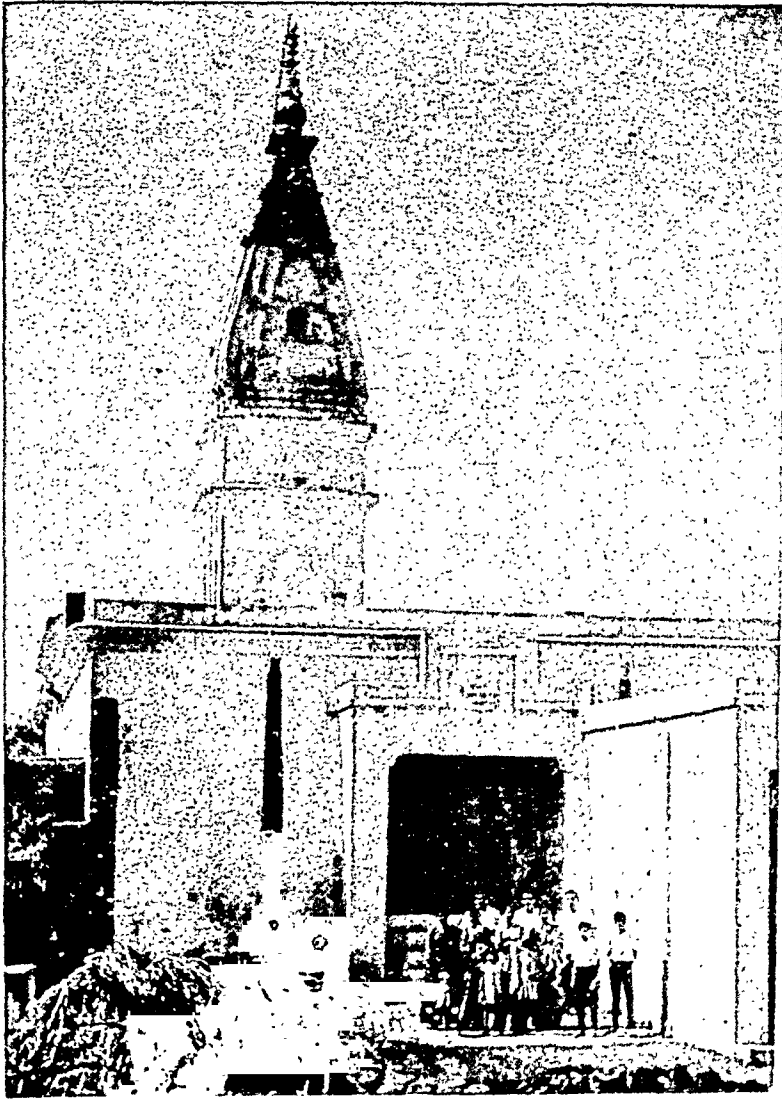
श्री दि० जैन मंदिर अहिच्छत्रा

जैन धर्म के मूल सिद्धान्त

और

प्राचीन सम्पत्ति

वा० रतन लाल जैन वकील, विजनौर
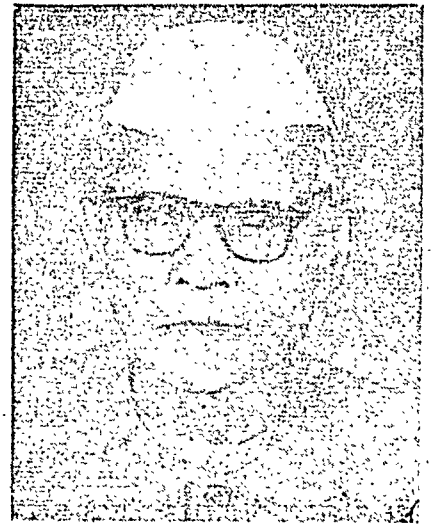
लेखक

आज का युग वैज्ञानिक है। जब से भारत स्वतंत्र हुआ पाश्चात्य देशों के सम्पर्क में विशेष कर आया है। अमेरिका आदि पाश्चात्य देशों की समृद्धि, वैज्ञानिक व औद्योगिक क्षेत्रों की उन्नति, कार्य पटता, ऐश्वर्य आदि से प्रभावित होकर उनकी ओर वेग से वढ़ रहा है और नकल कर रहा है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि सव ही क्षेत्रों में क्रान्ति हो रही है। पुराने सामाजिक वन्धन ढीले व जर्जरित होकर टूट रहे हैं। धार्मिक क्रियाकांडों से भारतीय नवयुवकों की आस्था हट कर तेजी के साथ पाश्चात्य देशों के भौतिकवाद की ओर आकृष्ट हो रही है। पुरानी जिमीदारी प्रथा व लेन-देन आदि का व्यवहार नष्ट होकर आर्थिक क्षेत्र में उथल-पुथल मच रही है। महंगाई तो जनता की कमर ही तोड़ रही है। भिन्न-भिन्न विचारों व स्वार्थों को लेकर राजनैतिक दल वन रहे हैं। आज का मनुष्य अधिकारों की मांग करता है, अपनी जिम्मेदारी व कर्तव्य को भूला हुआ है। स्वतंत्र शब्द से उसको अपने अधिकारों का वोध होता है, अधिकारों की क्या सीमायें हैं उनसे अनभिज्ञ होकर वह अपने कर्तव्य से च्युत है। कर्मचारीगण स्थान २ पर हड़तालें कर रहे हैं, शिक्षक वर्ग में असन्तोष है, विद्यार्थी वर्ग में अनुशासनहीनता है एवं नाना प्रकार की उधम मची व चल रही है। उधर अणुवमों के आविष्कार ने संसार को ज्वालामुखी पर्वत के शिखर पर लाकर खड़ा कर दिया है, युद्ध की चिन्गारी लगते ही जिसका संहार अवश्यंभावी है। संसार में आज ऐसे सिद्धान्त व धर्म की आवश्यकता है जो विज्ञान की नींव पर खड़ा हो, तर्क से अभेद्य हो, जो शान्ति व सुख को देने वाला हो और भिन्न २ सिद्धान्त व धर्मों का समन्वय करके उनको एक प्लेटफार्म पर खड़ा करने की क्षमता रखता हो। जैन दर्शन में ये सव गुण हैं। उसकी युक्तियां अकाट्य हैं। अहिंसा व अपरिग्रह के सिद्धान्त में जनता को साम्यवाद, प्रेम व सहअस्तित्व का उपदेश देता है, अनेकान्त व स्याद्वाद के सिद्धान्तों को देकर भिन्न २ सिद्धान्त, दर्शन व धर्मों के पारस्परिक विवादों को मिटाकर सत्यता का ज्ञान कराता है, अत्यन्त वैज्ञानिक वर्गवाद के विवेचन से संसार की जटिल समस्याओं का

समाधान करता है। ऐसे महान सिद्धान्तों के होते हुये भी आज जैनधर्म नगण्य हो रहा है, यह खेद का विषय है। प्राचीन काल में जैन धर्म भारत का मुख्य धर्म रहा है। भारतीय संस्कृति को इसकी बड़ी देन है। दसवीं शताब्दी तक अनेक राजा जैन धर्मानुयायी रहे हैं। जैन धर्म का ह्रास मुसलमानी युग में तेजी के साथ हुआ है। इस युग में मुसलमान बादशाहों की राज्य लिप्सा के कारण अनेक आक्रमण भारतीय राजाओं पर होते रहे हैं जिससे वातावरण मारकाट या प्रतिहिंसा का सैकड़ों वर्ष रहा है। ऐसी हिंसा-प्रतिहिंसा की परिस्थिति में अहिंसा धर्म कैसे टिकता ? इस हिंसक युग में क्षत्रिय वर्ग अहिंसामयी जैन धर्म को भूल गया और आम हिन्दू समाज में विलीन हो गया।

कुमायुं रूहेलखन्ड डिवीजन में भी जैन धर्मानुयायी काफी संख्या में थे। बरेली जिले में अहिच्छत्र है जहां भगवान पार्श्वनाथ ने तपस्या की थी और यहां उनके पूर्व भव के बैरी कमठ के जीव ने देव होकर जोर की वर्षा करके घोर उपसर्ग किया था और जिसका निराकरण भुवनेन्द्र ने भगवान के सिर पर सर्प (अहि) बनकर अपने फण से किया था, जिसके कारण यह क्षेत्र अहिच्छत्र कहलाया। खुदाई इस बात की साक्षी है कि यहां जैन धर्म काफी फैला हुआ था, बिजनौर में पार्श्व-नाथकिले का अस्तित्व एवं वहां से नहटौर में प्राचीन जैन प्रतिमाओं की उपलब्धि बतला रही है कि यहां जैन धर्म का काफी प्रचार था।

काशीपुर, मुरादाबाद, आदि में कितने ही ऐसे परिवार हैं जो ३-४ पीढ़ी पहले जैन धर्मा-नुयायी थे। साधु-मुनि, त्यागी आदि के प्रभाव व धर्म का उपदेश न मिलने के कारण अपने धर्म को भूलकर आम हिन्दू जनता में, जिसका कोई विशेष धर्म नहीं है, विलीन हो गये। उपरोक्त सिद्धान्त-रूपी रत्न आज जिस जैन समाज की धरोहर हैं वह अपने कर्तव्य से पराङमुख हो रही है। न उन सिद्धान्तों पर स्वयं चल रही है और न उनको संसार के समक्ष उचित ढंग पर रख ही रही है।

पिछले युग में भारतीय धर्म वालों के पारस्परिक काफी मनोमालिन्य था। अन्य धर्म वालों ने जैन धर्मानुयायियो को बदनाम करने का काफी प्रयास किया। अब वह समय बदल गया, आपसी वैमनस्य व पक्षपात नष्ट हो गया है, जनता अपने पैतृक धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मों की बात सुनने को तैयार है।

अतः जैन समाज के धार्मिक गुरू, मुनि, त्यागी, विद्वान व श्रीमानों का कर्तव्य है कि इसके अनुपम सिद्धान्तों पर स्वयं अमल करें और इसके अहिंसा, स्याद्वाद, कर्मवाद, आत्मवाद आदि महान सिद्धान्तों का उचित साहित्य की रचना करके एवं अन्य प्रकार से प्रचार करें।

श्री अहिच्छत्र (पार्श्वनाथ) तीर्थ

श्री कल्याण कुमार 'शशि', रामपुर

लेखक

श्रीमद्देवाधिदेव १००८ श्री पार्श्वनाथ का नाम जनसाधारण की दृष्टि में विशेष महत्वपूर्ण एवं अतिशय युक्त (मंत्र तंत्रादि में प्रयोग के कारण) माना जाता है। जैनेतर सामाज भी भगवान पार्श्वनाथ के नाम से अधिक परिचित है क्योंकि उनकी जीवन घटनायें विशेष महत्व रखती हैं। श्री अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्र इन्हीं ऐतिहासिक महापुरुष भगवान पार्श्वनाथ की पावन तपोभूमि है। प्रभू के घोर तपश्चरण एवं केवल ज्ञान के होने से यह भूमि अत्यन्त पवित्र मानी गयी है।

इसी अहिच्छत्र तीर्थ पर फणमन्डप में पद्मावती देवी रचित अनुमान के लक्षण का श्लोक पढ़ कर अद्भुत विद्वान पात्रकेशरी जी का जैनधर्म विषयक संशय निवारण होकर सम्यकत्वका पूर्ण उद्योत हुआ, और फिर स्वयं पात्रकेशरी जी ने अपने ५०० शिष्यों को वाद विवाद द्वारा परास्त कर जैन धर्म पर श्रद्धान कराया।

इस स्थान की प्रसिद्धि भगवान पार्श्वनाथ के ऊपर उपसर्ग और केवल ज्ञान को लेकर ही रही है, किन्तु यह एक प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र भी है, यह कम लोग ही जानते हैं।

क्षेत्र के विशाल कुंयें का जल भी अतिशय संयुक्त है जिसके सेवन करने से अनेकों रोग शान्त होते हैं। यह प्रसिद्ध है कि आस पास के पुराने राजा और नवाव इसी कुंवें का जल सेवन किया करते थे। स्वास्थ्यविज्ञान की दृष्टि से भी वहां की जलवायु अत्यन्त हितकर सिद्ध हुयी है।

मुख्य द्वार के सामने ही कुछ दूरी पर पांचालों के समय का किला नजर आता है। इसका घेरा लगभग साढ़े तीन वर्ग मील है जिसका भग्नावशेष अवशिष्ट है। इसके अन्दर एक टीले पर विशाल पाषाण है जो भीमशिला के नाम से विख्यात है। इस किले के खन्डहरों में उस समय के सोने चान्दी और धातुओं के सिक्के वरसात के दिनों में अव भी प्राप्त होते रहते हैं। इसमें प्राचीन खन्डित दिगम्वर जैन मूर्तियां भी प्राप्त यी है जिनको ग्रामीण ग्राम देवता के नाम से अव भी पूजते हैं।

सन १८९८ में पुरातत्व विभाग के अफसर माननीय फोरहर साहब द्वारा एक टीले की खुदाई होने पर एक विशाल जिन प्रतिविम्व और एक पत्थर प्राप्त हुआ था, यह दोनों वस्तुयें उसी समय सरकारी म्यूजियम में ले जायी गायी थीं।

यहाँ अत्यन्त प्राचीन भव्य विशाल शिखरवन्द जिनमंदिर है जिसमें पांच वेदियां हैं। एक वेदी तिखाल वाले वावा की है जिसमें भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है तथा भगवान के श्यामवर्ण चरण चिन्ह स्थापित हैं। इस वेदी के सम्वन्ध में जनश्रुति है कि प्राचीन समय में अहिच्छत्र तीर्थ पर नव मंदिर जी का निर्माण हो रहा था तव उन्हीं दिनों में एक मध्य रात्रि में यहाँ ईंटों के काटने छाटने तथा दीवाल चुनी जाने की आवाजें सुनाई देनी आरम्भ हुयी। मंदिर निर्माण के प्रवन्धक लोग आवाजों से जागकर अहित की आशंका से शोर मचाने लगे। जव सव लोगों ने निर्माण स्थल पर देखा तो वहां पर कोई हलचल नहीं थी, किन्तु एक आश्चर्य दिखाई पड़ा, वह यह कि किन्ही अज्ञात हाथों द्वारा दीवाल वन चुकी थी और उसमें एक तिखाल (आला) सुशोभित था। लोगों की धारणा थी कि यह तिखाल देव निर्मित है।

इसी वेदी के वरावर में एक दूसरी वेदी है जिसमें एक अत्यन्त प्राचीन श्याम वर्ण पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा पूर्ण-चौवीसी सहित विराजमान है, एक महावीर भगवान की श्वेतवर्ण प्रतिमा, एक प्राचीन श्वेत वर्ण भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा तथा एक श्वेत भगवान चन्द्रप्रभु की प्रतिमा विराजमान हैं। एक वेदी में तपाये हुये सुवर्ण के वर्ण की भगवान महावीर की वहुत ही मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है। वीच की वेदी में श्वेत वर्ण की अत्यन्त मनोज्ञ खड्गासन भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा तथा एक धातु की प्रतिमा विराजमान है।

पांचवी वेदी में अत्यन्त प्राचीन खड्गासन एक प्रतिमा भगवान शीतलनाथ की, एक पंचवालयती तीर्थंकर की तथा मध्य में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित हैं।

एक विशाल शिखरवन्द जिनमंदिर क्षेत्र के रामनगर गांव में है जिसमें संगमरमर की विशाल वेदी में अत्यन्त मनोज्ञ भव्य श्याम वर्ण विशाल पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है जिसके फण में अनुमान के लक्षण का श्लोक पढ़ कर वरवस आचार्य पात्रकेसरी स्वामी की कथा पर ध्यान आकर्पित हो जाता है।

वर्तमान में क्षेत्र का सर्वतोमुखी विकास हुआ है। धर्मशाला में नये नये कमरें वढ़ते जा रहे हैं जिन में यात्रियों के लिये सभी सुविधायें उपलब्ध हैं।

रेवती वहोड़ा खेड़ा में क्षेत्र तक सड़क वन रही है, विजली आ गयी है, क्षेत्र के निकट ही सरकार द्वारा ब्लाक की स्थापना हुयी है। क्षेत्र पर एक दर्शनीय छतरी का निर्माण हुआ है जो मंदिर के विलकुल समीप है। दातारों के प्रयत्नों से क्षेत्र सर्वांग सुन्दर वन रहा है।

गढ़वाल का संक्षिप्त इतिहास

श्री रमेशचन्द्र जैन, एम-ए०,

श्रीनगर—गढ़वाल

लेखक

गढ़वाल शब्द एक भौगोलिक नाम है। इस क्षेत्र के उत्तर में तिब्वत, पूर्व में कुमायूं क्षेत्र के अल्मोड़ा, नैनीताल एवं पिथौरागढ़ जिले, मध्य-पश्चिम में विजनौर-सहारनपुर जिले तथा हिमाचल प्रदेश स्थित है। आधुनिक देहरादून, उत्तराकाशी, टिहरी, पौड़ी तथा चमोली जिले गढ़वाल के ही अंग हैं। तिब्वत पर चीनियों का कब्जा होने के पूर्व वहां के व्यापारी नीलंग, माना तथा नीती घाटों (दर्रों) से गढ़वाल में आते रहेते थे। पवित्र मानसरोवर झील, वदरी-केदार धाम, गंगोत्री-यमनोत्री, चकरौता, जोशीमठ जैसे प्रसिद्ध स्थान इसी की गोद में स्थित है।

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नामनगाधिराजः
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्यस्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ॥

कहकर कुमारसम्भव के प्रारम्भ में महाकवि कालिदास ने जिस हिमगिरि की वंदना की है वह हिमालय पर्वत-नगाधिराध गढ़वाल की उत्तरी सीमा का निर्माण करता है। मंदाकिनी, भागीरथी, गंगा-यमुना जैसी पावन नदियां जिनसे न केवल भारत की भूमि, अपितु भारतीय संस्कृति का भी अभिसिंचन होता आया है। गढ़वाल से ही निसृत हुई हैं। सिखों का पवित्र धर्मस्थान हेमकुंड तथा विश्वविख्यात पुष्पों की घाटी यही हैं। और यही है कालिदास के यक्ष की अलकापुरी, जहां की कुलवधुएँ हाथों में कमल के आभूषण पहनती हैं, मुंह को लोध्र पुष्पों का पराग मलकर गोरा करती हैं और वर्षा में फूल उठनेवाले कंदन के फूलों से अपनी मांगरचना करती हैं। वहां की कन्याएँ इतनी सुंदर हैं कि देवता भी उन्हें पाने के लिए तरसते हैं। वे कन्याएँ, मंदाकिनी के जल की ठंडी फुहार से शीतल हुए पवन में तट पर खड़े कल्पवृक्षों की छाया में अपनी तपन मिटाती हैं।

वन सम्पदा, नैसर्गिक सोतों, हिमवान की गरिमामयी विशालता तथा नदियों के अभिसिंचन से पवित्र वने भारत के इस सीमांत प्रहरी गढ़वाल क्षेत्र का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि

गंगा एवं जमुना नदियां। इतना होते हुए भी सामग्री अत्यल्प होने तथा इस भूमि में आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति पर शोध न होने से इस का प्राचीन इतिहास अभी तिमिराच्छन्न ही है।

श्री भक्तदर्शन ने अपनी पुस्तक 'गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां' में लिखा है कि ऋगवेद में यहां आर्यो की एक शाखा त्रित्सु तथा महाभारत काल में कौरवों-पांडवों का अधिकार था। महाभारत युद्ध में यहां से भगदत्त नामक नरेश सम्मिलित हुए थे। मौर्यकाल में इधर बौद्ध धर्म ने प्रवेश किया और यूनानी विद्वानों के संसर्ग से ज्योतिप तथा स्थापत्य कला की उन्नति हुई। यह क्षेत्र कुपाण सम्राट कनिष्क के अधीन रहा और गुप्तकाल में गुप्तों के। सन ६३४ में चीनी ह्वेनसांग ने यहां का उपजाऊ तथा घना इलाका देखा और इसकी राजधानी ब्रह्मपुर को काफी समृद्ध तथा घना वसा हुआ पाया था। आठवीं शती में जगद्गुरू शंकराचार्य बौद्ध धर्म का उन्मूलन करके हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराते इधर आये। उनके आगमन से इस प्रदेश का धार्मिक महत्व वढ़ा। श्री केदारपुरी में उन की समाधि अभी विद्यमान है।

'गढ़वाल' शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में एक धारणा यह है कि यहां ५२ गढ़ थे और इन्हीं गढ़ों के आधार पर इस भूभाग को गढ़वाल कहा जाने लगा। यह स्पष्ट है कि ईसा की आठवीं-नवीं शताब्दी में उन्होंने (खसिया नामक जाति ने) गढ़वाल की चोटियों पर वावन गढ़ों की स्थापना कर ली थी और इस प्रकार छोटी-छोटी ठकुराइयों के अधिपति वन गये थे। सनातनी हिन्दू आठवीं-नवीं शताब्दी के पहले से ही भारत के विभिन्न क्षेत्रों से तीर्थयात्रा के लिए यहां आते रहे होंगे। उसके वाद वे पर्याप्त संख्या में आने लगे तथा समस्त गढ़वाल धीरे-धीरे उनके आधिपत्य में आ गया।

महाराज कनकपाल ने यहां आकर चांदपुरगढ़ में एक राज्य की स्थापना की। धीरे-धीरे इस राज्य का विस्तार होता गया और समस्त गढ़वाल इस राजवंश की छत्रछाया में आ गया। टिहरी-गढ़वाल में अभी कुछ वर्ष पूर्व तक सिंहासनासीन महाराज मानवेन्द्रशाह (वर्तमान में संसद-सदस्य) इसी वंश के हैं। चांदपुरगढ़ के एक शिलालेख के अनुसार महाराज कनकपाल का राज्या-रोहण यहाँ संवत् ९४५ वि० में हुआ। ये पंवार (पुत्रर) वंशी राजा धारा नगरी के अधिपति वाक्पति के सौतेले भाई थे। धार्मिक प्रवृत्ति का होने से २५ वर्ष की अवस्था में ये हरिद्वार आ गये। चांदपुरगढ़ के नरेश भानुप्रताप ने अपनी कन्या का विवाह इनसे कर दिया और इन्हें राजगद्दी सौंपकर स्वयं वदरीनाथ को प्रयाण कर गये। महाराज कनकपाल तथा उक्त राजकन्या से ही नये राजवंश का प्रारम्भ हुआ।

१४वीं शती ई० में इस वंश के नरेशों ने श्रीनगर को राजधानी वनाया। और श्रीनगर है भी वहुत महत्वपूर्ण स्थान। दिल्ली के वारे में कहावत है कि वह चौदह वार वसायी गयी और उजड़ गयी। इसी प्रकार श्रीनगर के वारे में भी जनश्रुति है कि वह ग्यारह वार वसाया गया और उजड़ गया। लेकिन शताब्दियों तक वह वीच वीच में वड़े वड़े राजाओं की राजधानी वनता रहा। इस के वारे में कई आख्यान प्रसिद्ध हैं।

कुछ लोगों का अनुमान है कि ६३४ ई० में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग जिस ब्रह्मपुर नगर में आया था, वह भी यही श्रीनगर था। उसके वर्णन के अनुसार हरिद्वार से उत्तर की ओर

३०० ली (१०० मील) की दूरी पर 'पो-वो-ली-ही-मो-पु-लों' (ब्रह्मपुर) प्रांत है, वह राज्य गोलाई में ४००० ली (१३०० मील) है और चारों ओर पर्वतों से घिरा हुआ है, प्रधाननगर (राजधानी) की गोलाई करीव २० ली (सात मील) है। वहां बस्ती बड़ी घनी है, व गृहस्थ लोग वहुत धनी हैं।

धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व के इस प्राचीन स्थान श्रीनगर में महाराज अजयपाल ने, जो कनकपाल से ३७वीं पीढ़ी में हुए थे, सन् १३७० ई० में ६१७ ज्यूला भूमि को समधरातल कराने के बाद विशाल महल और एक रमणीक नगर का निर्माण कराया था। गोरखा आक्रमण तक श्रीनगर ही गढ़वाल राज्य की राजधानी वना रहा और इस अवधि के मध्य के सभी नरेश इस नगरी के सौंदर्य और वैभव को वढ़ाने के प्रयास में जुटे रहे। १८०३ ई० में गोरखों की गढ़वाल विजय के साथ ही श्रीनगर की राज्य श्री उससे रूठ कर चली गयी। १८९४ ई० में विरही नदी की वाढ़ ने उस पुरातन प्रासाद तथा वाजार को भी वहा दिया, जिसके बाद तत्कालीन जिलाधीश श्री पौ ने पास के ही एक विस्तृत एवं ऊँचे पठार पर वर्तमान श्रीनगर का निर्माण कराया। १८९४ ई० तक वहां के प्रासाद आदि महाराज अजयपाल तथा उनके उत्तराधिकारियों के स्थापत्य कौशल की साक्षी देते रहे। इसी प्रासाद के सुंदर पाषाण खण्डों से वर्तमान श्रीनगर के मंदिर बनाये गये जिनमें दिगम्बर जैन मंदिर वास्तु निर्माणकला का अनूठा उदाहरण है। यद्यपि समय के थपेड़ों एवं स्थानीय जैन समाज की निर्वलता ने इस महान कृति को खंडहर का रूप लेने दिया, पर अपनी वर्तमान जीर्ण-दशा में भी यह अपने विगत वैभव की साक्षी मौन भाषा में दे रहा है।

१७८५ ई० में महाराज प्रद्युम्नशाह गद्दी पर बैठे। १७९० ई० में उनके यहां राजकुमार सुदर्शनशाह का जन्म हुआ और इसी समय गोरखों ने सम्पूर्ण कुमाऊँ राज्य पर अधिकार कर लिया। गोरखों ने गढ़वाल में भी घुसपैठ प्रारम्भ कर दी। इस समय श्रीनगर दरबार में घोर अराजकता छायी हुई थी और यह दरवारियों के षड़यंत्र का केन्द्र वन गया था। उन्हीं दिनों भादों, अनन्त चतुर्दशी, सम्वत् १८६० वि० (सितम्बर १८०३ ई०) को अचानक एक ऐसा भूकम्प आया कि पहाड़ टूट-टूट कर कई गांव नष्ट हो गये, वहते जल स्रोत सूख गये, नये स्थलों पर पानी निकल आया और जनसंख्या वहुत घट गयी। इसके वाद भी कई महीनों तक भूकम्प के झटके आते रहे जिससे श्रीनगर प्रासाद अधिकांश में वर्वाद हो गया। १८०३ ई० में गोरखों ने अदा न किये हुए वार्षिक कर की वसूली का वहाना लेकर गढ़वाल पर हमला वोल दिया। गोरखों की एक टुकड़ी ने महाराज की सेना के पैर उखाड़ दिये और एक अन्य टुकड़ी दक्षिण गढ़वाल को रौंदती हुई लंगूरगढ़ के मार्ग से श्रीनगर की ओर वढ़ने लगी। महाराज का दल हटता-हटता देहरादून पहुंचा और कुछ दिन वाद इस पर भी गोरखों ने अधिकार कर लिया। लंढौरा के गूजर राजा रामदयाल सिंह की मदद से एक वार पुनः सेना एकत्र कर खुड़वुड़ा के पास गोरखों से इन्होंने टक्कर ली पर सैन्य संचालन करते हुए शत्रुपक्ष के गोले से उनका सिर उड़ गया। निधन तिथि थी १४ मई १८०४ ई०। इस समय इनके पुत्र महाराज सुदर्शनशाह केवल १४ वर्ष के थे। १८१५ ई० तक इन्हें भारी कष्ट उठाने पड़े। २७ अप्रैल १८१५ ई० को अलमोड़ा पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। इसके वाद

बिना रक्तपात के गढ़वाल पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। ३ मई १८१५ ई० को श्री गार्डनर कुमाऊं के कमिश्नर आफ एफेयर्स नियुक्त हुए और जुलाई में श्री जी० डब्ल्यू० ट्रेल गढ़वाल में उनके सहायक बना दिये गये।

गढ़वाल से गोरखों को हटाने के बदले अंग्रेजों ने देहरादून तथा पौड़ी (जिसमें उत्तराखंड डिवीजन का आधुनिक जिला चमोली भी सम्मिलित है) और पश्चिमोत्तर सीमा का रवाई का क्षेत्र अपने अधिकार में ले लिया। इस निर्णय के अनुसार जुलाई १८१५ ई० में ब्रिटिश सरकार की ओर से घोषणा की गयी कि अलकनंदा और मंदाकिनी से पूर्व की ओर के गढ़वालीवासी स्वयं को अब से ब्रिटिश प्रजा समझें। इस प्रकार ११ वर्ष के विस्थापित जीवन के उपरांत जून १८१५ में महाराज सुदर्शनशाह गढ़वाल के एक छोटे से हिस्से (आधुनिक टिहरी जिले) के नरेश कहलाने के अधिकारी हुए। इन्होंने भागीरथी और भिलंगना के संगम पर टिहरी नाम से नयी राजधानी बसायी। इन के समय में ही १८५७ ई० का प्रसिद्ध भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम हुआ, जिसमें इन्होंने अंग्रेजों की भरकर मदद की। नजीबाबाद के नवाब ने इन्हें पत्र लिखकर इस संग्राम में सम्मिलित होने का आवाहन किया, पर इन्होंने स्पष्ट इनकार कर दिया।

१ अगस्त १९४९ को टिहरी गढ़वाल राज्य भारत में विलीन कर दिया गया। वर्तमान नरेश मानवेन्द्रशाह १९५७ के महानिर्वाचन से अब तक इस क्षेत्र का संसद में प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। १९४९ ई० से टिहरी उत्तर प्रदेश राज्य का एक जिला है। १९६२ में चीनी आक्रमण होने के बाद उत्तरप्रदेश सरकार ने उत्तराखण्ड नामक एक नया डिवीजन बनाया, जिसमें टिहरी के सीमावर्ती क्षेत्रों को मिलाकर उत्तरकाशी नाम से एक नया जिला बनाकर शामिल कर दिया गया।

गढ़वाल में एक ओर जहां त्रिशूल और नंदादेवी जैसी प्रख्यात पर्वतचोटियां हैं वहां बदरी-केदार-गंगोत्री-यमनोत्री जैसे तीर्थ भी। अल्मोड़ा के पिंडारी ग्लेशियर से निकल कर पिंडर नदी गढ़वाल में प्रवेश करती है। यमुना, भागीरथी, मंदाकिनी, अलकनंदा, धौलीगंगा, विरही गंगा, विष्णुगंगा जैसी पुण्य सलिलाएं यहीं से उद्भूत होकर भारत भूमि को जीवन रस प्रदान करती हैं। यहीं कालसी नामक स्थान है जहां मौर्य सम्राट अशोक का शिलालेख मिला है। ऋषिकेश, कोटद्वार, दुगड्डा, लैंसडौन, पौड़ी, श्रीनगर, देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, नंदप्रयाग, जोशीमठ, गुप्तकाशी, प्रतापनगर, टिहरी, चकरौता, देहरादून, चमोली, कर्णप्रयाग जैसे नगर भी इसी भूभाग में स्थित हैं। बदरी-केदार यात्रा पर जाने के लिए दो रेलवे स्टेशन हैं—ऋषिकेश तथा कोटद्वार। रेलवे मार्ग यहीं तक है। इन दोनों स्थान से इसके बाद मोटर मार्ग प्रारम्भ होते हैं जो श्रीनगर में आ मिलते हैं। जगविख्यात गीतामंदिर, परमार्थ निकेतन, लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश से सटे हुए हैं।

शताब्दियों तक गढ़वाल की राजधानी के रूप में यहां के जनजीवन को सराबोर करने के साथ ही श्रीनगर यहां का सांस्कृतिक केन्द्र भी रहा। वैसे भी यह समस्त गढ़वाल के केन्द्र में स्थित है।

द्वितीय खंड

डायरेक्टरी

जैन जनगणना जिला बिजनौर (सन् १९६५)

क्रम संख्या	स्थान	परिवार संख्या	पुरुष	स्त्री	बालक	बालिका	कुल योग	पुरुष शि०	पुरुष अशि०	स्त्री शि०	स्त्री अशि०
१	नजीबाबाद	३५	५५	६२	४२	४४	२०३	४६	९	४०	२२
२	नहटौर	५७	९३	८६	९६	७८	३५३	७१	२२	३४	५२
३	कीरतपुर	२१	३१	२४	३५	२९	११९	३१	—	२४	—
४	स्योहारा	४१	७६	७२	५३	६२	२६३	७६	—	६९	३
५	शेरकोट	९	२२	१६	१३	११	६२	२२	—	१४	२
६	बिजनौर	५४	९४	८८	८९	८२	३५३	७९	१५	४९	३९
७	नगीना	१९	२०	१८	१५	२६	७९	२०	—	१५	३
८	धामपुर	५५	१००	९७	७५	८६	३५८	८८	१२	७९	१८
९	अफजलगढ़	१२	२६	२१	११	२२	८०	२१	५	१७	४
	योग	२९४	५१७	४८४	४२९	४४०	१८७	४५४	६३	३४१	१४३

रूहेलखंड (बरेली) कमिश्नरी

जिला बिजनौर

जिला विजनौर उत्तर प्रदेश की रूहेलखन्ड कमिश्नरी में उत्तर की ओर स्थित है। इस जिले के पश्चिम-दक्षिण में गंगा नदी है और गंगा नदी के दूसरी ओर सहारनपुर, मुज़फ्फ़रनगर व मेरठ जिले हैं। इस जिले के उत्तर में हिमांचल व पर्वतीय गढ़वाल जिला है और पूर्व में नैनीताल व मुरादावाद जिले हैं।

इस जिले के परगने व कस्बे बहुत पुराने हैं। अकबर वादशाह के जमाने में नजीवावाद तथा अफजलगढ़ को छोड़ कर प्रायः सभी अन्य कस्बे मौजूद थे। नजीवावाद व अफ़जलगढ़ को नवाव नजीवुद्दौला व अफजल खाँ ने १७५० के कुछ वाद आवाद किया था।

इस जिले की जन-संख्या १९६१ में ११ लाख थी। ज़िले में मुख्य नगर विजनौर, नजीवावाद, नहटौर, धामपुर, स्योहारा, शेरकोट, कीरतपुर, नगीना और अफ़ज़लगढ़ हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर जैन मंदिर हैं। यद्यपि जिले में संख्या के अनुपात से जैन समाज अल्प है परन्तु प्रत्येक स्थान पर जैन लोग सम्पन्न व प्रभावशाली हैं। अन्य समाज जैन समाज को उच्च-दृष्टि से देखती है। नजीवावाद व विजनौर में जैन वड़े २ जमींदार व प्रभावशाली रहे हैं। जमींदारी प्रथा के खत्म हो जाने से ये जमींदारियां भी खत्म हो गयीं।

पार्श्वनाथ किला

इस जिले में पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध एक ऐतिहासिक किला है। बढ़ापुर ग्राम जो इस जिले के उत्तर में हिमालय की तराई के जंगल में स्थित है उसके पास एक टीले से मनोग्य जैन प्रतिमा १९४० में निकली थी। उपर्युक्त किले के पास ही एक मंदिर का खन्डहर मिला और एक दो फुट ऊँची प्रतिमा निकली जिस पर सम्वत् १०६७ पड़ा है तथा महावीर स्वामी, चन्द्र प्रभु स्वामी और नेमिनाथ स्वामी की प्रतिमाएँ भी निकलीं जो जैन मंदिर विजनौर में स्थापित कर दी गयीं हैं। पार्श्वनाथ किले में से खंडित प्रतिमायें समय समय पर निकलती रहीं हैं। इस किले की सव इमारतें गिर गयी हैं, चारों ओर की दीवारें भी खंडित अवस्था में है। उक्त किले से ८

मील दूर, विजनौर व गढ़वाल जिले की सीमा पर मोरध्वज नाम का किला है जो टूटी फूटी अवस्था में है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैन राजाओं ने इसको १० वीं शताब्दी के लगभग बनवाया था।

(१) बिजनौर नगर

विजनौर जिले का केन्द्र है। यहाँ राजकीय कार्यालय तथा अदालत आदि हैं। विजनौर की आवादी लगभग ५० हजार है। गजरौला-नजीबाबाद लाइन पर यह रेलवे स्टेशन है। गंगा नदी यहाँ से पांच छः मील की दूरी पर है। यहां शुगर मिल तथा जैन फार्म एवं दूसरे फार्म काफी संख्या में है।

विजनौर की जैन संख्या ३५३ है, जिनमें ९४ पुरुष, ८८ स्त्रियां, १७१ वालक वालिकायें हैं। शिक्षित पुरुष ७९ और शिक्षित स्त्रियाँ ४९ हैं, ५७ जैन परिवार हैं जो प्रायः सब ही अग्रवाल हैं।

जैन परिवार (परिवार के मुखिया के नाम से अंकित):-

सर्वश्री :

१-रतन लाल जैन वकील,
भूतपूर्व एम० एल० सी०
२-राजेन्द्रकुमार जगत प्रसाद
३-शान्ती चन्द्र
४-अजित प्रसाद
५-जग रोशन लाल
६-जगदीश प्रसाद
७-सुरेश चन्द
८-रणजीत सिंह
९-जितेन्द्र नाथ
१०-नेमचन्द
११-प्रकाश मुनीश वकील
१२-मंगल सेन
१३-सुरेन्द्र कुमार
१४-आदीश्वर कुमार
१५-विशुन चन्द्र

सर्वश्री :

१६-वृज नन्दन शरण वकील
१७-जगनन्दन शरण
१८-शिवनाथ सिंह
१९-नेमीशरण वकील
२०-किशोरी लाल
२१-शीतला प्रसाद वकील
२२-प्रकाश चन्द
२३-जिनेश्वर प्रसाद
२४-देवेन्द्र कुमार
२५-कैलास चन्द्र
२६-कैलाश चन्द्र
२७-सुरेश चन्द्र
२८-योगेश्वर कुमार
२९-योगेश्वर की नानी (शिव देवी)
३०-नन्दकिशोर
३१-राज बहादुर

३२–दीप चन्द
३३–त्रिलोक चन्द्र
३४–मुनीश्वर कुमार
३५–हरिश चन्द्र
३६–महेन्द्र कुमार
३७–नरेन्द्र कुमार
३८–रतन लाल
३९–विनोद कुमार
४०–अतर सेन
४१–त्रिलोक चन्द्र
४२–सुमन प्रसाद
४३–जगदीश राय
४४–प्रमोद कुमार
४५–मगल सेन
४६–बाबू लाल
४७–गिरि लाल
४८–प्रकाश चन्द्र
४९–भूषण लाल
५०–धर्मेन्द्र कुमार
५१–देवेन्द्र कुमार
५२–सुरेश चन्द्र
५३–जय प्रकाश
५४–विद्या सागर
५५–नानक चन्द
५६–महेन्द्र कुमार
५७–नवनीत राय।

●●

जैन मंदिर

बिजनौर में पहले एक जैन चैत्यालय था। ला० बद्रीदास, हीरालाल और महावीर प्रसाद, इन तीनों भाईयों ने एक विशाल जैन मंदिर बनवाया था। मंदिर के शिखर की ऊँचाई १२० फुट है और वह १२ मील दूर से दिखायी देता है। १९१० में मंदिर जी की प्रतिष्ठा हुई थी। उसके बाद मार्च सन् १९६८ में मंदिर की नवीन वेदी की प्रतिष्ठा हुई। मंदिर की व्यवस्था सुन्दर है, अनेक भाई बहनें नित्य पूजा पाठ करते हैं।

●●
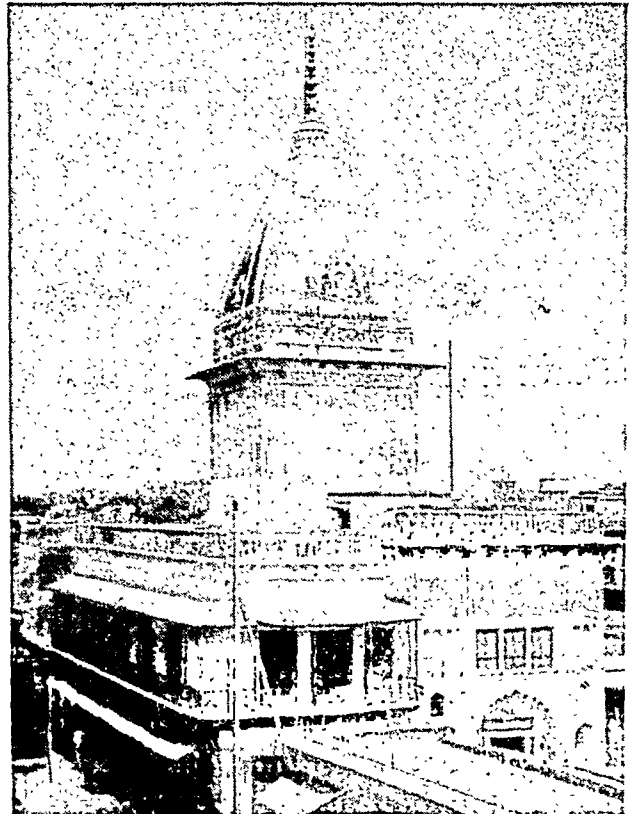
वीर पाठशाला

मंदिर के एक कमरे में है जिसमें छोटे बच्चे पढ़ते हैं। पाठशाला का प्रवन्ध जैसा होना चाहिए वैसा नहीं हैं। पाठशाला को नगरपालिका तथा जिलापरिषद से सम्वन्धित कराना चाहिये।
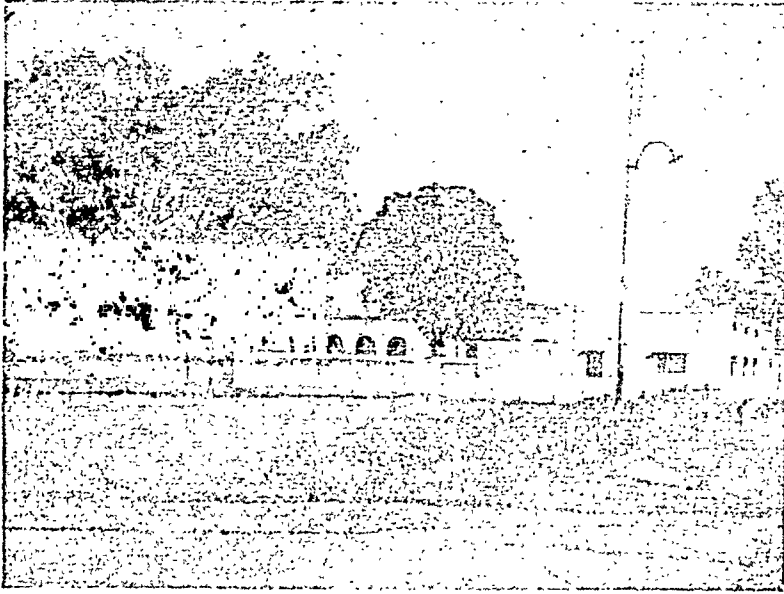
जैन बोर्डिंग हाउस

ला० वद्रीदास, हीरा लाल तथा महावीर प्रसाद, तीनों वन्धुओं के प्रयास से १९१२-१३ में जैन वोर्डिग हाउस की स्थापना हुयी थी। वोर्डिग हाउस का विशाल भवन इस समय वर्धमान कालेज का छात्रावास है।

●

●●

जैन धर्मशाला

ला० वद्रीदास व ला० हीरालाल ने एक विशाल जैन धर्मशाला वनवायी थी जिससे यात्रियों तथा विजनौर की जनता को वड़ा आराम मिल रहा है।

●●

वर्धमान कालेज बिजनौर

वर्धमान कालेज बिजनौर की स्थापना जुलाई १९६० में इस जिले के प्रसिद्ध सेठ श्री राजेन्द्र कुमार जैन एवं श्री जगत प्रसाद जैन ने अपने पूज्य पिता ला० महावीरप्रसाद की स्मृति में की थी। कालेज के शुभारम्भ के समय स्नातकोत्तर तक कला एवं विज्ञान के विषयों के अध्यापन की व्यवस्था थी। अल्प समय में ही कालेज ने आशातीत उन्नति की और दूसरे वर्ष ही कला संकाय में स्नातकोत्तर कक्षायें आरम्भ हो गयीं। इस समय कालेज में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य तीनों संकायों में स्नातकोत्तरीय स्तर तक अध्ययन की व्यवस्था है। विज्ञान संकाय में भौतिकी तथा गणित में एम० एस० सी०, कला संकाय में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास, अर्थ
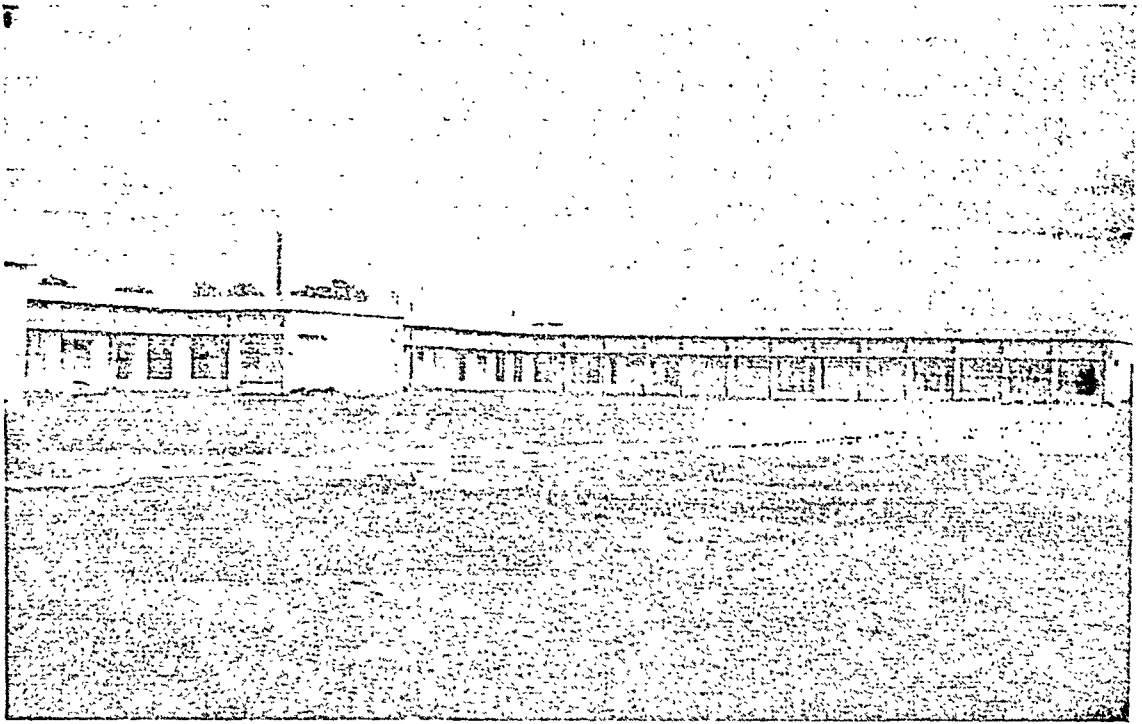
शास्त्र, भूगोल एवं गणित में एम० ए० तथा वाणिज्य में एम० काम० कक्षायें कालेज में सुचारू रूप से चल रही हैं। स्नातक स्तर पर भी प्रायः सभी लोकप्रिय विषयों तथा समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, शिक्षाशास्त्र, जैविको, वनस्पति शास्त्र, सांख्यिकी आदि का अध्यापन होता है। कालेज में आरम्भ से ही बी० एड० कक्षायें भी चल रही हैं। इस समय कालेज में लगभग ७५० छात्र-छात्रायें और ५० प्राध्यापक हैं। कालेज में जैन दर्शन की शिक्षा का भी प्रबन्ध है और परिषद परीक्षा बोर्ड की परिक्षायें भी होती हैं। कालेज के पास अपना निजी भवन है तथा आधुनिक सुविधाओं से युक्त पुस्तकालयभवन आदि के निर्माण का कार्य तीव्र

गति से चल रहा है। इस समय सम्पूर्ण जिले में यही एकमात्र ऐसा कालेज है जिसमें स्नातकोत्तर एवं बी० एड० स्तर तक अध्ययन की व्यवस्था है। इस कालेज की स्थापना एवं प्रसार से बिजनौर जनपद के शिक्षा जगत में एक नवीन चेतना का संचार हुआ है। इसकी अभूतपूर्व उन्नति का श्रेय जैन बन्धुओं, श्री राजेन्द्र कुमार एवं जगत प्रसाद के अपार विद्याप्रेम एवं इस पर मुक्त हस्त से किये गये दान को है। कालेज का सम्पूर्ण भार आपने सहर्ष उठाया है और कालेज पर लगभग १५ लाख रूपया आप व्यय कर चुके हैं। वर्धमान कालेज़ न केवल रुहेलखन्ड डिवीजन में ही बलिक उत्तर प्रदेश में प्रथम श्रेणी का कालेज माना जाता है। कालेज के प्रबन्ध के लिये एक ट्रस्ट बना हुआ है।

प्रसिद्ध परिवार एवं व्यक्ति :

बिजनौर के प्रसिद्ध और धर्मनिष्ठ परिवारों में ला० सवाई सिंह एक बड़े जमींदार थे। उनके दो पुत्र ला० भूप सिंह व ला० ज्वाला प्रसाद थे। ला० भूप सिंह के दो पुत्र, ला० बद्री दास व ला० हीरालाल थे। ला० ज्वाला प्रसाद के केवल एक पुत्र, ला० महावीर प्रसाद थे। ला० बद्री दास के कोई पुत्र न था, उनके तीन लड़कियां थीं। ला० हीरालाल के दत्तक पुत्र ला० रतन लाल हैं तथा ला० महावीर प्रसाद के दो पुत्र, ला० राजेन्द्र कुमार व जगत प्रकाश हैं। ला० बद्री दास, ला० हीरालाल व ला० महावीर प्रसाद में बड़ा प्रेम था। तीनों भाइयों ने जैन धर्म की प्रशंसनीय सेवा की। तीनों भाई जिले के प्रसिद्ध जमींदार और प्रभावशाली व्यक्ति थे।

ला० बद्री दास, सुपुत्र ला० भूप सिंह, का जन्म १८५८ में हुआ। आपने इन्ट्रेन्स की परीक्षा पास करके वकालत की परीक्षा पास की। कुछ दिन वकालत करने के बाद जमींदारी का अधिक कार्य होने के कारण वकालत छोड़ दी। आप हिन्दी और उर्दू के अच्छे विद्वान थे। संस्कृत का भी पर्याप्त ज्ञान था तथा जैन शास्त्रों का अच्छा ज्ञान था। शास्त्र स्वाध्याय का बड़ा शौक था। ला० बद्री दास हस्तनापुर तीर्थ क्षेत्र के १८८५ तक मंत्री रहे और मंदिर के प्रबन्ध तथा मंदिर की जमींदारी की व्यवस्था की। मंदिर की बहुत सी जायदाद जो दूसरों के कब्जे में थी उसको तीर्थ के अधिकार में लाये। दि० जै० महासभा को बराबर सहायता देते रहे। आप सुधार प्रिय व्यक्ति थे।

ला० हीरा लाल

●●

ला० हीरा लाल भी बड़े धर्मात्मा थे। उनको शास्त्र स्वाध्याय का शौक था। जमींदारी का सब हिसाब-किताब स्वयं किया करते थे। आपने १९३९ में जैन धर्मशाला का ट्रस्ट बनाया जिसके ट्रस्टी व मैनेजर उनके पुत्र ला० रतन लाल वकील हैं।

ला० महावीर प्रसाद

ला० महावीर प्रसाद बड़े सज्जन और धर्मात्मा थे तथा भाइयों के साथ तमाम सामाजिक व धार्मिक कार्यों में मिलकर काम करते थे। लंढौरा रियासत जिला मेरठ के अन्तर्गत बह-सूमा तथा दूसरे गांवों की जमींदारी की ठेकेदारी का कार्य करते थे। आप के दो पुत्र राजेन्द्र कुमार व जगत प्रसाद बड़े धर्मात्मा और जैन समाज के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं।

ला० राजेन्द्र कुमार जैन

ला० राजेन्द्र कुमार जैन का जन्म दिनांक २ जुलाई, सन् १९०२ को विजनौर में हुआ था। आपकी माता जी सरल स्वभाव और धर्मात्मा तथा पिता ला० महावीर प्रसाद बड़े सज्जन और उदारचित्त थे। आप जन्म से ही प्रतिभाशाली रहे हैं, पढ़ने लिखने में प्रारम्भ से ही आपकी विशेष रूचि रही है। प्रारम्भिक शिक्षा आपने बिजनौर के स्कूल में ही प्राप्त की, इसके बाद वाराणसी में रह कर उच्च अध्ययन किया। विद्यार्थी जीवन से ही आप समाज सेवा के क्षेत्र में प्रवृत्त रहे हैं। आप राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रेमी है। राजेन्द्र कुमार जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जी, दोनो ही बड़े धर्मनिष्ठ प्राणी हैं। धार्मिक कार्यों में आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति प्रदान की है। धर्म सेवा की लगन आपको पूर्वजों से प्राप्त हुयी और धर्म, समाज एवं देश सेवा के कार्यों में सदा सक्रिय सहयोग प्रदान करते रहते हैं। कुछ समय तक आप विजनौर म्यूनिस्पल वोर्ड के उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष रहे। आपका सामाजिक जीवन बड़ा लगनशील एवं सक्रिय रहा। आपने अपने जीवन के प्रारम्भ में ही विजनौर में परिषद् पब्लिशिंग हाउस की स्थापना की थी। वैरिस्टर चम्पतराय आप की इस साहित्य सेवा से अति प्रसन्न होकर आपके एक प्रवल सहायक एवं सहयोगी वनगये थे और उन्होंने अनेक उत्तम पुस्तकें पब्लिशिंग हाउस को प्रदान कीं। विजनौर में रहते हुये श्री राजेन्द्र कुमार ने 'वीर' पत्र का सम्पादन व प्रकाशन कार्य भी अति सफलता के साथ किया और धार्मिक, सामाजिक एवं साहित्यिक सामग्री से परिपूर्ण 'वीर' के अनेक विशेषांक निकाले।

श्री राजेन्द्र कुमार के जीवन की एक वड़ी विशेषता यह है कि साहित्यिक होने के साथ-साथ आप एक उच्च कोटि के प्रवन्धक तथा सफल व्यापारी भी हैं। आप कई वर्ष तक हतवा (विहार शुगर मिल) के जनरल मैनेजर रहे। आपने लाहौर में भारत इन्शोरेन्स कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर रह कर कम्पनी के कार्य को प्रशंसनीय वढ़ावा दिया था। लाहौर का दि० जैन वोर्डिंग हाउस तथा जिन मंदिर आपके प्रयत्नों एवं धार्मिक लगन के प्रतीक रहे। आपका जीवन जैन समाज के उत्थान के लिये साम्प्रदायिकता से सदा दूर रहा है। लाहौर में आपने दि० जैन परिषद् का जो अधिवेशन कराया था उसमें समाज के सभी सम्प्रदायों ने मिल कर प्रशंसनीय कार्य व सहयोग प्रदान किया था और धर्म की वहुत वड़ी प्रभावना हुयी थी। आप कई वर्ष तक दि० जैन परिषद् के जनरल सेक्रेटरी रहे तथा देवगढ़ अधिवेशन के सभापति थे। दि० जैन परिषद् से आपको प्रगाढ़ प्रेम है और हर समय अधिकाधिक सहायता प्रदान करते रहते हैं। १९४३ में भारत वैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर वन कर आप देहली आये और थोड़े ही समय में भारत वैंक की शाखाओं का जाल देश के हर हिस्सों में विछा दिया। आपका सामाजिक अनुभव वहुत ऊंचा है और सामाजिक कार्य कर्ताओं का उचित आदर तथा विद्वानों का सम्मान करते हैं। आपने अपने जीवन में सैकड़ों जैन अजैनों को काम पर लगाया तथा सैकड़ों भाइयों और विद्यार्थियों की सहायता की। आपकी योग्यता तथा अनुभव से प्रभावित होकर दिल्ली की जैन जनता ने आपको भारत वर्षीय अनाथ रक्षक जैन सोसाइटी दिल्ली का सभापति चुना था। आपके नेतृत्व में जैन हायर सेकेन्डरी स्कूल, समंतभद्र संस्कृत विद्यालय, जैन वाला आश्रम आदि विविध संस्थाओं की प्रगति हुयी। विद्यालय भवन के एक भाग में विपुल धनराशि खर्च कर के आपके द्वारा स्थापित जैन सांस्कृतिक संग्रहालय आपकी धर्म प्रभावना का एक ज्वलन्त उदाहरण है। संग्राहलय में अति प्राचीन प्रतियां और ताड़ पत्र पर लिखे शास्त्रों का सुन्दर संग्रह है। सात वर्ष पूर्व आपने विजनौर में एक डिग्री कालेज की स्थापना की है। दिल्ली में आपके दिल्ली फ़्लोर मिल, कोल्ड स्टोरेज आदि हैं।

ला० राजेन्द्रकुमार जी की माता जो वड़ी धर्मात्मा, गंभीर अनुभवी और सज्जन थी। वह वहुत कम वोलती थीं। उनका अधिक समय धर्म ध्यान में व्यतीत होता था, घर के किसी काम से उन्हें मतलव न था। ४-५ साल हुए राजेन्द्रकुमार जी वहुत वीमार हो गये और डाक्टरों ने विलकुल जवाव दे दिया, सव लोग निराश हो गये। थोड़ी देर वाद उनकी वृद्धा माताजी उठीं और राजेन्द्रकुमार जी का पेट व सूंड़ी आदि देखी। उन्होंने कहा डा० साहव घवड़ायें नहीं, इनकी सूंड़ी गर्म है आप इन्हें फौरन कै करायें। डा० लोग चकित रह गये और कहने लगे उलटी कैसे और किसे कराई जाय। राजेद्रकुमारजी के छोटे भाई जगत प्रसाद जी ने कहा डा० साहव यह हमारी माताजी हैं, वड़ी अनुभवी और समझदार हैं। डा० साहव आप उलटी कराने की कोशिश करें। डा० साहव ने तुरंत उलटी करने की दवा दी और उलटी होते ही राजेन्द्रकुमारजी ने आखें खोल दीं। इस तरह माता जी की वुद्धिमत्ता से राजेन्द्रकुमार जी का नया जीवन हुवा। तीन वर्ष हुए माता जी का देहांत हो गया। घर के सव पुरुष स्त्री वच्चे उनका वड़ा आदर सत्कार करते थे। वे चुप चाप वहुत कुछ दान किया करती थीं।

ला० राजेन्द्र कुमार जी की धर्मपत्नी, श्रीमती जी, वहुत ही सज्जन, हंसमुख और धर्मात्मा हैं, व्रत उपवास ध्यान पूजा पाठ आदि नियम पूर्वक करती हैं। आप वड़ी ही पतिभक्त और दानी हैं।

धर्मपत्नी ला० राजेन्द्र कुमार जी

श्री जगत प्रसाद जैन

श्री जगत प्रसाद जैन का जन्म १९०६ में विजनौर के सुप्रसिद्ध जैन कुलमें हुआ। आपके पिता का नाम लाला महावीर प्रसाद था। आप लाला राजेन्द्र कुमार के छोटे भाई हैं। दोनों भाइयों में वड़ा प्रेम है। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा विजनौर में हुयी और वनारस विश्वविद्यालय से मेकैनिकल इन्जीनियर की परीक्षा पास की। आप इन्स्टीट्यूट आफ इन्जीनियरिंग आफ इंडिया के सदस्य हैं। आप वहुत ही नम्र और हंसमुख सज्जन हैं। आपकी रूचि इन्जीनियरिंग, कृषि और उद्यान की ओर वहुत अधिक रही है। आपने विजनौर और आस-पास में दो-तीन फार्म व उद्यानों को पूरी तौर पर यंत्रीकृत करके स्थापित किया। ये जैन फार्म्स उत्तर प्रदेश के मुख्य फार्मों में गिने जाते हैं। आपने वम्बई में एक जैन ट्रस्ट वनाया हुआ है, जिससे गरीव जैन विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां दी जाती हैं।

आप कई वर्ष तक रोहतास लाइट रेलवे के जनरल मैनेजर तथा कई कम्पनियों के डायरेक्टर रहे। अव आप २०-२१ वर्ष से वम्वई में रहते हैं व वहां के प्रसिद्ध व्यापारियों में हैं और कई कम्पनियों के डायरेक्टर हैं। वम्वई में जैन समाज की सेवा में आप काफी सहयोग देते हैं। आप आचार्य शान्ति सागर स्मारक, आदिनाथ वाहुवली दिगम्वर जैन मंदिर वोरीवली ट्रस्ट व सुखानन्द आश्रम धर्मशाला ट्रस्ट व सुखानन्द गुरमुख राय चैरिटी ट्रस्ट वम्वई के ट्रस्टी हैं।

बाबू रतनलाल जी जैन का जन्म अफजल गढ़ जिला विजनौर में हुआ। आप लाला हीरालाल जैन विजनौर के दत्तक पुत्र हैं। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एल० एल० बी० की परीक्षा पास की। जैन बोर्डिंग हाउस इलाहबाद में बैरिस्टर चंपतराय के संसर्ग में रहने से आप में जैन धर्म और जैन समाज की सेवा की तीव्र भावना जागृत हुयी।
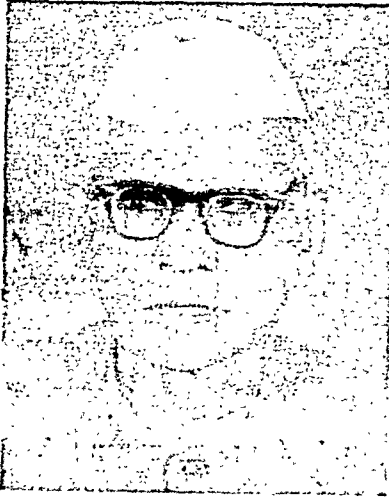
बाबू रतन लाल जैन

आपने केवल एक दो वर्ष मुरादाबाद में वकालत की। स्वराज्य आन्दोलन से प्रभावित होकर आपने सदा के लिये वकालत छोड़ दी और तभी से देश और समाज की सेवा में संलग्न रहने लगे। बा० रतन लाल जी अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद के मुख्य संस्थापकों में से है और वर्षों तक परिषद के महामन्त्री और दो वार सभापति रहे। आपके मंत्रित्व और सभापतित्व में जैन समाज में अनेक प्रगति और समाज सुधार हुए, अन्तर जातीय विवाह चालू हुआ और हस्तिनापुर में आप के सभापतित्व में भारी विरोध होते हुए भी दस्सा पूजा अधिकार का प्रस्ताव पारित हुआ। आपके कार्यकाल में परिषद में जागृति रही और परिषद जैन समाज की सर्व प्रिय प्रगति शील संस्था वन गयी। वस्तुतः श्री रतन लाल परिषद के प्राण ही हैं। आपने मुरादा-वाद जजी से सन् १९२७ में वकालत छोड़कर कांग्रेस में प्रवेश किया और विजनौर जिले में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न की। वहुत वर्षों तक जिला कांग्रेस के प्रधान मन्त्री व अध्यक्ष रहे। १९३० के नमक सत्याग्रह व १९३२ के सत्याग्रह में वह प्रथम डिक्टेटर थे। १९३०, १९३२, १९४१, और १९४२ में आपने चार वार जेल यात्रा की और जीवन के चार वर्ष से अधिक कारावास में व्यतीत किये। देशहित के अनेक कार्य किये। कारावास में ही "आत्म रहस्य" नामक विचार पूर्ण पुस्तक को रचना की जो सस्ता साहित्य मंडल दिल्ली से तीन वार प्रकाशित हो चुकी है।

विजनौर के मुख्य कार्यकर्त्ता

श्री जितेन्द्र नाथ जी मुखतार प्रायः पुराने कार्यकर्ता और सुधारक विचारों के हैं।

श्री त्रिलोक चंद जी जैन सेलटेक्स वकील व अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

श्री शांती चंद जैन एक पुराने कार्यकर्ता हैं। आपने वढ़ापुर किला पारसनाथ में कई वार जाकर वहाँ की खोज की है। आप वरावर ट्रैक्ट तथा समाचार पत्रों में लेख लिखते रहते हैं।

श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन एम०ए०, नंद किशोर जी, श्री वीरेन्द्र कुमार जी तथा श्री वृज रतन जी भी पुराने उत्साही कार्यकर्ता हैं।

श्री वृज रतन जी

(२) धामपुर (जिला बिजनौर)

धामपुर विजनौर जिले का एक वड़ा व्यापारिक केन्द्र है। यहां खान्डसारी और चीनी की मुख्य मन्डी है और कुल जैन संख्या ३५८ है।

यहाँ ५५ जैन परिवार है जिनमें १०० पुरूष ९७ स्त्री और १६१ बालक हैं। इस प्रकार कुल जैन संख्या ३५८ है जिनमें ८८ शि० पुरूष और ७९ शि० स्त्री है। उपर्युक्त परिवारों में एक खन्डेलवाल और ५४ अग्रवाल परिवार हैं।

परिवार के नाम

सर्वश्री

१—विमल प्रसाद
२—भगवती शरण देवी
३—शिखर चन्द्र
४—चमेली देवी
५—भूपेन्द्र कुमार
६—जगन लाल
७—जिनेन्द्र दास
८—जिनेन्द्र कुमार
९—राम ऋक्ष पाल
१०—राम कुमार
११—वावूराम सिंघल
१२—वावूराम मित्तल
१३—नन्हें मल
१४—श्रीमती देवी
१५—जैनेन्द्र कुमार
१६—जगदीश प्रसाद
१७—चन्दूलाल
१८—सुन्दर लाल
१९—राजेन्द्र कुमार
२०—मेहर चन्द्र
२१—शीतल प्रसाद
२२—रामचन्द्र मल
२३—कैलाश चन्द्र
२४—अभिनन्दन प्रसाद

सर्वश्री

२५—वाबूराम
२६—जैन प्रकाश
२७—श्रेयांस प्रसाद
२८—सुमेरचन्द्र
२९—श्रीचन्द
३०—दयाचन्द्र
१३—रामनाथ
२३—नानक चन्द
३३—संजय प्रकाश
३४—रामसखी
३५—नन्हेमल
३६—पदम चन्द्र
३७—हरी चन्द्र
३८—नेम कुमार
३९—जम्बू प्रसाद
४०—वाबू राम
४१—श्रेयान्स प्रसाद
४२—शान्ती देवी
४३—चमनलाल
४४—अभिनन्दन कुमार
४५—धन प्रकाश
४६—दीप चन्द्र
४७—कल्यान सिंह
४८—शिखर चन्द्र

सर्वश्री
४९—दीवान सिंह
५०—मूल चन्द
५१—प्यारेलाल
५२—सुरेन्द्र कुमार

सर्वश्री
५३—जय प्रकाश
५४—शिखर चन्द्र
५५—विजय सिंह

जैन मंदिर

धामपुर में दो जैन मंदिर हैं। शिखर वन्द जैन मंदिर स्व० लाला तुलसीराम जी ने स० १८९५ में वनवाया था। लाला जी मदिर के नाम कुछ गांव भी कर गये थे जिसकी वार्षिक ग्रामदनी सरकार द्वारा मंदिर को मिलती है। प्रतिवर्ष दशलाक्षण पर्व के वाद रथ यात्रा होती है।

जैन गर्ल्स स्कूल

यहां एक जूनियर गर्ल्स स्कूल है जिसमें लगभग २०० छात्राएं पढ़ती हैं। धार्मिक शिक्षा नहीं होती है, यह ग्राश्चर्य है।

रुहेलखन्ड कुमायूँ जैन परिषद्

धामपुर में रुहेलखन्ड कुमायूं जैन परिषद् की शाखा है। धामपुर की विरादरी में ग्रापसी मन मुटाव के कारण कुछ साल से रथयात्रा वन्द थी। परिषद ने इस सम्वन्ध में दो-तीन वैठकें धामपुर में की। वा० सुमत प्रसाद व वा० रतन लाल जी के प्रयत्न से समाज का मुटाव दूर हुग्रा। ग्रव रथ-यात्रा वरावर होती है।
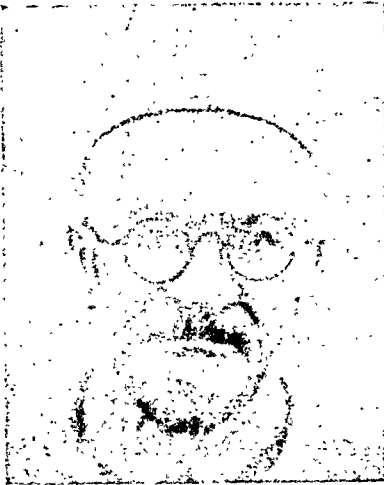
साहू चन्डी प्रसाद

साहू चन्डी प्रसाद का जन्म सं० १८२९ में धामपुर में हुग्रा था। उनके पिता का नाम साहू न्यादर मल था। साहू चन्डी प्रसाद सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में ला० जुगमन्दर दास नजीबा-वाद, राय वहादुर वा० द्वारिका प्रसाद नहटौर, ला० जम्बू प्रसाद एवं लाला हुलास राय सहारनपुर तथा दूसरे प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मिलकर कार्य करते थे।

साहू जी धार्मिक प्रकृति के पुरुष थे। शास्त्र सभा, देव पूजन ग्रादि कार्यो में स्वयं योग देते ग्रौर दूसरों को प्रेरणा देते थे। उन्होंने धामपुर के जैन पंचायती चैत्यालय को शिखर वन्द मंदिर के रूप में निर्माण कराया ग्रौर जैन कन्या पाठशाला की भी स्थापना की जो ग्राज भी ८वीं कक्षा तक सुचारु रूप से चल रही है तथा नगर में स्त्री शिक्षा का एक मात्र माध्यम पिछले चार दशक से रही है।

स्व०ला०शिव्वामल अम्बाला छावनी से आपका निकट सम्बन्ध था। साहूजी दि०जैन शास्त्रार्थ संघ को बराबर सहयोग प्रदान करते रहे। दि० जैन परिषद को भी उनका पूर्ण समर्थन प्राप्त था। परिषद के जिला स्तर पर कई सम्मेलन बा० रतन लाल वकील बिजनौर, सुमेर चन्द एडवोकेट सहारनपुर एवं० रा० बहादुर जुगमन्दर दास के सहयोग से सम्पन्न हुये।

साहू साहब २० वर्ष तक बराबर नगर पालिका धामपुर के अध्यक्ष रहे और नगर की जनता की सेवा का अवसर उन्होंने कभी हाथ से न जाने दिया। जनता में उनके अनेक प्रशंसक है। जिला बोर्ड के सदस्य रह कर उन्होंने अनेक लोकोपकारी कार्य किये। उन की जन सेवा की भावना सरकार से छिपी न रही इसलिये सरकार ने उनकी बुद्धि का लाभ उठाने के लिये उन्हें अवैतनिक मजिस्ट्रेट बना दिया। १५ वर्ष तक अवैतनिक मजिस्ट्रेट रहे। पश्चात् स्वदेशी आन्दोलन से प्रभावित हो कर आपने त्याग पत्र दे दिया। स्वदेशी आन्दोलन में साहू जी द्वारा आर्थिक सहयोग सदैव प्राप्त होता रहा। उनके पुत्र श्री देवकी नन्दन नगर पालिका के अध्यक्ष रहे। श्री अहिच्छत्र जी की समिति के भी वह सभापति रहे। उनके समय में उक्त क्षेत्र को सर्वांगीण उन्नति हुयी। पश्चात समिति में न रहने पर भी क्षेत्र उनकी दृष्टि से कभी ओझल नहीं रहा।

साहू जी के ६ पुत्र थे जिनमें से दो का निधन हो चुका है। साहू जी के परिवार को श्री पं० कैलाश चन्द्र जैन शास्त्री का धार्मिक कार्यों में सदैव सहयोग प्राप्त होता रहा है एवं उनकी प्रेरणा से धार्मिक कार्य सम्पादित हुये।

स्व० ला० प्यारे लाल जी भगत धामपुर के उत्साही कार्यकर्ता थे अंत समय तक उनकी सेवा की भावना बनी रही। साहू राजेन्द्र कुमार आदि सज्जन भी लगनशील कार्यकर्ता हैं।

●●

(२) नहटौर (बिजनौर)

नहटौर एक प्राचीन स्थान है। यहां खद्दर और देशी वस्त्र का व्यापार होता है। १९०५ में एक खेत से एक पिटारे में रखी हुई लगभग २७ प्रतिमाएं निकली थीं। साथ में एक ताम्र पत्र भी था जिससे ज्ञात होता है कि ये गजनी के समय में दवायी गयीं थीं। यहां स्व० राय वहादुर द्वारका दास इन्जीनियर का प्रसिद्ध घराना है जिन्होंने समाज की वड़ी सेवाएं की। पं० कैलाश चन्द्र शास्त्री जो जैन समाज के सर्वमान्य और प्रतिष्ठित विद्वान एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं, के जन्म का भी इसी नगर को गौरव है। नहटौर की जैन संख्या ३५३ है जिनमें ९३ पुरुष, ८६ स्त्रियां और १७४ वालक हैं। शिक्षित पुरुष ७१ और शिक्षित स्त्रियां ३४ हैं। जैन परिवार ५७ हैं जिनमें दो जायसवाल, वाकी ५५ अग्रवाल हैं।

परिवार

सर्वश्री

१. अमृत प्रसाद
२. राजेन्द्र कुमार
३. शम्भू नाथ
४. वाल गोविन्द प्रसाद
५. नेम चन्द
६. प्यारे लाल
७. राजेन्द्र किशोर
८. महेन्द्र किशोर
९. दया चन्द्र
१०. शीतल प्रसाद
११. श्रीचन्द रिखवदास
१२. रघुवीर शरण
१३. चन्द्र नरपत रंग
१४. राजेन्द्र कुमार किशनचन्द
१५. जै सिंह
१६. वृज नन्दन प्रसाद
१७. शीतल प्रसाद महावीर प्रसाद
१८. नेम चन्द महावीर प्रसाद
१९. सुदर्शन प्रसाद महावीर प्रसाद
२०. प्रकाश चन्द
२१. चन्द सेन

सर्वश्री

२२. कल्यान चन्द
२३. महेश चन्द्र
२४. किशन चन्द
२५. वृज किशोर
२६. सुदर्शन चन्द
२७. लाला शिखर चन्द मथुरा दास
२८. सुमेर चन्द
२९. शीतल प्रसाद छदामी लाल
३०. उमेश चन्द
३१. शान्ती प्रसाद
३२. शीतल प्रसाद महेश चन्द
३३. विमल प्रसाद
३४. सुरेश चन्द
३५. गोपाल दास
३६. मुन्शी लाल
३७. जय प्रकाश
३८. कृष्ण कुमार गर्ग जायसवाल
३९. महावीर किशोर
४०. राम भरोसे लाल
४१. प्रकाश चन्द किशोरी लाल
४२. दीप चन्द ज्वाला प्रसाद

सर्वश्री

४३. रघुवीर किशोर
४४. मित्र सेन
४५. सुमत प्रसाद जायसवाल
४६. शिखर चन्द
४७. राजाराम
४८. कमलेश कुमार
४९. तुलाराम

सर्वश्री

५०. सत्यपाल
५१. कैलाश चन्द जैन (ला० रतनलाल)
५२. त्रिभुवन चन्द
५३. श्रेयांस कुमार
५४. ज्ञान चन्द
५५. चन्द्र भान
५६. राज किशोर

दि० जैन मन्दिर

नहटौर में एक प्राचीन जैन मंदिर है। पर्यूषण पर्व के पश्चात वार्षिक रथ यात्रा होती है।

जैन विद्या मन्दिर इन्टर कालेज नेहटौर (बिजनौर)

जैन विद्या मन्दिर इन्टर कालेज नेहटौर की स्थापना १९४६ में स्व० श्री चन्द्र किशोर जी जैन एम० ए०, सुपुत्र श्री नन्द किशोर जी जैन डिप्टी कलक्टर द्वारा हुई। पहले यहां पर एक छोटी

जैन पाठशाला थी, जो सन् १९४७में इंगलिश मिडिल स्कूल हुआ और सन् १९४८ में जिसे हायर सेकेन्डरी स्कूल की मान्यता प्राप्त हुई। दुर्भाग्य से २४ मार्च सन् १९५० को मोटर दुर्घटना द्वारा

श्री चन्द्र किशोर जी की अचानक मृत्यु हो जाने से स्कूल के कार्य को बड़ी क्षति पहुंची। आप संस्था के संस्थापक के अतिरिक्त हिन्दी विभाग के अध्यक्ष भी थे। उनकी मृत्यु के पश्चात नेहटौर की जैन अजैन समाज ने कालेज की उन्नति में पूरा सहयोग प्रदान किया।

नेहटौर में दो और इन्टर कालेज हैं, फिर भी छात्र संख्या जैन विद्या मन्दिर की ही सबसे अधिक, यानि १००० है। शहर से बाहर उस कालेज का अपना एक विशाल भवन है। कालेज बिल्डिंग के लिये नेहटौर की जैन बिरादरी व साहु शान्ती प्रसाद जी ने १०००० रुपया तथा बाहर के भाइयों ने भी सहायता देकर कालेज की नयी बिल्डिंग तैयार कराई है।

कालेज बराबर उन्नति कर रहा है। कालेज में एक जैन विद्वान होते हुये भी अभी तक धार्मिक शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं हो पाया है। बच्चों में धार्मिक संस्कार पैदा करने के लिये धार्मिक व नैतिक शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है। कालेज कमेटी को इस तरफ तुरंत ध्यान देना चाहिये। अब सरकार ने स्वयं नैतिक शिक्षा का कोर्स स्कूलों में चालू कर कर दिया है।

लाला थान सिंह

स्व० ला० थान सिंह जी के पिता का नाम सेठ छोटा मल जी था। थान सिंह का जन्म नहटौर में हुआ। वह बड़े धर्मात्मा और सज्जन थे। वह ६० वर्ष की अवस्था में गृहस्थ का सब काम छोड़कर धर्म ध्यान करने लगे थे। वह बड़े दयालु थे। जाड़ों में गरीबों को रूई के वस्त्र आदि वितरित किया करते थे। वह बड़े ही कार्य कुशल थे और जब तक कोई काम पूरा नहीं होता उस कार्य में संलग्न रहते थे। ७५ वर्ष की उम्र में उनका देहान्त हुआ। उनके शव के साथ नगर के तमाम हिन्दू, मुसलमान और त्यागी बन्धु हाहाकार कर रहे थे। उनके तीन पुत्र, राय साहब बाबू द्वारका दास, सेठ मुरलीधर और बाबू न्यादर सिंह जी हुए।

राय साहब बाबू द्वारका दास

राय साहब बाबू द्वारका दास

उनके पिता का नाम सेठ थान सिंह था। उनका जन्म पौष कृष्णा ११ सम्वत् १९१३ दिनांक २५ दिसम्बर १८५९ को नहटौर में हुआ। बचपन की शिक्षा प्राप्त करके १७ वर्ष की उम्र में रुड़की इन्जीनियरिंग कालेज में प्रवेश किया। जब आप कालेज जाने लगे तो उनके पिता जी ने उन्हें तीन शिक्षाएं दीं—(१) व्यायाम करना (२) कभी कोई चीज उधार न लेना, यहां तक कि साधारण वस्तु भी एक दिन के लिये उधार न लेना और (३) न्याय से धनोपार्जन करना। उन्होंने तीनों बातों को आखिरी

वक्त तक निभाया। इंजीनियरिंग पास करने के वाद उनकी नियुक्ति सीतापुर में हुई। आपको शुरू से व्यायाम का शौक तो था ही, एक वार कुश्ती में एक वड़े पहलवान को जीता। इस पर कुछ विपक्षी लोग उन के दुश्मन हो गये। तभी से उन्होंने कुश्ती लड़ना छोड़ दिया किन्तु घर पर व्यायाम वरावर करते रहे और दूसरों को व्यायाम का उपदेश दिया करते थे। व्यायाम करने के कारण उनका शरीर वड़ा हृष्ट पुष्ट था और इसी कारण आपको काम करने में कभी आलस्य नहीं हुआ। सीतापुर के वाद वे कलकत्ता और जवलपुर में ऊंचे पद पर रहे। कलकत्ते में उन्होंने जलकल का कार्य वड़ी बुद्धिमत्ता से किया। कलकत्ते से वह शाहजहांपुर और फिर मेरठ तथा वरेली आये। वरेली का वाटरवर्क्स भी उन्होंने ही तैयार कराया। मेरठ के वाटरवर्क्स के कार्य में वजट में १६ हजार और में वरेली ३३ हजार वचा कर सरकार को दिया, इसपर उनको सरकार की ओर से १९०१ में राय साहव की पदवी दी गयी। शाहजहांपुर का पावर कैम्प भी उनका ही वनवाया हुआ है और उससे सरकार इतनी खुश हुई कि स्वयं बादशाह एडवर्ड सप्तम की ओर से उनको सार्टिफिकेट दिया गया। तव से उन को सव लोग राय वहादुर कहने लगे। उसके वाद वह पहाड़ी इलाको में गये और फिर उनको कलकत्ता भेजा गया। वहां के कठिन काम को जिसको कोई पूरा नहीं कर सकता था उन्होंने पूरा किया।

राय वहादुर साहव वड़े ही धर्मात्मा और दानी थे तथा गरीव विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दिया करते थे। वह ठेकेदारों से काम कराने के लिए अपने पास से पैसा देकर काम कराया करते थे ताकि ठेकेदार दिल से काम करें। चीफ इन्जीनियर मि० वेल्स ने कहा कि मैंने जीवन में राय वहादुर साहव के वरावर ईमानदार आदमी नहीं देखा। उनके वहुत से बंगाली मित्र थे और राय साहव उनको जैन धर्म की पुस्तकें पढ़ने को देते थे जिससे प्रभावित होकर कितने ही बंगाली भाइयों ने मांस और मदिरा का त्याग कर दिया। उनको सामाजिक जल्सों में सम्मिलित होने का वहुत शौक था और अपना काम छोड़कर अधिवेशनों में जाया करते थे। वह कई वर्ष तक जैन महासभा के सभापति रहे।

बाबू नन्द किशोर

श्री नन्द किशोर, राय वहादुर वावू द्वारका दास के सुपुत्र थे। उन्होंने इलाहावाद विश्वविद्यालय से वी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की और तीन स्वर्ण पदक पुरस्कार में प्राप्त किये। विहार के छपरा जिले में वहुत दिनों तक डिप्टी कलेक्टर और मजिस्ट्रेट रहे। वह वड़े ही सरल प्राणी और धर्मात्मा थे। उनके दो पुत्र श्री चन्द्र किशोर और श्री महावीर किशोर हुए। श्री चन्द्र किशोर का अल्पायु में ही रामपुर में स्कूटर दुर्घटना में देहान्त हो गया।

श्री चन्द्र किशोर जैन

श्री चन्द्र किशोर जैन वावू नन्द किशोर जैन डिप्टी कलक्टर के पुत्र व राय वहादुर द्वारका दास के पौत्र थे। उनका जन्म १९१२ में, निधन २४ मार्च सन् १९५० को रामपुर में

स्कूटर दुर्घटना में हुआ। उनकी आयु केवल ३८ वर्ष की थी। उन्होंने प्रथम श्रेणी में एम० ए० परीक्षा पास की थी। अपनी योग्यता और कर्त्तव्यनिष्ठा के बल पर उन्होंने अल्पायु में ही अच्छी ख्याति प्राप्त की। उनके द्वारा लिखित निम्न पुस्तकें प्रसिद्ध हैं-- विष कन्या, गृह दाह, भाई-भाई।

श्री चन्द्र किशोर जैन

यदि अकाल में काल कवलित न हो गये होते तो कितनी ही उच्च कोटि की पुस्तकें लिखते जिनके लिखने का वह प्रयास कर रहे थे।
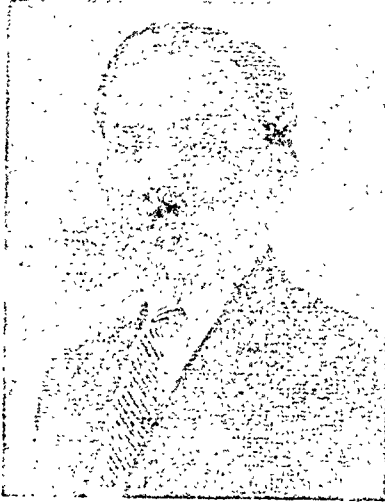
बाबू चन्द्र किशोर जी ने नहटौर में जैन कालेज की स्थापना की थी। प्लूरिसी जैसे कष्टप्रद रोग से पीड़ित होते हुए भी वे रात को ११ बजे तक कालेज का काम करते थे। वह कालेज के लिए अपना सब कुछ अर्पण करने को तत्पर रहते थे और किया। १९४७ की घटना है, एक सिक्ख शरणार्थी को उन्होंने अपने कालेज का प्रधानाचार्य नियुक्त किया। उसके पास उपयुक्त वस्त्र नहीं थे। उन्होंने तुरन्त अपना गर्म सूट व ओढ़ने-बिछाने के सब वस्त्र दे दिये। छात्रावस्था में दूसरे असहाय छात्रों को अपने पितामह के अनुकरणीय ढंग पर सहायता प्रदान की। उस समय के वे छात्र आज बड़े-बड़े उच्च पदों पर हैं और चन्द्र किशोर जी को अश्रुपूर्ण नेत्रों से याद करते हैं। उनके कोई सन्तान नहीं थी। वह कहा करते थे कि कालेज के इतने छात्र हैं, यही तो मेरी सन्तान हैं, और सन्तान का मैं क्या करूंगा। उनका हृदय मानव सेवा में रत था। उनके निधन पर नहटौर में जैसी शोकपूर्ण हड़ताल हुई वैसी कभी नहीं हुई। श्री चन्द्र किशोर नहटौर के अत्यन्त लोकप्रिय व्यक्ति थे।

कार्यकर्त्ता

श्री रघुवीर किशोर

नहटौर में ला० शीतल प्रसाद क्लाथ मरचेन्ट व श्री रघुवीर किशोर आदि योग्य कार्यकर्त्ता हैं। श्री रघुवीर किशोर जी जैन सुपुत्र ला० न्यादर मल जी जैन व भतीजे रा० ब० द्वारका दास जी, समाज के मौन कार्यकर्त्ता हैं। आजकल सर्राफे का काम करते हैं और पहले इम्पीरियल बैंक के खजान्ची थे। आपने डाइरेक्टरी के निर्माण में काफी सहायता प्रदान की है।

●●

पं० कैलाश चन्द जी शास्त्री

सिद्धान्ताचार्य श्री पं० कैलाश चन्द जी शास्त्री, प्रधानाचार्य, श्री स्याद्वाद जैन महा-विद्यालय काशी के नाम से जैन समाज का बच्चा-बच्चा परिचित । पंडित जी नहटौर (विजनौर) निवासी स्व० लाला मुसद्दीलाल के सुपुत्र हैं। आपका जन्म कार्तिक शुक्ला १२ विक्रम संवत् १९६० को हुआ था। लाला मुसद्दीलाल अत्यन्त सरल स्वभाव व धर्मात्मा पुरूष थे। किराने की दुकान थी, ग्राहकों के ही नहीं प्रत्युत नगर निवासियों के भी वे अत्यन्त विश्वासपात्र थे।

स्थानीय पाठशाला में अपनी शिक्षा पूर्ण कर पंडित जी १२ वर्ष की अवस्था में श्री स्याद्वाद दिगम्वर जैन महाविद्यालय काशी में अध्ययन हेतु आ थे। विद्यालय में आपने संस्कृत, व्याकरण, साहित्य, धर्म एवं न्याय का मनोयोग पूर्वक अध्ययन किया। सन् १९२० में कलकत्ता की न्यायतीर्थ परीक्षा की तैयारी की थी परन्तु महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन की शंखध्वनि सुनकर पंडित जी ने देश का साथ दिया और परीक्षा का वहिष्कार किया। इसी प्रकार क्वींस कालेज की परीक्षाओं से भी असहयोग किया।

आदरणीय शास्त्री जी

सन् १९२१ में धर्मशास्त्र के विशेष अध्ययन के लिये आप श्री गोपाल जैन सिद्धान्त विद्यालय मोरैना (ग्वालियर) गये। पं० गोपाल दास जी का स्वर्गवास हो चुका था किन्तु उनके प्रकाण्ड विद्वान शिष्य श्री पं० माणिक चन्द जी न्यायाचार्य, श्री पंडित बंशीधर जी न्यायालंकार, श्री पं० देवकी नन्दन जी व्याख्यानाचार्य और श्री पं० जगन्नाथ जी शास्त्री काव्य-शिरोमणि, ये चार प्रमुख विद्वान अध्यापन करने थे।

मोरेना में धर्मशास्त्र की पढ़ाई उच्चकोटि की थी, जो अन्यत्र नहीं थी। पं० जगमोहन लाल जी शास्त्री उनके सहपाठी थे। मौरेना विद्यालय के जीवन का वह स्वर्णयुग था।

सन् १९२३ में शिक्षा समाप्त कर पंडित जी तथा उनके सहाध्यायियो ने विद्यालय छोड़ा, परन्तु कुछ ऐसी अप्रिय घटनायें घटीं जिससे विद्यालय के अधिकांश छात्रों व पाठकों को विद्यालय छोड़ने को वाध्य होना पड़ा और विद्यालय के जीवन ने भी पलटा खाया।

पंडित जी स्याद्वाद महाविद्यालय काशी के मन्त्री बाबू सुमति लाल जी के पास गये। बाबू सुमति लाल जी ने उनसे स्याद्वाद विद्यालय काशी के धर्माध्यापक पद पर कार्य करने का अनुरोध किया, जिसे स्वीकार कर पंडित जी सन् १९२३ में वहां उक्त पद पर प्रतिष्ठित हुये। मध्य-काल में अस्वस्थ्य हो जाने से उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया किन्तु स्वस्थ होने पर विद्यालय समिति ने १९२७ में उनकी पुनः नियुक्ति विद्यालय के प्रधान अध्यापक के रूप में की। पंडित जी आज भी उक्त विद्यालय के प्रधानाचार्य के पद पर प्रतिष्ठित हैं।

इन वर्षों में पंडित जी ने सैकड़ों बालकों को योग्य विद्वान बनाया जो आज समाज के विविध क्षेत्रों में समाज सेवा करते हुये पंडित जी की तथा विद्यालय की कीर्ति ध्वजा फहरा रहे हैं। काशी में रहते हुये पंडित जी ने उस विद्या केन्द्र का पूर्ण उपयोग किया। अपने सतत विद्याभ्यास से वे अब अनेक विषयों व अनेक शास्त्रों के पारंगत विद्वान हैं और काशी के संस्कृत के विद्वानों में उनका प्रमुख स्थान है। पंडित जी की सेवायें यहां तक ही सीमित नहीं हैं, किन्तु समाज के अनेक क्षेत्रों में उनकी बहुमुखी सेवायें हैं।

भारतवर्षीय दि० जैन संघ मथुरा की संस्थापना में उनका प्रमुख भाग है। उसके जन्म काल से आज तक, करीब ३० वर्ष से वे उस संस्था के संचालन में भाग ले रहे हैं। उसके प्रमुख पत्र "जैन संदेश" के वे आज भी सफल संपादक हैं। संघ के साहित्य विभाग के मन्त्री हैं, जिससे ५० के करीब पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। भारतवर्षीय दि० जैन विद्वत् परिषद ने उन्हें दो बार अध्यक्ष पद पर समासीन कर गौरवान्वित किया है। ये सब सेवायें उनकी अवैतनिक हैं। अनेक साहित्यिक संस्थानों तथा धार्मिक समारोहों की उन्होंने अध्यक्षता की है तथा अनेकों के वे सदस्य हैं जिनका विवेचन इस संक्षिप्त विवरण में नहीं आ सका है। वे अनेकों ग्रन्थों के स्वयं लेखक हैं। "जैन धर्म" नाम की पुस्तक जिसमें जैन धर्म के विविध अंगों का सफलता से प्रमाणिक वर्णन आ गया है तीन बार प्रकाशित हो चुकी है। जैन छात्रों को जो कालेजों में अध्ययन करते हैं तथा जैनेतर विद्वानों को जैन धर्म से परिचित कराने वाली यह अनुपम पुस्तक है जिसकी इस युग में सबसे बड़ी आवश्यकता थी। पंडित जी द्वारा लिखित ग्रन्थों में प्रमुख ग्रन्थ जो प्रकाशित हो चुके हैं उनकी नामावली निम्न प्रकार है—

१. जैन धर्म, २. तत्त्वार्थसूत्र (हिन्दी टीका), ३. भगवान ऋषभदेव, ४. जैन न्याय (जैन न्याय के संपूर्ण अंगों पर प्रकाश डालने वाली), ५. नमस्कार महामंत्र, ६. भगवान महावीर का अचेलक धर्म, ७. दक्षिण भारत में जैन धर्म, ८. जैन साहित्य के इतिहास की पूर्व पीठिका। और भी अनेक ग्रंथ पंडित जी द्वारा लिखित अनुवादित हैं जो अभी प्रकाशित नहीं हुये हैं।

पंडित जी की इन सभी सेवाओं के लिये समाज सदा ऋणी रहेगा।

(४) शेरकोट (बिजनौर)

शेरकोट नदी के किनारे एक छोटा पुराना कस्बा है। शेरकोट जाने के लिए धामपुर स्टेशन पर उतरना पड़ता है। यहां एक जैन मंदिर और कुछ सम्पन्न जैन परिवार हैं। स्व० बा० सुमेर चन्द एडवोकेट का एक जमींदार खानदान में वहीं पर जन्म हुआ था। शेरकोट की कुल जैन-संख्या ६२ है जिनमें २२ पुरुष और १६ स्त्रियां हैं। शिक्षित पुरुष २२ और शिक्षित स्त्रियां १४ हैं तथा एक खन्डेलवाल और आठ अग्रवाल कुल नौ जैन परिवार हैं—

सर्वश्री :

१—नाकेश चन्द
२—गुलाब चन्द खन्डेलवाल
३—दमोदर दास
४—लाला हुकुम चन्द
५—प्रकाश चन्द
६—श्याम लाल रारा
७—गिरधर लाल चांदवाड
८—सुमेर चन्द रारा
९—दिनेश चन्द्र

बाबू सुमेर चन्द जी

बाबू सुमेर चन्द्र जी एडवोकेट—

बाबू सुमेर चन्द्र जी का जन्म शेरकोट जिला बिजनौर में एक जमींदार घराने में सन् १८८१ ई० में हुआ था। बाबू जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एल० एल० बी० की परीक्षा पास करके सहारनपुर में बाबू नेमी दास जी के साथ वकालत की प्रैक्टिस शुरू की। थोड़े ही दिनों में सहारनपुर बार में आपकी गणना प्रसिद्ध और प्रथम श्रेणी के वकीलों में हो गयी। बाबू जी केवल धार्मिक विचारों के ही नहीं थे बल्कि प्रतिदिन पूजन पाठ व सामयिक आदि किया करते थे। सामाजिक कार्यों में तो सदैव अग्रसर रहते थे। गरीब भाइयों की गुप्त रूप से सहायता करते थे। आप श्री हस्तिनापुर तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य थे और सहारनपुर की प्रत्येक सामाजिक संस्था, जैन हास्पिटल आदि के मुख्य कार्यकर्ता और सहायक थे। आप में सबसे बड़ा गुण यह था कि संस्थाओं के कार्यकर्ताओं से मिलकर काम करते थे। आप सदैव हंसमुख रहते थे। आपका जीवन बड़ा सादा था। बाबूजी पक्के सुधारक विचारों के थे। परिषद् के छठवें अधिवेशन रुड़की के सभापति बने और

परिषद् के कार्य को आगे बढ़ाया । आपने सहारनपुर में राय बहादुर जुगमन्दर दास जी के सभापतित्व में एक शानदार अधिवेशन कराया और डेढ़ घंटे तक एक दिन की बारात के प्रस्ताव पर जोरदार भाषण दिया । उससे सहारनपुर की समाज को प्रस्ताव का विरोध करने की हिम्मत न हुयी । बाबूजी को यद्यपि वकालत के काम की वजह से सांस लेने की भी फुरसत न थी मगर परिषद् के काम के लिये बाहर जाने के वास्ते हर समय तैयार रहते थे । आपने एक दिन की बारात का रिवाज चालू कराने के लिए परिषद् प्रचार समिति के साथ रोहतक, मेरठ, मुजफ्फरनगर आदि जिलों के मुख्य-मुख्य स्थानों का दौरा किया । फलस्वरूप जैन समाज में ही नहीं बल्कि अजैनों में भी एक दिन की बारात का रिवाज चालू हो गया ।

परिषद् के दिल्ली अधिवेशन के आप सभापति बन कर गये । दिल्ली में ज शानदार स्वागत और जुलूस आपका निकाला गया उससे विरोधियों पर परिषद् का बड़ा प्रभाव पड़ा । बाबू जी का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली था । वह विरोधियों की कभी मुखालफत नहीं करते थे बल्कि अपने बात की पुष्टि इस तरीके से करते थे कि किसी की विरोध करने की हिम्मत ही नहीं होती थी । दिल्ली अधिवेशन में ही महगांव के जैन मंदिर की जैन मूर्तियों को खंडित आदि करने के विरोध में जो प्रस्ताव पास किया गया और उसके बाद तमाम भारतवर्ष के गाँव-गाँव में ग्वालियर रियासत का काले झंडों के साथ विरोध किया गया उस जैसे आन्दोलन की जैन समाज में मिसाल नहीं मिलती । इस आन्दोलन को सफल बनाने में लाला तनसुख राय, श्री अयोध्या प्रसाद जी गोयलीय, श्री कौशल प्रसाद जी का मुख्य हाथ था । आन्दोलन से ग्वालियरी राज्य का तख्त हिल गया और ग्वालियर नरेश ने अपने प्रतिनिधि कर्नल हस्कर को परिषद् के प्रेसीडेन्ट श्री सुमेर चन्द जी के पास सुलह करने के लिये दिल्ली भेजा । इस अन्दोलन से परिषद की शोहरत और प्रभाव तमाम जैन समाज पर छा गया । आन्दोलन को सफल बनाने में जैन परिषद के कर्णधार बा० रतनलाल वकील, बाबू लाल चन्द जी ऐडवोकेट, बा० श्याम लाल ऐडवोकेट, बा० नानक चन्द, बा० उग्रसेन जी रोहतक, बा० सुमेर चन्द एडवोकेट आदि थे ।

जैन समाज में बहुत समय से दस्सा पूजा अधिकार एक गंभीर विषय बना हुआ था जिस पर जैन समाज और दस्से भाइयों में हाईकोर्ट आदि में वर्षों तक केस चलते रहे । खंडवा अधिवेशन में डा० हीरा लाल जी के सभापतित्व में दस्सा पूजा अधिकार का प्रस्ताव रखा गया । बाबूजी ने प्रस्ताव पर बहस करते हुये कहा कि हम मनुष्यत्व को ही खो बैठे हैं और जिस चतुराई से आपने दस्सा पूजा अधिकार का प्रस्ताव पास कराया, यह बाबूजी की ही योग्यता का प्रतीक है ।

बाबूजी अपनी बात के धनी और धर्मनिष्ठ पुरुष थे । जो बात वह कहते थे उसे सोच-समझ कर कहते थे । बाबूजी ने प्रस्ताव को कार्य रूप में लाने के लिए पं० परमेष्ठी दास जी और बाबू उग्रसेन जी मंत्री परीक्षा बोर्ड का मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर आदि जिलों में दौरा कराया । पं० परमेष्ठी दास जी, जिन्होंने दस्सा पूजा अधिकार पर एक बड़ी सुन्दर पुस्तक लिखी है, बाबू उग्रसेन जी के साथ सहारनपुर पहुंचे । बाबूजी ने पं० जी के भाषण का प्रबन्ध जैन स्कूल सहारनपुर

श्री १००८ पार्श्वनाथ जैन पंचायती मन्दिर
कीरतपुर

साहू मेहरचन्द जी जैन

श्रीमती फूल मती देवी
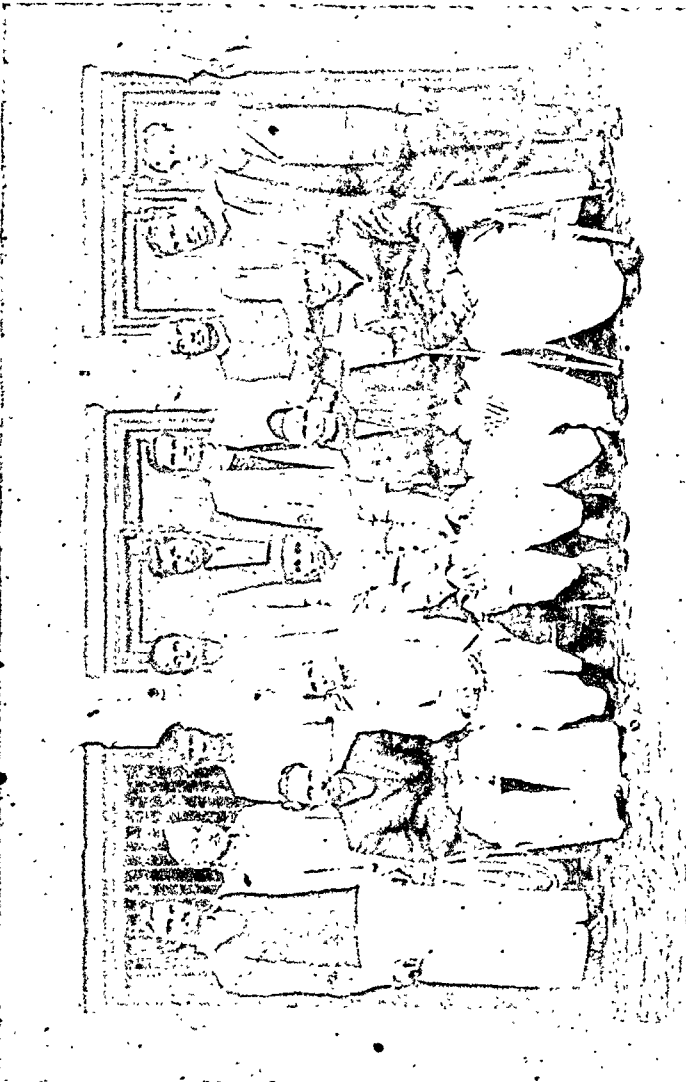
जैन समाज किरतपुर

जैन समाज कीरतपुर

में किया था। स्कूल में पहुंचने से पहले स्कूल से बाहर हजारों की संख्या में विरोधी जमा थे और नारे लगा रहे थे। स्कूल का फाटक बन्द कर दिया गया था। अतः पंडित जी आदि को वहा से वगैर भाषण दिये वापस लौटना पड़ा। भीड़ में किसी व्यक्ति ने वावूजी की टोपी उतार ली, वा .जी हंसते हुये अपनी कोठी पर चले आये। थोड़ी देर बाद राय वहादुर हुलास राय और उनके कुछ साथी बाबूजी के पास क्षमा मांगने के लिये आये। बाबूजी ने हंस कर कहा कि राय बहादुर साहब मेरे मान-अपमान की चिन्ता न करें, हम सुधारक हैं और सुधारकों के लिये ऐसे-ऐसे अपमान साधारण सी बात है। अगले दिन बाबूजी ने मुहल्ले चौधरान के मन्दिर जी में दस्सा पूजा अधिकार का प्रस्ताव पास कराया और इस प्रकार सहारनपुर जैसी कट्टर जगह में बाबूजी ने परिषद की साख क कायम रखा।

इसके कुछ दिन बाद ही नेहटौर जिला बिजनौर में अचानक सन् १९३८ में बाबूजी का देहान्त हो गया। आपकी मृत्यु से जैन समाज विशेष कर दिगम्बर जैन परिषद में शोक की लहर दौड़ गयी और उनकी पूर्ति आज तक नहीं हो सकी। आपके सुपुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार जी, श्री देवेन्द्र कुमार जी आदि आप की ही तरह सज्जन हैं।

शेरकोट में श्री गुलाब चंद जी आदि सज्जन उत्साही कार्यकर्ता हैं।

(५) किरतपुर (बिजनौर)

किरतपुर जिला बिजनौर में जैनों का एक अन्य प्रमुख स्थान है। मगर जैनों की काफी संख्या होते हुये भी वहां बच्चों की धार्मिक शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं है।

लाला मेहर चन्द

किरतपुर (बिजनौर) के सुप्रसिद्ध बन्धुओं में ला० मेहर चन्द का प्रमुख स्थान है। आपने किरतपुर में दर्शनीय श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर का भव्य निर्माण करके सन् १९४१ में उसकी वेदी प्रतिष्ठा कराई।

इस महान पुन्य कार्य की प्रेरणा का स्रोत आपकी सौ० धर्मपत्नी फूलमती देवी जी रही हैं।

आपके श्री जुगमन्दर दास, सीमंधर दास एव सुरेश चन्द्र तीन सुपुत्र हैं जो स्वभावत: धर्मात्मा, सच्चरित एवं कुशल व्यापारी हैं और धार्मिक कार्यों में भाग लेते रहते हैं।

पं० श्री श्रेयांस कुमार शास्त्री

सुपुत्र श्री ला० लल्लू मल, आपने सिद्धान्त न्याय, साहित्य शास्त्री, साहित्य रत्न तथा बी० ए० की परीक्षाएं पास की है तथा लेखक और अच्छे वक्ता हैं। आपने निम्न पुस्तकें लिखी हैं:—

१—आत्मावलोकन (सम्पादित), २—अनुभव-प्रकाश, ३—श्री वृहत्स्वयंभूस्तोत्र, ४—स्तोत्रत्रयीसार्थ (भाषा टीका कार), ५—भक्तामर स्तोत्र (भाषा-अनुदित), ६—एकीभाव स्तोत्र, ७—श्री आध्यात्मिक पाठ संग्रह (संकलित एवं संपादि।)।

छात्र जीवन से ही आपमें समाज सेवा की भावना थी और निरन्तर प्रगति की ओर रहे।

सन् १९३३ में आपने राष्ट्रीय सेवा कार्य किया था।

आप हिन्दू इन्टर कालेज किरतपुर में हिन्दी-संस्कृत के प्राध्यापक पद पर कार्य कर रहे हैं

(८) स्योहारा (बिजनौर)

स्योहारा जिला बिजनौर का एक छोटा कस्बा है जहां जैनों की अच्छी संख्या है तथा क सम्पन्न परिवार हैं।

संख्या—पुरुष ८७, स्त्रियां ८५, लड़के ४५, लड़कियां ३२, कुल सं० २४९, परिवार सं० ३

यहां एक जैन मंदिर है जो अति सुन्दर और काफी बड़ा है। मंदिर में एक प्राचीन प्रति १५४८ की है और शेष प्रतिमायें १६१० और १७२६ संवत् की है।
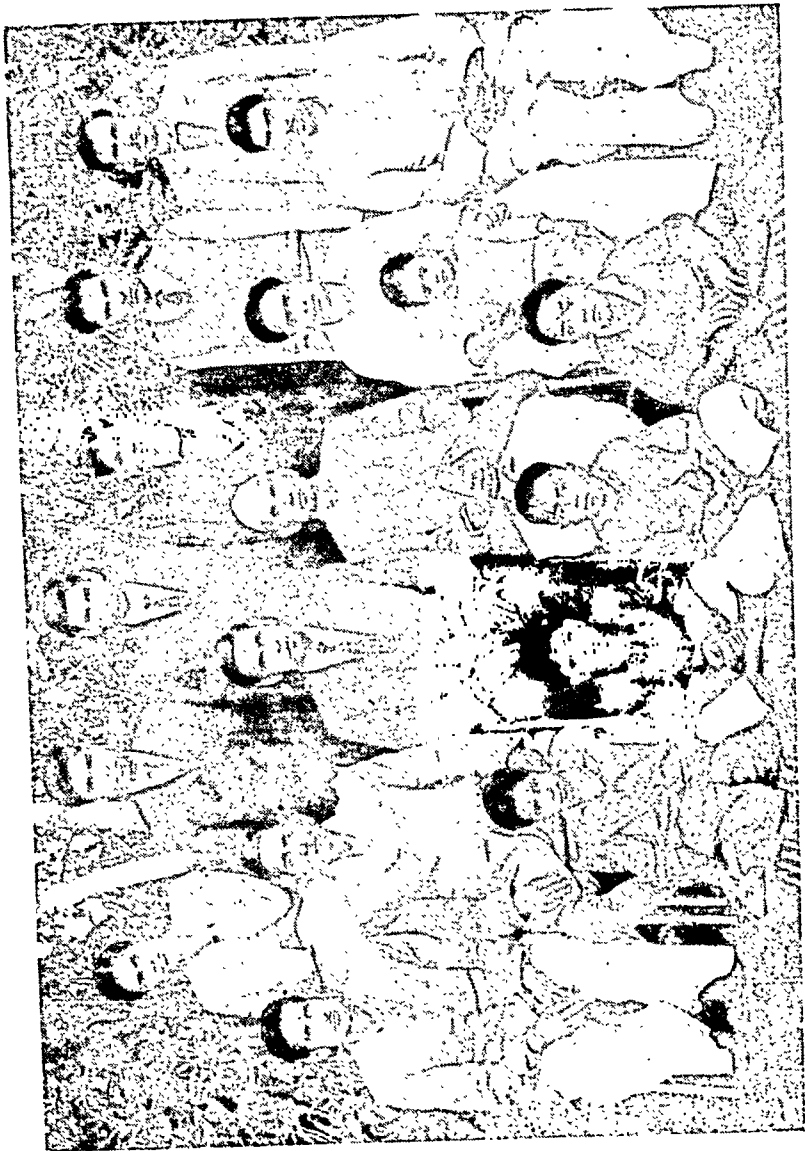
जैन समाज, बिलसी
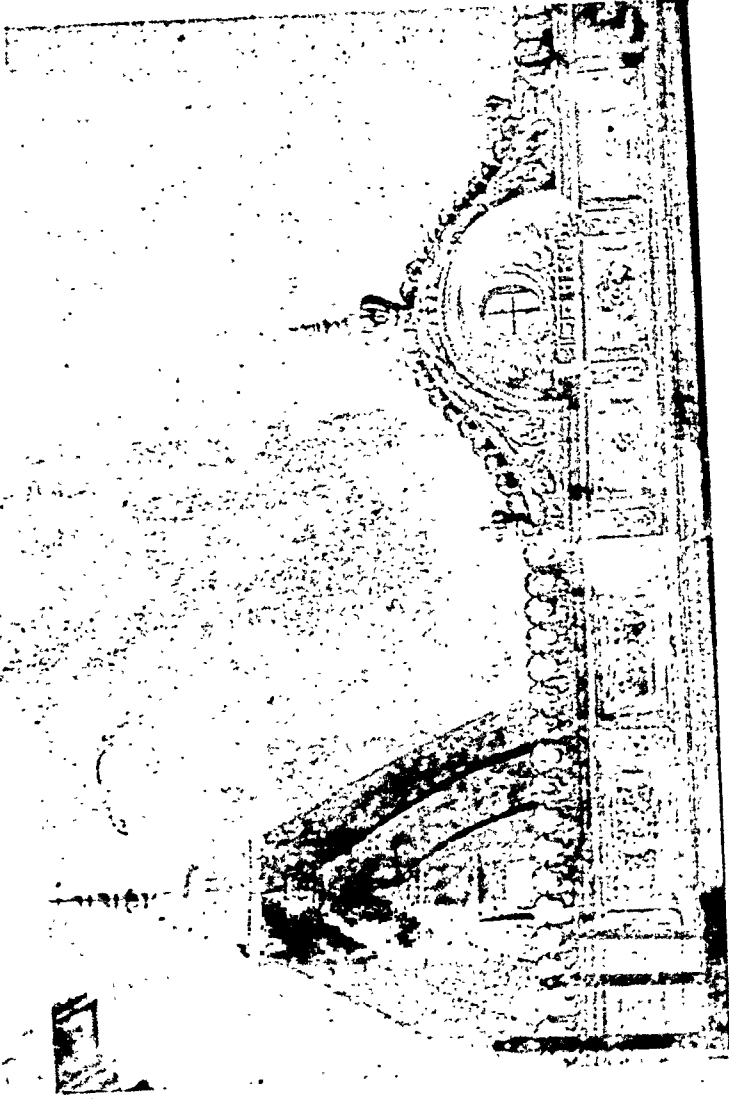
जैन मंदिर शिवहारा

संस्थायें

१. जैन धर्मशाला—स्व० लाला अमर सिंह जी द्वारा दान की गई।

२. जैन कुमार सभा—जिसके सदस्य बड़े उत्साही हैं और वे दशलाक्षणी पर्व तथा वीर जयन्ती आदि पर समाज सेवा करते हैं और अपना कार्य-क्रम भी बनाते हैं।

३. जैन पाठशाला—पाठशाला में कक्षा ५ तक धार्मिक शिक्षा दी जाती है। इसमें २ अध्यापक और ६० विद्यार्थी हैं।

पुराने कार्यकर्ता

१. लाला कैलाश चन्द
२. श्री सतीश चन्द
३. बा० छोटे लाल
४. बा० लोकेन्द्र कुमार
५. साहू धर्म चन्द
६. ला० हेम चन्द
७. श्री लव कुमार

वर्तमान कार्यकर्ता

१. बा० उपेन्द्र कुमार	...	प्रधान
२. ला० सरमत प्रकाश	...	उप प्रधान
३. बा० लव कुमार	...	कोषाध्यक्ष
४. मा० सीता राम	...	मंत्री
५. ला० हेम चंद	...	भंडारी
६. साहू धर्म चंद	...	आडीटर

दशलाक्षणी पर्व पर जल यात्रा निकाली जाती है तथा वीर जयन्ती पर जैन कुमार सभा द्वारा कार्यक्रम रखे जाते हैं।

(७) नजीबाबाद

जिला विजनौर में नजीबाबाद मुसलमानी राज्य और अधिकार सत्ता का एक स्मारक नगर जो सहारनपुर मुरादाबाद रेलवे लाइन पर जंक्शन स्टेशन है। यहां से ठाकुरद्वारा तथा विजनौर को रेल जाती है। प्रसिद्ध साहू जैन परिवार के महानुभावों की सामाजिक और धार्मिक सेवाओं के कारण नजीबाबाद जैन समाज में भारत प्रसिद्ध स्थान है।

नजीबाबाद की कुल जैन संख्या २०३ है, जिनमें ५५ पुरुष, ६२ स्त्रियां, ८६ बालक तथा ६ शिक्षित पुरुष और ४० शिक्षत स्त्रियां हैं। कुल जैन परिवार ४४ हैं :

सर्वश्री

१—जिनेन्द्र कुमार
२—प्रद्युम कुमार
३—पीतम भाइए (नत्थू लाल)
४—शान्ती प्रसाद
५—वीरेन्द्र कुमार
६—रतन प्रकाश
७—सुमत कुमार जय कुमार
८—बाबू सिंह
९—महावीर प्रसाद कन्हैया लाल
१०—नेम कुमार
११—छोटे लाल
१२—अशोक कुमार
१३—कुन्दन लाल तुलसी राम
१४—सरला देवी मन्नू लाल
१५—परमा नन्द
१६—श्याम प्यारी अमर चन्द
१७—मामराज
१८—रोशन लाल
१९—लछमी चन्द
२०—वीरेन्द्र कुमार
२१—गायत्री देवी
२२—पद्म माला अभिनन्दन प्रसाद
२३—हर स्वरूप
२४—मूल चन्द
२५—दीप चन्द
२६—जगत प्रसाद
२७—नरेश चन्द
२८—बाबू फकीर चन्द
२९—लाला श्रीयांश प्रसाद
३०—राजेन्द्र कुमार हरिश्चन्द्र
३१—सुख नन्दन प्रसाद
३२—हरीश चन्द गनेशी लाल
३३—रामदुलारी हर प्रसाद
३४—वृज नन्दन लाल
३५—चन्द्रवती शाह गनेशी लाल
३६—असर्फी देवी कुन्दन लाल
३७—दुर्गा देवी मूल चन्द
३८—जगदीश प्रसाद
३९—पदमावती, सा० सुमत प्रसाद
४०—इन्दु सेन
४१—सा० प्रकाश चन्द्र
४२—बारू मल
४३—सा० श्रीयांश प्रसाद (बम्बई रहते हैं)
४४—शान्ती प्रसाद (कलकत्ता रहते हैं)

दि० जैन मन्दिर, नजीबाबाद
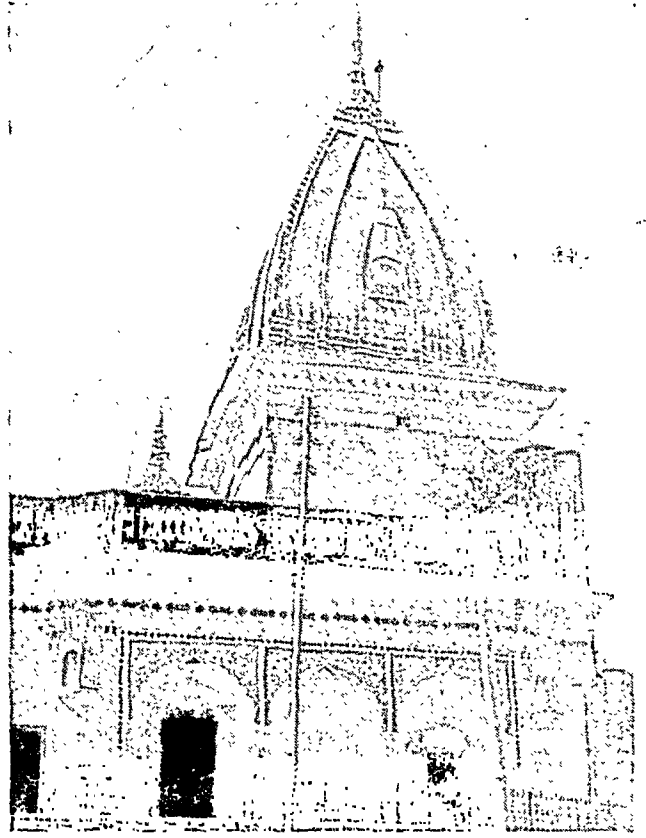
पदाधिकारी व अन्तरंग सदस्य गण :
श्री दि० जैन समाज, नजीबाबाद सन् १९६८.
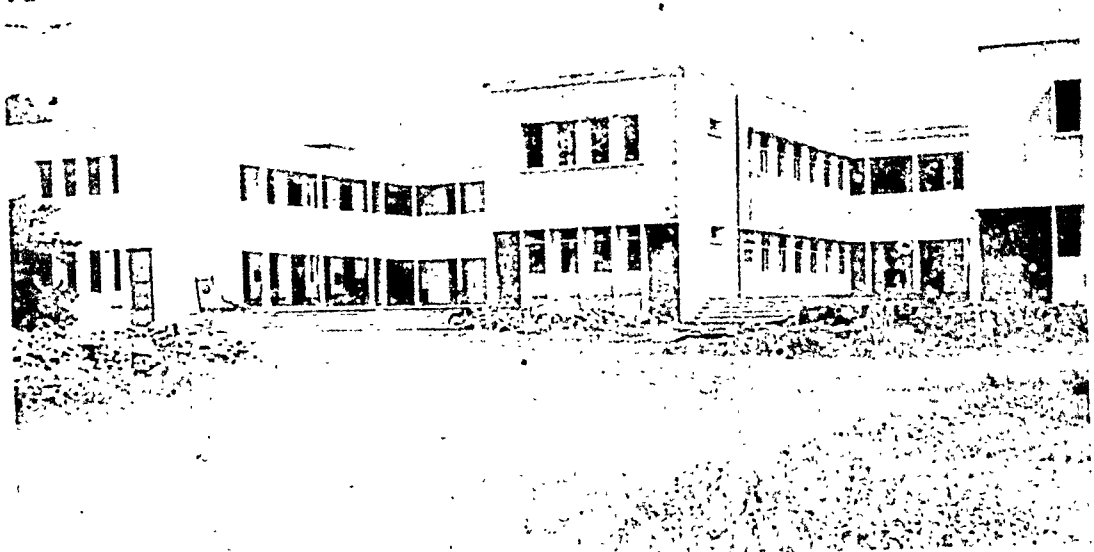
मूर्ति देवी सरस्वती इन्टर कालेज, नजबीबाबाद
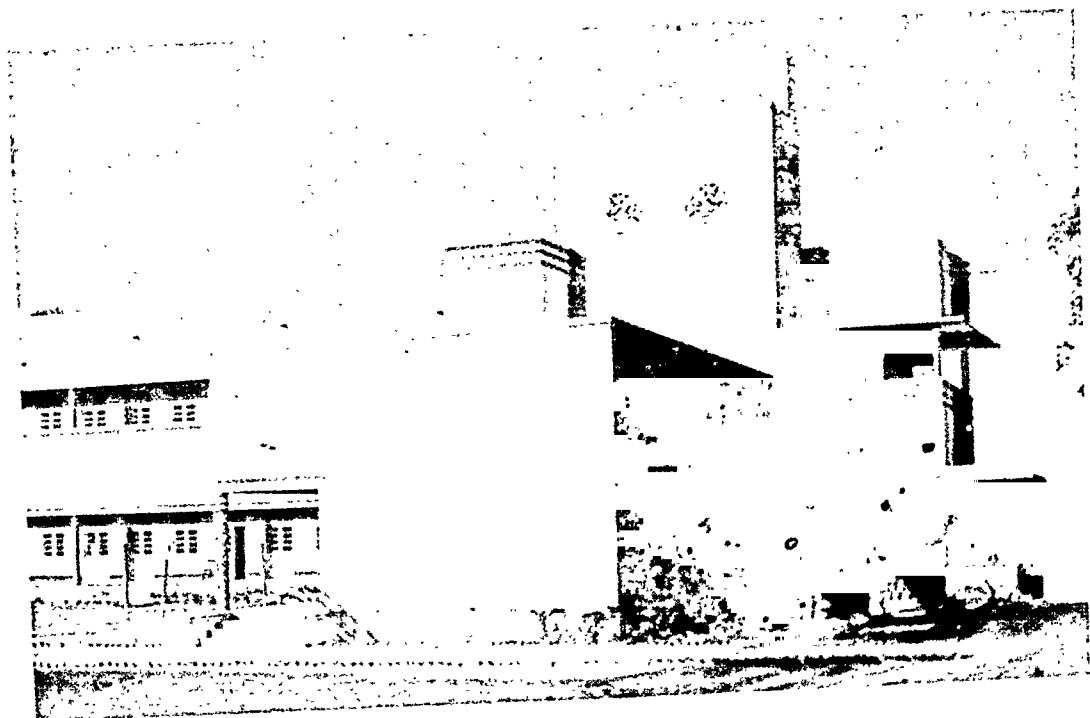
मूर्ति देवी कन्या विद्यालय, नजीबाबाद

नजीबाबाद के जैन मन्दिरों का परिचय—

पंचायती जैन मन्दिर नजीवावाद १७०० ई० का वना हुआ है जिसका पुराना भवन बालक राम मुहल्ले में अभी भी है। सन् १८९५ में दूसरे विशाल जैन मन्दिर की नींव डाली गई थी, और सन् १९०१ में वड़े धूम-धाम से प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। श्री मन्दिर जी में संवत् १३५६ और १५०० तथा १५३१ की प्रतिष्ठित प्राचीन प्रतिमाएँ भी हैं। यह नया मन्दिर विशाल सुदृढ़, भव्य तथा ऊँची कुर्सी पर वना है जिसमें २ वड़े-वड़े चौक, कई कमरे हवादार तथा मीठे जल का गंभीर कूप है। मन्दिर जी के शास्त्र भंडार में अनेक भाषा ग्रन्थों के साथ संस्कृत व प्राकृत के भी कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ विराजमान हैं।

दूसरा सरजायती मन्दिर स्वर्गीय श्री किशोरी लाल जी की स्वर्गीया पत्नी सरजायती जी ने सन् १८९४ में वनवाया था, किन्तु अब यह मन्दिर भी पंचायत के प्रबन्ध में है। यह मन्दिर भी वहुत विशाल है, जिसमें प्राचीन प्रतिमाएँ स्थापित हैं। श्रीमती सरजायती का देहान्त अल्प आयु में ही हो गया था। आप धर्मपरायण व दानशीला महिला थीं।

श्री साहू जैन ट्रस्ट, कलकत्ता

साहू जैन ट्रस्ट जैन समाज में सवसे वड़ा और उपयोगी जैन ट्रस्ट है जो भारतवर्ष में पढ़ने वाले ४८२१ छात्रों और विदेशों में पढ़ने वाले ६० छात्रों को सन् १९६८ ई० तक ४३ लाख से अधिक रुपया छात्रवृत्ति के लिए दे चुका है और दूसरे धार्मिक कार्यों में १६ वर्षों में लगभग २६ लाख रुपया दान कर चुका है जिनमें से मद्रास, लखनऊ, यू० पी० के विश्वविद्यालयों और स्यादवाद महाविद्यालय वनारस, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता और कुन्द-कुन्द विद्यापीठ हुम्चा (मैसूर) को करीव एक-एक लाख रुपया दिया गया है। करीव दो सौ से अधिक शिक्षण, मेडिकल रिलीफ सोसाइटी, ग्रामोद्धार आदि संस्थाओं को १००० रुपया से ५०,००० रुपया तक दान दिया है।

ट्रस्ट की ओर से दो इण्टरमीडिएट कालेज, मूर्ति देवी सरस्वती इण्टर कालेज लड़कों के लिए और मूर्ति देवी कन्या विद्यालय लड़कियों के लिए, कई साल से नजीवावाद में चल रहे हैं जिन पर सवा आठ लाख रुपया खर्च हो चुका है। इन संस्थाओं में २००० से अधिक विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। वैशाली में विहार राज्य की ओर से प्राकृत-जैनोलोजी और अहिंसा के शोध कार्य के लिए सन् १९५५ ई० से शोध संस्थान स्थापित है जिसको ट्रस्ट की ओर से सवा छः लाख रुपया विल्डिंग, स्टाफ, क्वार्टर, फर्नीचर आदि के लिए दिया गया है। ट्रस्ट शोध संस्था की मैनेजिंग कमेटी का ट्रस्टी है।

कलकत्ते में साहू जैन ट्रस्ट की तरफ से राजेन्द्र छात्रावास व गोविन्द वल्लभ छात्रावास की बिल्डिंग बनाने में काफ़ी धन दिया गया है और उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान के ५०० से १२०० वर्ष पुराने जैन तीर्थों के जीर्णोद्धार में करीब दो लाख से अधिक रुपया लगाया है तथा साहू जैन ट्रस्ट की ओर से ललितपुर के पास देवगढ़ में जैन म्यूजियम बनाया गया है। अब खुज-राहा में भी ट्रस्ट की तरफ से म्यूजियम बनाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अयोध्या में भगवान ऋषभ देव का मन्दिर बनवाने में लगभग डेढ़ लाख रुपया ट्रस्ट ने दान दिया है।

विन्द्रावन की वृज सेवा समिति टी० बी० सैनोटोरियम में साहू जैन ट्रस्ट की तरफ से रोगियों का फ्री इलाज करने के लिए १० बेडों का खर्चा दिया जा रहा है। इनके अतिरिक्त साहू जी हर समय संस्थाओं को पूर्ण सहायता करते रहते हैं।

ट्रस्ट का नाम	....	साहू जैन ट्रस्ट
पता	....	९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
स्थापित	....	१६ अक्टूबर, १९५२
संस्थापक	....	श्री साहू शान्ति प्रसाद जैन
मैनेजिंग ट्रस्टी	....	श्रीमती रामा जैन
सचिव	....	श्री नेमी चन्द्र जैन
प्रदान की जाने वाली अनुमानित छात्रवृत्ति	....	रु० १.२ लाख प्रति वर्ष
छात्रों की अनुमानित संख्या	....	प्रति वर्ष ४०० विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां दी जाती हैं
निवेदन पत्र भेजने का समय	....	प्रति वर्ष जुलाई तक
छात्रवृत्ति की अवधि	....	१० माह के लिए (जुलाई से अप्रैल तक)
छात्रवृत्ति किन्हें प्रदान की जाती है	....	छात्रवृत्ति योग्य, कुशाग्र बुद्धि एवं असमर्थ छात्रों को प्रदान की जाती है

देवेन्द्र कुमार जैन ट्रस्ट, रामनिवास, नजीबाबाद (उ० प्र०)

नजीबाबाद के प्रसिद्ध साहू वंशज स्वर्गीय श्री साहू रामस्वरूप जैन ने अपनी धर्मपरायणा पत्नी स्व० श्रीमती चन्द्रावती जैन की सद्प्रेरणा से ज्येष्ठ पुत्र स्वर्गीय देवेन्द्र कुमार जैन की पुण्य-स्मृति में १८ मार्च सन् १९४९ को यह ट्रस्ट स्थापित किया।

स्व० श्री देवेन्द्र कुमार जैन ने नजीबाबाद से हाई स्कूल परीक्षा पास कर मेरठ कालेज से आगरा विश्वविद्यालय की बी० ए० डिग्री प्राप्त की। तत्पश्चात् सन् १९३६ में लखनऊ विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में लॉ और एम० ए० (इकोनौमिक्स) की डिग्रीयाँ प्राप्त की। आपकी सामाजिक, पारमार्थिक और धार्मिक कार्य में बहुत रुचि थी। दर्शनशास्त्र का अध्ययन कर जैन धर्म में लग्न रही। कुछ सहपाठियों के साथ मेरठ कालेज में जैन एसोसिएशन स्थापित कर वहां के समकालीन विद्यार्थी-वर्ग में आध्यात्मिक जागृति और पारस्परिक आत्मीयता की भावना को प्रगति दी। सन् १९३२ में श्री हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पर आयोजित विशाल सम्मेलन में उनका बहुत हाथ था। शिक्षा के उपरान्त केवल ५ वर्ष के उद्योग-व्यापारिक जीवन में अपने प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का परिचय दिया। कुछ समय उदर रोग से पीड़ित रह केवल २९ वर्ष की अल्पायु में १९ अप्रैल, १९४१, को लाहौर में अकस्मात देहावसान हो गया।

शिक्षा की उन्नति और प्रसार में आपका विशेष प्रेम था। जीवन की अल्प अवधि में ही कई स्कॉलरशिप और दूसरे प्रकार से शिक्षा संस्थाओं और विद्यार्थियों को सहायता प्रदान की। भारतवर्षीय दि० जैन परिषद् परीक्षा बोर्ड द्वारा धार्मिक शिक्षा के प्रसार और प्रोत्साहन में आपने विभिन्न प्रकार का सहयोग दिया।

उनके आकस्मिक निधन से लघु भ्राता श्री शीतल प्रसाद जैन को बहुत आघात पहुंचा। स्वर्गीय ज्येष्ठ भ्राता की पुण्य-स्मृति को चिरस्थायी करने के लिए आपने पारमार्थिक लक्ष्य से माता-पिता द्वारा इस ट्रस्ट को साकार कराया। इस ट्रस्ट द्वारा नजीबाबाद में देवेन्द्र कुमार जैन होम्योपैथिक चैरिटेबिल डिस्पेन्सरी की स्थापना वसन्तपंचमी ५ जनवरी, १९५७ को स्व० श्रीमती चन्द्रावती जैन के कर-कमलों द्वारा हुई। यह चिकित्सालय १३ वर्ष से निरन्तर जन-कल्याण कर रहा है और अभी करीब ५,००० रोगी प्रति मास लाभान्वित होते है।

ट्रस्ट से और भी बहुत सी संस्थाओं को समय-समय पर सहायता प्रदान की जाती है जिससे देश की विभिन्न पारमार्थिक संस्थाओं को अपने उद्देश्य-पूर्ति में सुविधा होती है। प्राइमरी स्कूल से डिग्री कोर्स (मेडिकल, इन्जीनियरिंग) तक भारतवर्ष में सब स्तर की शिक्षा के लिये छात्रवृत्ति दी जाती है। जैन साहित्य अध्ययन में सुविधा हेतु प्राकृत भाषा के लिये विशेष छात्र-वृत्ति भी दी। योग्यता होने से आवेदन-पत्र स्वीकृति में आर्थिक दृष्टि से अभी अड़चन नहीं हुई है। छात्रवृत्ति और विभिन्न संस्थानों को सहायता जाति और धर्म के भेद-भाव बिना प्रदान की जाती है।

ट्रस्ट ने जम्बू विद्यालय जैन इन्टरमीडिएट कालेज, सहारनपुर, में अपने संस्थापक की पुण्य स्मृति में रामस्वरूप जैन रिसर्च लेबोरेटरी हाल का निर्माण कराया। श्री कुंद-कुंद दि० जैन कालेज खतौली में भी डिग्री साइन्स क्लास खोलने के लिए देवेन्द्रकुमार जैन लेबोरेटरी भवन और अन्य कार्य के लिए ट्रस्टीज द्वारा अनुदान दिया गया। श्री स्याद्वाद महाविद्यालय काशी को भी ट्रस्ट से विशेष सहायता मिली। शिक्षा संस्थाओं में ट्रस्ट से सहायता पाने वालों में दूसरे उल्लेखनीय नाम हैं—कलकत्ता ब्लाइन्ड स्कूल, श्री शिक्षायतन (गर्ल्स कालेज) कलकत्ता, लौरेटो हाउस (गर्ल्स कालेज) कलकत्ता, जूनियर हाई स्कूल नजीबाबाद, राजा ज्वाला प्रसाद वैदिक आर्य इन्टर कालेज बिजनौर, जैन शिक्षा संस्था कटनी, श्री गनेश दि० जैन संस्कृत विद्यालय सागर, श्री पार्श्वनाथ जैन हायर सेकेन्डरी स्कूल ईसरी, जैन विद्या प्रचारक मंडल परिचालित श्री कपूर चन्द नेमचन्द मेहता टेकनिकल स्कूल महाराष्ट्र और गोमटेश्वर एजूकेशनल सोसाइटी मैसूर। जैन पाठशाला नजीबाबाद के चलाने में निरन्तर वार्षिक सहायता दी जाती है। कलकत्ता सैन्ट जैवियर्स कालेज पूयर ब्वायज लाइब्रेरी के लिए भी अनुदान दिया है।

साहित्य की दिशा में भी ट्रस्ट सहयोग देता है। स्व० पं० जुगल किशोर मुख्तार लिखित "जैन तत्वानुशासन" वीर सेवा मन्दिर दिल्ली से प्रकाशित कराकर निःशुल्क वितरण करायी। वीर सेवा मन्दिर के दूसरे पुण्य प्रकाशनों में भी सहायता प्रदान की। वंगीय हिन्दी परिषद् प्रयाग को भी हिन्दी साहित्य अनुसंधान में अनुदान दिया। अणुव्रत विहार को भी साहित्य प्रकाशन के लिये योग दिया। वर्णी ग्रन्थमाला के प्रकाशन में भी सहायता दे रहा है।

औषधिदान निमित्त ट्रस्ट ने जैन सभा कलकत्ता द्वारा राजगिर में औषधालय भवन निर्माण के लिये ११,००० रु० प्रदान किया। बी० सी० राय मैमोरियल फण्ड को कलकत्ता में बाल चिकित्सालय बनाने में भी अनुदान दिया। समय-समय पर आवश्यकतानुसार कुछ अस्पतालों में फ्री बेड की व्यवस्था की जाती है। कलकत्ता में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल और श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल में विशेषतया इस प्रकार का योग दिया। श्री दि० जैन औषधालय कलकत्ता को चलाने के लिए निरन्तर सहायता दी जाती है। बम्बई हौस्पिटल को भी अनुदान दे उसका वोटिंग सदस्य है। क्रिश्चियन मेडिकल कालेज व अस्पताल वेलोर को अनुसन्धान के विशेष फण्ड में सहायता दी। चक्षु चिकित्सा केन्द्र आयोजनों द्वारा भी जनता की सेवा की। व्यक्तिगत चिकित्सा के लिए भी सहायता दी जाती है।

धार्मिक क्षेत्र में ट्रस्ट भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी बम्बई को ११,००० रु० प्रदान कर इसका सम्मानीय सदस्य है। बिहार दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी तथा विभिन्न मन्दिरों के जीर्णोद्धार एवं नवीनीकरण के लिए भी अनुदान दिया है। अ० भा० दि० जैन परिषद्, विशेषतया एजूकेशन बोर्ड को भी सहायता दी जाती है। परिषद् एजूकेशन बोर्ड द्वारा भी धार्मिक शिक्षा प्रोत्साहन के लिये छात्रवृति दी जा रही है।
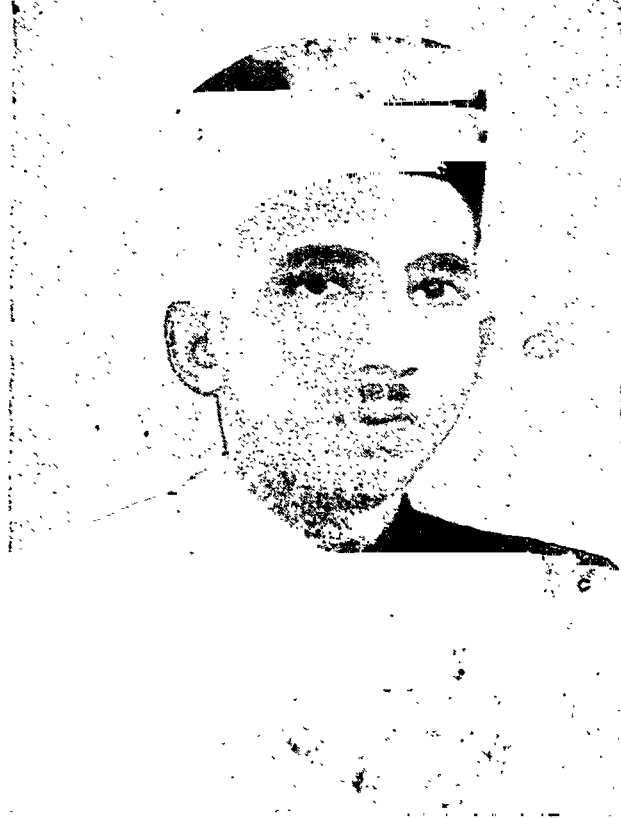
स्वर्गीय बाबू देवेन्द्र कुमार

साहु शीतल प्रसाद

स्वर्गीय साहू राम स्वरूप
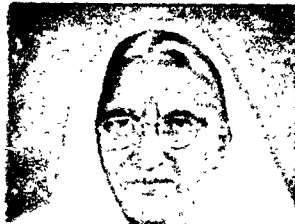
स्वर्गीया श्रीमती चन्द्रावती
(धर्मपत्नी साहू रामस्वरूप)

ट्रस्ट से विशेष अनुदान पाने वाली विविध क्षेत्रों में संलग्न विभिन्न संस्थाओं में उल्लेखनीय हैं :—दया सदन चिल्ड्रेन टाउन मद्रास, जैन बाल आश्रम दिल्ली, श्री लालबहादुर शास्त्री सेवा निकेतन दिल्ली, संगीत कला मन्दिर ट्रस्ट कलकत्ता, श्री अहिंसा प्रचार समिति कलकत्ता, काशी विश्वनाथ सेवा समिति कलकत्ता, वेस्ट बंगाल वीमेन को-आर्डिनेशन कमेटी कलकत्ता, कोयना भूकम्प रिलीफ फण्ड बम्बई। सेवा निधि ट्रस्ट सहारनपुर को भी डेफ एण्ड डम्ब स्कूल और दूसरे पारमार्थिक कार्य के लिए अनुदान दिया जाता है। समय-समय पर फुटकर सहायता पाने वालों में हैं :—श्री ऋषभ ब्रह्मचर्य आश्रम चौरासी (मथुरा), श्री दि० जैन उत्तर भारतीय गुरुकुल हस्तिनापुर, जैन महिलाश्रम आरा, दि० जैन मालवा प्रान्तिक समाश्रित वड़नगर औषधालय, सरदार पटेल विद्यालय नई दिल्ली, भारत एकाउन्ट्स गाइड्स, इण्डियन रेड क्रास आदि-आदि।

ट्रस्ट द्वारा प्रचालित देवेन्द्र कुमार जैन होम्योपैथिक चैरिटेबिल डिस्पेन्सरी नजीबाबाद पर व्यय और छात्रवृत्तियों के अतिरिक्त करीब दो लाख रुपये की सहायता पिछले वर्ष तक प्रदान की जा चुकी है।

ट्रस्ट का रजिस्टर्ड आफिस रामनिवास, नजीबाबाद (उ० प्र०) है। कार्य श्रीमती प्रमोद जैन (धर्मपत्नी श्री साहू शीतल प्रसाद जैन) अध्यक्षा ट्रस्टी, ६, हैस्टिंग्स् पार्क रोड, अलीपुर, कलकत्ता-२७ द्वारा निम्न ट्रस्टीज के सहयोग से निर्देशित होता है :

(१) साहू प्रकाश चन्द्र जैन, नजीबाबाद

(२) श्री अजित प्रसाद जैन, एडवोकेट, दरीबा कलां, दिल्ली

(३) श्री कृष्ण दास गोयल कलकत्ता

(४) श्री नेम चन्द जैन, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, मेरठ सिटी

ट्रस्ट के कार्य का भार ग्रहण करते हैं इसके आनरेरी सेक्रेटरी, श्री रमेश चन्द जैन, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, ९३/६, बकुल बगान रोड, कलकत्ता-२५।

प्रमोद जैन ट्रस्ट

यह ट्रस्ट नजीबाबाद निवासी श्री साहू शीतल प्रसाद जैन की धर्मपत्नी श्रीमती प्रमोद जैन ने पारमार्थिक योगदान के लिए स्थापित कराया। श्रीमती प्रमोद जैन स्वयं इसका संचालन अपने कलकत्ता निवास स्थान—६, हैस्टिंग्स् पार्क रोड, अलीपुर, कलकत्ता—२७ से करती है। दूसरे ट्रस्टीज हैं :—

(१) श्री चुनीलाल जैन, एडवोकेट, दरीबां कला, दिल्ली

(२) श्री श्रीकृष्ण दास गोयल, ३, मयुरभंज रोड, कलकत्ता—२३

ट्रस्ट द्वारा भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में संलग्न विभिन्न संस्थाओं को सहायता प्रदान की जाती है। सहायता प्राप्त करने वालों में निम्न संस्थायें प्रमुख हैं :—

शिक्षा संस्थायें :	(१)	भवानीपुर एजुकेशन सोसाइटी, कलकत्ता	१०००१)
	(२)	आदर्श महिला शिक्षा प्रतिष्ठान, डाबरी, राजस्थान	५०००)
	(३)	भवानीपुर गुजराती बाल मंदिर, कलकत्ता	२५००)
	(४)	मुन्नालाल गर्ल्स डिग्री कालेज सोसाइटी, सहारनपुर (थ्रू गनीराम फाउन्डेशन, नई दिल्ली)	२५००)
	(५)	महेश्वरी भवन ट्रस्ट बोर्ड, कलकत्ता	१०००)
	(६)	जैन शिक्षा बोर्ड, दिल्ली	१००१)
	(७)	कलकत्ता जूनियर चेम्बर चैरिटेबिल ट्रस्ट द्वारा परिचालित स्कूल	१०००)
	(८)	आर० एन० भार्गव कालेज एसोसियेशन, मसूरी	१०००)
चिकित्सा संस्थायें :	(१)	श्री विशुद्धानन्द सरस्वती दातव्य औषधालय, कलकत्ता	५०००)
	(२)	श्री दि० जैन दातव्य औषधालय, कलकत्ता	२०००)
	(३)	श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल, कलकत्ता	१२००)
	(४)	डा० युद्धवीर सिंह होम्योपैथिक चैरिटेबिल ट्रस्ट, दिल्ली	१०००)
धार्मिक और सांस्कृतिक :	(१)	श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर, कलकत्ता (नवीनकरण फन्ड)	२००१)
	(२)	शंकरा हाल ऐण्ड शंकरा इन्स्टीट्यूट आफ फिलॉसफी ऐण्ड कल्चर, कलकत्ता	५०१)
जनकल्याण :	(१)	सेवा समाज, वल्लभ विद्यानगर (गुजरात) (७००० रु० गनीराम फाउन्डेशन, नई दिल्ली थ्रू सहित)	१००००)
	(२)	श्री अहिंसा प्रचार समिति, कलकत्ता	६०००)
	(३)	जैन महिलाश्रम, दरियागंज, दिल्ली	५०००)
	(४)	मनीषा, कलकत्ता (बिहार दुर्भिक्ष रिलीफ फण्ड)	४०००)
	(५)	जैन बाल आश्रम, दरियागंज, दिल्ली	१२००)
	(६)	ब्लाइन्ड सोशयल वैलफेयर सोसाइटी, नई दिल्ली	१०००)
	(७)	मातृ समाज, कलकत्ता	५००)
		योग	६३,४०४)

जैन पाठशाला, नजीबाबाद

करीब ५५ वर्ष से मंदिरजी में—जैन पाठशाला वरावर चल रही है। इसी पाठशाला से स्व० पं० चन्द्र कुमार शास्त्री, साहू श्रेयांस प्रसाद, साहू शान्ति प्रसाद, वा० जगत प्रसाद, साहू शीतल प्रसाद आदि सज्जनों ने धार्मिक शिक्षा प्राप्त की थी। पाठशाला के संस्कारों से प्रभावित उक्त महानुभावों द्वारा जैन धर्म और जैन समाज को वल मिल रहा है, जिससे जैन समाज भलीभाँति परिचित है।

राजमती जैन औषधालय

१९४८ में वा० जगत प्रसाद ने अपनी धर्म माता, बुआ जी की सम्पत्ति से उनके नाम पर औषधालय स्थापित किया। लगभग २०० रोगी नित्य लाभ प्राप्त करते हैं। औषधालय में निर्माण-शाला भी है। संस्था स्वावलम्वी है। नगरपालिका और राज्य से भी सहायता मिलती है। शीघ्र ही औषधालय का विशाल भवन बनने वाला है।

देवेन्द्र जैन होम्योपैथिक अस्पताल

अस्पताल की स्थापना १५ वर्ष पूर्व साहू राम स्वरूप जी के सुपुत्र साहू शीतल प्रसाद ने अपने स्व० भाई देवेन्द्र कुमार की स्मृति में की जिससे जनता को पूरा लाभ मिल रहा है।

मूर्ति देवी इन्टर कालेज

मूर्ति देवी जैन इण्टर कालेज की स्थापना साहू शान्ति प्रसाद ने अपनी पूज्या माता श्री मूर्ति देवी की स्मृति में की। कालेज का अलग विशाल भवन है जिसमें लगभग ४५० छात्रायें शिक्षा प्राप्त करती हैं। कालेज का प्रवन्ध और देख-भाल सुन्दर है। मैनेजर वा० जगत प्रसाद जी हैं।

साहू जैन कालेज

१९६६ में साहू शान्ति प्रसाद जैन ने साहू जैन कालेज की स्थापना की। कालेज में वी० ए०, बी-एस० सी० और वी० काम० की शिक्षा का प्रवन्ध है। कालेज में छात्र-छात्राएँ दोनों शिक्षा प्राप्त करते हैं। कालेज को राजकीय सहायता भी मिलती है। यह आगरा विश्वविद्यालय से सम्वन्वित है। कालेज में करीव ३५० छात्र-छात्राएँ और १५ अध्यापक हैं। कालेज के प्रधानाचार्य श्री० एम० के० जैन वहुत सज्जन और अनुभवी तथा समाजसेवी व्यक्ति हैं। श्री जगत प्रसाद जैन इसके मैनेजर हैं।

विगत महानुभावों का परिचय :—

सेठ सलेख चन्द

सेठ सलेख चन्द नजीवावाद के ख्याति प्राप्त जैन परिवार में उत्पन्न हुए थे और विजनौर जिले के सम्मानित व्यक्ति थे। जैन अजैन सभी उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। उनका व्यक्तित्व बड़ा भव्य और सजीला था : लम्वा कद, इकहरा और गोरा शरीर, उन्नत ललाट, आकर्षक मुखाकृति, ७४-७५ वर्ष की आयु थी न कमर में खम आया था और न किसी अन्य अंग में ही। दृष्टि इतनी

अक्सर थी कि इस आयु में भी कभी चश्मा नहीं लगाया दीपक की रोशनी में राजवार्तिक और श्लोक-वार्तिक जैसे उच्च कोटि के ग्रन्थों का ९-९ घन्टे स्वाध्याय करते थे। न कभी खांसी और न कभी जुकाम न कभी सिर में दर्द और न कभी बुखार; उनका शरीर स्वस्थ था और जीवन संयमी था। प्रातः काल जिनेन्द्र भगवान के दर्शनार्थ लगभग चार फर्लांग पैदल ही जाते और वहां एक-दो घन्टे सामाजिक स्वाध्याय आदि करके वापस आते। गृहस्थी के झंझटों से उन्हें कोई सरोकार नहीं था, जमींदारी की देख-रेख उनके पुत्र और पौत्र करते थे, वह केवल धार्मिक जीवन व्यतीत करते थे। परोपकारी और दयालु प्रकृति के थे। शरद ऋतु में बहुत से लिहाफ बनवाते और उन्हें असहाय व्यक्तियों के यहां चुप-चाप भिजवा दिया करते थे जिनका स्वाभिमान किसी के सामने हाथ पसारने की इजाजत नहीं देता था। रात्रि को बैठक में बैठते थे और जरूरत मन्दों को गद्दी के नीचे से मुठ्ठी भर-भर रेजगारी देते रहते थे, रेजगारी देते समय भी नीची नजर रखते थे, आंख ऊपर नहीं उठाते थे कि आने व जाने वाला पहचान लिये जाने के कारण कहीं लज्जित न हो। आतिथ्य का उन्हें बहुत शौक था। मृत्यु के समय उनके छः पौत्र, १० प्रपौत्र और ६ प्रपौत्री विद्यमान थीं। साहू श्रेयांस प्रसाद और दानवीर सेठ शान्ति प्रसाद उनके पौत्र तथा साहू शीतल प्रसाद, रमेश चन्द्र, राजेन्द्र कुमार, अलोक कुमार रमेश चन्द आदि उनके बीसों युवा प्रपौत्र उनकी यश प्रतिष्ठा दिन पर दिन बढ़ा रहे हैं।

सेठ साहब की समाज सेवाओं के उपलक्ष में भारतवर्षीय जैन महासभा ने अपने कानपुर अधिवेशन में उनको अध्यक्ष निर्वाचित किया था।

राय बहादुर साहू जुगमंदर दास

राय बहादुर साहू जुगमन्दर दास का जन्म नजीबाबाद के प्रसिद्ध साहू जैन परिवार में सं० १९४१ में हुआ। साहू जी अपने युग के सर्वमान्य और सर्वप्रिय नेता थे। उनकी यह विशेषता थी कि उनके विपक्षी भी उनकी प्रशंसा किया करते थे। महासभा से भी उनका उतना ही सम्बन्ध था जितना दि० जैन परिषद से। साहू जी महासभा के मन्त्री और परिषद् के कोषाध्यक्ष और सहारन-पुर परिषद् के सभापति रहे थे। साहू जी गूढ से गूढ सामाजिक और धार्मिक समस्याओं को इतनी खूबी से सुलझाते थे कि पक्ष विपक्ष वालों को उनका फैसला मान्य होता था। साहू जी छोटे से छोटे कार्यकर्ताओं का भी आदर सत्कार करते थे। विद्वानों, समाज सेवकों और नेताओं का तो वे गुरु तुल्य आदर करते थे, वे सच्चे गुणग्राही थे।

रा० ब० होने के कारण बहुत से आदमी उनको सरकारपरस्त समझते थे किन्तु साहू जी कभी सरकारी अफसरों की खुशामद नहीं करते थे, वे बड़े स्वाभिमानी थे। जिले में जब कोई अधि-कारी बदल कर आता तो रा० बहा० सा० से पहले मिलने आता था। वे ६ साल तक बराबर जिला बोर्ड बिजनौर के चेयरमैन रहे और बडी शान और कार्य-कुशलता से अध्यक्षता की। उन्हें चुनाव लड़ने का बडा शौक था मगर चुनाव की हार-जीत पर उनको कभी रंज और खुशी नहीं होती थी। वे कहा करते थे कि चुनाव शतरंज की चाल है, हार जाने पर विपक्षी के साथ हंसी-खुशी से बात करते मिलते और अपने पुराने सम्बन्ध स्थापित रखते थे।
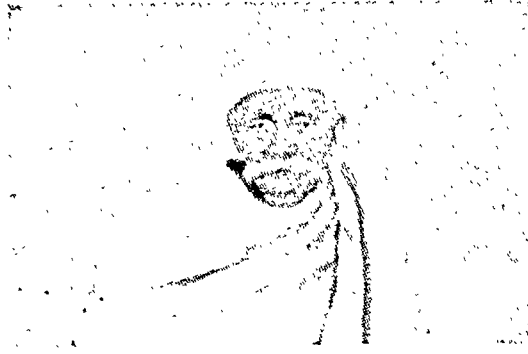
स्वर्गीय साहु सलेख चन्द

बाबू जुगमन्दर दास (नजीबाबाद)

साहू रमेश चन्द

साहू बारूमल

स्वर्गीया श्रीमती मूर्ति देवी
(मातेश्वरी लाला राजेन्द्र कुमार)

रायवहादुर साहव का भारतवर्ष की प्राय: समस्त प्रमुख जैन संस्थाओं से सम्वन्ध था और संस्थाओं को आर्थिक सहायता करते और कराते थे। संकट के समय वे दिल खोल कर सहायता करते थे। स्वराज्य आन्दोलन के समय यू० पी० के डायरेक्टर आफ एजूकेशन ने वड़ौत जैन कालेज का अनुदान बन्द कर दिया उस समय रायवहादुर नैनीताल ठहरे हुए थे। फौरन वड़ौत कालेज के मैनेजर लाला जगजोत सिंह और लाला हर ध्यान सिंह सेक्रेटरी कालेज को बुलाया अपने साथ ले जाकर डायरेक्टर से कहा कि यू० पी० में जैनियों का एक ही कालेज है उसे ही आप खत्म करना चाहते हैं, जैन समाज ने हमेशा सरकार को सहायता दी है। डायरेक्टर साहब पर वातों का इतना असर पड़ा कि फौरन अनुदान जारी करने का आदेश दे दिया।

राय वहादुर साहव को समाजों और जलसों में जाने का वहुत शौक था, उन्होंने अपने जीवन काल में सैकड़ों जलसों की अध्यक्षता की और उनको सफल वनाया। हस्तिनापुर तीर्थ कमेटी के साहू जी वरावर कोषाध्यक्ष रहे।

महासभा से सम्वन्ध होते हुए भी साहू जी पक्के सुधारक विचारों के थे। दस्सा पूजा अधिकार और अन्तर्जातीय विवाह के वे पक्के हामी थे। पूज्य ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी के अनन्य भक्त थे और पं० दरवारी लाल जैसे कट्टर सुधारवादियों का विरोध होते हुए भी उन्हें अपने यहाँ बुला कर शास्त्र प्रवचन कराया करते थे। साहू जी ने अपने जीवन काल में सैकड़ों जैनियों को सरकारी नौकरी दिलवायी। विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ दिला कर सहायता की। आवश्यकता के समय अपने भाइयों की सहायता करने के लिए तत्पर रहते थे। एक वार मेरठ जिले के एक जैन पटवारी को जिला मेरठ के कलेक्टर ने वरखास्त कर दिया। राय वहादुर सा० पटवारी श्री कशमीरी लाल को अपने साथ लेकर कलेक्टर के पास गये और कहा कि पटवारी जी मेरे करीवी रिश्तेदार हैं आप उनको वहाल कर दीजियेगा। कलेक्टर ने कहा कि आप रायवहादुर है और यह साधारण पटवारी है आपका इनका क्या रिश्ता ? राय वहादुर ने फौरन जोश में आकर कहा कि विरादरी में सव भाई वरावर हैं कोई छोटा-वड़ा नहीं होता है। कलेक्टर साहव वड़े प्रभावित हुए और पटवारी को पुनः वहाल कर दिया। इस प्रकार साहू साहब के जीवन की कितनी ही घटनायें हैं।

साहू साहव के खास गुण उनकी हाजिर जवावी, मेहमान नवाजी, खुश मिजाजी और मिलनसारी थी। वे वड़ी आन-वान के व्यक्ति थे और कभी झुकते न थे। वे जैन समाज के सर्वप्रिय नेता थे।

साहू जी की मृत्यु मंसूरी में सं० १९६८ में हुई। साहू जी के सुपुत्र श्री रमेश चन्द वड़े सज्जन और नम्र प्रकृति के हैं। आप टाइम्स आफ इंडिया के मैनेजर हैं। आप दि० जैन परिषद् पव्लिशिंग हाउस के मंत्री हैं। प्रसन्नता की वात है कि साहू जी की तरह आपके भाइयों, साहू श्रेयांस प्रसाद व साहू शान्ति प्रसाद जी का भी समाज में उतना ही सम्मान और प्रतिष्ठा है।

नजीवावाद के सेठ गनेशी लाल भी वड़े धर्मात्मा और समाजसेवी थे और कई वर्ष तक नजीवावाद नगरपालिका के अध्यक्ष रहे।

वर्तमान प्रमुख कार्य-कर्ता :-

साहू बारूमल जी जैन

साहू बारूमल जी का जन्म नजीबाबाद के प्रसिद्ध साहू परिवार में हुआ। आप नजीबाबाद के प्रमुख और प्रभावशाली व्यक्ति हैं। आप सम्पन्न होकर भी निराभिमानी, मिलनसार व्यवहार कुशल एवं समाज सेवी हैं।

आप जैन समाज के सर्वमान्य कार्यकर्त्ता ही नहीं, कितनी ही नागरिक गतिविधियों के अन्तरंग सहयोगी हैं। स्थानीय मूर्ति देवी कन्या विद्यालय के वर्षों से अध्यक्ष हैं। वर्षों तक मूर्ति देवी सरस्वती इन्टर कालेज के भी सदस्य रह चुके हैं। राजमति धर्मार्थ औषधालय के आप मैनेजिंग ट्रस्टी है। आप वर्षो से नजीबाबाद और जैन समाज के अध्यक्ष पद पर सुशोभित हैं। नगर के क्रीड़ा सम्बन्धी एवं सांस्कृतिक कार्य-क्रमों में और कवि सम्मेलन आदि साहित्यिक कार्यों में आपकी प्रमुखता रहती है। गत वर्षो में आप जिला परिषद् एवं स्थानीय नगर महापालिका, स्वय सेवक समिति आदि सामाजिक संस्थाओं के भी सदस्य रहे। आपकी कर्तव्य परायणता सदैव प्रशंसनीय रही है। विभिन्न संस्थाओं के प्रति उनकी दानशीलता और उदारता अनुकरणीय है।

आपके सुपुत्र श्री सुरेश चन्द्र जैन बी० काम० उत्तरीय रेलवे के वरिष्ठ कन्ट्रैक्टर हैं।

श्री वीरेन्द्र कुमार जैन

श्री वीरेन्द्र कुमार जी का जन्म श्रीनगर गढ़वाल में एक जमींदार घराने में हुआ। आपके पूज्य-पिता का नाम श्री अभिनन्दन प्रसाद जैन था। आपने बी० ए० तक की शिक्षा प्राप्त की। अब आप नजीबाबाद में प्रसिद्ध ठेकेदार तथा उत्तराखंड फाइनैंसिग ऐण्ड ट्रान्सपोर्टेशन प्रा० लि० के प्रोप्राइटर हैं। आप सामाजिक कार्यों में अग्रसर रहते हैं तथा दिगम्बर जैन समाज नजीबाबाद के बारह वर्ष से मन्त्री हैं और भूदेव कन्या विद्यालय एवं सरस्वती पुस्तकालय के सदस्य और आर्ट एव क्राफ्ट सोसाइटी के मन्त्री हैं तथा दूसरी संस्थाओं के सदस्य तथा कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

आपका जीवन बहुत सादा और धार्मिक है तथा शान्त स्वभाव के कर्मठ समाज सेवी व्यक्ति हैं।

साहू श्रेयांस प्रसाद जी

बम्बई के सुप्रसिद्ध और प्रतिष्ठित उद्योगपति साहू श्रेयांस प्रसाद जी का जन्म नजीबाबाद जिला बिजनौर के जमींदार घराने में सन् १९०८ में हुआ। स्कूल की शिक्षा ग्रहण करने के बाद आपने अल्प आयु में ही जमींदारी की सभी जिम्मेदारियां सम्भाल ली और सामाजिक, शैक्षिक आदि कार्यों में सक्रिय भाग लेने लगे। आपको नजीबाबाद म्यूनिस्पैलटी का उपाध्यक्ष एवं बिजनौर एजूकेशन समिति का अध्यक्ष चुना गया।

साहू श्रेयांस प्रसाद

स्वर्गीय श्रीमती मूर्ति देवी
(मातेश्वरी साहू शान्ति प्रसाद)

लाहौर में रहते हुये आपने वहां के वहुत से सामाजिक कार्यों में क्रियात्मक भाग लिया तथा लाहौर की इन्शोरेन्स कम्पनी में आपका प्रथम स्थान था। आपकी रुचि सामाजिक कार्यों की ओर उत्तरोत्तर वढ़ती ही रही।

सन १९४३ ई० में आपको भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया। अंग्रेजी सरकार ने आरोप लगाया कि आप आन्दोलन को आर्थिक सहायता देते हैं। इस अपराध में आपको लाहौर जेल में दो माह तक रखा गया और जेल रिहाई के पश्चात ही आप को दो दिन के अन्दर पंजाव छोड़ने का आदेश दिया गया।

तत्पश्चात श्री जैन वम्बई आये और वहां आपने अपने व्यापारिक कार्यों का केन्द्र स्थापित किया। आप धारंगधरा रसायनिक वर्क्स लिमिटेड के अध्यक्ष चुने गये। यह कम्पनी भारत वर्ष में कास्टिक सोडा वनाने वाली कम्पनियों में सवसे वड़ी और पुरानी कम्पनी है। शनैः शनैः आपका व्यापारिक संघों से संपर्क वढ़ता ही गया। इस समय आप वस्त्र, रवड़, आटोमोवाइल, रसायनिक, और विद्युत् आदि वस्तुओं के निर्माताओं की परिषद् के डायरेक्टर हैं।

उद्योग क्षेत्र में आपकी प्रशंसनीय और सराहनीय सेवाओ से आपको उच्च स्थान मिला। आप फेडरेशन आफ इंडियन चैम्वर आफ कामर्स एन्ड इन्डस्ट्री नई दिल्ली एवं इंडियन कमिटी आफ दी इन्टरनेशनल चैम्वर आफ कामर्स के सभापति रह चुके हैं। दो वर्ष तक आप एफ्रो-एशियन आर्गनाइजेशन फार एकोनामिक कोआपरेशन के भी सभापति रहे। इसी प्रकार आप अलकली मैन्युफैक्चरर्स एसोसियेशन आफ इंडिया के भी सभापति रहे।

मिल ओनर्स संघ तथा टेलीफोनिक एडवाइजरी कमेटी वम्वई के आप सदस्य रहे हैं तथा इंडियन मर्चेन्ट्स चैम्वर्स और इंडियन ट्रेड एन्ड इन्डस्ट्री वम्वई संघ के भी सदस्य हैं।

साहू जी जैन समाज के प्रमुख एवं सर्वप्रिय नेता हैं। और सदैव जैन समाज एवं धर्म की उन्नति में तत्पर रहने वाले लगनशील व्यक्ति हैं आप सदा समाज की उन्नति में अपना सहयोग देने को तैयार रहते हैं। अखिल भारतीय दिगम्वर जैन परिषद् और जैन महामंडल वम्वई के आप सभापति भी रह चुके हैं।

आपने गुजरात में साहू श्रेयांस प्रसाद आर्ट और कामर्स कालेज की स्थापना करके शिक्षा को काफी प्रोत्साहन दिया है। सन १९५२ ई० से आप भारतीय पार्लियामेन्ट के ६ वर्ष तक सदस्य रहे और विभिन्न साहित्यिक, शैक्षिक, सामाजिक संस्थाओं के ट्रस्टी हैं।

महाराष्ट्र सरकार ने आपको जस्टिस आफ पीस नियत किया हुआ है।

साहू प्रकाश चन्द, वा० जगत प्रसाद, वावू वीरेन्द्र कुमार जैन, ला० श्रेयांश प्रसाद, शीतल प्रसाद कोटलावाले, भाई कपूर चन्द, सदस्य नगरपालिका, मास्टर रंधीर प्रसाद, कर्नल एन०ई०सी० जैन आदि अन्य प्रमुख और लगनशील कार्यकर्ता हैं।

साहू शान्ति प्रसाद

नजीवाबाद का साहू जैन घराना बहुत प्रतिष्ठित रहा है। श्री शान्ति प्रसाद जैन का जन्म इसी नगर और घराने में सन् १९११ में हुआ। उनके पितामह साहू सलेक चन्द्र जैन थे, पिता श्री दीवान चन्द्र और माता श्रीमती मूर्ति देवी थीं।

अपने समय में साहू सलेक चन्द्र बड़े श्री-सम्पन्न और भव्य व्यक्तित्व वाले पुरुष थे। उनके यश और कीर्ति की ख्याति थी। एक बार भी जो उनके सम्पर्क में आया वह उनसे प्रभावित हुए बिना न रहा। पिता साहू दीवान चन्द अत्यन्त शांत एवं शालीन स्वभाव के थे तथा समाज में उनका बहुत मान था। माता श्रीमती मूर्ति देवी तो अत्यन्त सरलमना, धार्मिक प्रकृति की, वात्सल्यमयी महिला थीं। ऐसी लक्ष्मी स्वरूपा जिन्होंने दूसरों की चिन्ताओं को ही अपनी चिन्ता बना लिया, उन्हें इस योग्य बनने के साधन भी सुलभ कर दिये कि आगे अपनी चिन्ताओं को स्वयं वहन कर सकें।

श्री शान्ति प्रसाद जैन की प्रारम्भिक शिक्षा नजीवाबाद में हुई। बाद को काशी विश्व-विद्यालय और आगरा विश्वविद्यालय में उनका समूचा विद्यार्थी जीवन प्रथम श्रेणी का रहा। केवल अध्ययन और ज्ञानोपार्जन की दृष्टि से ही नहीं, अन्य दृष्टियों से भी। सभी सद्गुण और सद्-वृत्तियां उनमें थीं जो माता-पिता और पूर्व पुरुषों से संस्कारों के रूप में उन्हें प्राप्त हुयीं। आगरा विश्वविद्यालय से उन्होंने बी० एम०-सी० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

देश के उद्योग व्यवसायों में अभिवृद्धि हो तथा उनके संचालन की प्रणाली में नये से नये प्राविधिक रूपों का समावेश हो, इसके लिए श्री शान्ति प्रसाद जैन ने स्वयं विभिन्न पद्धतियों का गम्भीर अध्ययन किया तथा विविध क्षेत्रों में निरन्तर गवेषणाएं करायीं। इतना ही नहीं, आवश्यकता के अनुरूप महत्व के अन्यान्य देशों का भ्रमण-पर्यटन भी किया। सर्व प्रथम १९३६ में वह डच ईस्ट इंडीज गये। १९४५ में आस्ट्रेलिया और १९५४ में सोवियत रूस। ये तीनों यात्राएं उन्होंने भारतीय औद्योगिक प्रतिनिधि के रूप में की थीं। जो परिणामों की दृष्टि से अत्यन्त उल्ले-खनीय मानी जाती हैं। ब्रिटेन, अमेरिका, जर्मनी तथा अन्य यूरोपीय देशों का भी उन्होंने परिभ्रमण किया और पाश्चात्य उपलब्धियों के समावेशन द्वारा साहू जैन उद्योग को अधिकाधिक समृद्ध किया।

जिस सहजता और सम्पूर्णता के साथ औद्योगिक और व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता के बाद सफलता श्री शान्ति प्रसाद जैन को प्राप्त हुई वह उनके स्वभावगत सद्गुणों, प्रतिभा और सूझ-बूझ, संगठन क्षमता और कार्य-दक्षता तथा विवेकयुक्त साहसशीलता की समन्वित देन थी। पिछले ३० वर्ष में उन्होंने विभिन्न प्रकार और प्रकृति के उद्योग-धन्धों की एक सुविस्तृत श्रेणी की स्थापना और कुशल नेतृत्व करके और देश में अनेक नये उद्योगों की स्थापना करके उसके औद्योगिक विकास में योगदान दिया है। उत्पादन और वाणिज्य व्यवसाय विषयक औद्योगिक विकास में भी योगदान दिया है। उत्पादन और वाणिज्य व्यवसाय विषयक उनकी जानकारी अत्यन्त व्यापक और विशाल

साहू शान्ति प्रसाद

श्रीमती रमारानी (साहू शान्ति प्रसाद)

है। इसके एक अंग स्वरूप जहाँ एक ओर प्रसख्यांत्मक अध्ययनों में उन्हें गहरी रूचि है, वहाँ आर्थिक एवं व्यावसायिक समस्याओं का समाधान खोज निकालने की सक्षमता भी है।

श्री शान्ति प्रसाद जैन साहू जैन उद्योगों के अधिष्ठाता हैं और देश के अग्रणी उद्योगपतियों की प्रथम श्रेणी में हैं। उनके कुशल एवं व्यापक निर्देशन के फलस्वरूप साहू जैन उद्योग श्रेणी अत्यन्त सुनियोजित रूप में संगठित है। कागज, चीनी, बनस्पति, सीमेन्ट, ऐस्वेस्टस प्राडक्ट्स, पाटनिर्मित वस्त्र, भारी रसायन, नाईट्रोजन खाद, पावर ऐल्कोहल, प्लाइवुड, सायकिल, कोयले की खाने, लाइट रेलवे, इंजीनियरिंग कारखाने, हिन्दी और अंग्रेजी के दैनिक तथा सावधिक पत्र, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक पुस्तक प्रकाशन, पंजाव नेशनल वैंक तथा यूनिवर्सल वैंक आफ इंडिया आदि इसकी रूप-रेखा प्रस्तुत करते हैं।

अपनी विशिष्ट प्रतिभासम्पन्नता तथा व्यापक अनुभव के कारण श्री शान्ति प्रसाद जेन देश के उद्योग एवं व्यवसाय जगत के द्वारा अनेक अवसरों पर सम्मानित किये गये हैं। अनेक वार महत्व-पूर्ण एवं दायित्व भार भी उन्हें सौंपे गये। जब देश की स्वतंत्रता का संग्राम चल रहा था और स्पष्ट होने लगा था कि देश को एक न एक दिन शीघ्र ही पराधीनता से मुक्ति मिलेगी तव पं० जवाहर लाल नेहरू ने देश की औद्योगिक प्रगति की वैज्ञानिक परिकल्पना को रूपाकार देने के लिए जो पहली राष्ट्रीय समिति गठित की थी उसमें देश के तरूण औद्योगिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने के लिए श्री शान्ति प्रसाद जैन को समिति का सदस्य वनाया था।

वे विगत वर्षों में देश की शीर्ष व्यवसाय संस्थाओं के अध्यक्ष रहे हैं, यथा : भारतीय वाणिज्य उद्योग मंडल संघ (फेडरेशन आफ इंडियन चेम्बर आफ कामर्स ऐन्ड इन्डस्ट्री), इंडियन चेम्वर आफ कामर्स, इंडियन शूगर मिल्स ऐसोसियेशन, इंडियन पेपर मिल्स ऐसोसियेशन, विहार चेम्वर आफ कामर्स, विहार इन्डस्ट्रीज ऐसोसियेशन, राजस्थान चेम्वर आफ कामर्स एन्ड इन्डस्ट्रीज, ईस्टर्न यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स एन्ड इन्डस्ट्री आदि।

श्री शान्ति प्रसाद जैन लगातार चार वर्ष तक आल इंडिया आर्गेनाईजेशन आफ इन्डस्ट्रीज एम्प्लायर्स के भी अध्यक्ष रहे और यही चार वर्ष की कालावधि थी जब भारतीय श्रम व्यवस्था सम्वन्धी नियम कानून बने और विचार विवेचना के समय मालिकों तथा उद्योग-धन्धों का व्याव-हारिक दृष्टिकोण उन्होंने उपस्थित किया। इसी व्यावहारिक दृष्टिकोण को रेखांकित करते उन्होंने साहू जैन उद्योगों और कार्यालयों में प्रशासन को प्रगतिशील उदारता का स्पर्श दिया। प्रति-वर्ष सैकड़ों युवकों के इंजिनियरिंग एवं हिसाब-किताव तथा पत्रकारिता एवं सम्पादन कला में शिक्षा प्राप्त करने के वाद विभिन्न साहू जैन संस्थाओं द्वारा व्यावहारिक प्रशिक्षण की सुविधा आयोजना भी की।

आर्थिक एवं उद्योग-व्यवसाय सम्वन्धी विषयों में श्री शान्ति प्रसाद जैन की अतीव रूचि और पैठ है। भारतीय धर्म-दर्शन और ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक विषयों में भी उनकी प्रवृत्ति वचपन से ही रही। उनका अध्ययन व्यापक ही नहीं, गम्भीर भी है और तर्क शक्ति तो अत्याधिक

पैनी है। सांस्कृतिक तथा साहित्यिक महत्व के और सार्वजनिक शिक्षा एवं अन्य सेवा-कार्यों में उन्होंने प्रचुर दान दिया है। अनेक प्राचीन तीर्थों और जीर्ण मंदिरों का उन्होंने उद्धार कराया है। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् देहली के अध्यक्ष रहे हैं। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी बम्बई और अहिंसा प्रचार समिति कलकत्ता तथा श्री दि० जैन अयोध्या तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष अब भी हैं और राजेन्द्र छात्रावास तथा गोविन्द वल्लभ पन्त छात्र भवन, कलकत्ता, के भी अध्यक्ष हैं। छात्रावासों की स्थापना में साहू जी ने कई लाख रुपये दानस्वरूप दिये।

वैशाली के स्नातकोत्तर प्राकृत जैन ज्ञान एवं अहिंसा शोध संस्थान को उन्होंने लगभग सात लाख रुपये का दान दिया और उसकी सफलता के लिए बराबर सचेष्ट रहे हैं। कई अन्य शिक्षा संस्थाओं के वह संस्थापक भी हैं जिनमें मुख्य हैं मूर्ति देवी कन्या विद्यालय, मूर्ति देवी सरस्वती इन्टर कालेज, साहू जैन कालेज-नजीबाबाद और एस० पी० जैन कालेज, सासाराम (विहार राज्य)। उनके द्वारा स्थापित कलकत्ते की तीन ट्रस्ट संस्थाएं तो अपने-अपने क्षेत्र की विशिष्ट संस्थाएं हैं। ये संस्थाएं हैं भारतीय ज्ञानपीठ, साहू जैन ट्रस्ट और साहू जैन चैरिटेबुल सोसाइटी। साहू जैन ट्रस्ट और साहू जैन चेरीटेबुल सोसाइटी जहां अपनी सेवाएं और उद्देश्यों के कारण अ० भा० महत्व की संस्था हैं, भारतीय ज्ञानपीठ को तो एक अन्तर्राष्ट्रीय स्थान भी प्राप्त है।

भारतीय ज्ञान पीठ की संस्थापना श्री शान्ति प्रसाद जैन ने १९४४ में परम पुनीता स्व० मातु-श्री मूर्ति देवी जी की पुण्य स्मृति में की थी। इसका उद्देश्य है ज्ञान की विलुप्त और अनुपलब्ध सामग्री का अनुसन्धान और प्रकाशन तथा लोक हितकारी और मौलिक साहित्य का निर्माण। विगत २२ वर्ष में इस संस्था के द्वारा प्राचीन भारतीय वाङ्मय की अनेक ऐसी अनुपलब्ध निधियाँ प्रकाशित की गयी हैं जिनके बिना हमारा भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक उपलब्धियों का ज्ञान अधूरा था और जिसका प्रकाशन देश का गम्भीर दायित्व था। साथ ही आधुनिक भारतीय भाषाओं में लोक हितकारी सर्जनात्मक साहित्य रचना को सफल एवं सक्रिय रूप से प्रोत्साहन देते हुए ज्ञान-पीठ देश की भावात्मक एकता के सांस्कृतिक पक्ष के प्रति प्रारम्भ से ही जागरूक रही है। इसी दृष्टि-भाव का पल्लवन अब उनके द्वारा प्रवर्तित समस्त भारतीय भाषाओं में सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक सर्जनात्मक कृति पर एक लाख रुपये प्रतिवर्ष पुरस्कार के रूप में हुआ है। निस्संदेह यह एक बड़ा उत्तर-दायित्व है जिसे भारतीय ज्ञानपीठ ने उठाया है और जो श्री शान्ति प्रसाद जैन की इस विषय क्षेत्र सम्बन्धी प्रतिभा परिकल्पनाओं को प्रतिबिम्बित करता है।

साहु शान्ति प्रसाद जी की धर्मपत्नी, सुश्री रमारानी जैन अपने पति की प्रायः सभी धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों में पूर्ण सहयोगी हैं। वह एक अत्यन्त उदारमना, सुसंस्कृत एवं सुरुचि सम्पन्न महिलारत्न हैं। जैन समाज के ही नहीं, भारतीय राष्ट्र के महिला जगत में उनका स्थान अग्र पंक्ति में है। इन सौभाग्य शाली दम्पति के पुत्र श्री अशोक कुमार, अलोक कुमार आदि तथा पुत्रवधुएँ भी कुल परम्परा के अनुगामी हैं। ●●

बाबू सुमत प्रसाद जी

(८) नगीना

(जिला बिजनौर

नगीना जिले का एक अच्छा कस्बा है जो सहारनपुर-मुरादाबाद रेलवे लाइन पर धामपुर से नातिदूर स्थित है। यहाँ १० जैन परिवार रहते हैं जिनके सदस्यों की संख्या ७९ है, इनमें २० पुरुष, १८ स्त्रियाँ, १५ बालक और २६ बालिकाएँ हैं। शिक्षित पुरुषों की संख्या २० है और शिक्षित स्त्रियों की १५। कस्बे में एक जैन मंदिर है और श्री सुमत प्रसाद जैन एडवोकेट यहाँ के प्रमुख समाजसेवी सज्जन एवं कार्यकर्त्ता हैं।

(९) अफ़ज़लगढ़ (जिला बिजनौर)

इस कस्बे को १८ वीं शती के उत्तरार्ध में एक रुहेला नवाब अफजल खां ने बसाया था कस्बे में १२ जैन परिवार निवास करते हैं जिनकी सदस्य संख्या ८० है। इनमें से २६ पुरुष, २१ स्त्रियाँ, ११ बालक और २२ बालिकाएँ हैं। शिक्षित पुरुषों की संख्या २१ और शिक्षित स्त्रियों की १७ है। कस्बे में एक जैन मंदिर भी है। यहाँ की समाज में श्री राजेन्द्रकुमार जी प्रमुख कार्यकर्त्ता रहे हैं।

जैन जनगणना जिला मुरादाबाद (सन् १९६५)

क्रम संख्या	स्थान	परिवार संख्या	पुरुष	स्त्री	बालक	बालिका	कुल योग	पुरुष शि०	पुरुष अशि०	स्त्री शि०	स्त्री अशि०
१	मुरादाबाद	१२४	२३५	१९३	१९२	२४८	८६८	१९२	४३३	१७२	२१
२	अमरोहा	३७	६३	५६	६९	५२	२४०	५९	४	४७	९
३	सम्भल	४	१२	११	१२	१४	४९	१२	—	११	—
४	कुन्दरकी	७	१९	१४	९	१७	५९	१६	३	१३	१
५	हरियाना	१०	१९	१५	२४	११	६९	१८	१	११	४
६	वहजोई	१७	३१	२५	३५	३०	१२१	३०	१	२३	२
७	बिलारी	३	४	७	१	१	१३	४	—	५	२
८	रतनपुर कलां	९	१३	८	७	५	३३	१२	१	८	—
९	डियौढ़ी	५	९	८	७	५	२९	९	—	५	३
१०	दहेली	२	५	५	७	२	१९	५	—	३	२
११	चन्दौसी	८	२५	१६	३६	—	७७	१६	९	१०	६
१२	दौलारी	७	१७	११	११	१५९	५४	१७	—	११	—
	योग	१०२१	४२७	३५३	३७४	४००	१५५४	३९४	४३	३०९	४४

जिला मुरादाबाद

जिला मुरादाबाद के उत्तर में जिला बिजनौर व नैनीताल, दक्षिण में जिला बदायूं, पूरब में जिला रामपुर और पश्चिम में जिला मेरठ एवं बुलन्दशहर हैं।

जिला मुरादाबाद की तहसीलें—

(१) अमरोहा (२) हसनपुर (३) संभल (४) बिलारी (५) ठाकुरद्वारा (६) मुरादाबाद

जिले की कुल जन-संख्या—बीस लाख के करीब है।

मुरादाबाद जिले में अमरोहा, संभल, चन्दौसी, कुन्दरकी, बिलारी, बहजोई और धनौरा मंडी आदि प्रसिद्ध स्थान हैं। इन स्थानों में तथा नागला बाराह, दौलारी, बीजना, आदि स्थानों में भी जैन बन्धु रहते हैं और लगभग सभी जगह जैन मन्दिर हैं। इस जिले की कुल जैन जन-संख्या १५५४ है जिनमें ४२७ पुरुष, ३५३ स्त्री और ७७४ बालक-बालिकायें हैं तथा १०२१ जैन परिवार हैं।

(१) मुरादाबाद नगर

मुरादाबाद, शाहजहाँ के समय में इस प्रदेश के सूबेदार रुस्तम खां द्वारा शाहजादे मुराद के नाम से बसाया हुआ नगर है। यहाँ रामगंगा और गांगन मुख्य नदियां हैं। नगर की आबादी लगभग तीन लाख है। यह उत्तर प्रदेश में रुहेलखंड कमिश्नरी का एक बड़ा नगर है। यहाँ की बोलचाल की भाषा साहित्यिक हिन्दी है। विभाजन के पूर्व यहाँ हिन्दू और मुसलमानों की संख्या लगभग बराबर थी। यह नगर रेलवे का बहुत बड़ा जंकशन तथा डिवीजनल आफिस है। यह नगर कलई के बर्तनों के बनाने का सबसे बड़ा उद्योग केन्द्र है तथा हजारों घरों में स्त्री, पुरुष और बच्चे बर्तन बनाने का काम करते हैं। लाखों रुपयों का बर्तन यहाँ से देश विदेश को भेजा जाता है। यहाँ राजकीय पुलिस ट्रेनिंग कालेज भी है।

मुरादाबाद की कुल जैन संख्या ८६८ है, जिनमें पुरुष २३५, स्त्री १९३, बालक-बालिकायें ४४०, शिक्षित पुरुष ३३१ और शिक्षित स्त्रियां २९६, परिवार १२७ (३४ अग्रवाल, ८६ खन्डेलवाल, २ जैसवाल, ५ पदमावती पुरवाल)।

जैन परिवार

सर्वश्री :

१. शिखर चन्द
२. मुरारी लाल
३. चाऊ लाल
४. राजाराम
५. राम किशोर
६. वांके लाल
७. राम रतन
८. नन्द किशोर
९. भानु कुमार
१०. प्रद्युम्न कुमार
११. विशन स्वरूप
१२. राम गुलाम
१३. फकीर चन्द
१४. मुन्नी लाल
१५. राम सरन
१६. प्रद्युम्न कुमार
१७. राम प्रसाद
१८. शीतल प्रसाद
१९. वृजलाल कचौड़ी वाले
२०. वृज लाल
२१. नेमी चन्द
२२. शीतल प्रसाद
२३. गुलाव चन्द
२४. जुगुल किशोर
२५. पन्ना लाल
२६. राम सरन
२७. तेज कुमार
२८. रोशन लाल
२९. राज कुमार
३०. अवध विहारी लाल
३१. कपूरचन्द मोतीलाल
३२. पन्ना लाल

सर्वश्री :

३३. अनन्त राम
३४. राज कुमार
३५. अनन्त प्रसाद
३६. श्रीमती कैलासी देवी
३७. राम औतार
३८. राम सरन
३९. मुकुट विहारी लाल
४०. शान्ती स्वरूप
४१. श्रीनिवास
४२. कस्तूर चन्द
४३. वीर सेन
४४. श्रीपाल
४५. मदन मोहन वकील
४६. वाबू राम
४७. धन्य कुमार
४८. ओंकार प्रसाद
४९. शिखर चन्द
५०. जितेन्द्र कुमार
५१. नरेश चन्द
५२. परमात्मा जी अग्रवाल
५३. त्रिलोक चन्द
५४. देवेन्द्र कुमार
५५. जय स्वरूप
५६. सुमत विहारी
५७. महेन्द्र कुमार
५८. वाल मुकुन्द
५९. निर्मल कुमार
६०. सुनहरी लाल
६१. प्रेम चन्द
६२. लक्ष्मी चन्द
६३. राम सरन
६४. नेम चन्द्र

सर्वश्री :

६५. पन्ना लाल
६६. मुरारी लाल
६७. वीर दमन कुमार
६८. हर स्वरूप
६९. मुकुट बिहारी लाल
७०. नेम चन्द्र
७१. राम चन्द्र
७२. हुलास चन्द्र
७३. विजय कुमार
७४. राजेन्द्र कुमार
७५. दीष चन्द
७६. राम शरन
७७. प्रेम प्रसाद
७८. राज कुमार
७९. फकीर चन्द
८०. ताराचन्द
८१. ताराचन्द
८२. श्रेयान्स कुमार
८३. डा० अर्जुन लाल
८४. प्रेम चन्द
८५. राज कुमार
८६. हीरा लाल
८७. राम कुमार
८८. नेम चन्द
८९. श्रीचन्द
९०. कमल कुमार
९१. जय कृष्ण
९२. शिखर चन्द
९३. निर्मल कुमार
९४. छोटे लाल
९५. व्रज रतन लाल
९६. प्रो० दिग्विजय सिंह

सर्वश्री :

९७. अनन्त कीर्ति
९८. शान्ती प्रसाद
९९. आमिती प्रसाद
१००. श्रीमती ज्ञान माला
१०१. नेम चन्द्र
१०२. जौहरी लाल
१०३. व्रजरानी देवी
१०४. मुन्नी लाल
१०५. रघुबीर सरन
१०६. चन्द्र सेन
१०७. अवध विहारी लाल
१०८. सुमत बिहारी लाल
१०९. अजित कुमार
११०. सिपाही लाल
१११. राम सरण
११२. सुमेर चन्द
११३. शीतल प्रसाद
११४. प्रेम प्रकाश
११५. अर्जुन लाल
११६. मोती लाल
११७. इतर सेन
११८. महीपाल
११९. लाल चन्द
१२०. महावीर प्रसाद
१२१. वृज मोहन
१२२. धर्म कीर्ति
१२३. सुभाष चन्द
१२४. प्रेम चन्द
१२५. राम चन्द्र
१२६. विनोद कुमार
१२७. विष्णु कान्त जैन वैद्य

जैन मंदिरों व संस्थाओं का परिचय

श्री पार्श्वनाथ दि० जैन ऐतिहासिक मंदिर, लोहागढ़ (मुरादाबाद)

लाला घीसालाल जी, स्व० बा० प्यारेलाल के पिता निवासी मीजना ग्राम, का एक मकान मोहल्ला लोहागढ़ में था, जिसमें छत के ऊपर एक कोठरी में पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा विराजमान थी। लगभग १०० वर्ष हुये जैन भाइयों में जैन मंदिर बनवाने की भावना उत्पन्न हुयी। लाला जी सीधे, सच्चे और सरल प्रकृति के व्यक्ति थे, उनसे प्रार्थना की गई कि वे अपना मकान मंदिर को दे दें। उन्होंने समाज की प्रार्थना स्वीकार की और अपना उक्त मकान मंदिर निर्माणार्थ दान स्वरूप दे दिया। समाज ने चन्दे के द्वारा धन एकत्रित करके मंदिर का निर्माण किया जो आज विशाल रूप में नगर के मध्य में हमारे सामने हैं।

जैन पंचायत ने लोहागढ़ मंदिर का निर्माण प्रारम्भ किया तब जैनेतर लोगों ने बहुत विरोध किया पर उनका विरोध चल न सका और मंदिर का निर्माण बराबर वेग के साथ होता रहा।

जब शिखर बन कर तैयार हुआ तब भी उन लोगों ने बहुत झंझट पैदा किये और लड़ाई झगड़े हुये, राज-मजदूरों को धमकाया, रोका। उल्लास पूर्वक जैन बन्धुओं ने मजदूरों का कार्य स्वयं किया और विशाल रूप में शिखर का निर्माण हुआ। उन लोगों ने नगराधीश से सरकारी आज्ञा प्राप्त की और शिखर बनना रुकवा दिया। जैन समाज ने उसकी अपील हाईकोर्ट में की। हाई-कोर्ट से इन्जीनियर जाँच के लिये भेजा गया, उसने नीवें खुदवा कर देखी, मालूम हुआ २२ फुट इसकी नींव है और मजबूत है, वह किसी तरह कमजोर नहीं है। इस मुकदमें के सिलसिले में उस समय के समाज के प्रमुख सर्व श्री मुंशी बाबू लाल वकील, मुन्शी मुकुन्द राम, लाला जिया लाल, पं० चुन्नी लाल, लाला सन्त लाल, वैद्य शंकर लाल, रा० ब० बसन्त लाल वकील, सुन्दर लाल वकील मुरादाबाद, बा० सुमेर चन्द जी इलाहाबाद, बैरिस्टर चम्पतराय, बा० सुमेर चन्द वकील शेरकोट, बा० बद्री प्रसाद वकील बिजनौर आदि व्यक्तियों ने तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग प्रदान किया और शिखर को कायम रखा। कोर्ट के फैसले के अनुसार शिखर की ऊंचाई ११ फुट कम कर देनी पड़ी।

१७ जनवरी सन् १९१७ में यहां वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव बड़े समारोह पूर्वक स्वनाम धन्य ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी द्वारा सम्पन्न हुआ। उक्त अवसर पर जैन समाज के प्रख्यात नेता सर्व-श्री विशम्भर दास गार्गीय झांसी, पं० हंसराज जैन शास्त्री अमृतसर, बा० दया चन्द गोयलीय आदि अनेक विद्वान पधारे थे। श्री श्याम लाल जो, लाला अतरसेन, मिश्री लाल सोगाणी, श्री तुरम सिंह आदि अनेक गायनाचार्य और भोजगी भी पधारे थे।

उक्त मंदिर की वेदी और कलश श्रीमती जानकी बाई (धर्म पत्नी ला० गुलाब राय) ने अपने धन से बनवाया तथा मंदिर के निमित्त दान स्वरूप कई दुकानें और मकान दिये। मंदिर के पीछे

की तरफ एक वृद्धा रहती थी जिसे डबलनी कहते थे। उसने अपना मकान मंदिर के लिये दान स्वरूप प्रदान किया।

मुरादाबाद के लोहागढ़ जैन मंदिर में सबसे प्राचीन पाषाण प्रतिमा पार्श्वनाथ प्रभू की है पर सबसे बड़ी विशाल प्रतिमा चन्द्रप्रभू भगवान की है, कुल प्रतिमायें १४ हैं।

दि० जैन मंदिर जीलाल मुहल्ला

मुरादाबाद में दूसरा पंचायती दि० जैन मंदिर जीलाल मुहल्ला स्थित लोहागढ़ मंदिर के बहुत समय पहले का बना हुआ है, आज भी यह बड़े मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। उक्त मुहल्ले में २५ जैन बन्धुओं के घर थे आज यहां केवल एक जैन घर है। उक्त मंदिर का इस समय नव निर्माण हुआ है। धातु की सभी प्रतिमायें चोरी चली गयीं केवल पाषाण प्रतिमायें हैं।

चैत्यालय

मुरादाबाद नगर में उपरोक्त दो पंचायती दि० जैन मन्दिरों के अतिरिक्त दो चैत्यालय भी हैं, जिनमें से एक रा. ब. छोटे लाल जी की कोठी में स्थित है और दूसरा ला० जानकी दास के मकान में गंज बाजार में स्थित है।

जैन धर्मशाला

स्व० मुन्शी बाबू लाल वकील के पुत्र स्व० ललित कुमार जी ने धर्मशाला बनाने के लिये घास मन्डी गंज में एक मकान तथा कुछ रुपया मंदिर जी को दिया। मकान को इलाहाबाद हाई कोर्ट द्वारा खाली कराया गया। उक्त स्थान में जैन धर्मशाला का निर्माण हो रहा है। स्थान काफी बड़ा है। स्व० मुन्शी बाबू लाल की धर्मपत्नी श्रीमती स्व० जानकी देवी ने भी एक मकान धर्मशाला के निर्माण के लिये दान किया, जो पटपटगंज मोहल्ले में है।

जैन पाठशाला

लोहागढ़ जैन मंदिर में जैन पाठशाला लगभग ६० वर्ष पहले स्व० गुरूवर्य पं० पन्ना लाल बाकलीवाल और स्व० वैद्यराज पं० शंकर लाल के सद् प्रयत्न से स्थापित हुयी थी। पहले बहुत अच्छे रूप में चलती थी। मुरादाबाद में शिक्षित वर्ग होते हुये भी बच्चों की शिक्षा की तरफ रुचि कम है। पाठशाला की उन्नति की तरफ बहुत कम ध्यान है।

जैन वाचनालय

जैन वाचनालय भी बहुत समय से लोहागढ़ मंदिर में है जिसमें बहुत से प्राचीन हस्त-लिखित और मुद्रित ग्रन्थ हैं तथा नवीन साहित्य भी है।

धर्म प्रचार

मुरादावाद के पं० चुन्नी लाल, मुंशी मुकुन्द राम तथा सुजानगढ़ निवासी गुरुवर्य पं० पन्ना-लाल वाकलीवाल, डिप्टी चम्पतराय आदि विद्वानों ने जैन धर्म का जीवन पर्यन्त प्रचार किया।

एक जमाना था जब जैन ग्रंथ छापने वालों को लोग घृणा की दृष्टि से देखा करते थे। गुरू जी ने उस समय जैन ग्रंथों का प्रकाशन करना प्रारम्भ कर दिया था। उनकी भावना थी कि जैन समाज का वच्चा-बच्चा जैन धर्म के सिद्धान्त से परिचित हो जाय।

सर्वप्रथम जैन पत्र का प्रकाशन

मुरादावाद से "जैन पत्रिका" के नाम से श्रद्धेय पं० पन्ना लाल वाकलीवाल द्वारा सम्पादित होकर सर्व प्रथम जैन पत्र प्रकाशित हुआ जो जैन समाज के व्यक्तियों को सर्वत्र घर बैठे विना किसी मूल्य के भेजा जाता था। "जैन हितैषी" पत्र के जन्मदाता भी गुरू जी ही थे।

जैन साहित्य द्वारा धर्म प्रचार और ज्ञान दान

मुरादावाद में 'वैद्य' कार्यालय में रह कर गुरुवर्य पं० पन्नालाल जी वाकलीवाल ने जैन धर्म सम्वन्धी अनेक उपयोगी पुस्तकों का लेखन और प्रकाशन किया तथा उन्हें विना मूल्य वितरित किया। वाकलीवाल जी ने वाराणसी जाकर हिन्दी, वंगला और संस्कृत तीनों भाषाओं में "अहिंसा" आदि जैन पत्रों का सम्पादन व प्रकाशन किया। जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय की स्थापना भी वाकलीवाल जी ने ही की।

वाकलीवाल जी ने मुरादावाद के स्व० वैद्यराज पं० शंकर लाल, विद्यावारिधि पं० ज्वाला-प्रसाद मिश्र और भारत विख्यात कहानीकार श्री पं० ज्वाला दत्त शर्मा आदि अनेक भारत विख्यात व्यक्तियों को वंगला, मराठी और गुजराती भाषायें सिखायी।

जैन कालेज

जैन कालेज का विचार १८९० में सर्वप्रथम मुरादावाद निवासी पं० चुन्नी लाल और मुन्शी मुकुन्दराम ने प्रकट किया था। आपने अपने एक लेख में जून १९०२ के जैन गजट में जैन कालेज की आवश्यकता प्रगट की थी। दिसम्वर सन् १९०४ में अम्वाला महासभा के अधिवेशन पर एक प्रतिनिधि मण्डल जैन कालेज के वास्ते द्रव्य एकत्र करने के लिए निर्वाचित हुआ। इस मण्डल में मुरादावाद के पं० चुन्नीलाल और मुन्शी वावूलाल वकील भी थे। नजीवावाद के साहू जुगमन्दर दास, दिल्ली के भाई मोती लाल, ला० जिनेश्वर दास मायल, पं० अर्जुन लाल जी सेठी, पं० रघुनाथ दास सरनौ और व्र० शीतल प्रसाद आदि थे। इन महानुभावों ने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रान्त तथा राजपूताना में दौरा करके ३०-४० हजार रुपया एकत्र किया। कार्यकर्त्ताओं में मतभेद के कारण जैन कालेज की स्थापना न हो सकी और संचित द्रव्य महाविद्यालय के ध्रौव्य कोष के मद में पड़ा रह गया।

१९०५ में नजीबावाद के सा० जुगमन्दर दास के नेतृत्व में महासभा का एक प्रतिनिधि मण्डल सी० पी० गया। उसमें मुरादावाद के पं० चुन्नीलाल भी थे। प्रतिनिधि मण्डल दो मास तक घूमता रहा, १० हजार रुपया एकत्रित हुआ जो महासभा के कोष में जमा कर दिया गया।

पं० चुन्नीलाल और मुन्शी मुकन्दराम मुरादाबाद निवासी दो परोपकारी विद्वानों ने सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में जैन जाति की उन्नति के वास्ते दौरा किया। जहाँ वे जाते थे वहाँ-वहाँ जैन सभा और जैन पाठशाला स्थापित कराते थे। इस प्रकार उन्होंने सैकड़ों स्थानों पर जेन सभायें और जैन पाठशालायें स्थापित करा दी थीं। मथुरा में जैन महासभा और अलीगढ़ में जंन विद्यालय भी उन्होंने ही स्थापित कराये थे। दो साल इस प्रकार दौरा करने के बाद मुन्शी मुकन्दराम को गठिया का रोग हो गया, पर उन्होंने दौरा करना नहीं छोड़ा, फिर एक वर्ष बाद उनका देहान्त हो गया। उनके देहान्त के कारण यह दौरा बन्द हो गया और महासभा का भी कार्य शिथिल हो गया। दो वर्ष वाद पं० ऋषभदास के प्रयत्न से यह कार्य पुनः जागृत हुआ।

वार्षिक उत्सव

यहाँ पयूर्षण पर्व की समाप्ति के पश्चात् आश्विन कृष्ण द्वितीया को प्रति वर्ष रथयात्रा महोत्सव विशेष समारोह के साथ सम्पन्न होता है। नगर के जैन, अजैन तथा जिला मुरादावाद एवं आस-पास के नगरों के हजारों व्यक्ति बड़े उत्साह के साथ सम्मिलित होते हैं। दो दिन सार्वजनिक समारोह भी होते हैं जिसमें उच्चकोटि के विद्वानों, गायनाचार्यों तथा कवियों को बुलाया जाता है।

महावीर जयंती भी प्रति वर्ष उत्साहपूर्वक मनाई जाती है, यहाँ रुहेलखण्ड कुमायूं जैन परिषद् की शाखा भी स्थापित हो चुकी है, जिसके श्री जयकृष्ण एडवोकेट सभापति हैं। मुरादावाद में परिषद् की कई मीटिंग हो चुकी हैं।

मुरादाबाद जैन समाज की कुछ स्वर्गीय विभूतियां

पंडित चुन्नीलाल

पं० चुन्नीलाल जी की भारत के उच्च कोटि के संस्कृतज्ञ जैन विद्वानों में गणना की जाती थी, वह सरल प्रकृति थे तथा उनमें सात्विक विचार और धर्म प्रेम की सच्ची लगन थी। जैन धर्म सम्बन्धी अनेक पुस्तकों का प्रणयन और प्रकाशन उन्होंने किया। जिस समय वे शास्त्र प्रवचन करते थे वड़े-वड़ विद्वान भी उनकी प्रशंसा करते थे। वस्तुत: पं० चुन्नीलाल से मुरादावाद जैन समाज की गौरव वृद्धि हुई। वे अनाज की आढ़त का काम करते थे।

मुन्शी मुकन्दराम

मुन्शी जी भी सर्व विख्यात व्यक्ति थे जैन समाज के प्रमुख व्यक्तियों में उनकी गणना होती थी। संस्कृत के अतिरिक्त अरवी तथा फारसी भाषाओं के भी यह अच्छे विद्वान थे। मुन्शी जी

महान् विद्वान, सभा चतुर, उच्च कोटि के वक्ता और उपदेशक थे, उन्होंने धर्म प्रचार सम्बन्धी अनेक कार्य किये और जैन जाति को गौरव प्रदान किया। वे बड़े जमींदार थे।

मुन्शी बाबूलाल वकील

मुरादाबाद जैन समाज के प्रमुख व्यक्ति थे, जैन मंदिर तथा जैन समाज सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने किये। निर्वाचन के बिना ही मुरादाबाद जैन सभा के बहुत वर्षों तक सभापति रहे। मुरादाबाद के सर्वश्रेष्ठ वकीलों में उनकी गणना थी, अपने जीवन काल में लाखों रुपया उपार्जन किया, पर आज उनका कोई उत्तराधिकारी न रहा, वे अपने धन का अपने हाथों सदुपयोग न कर सकें।

वैद्य शंकर लाल

जैन समाज के प्रमुख व्यक्ति समझे जाते थे। जैन समाज मुरादाबाद की आजीवन तन, मन, धन से सेवा की। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में सर्वथा अग्रणी रहे। वे भारत विख्यात वैद्य थे। आज भी सम्पूर्ण भारत का प्रमुख वैद्य समुदाय आपको जानता और मानता है, अपने जीवन में उन्होंने लगभग ५० आयुर्वेदीय ग्रन्थों का सम्पादन, प्रणयन, अनुवाद और संशोधन किया। वैद्यक विद्या के सर्वप्रथम पत्र 'वैद्य' मासिक का प्रकाशन और सम्पादन किया। हिन्दी, संस्कृत, बंगला, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के विद्वान थे तथा जैन धर्म के भी अच्छे ज्ञाता थे।

बा० प्यारे लाल

जैन समाज मुरादाबाद के अपने समय के प्रमुख व्यक्तियों में से थे। काफी दिनों तक समाज के सभापति रहे।

ला० भूखन सरन

यह एक साधारण परिवार के व्यक्ति होने पर भी समाज सेवा के कार्यों में पूरा योग देते रहे, लगभग ३५ वर्षों तक जैन समाज मुरादाबाद के मन्त्री रहकर उन्होंने समाज की भारी सेवा की। उनका नाम मुरादाबाद जैन समाज के लिए अभी भी स्मरणीय है।

राय बहादुर छोटेलाल

रा० ब० छोटेलाल की मुरादाबाद के गण्यमान्य व्यक्तियों में गणना की जाती थी। रा०ब० साहब की बहिन बाल-विधवा थी, वह अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। उन्हीं की प्रेरणा से रा०ब० साहब ने सिविल लाइन्स की अपनी कोठी में एक चैत्यालय का निर्माण कराया। चैत्यालय आज भी अच्छे रूप में स्थित है। प्रतिवर्ष आश्विन द्वितीया को रथयात्रा उत्सव उक्त चैत्यालय से ही प्रारम्भ होता है। रा० ब० साहब के ज्येष्ठ पुत्र स्व० सा० राम स्वरूप भी धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। जीलाल मुहल्ले के जैन मंदिर के जीर्णोद्धार में भी रा० ब० साहब का पर्याप्त योगदान रहा है।
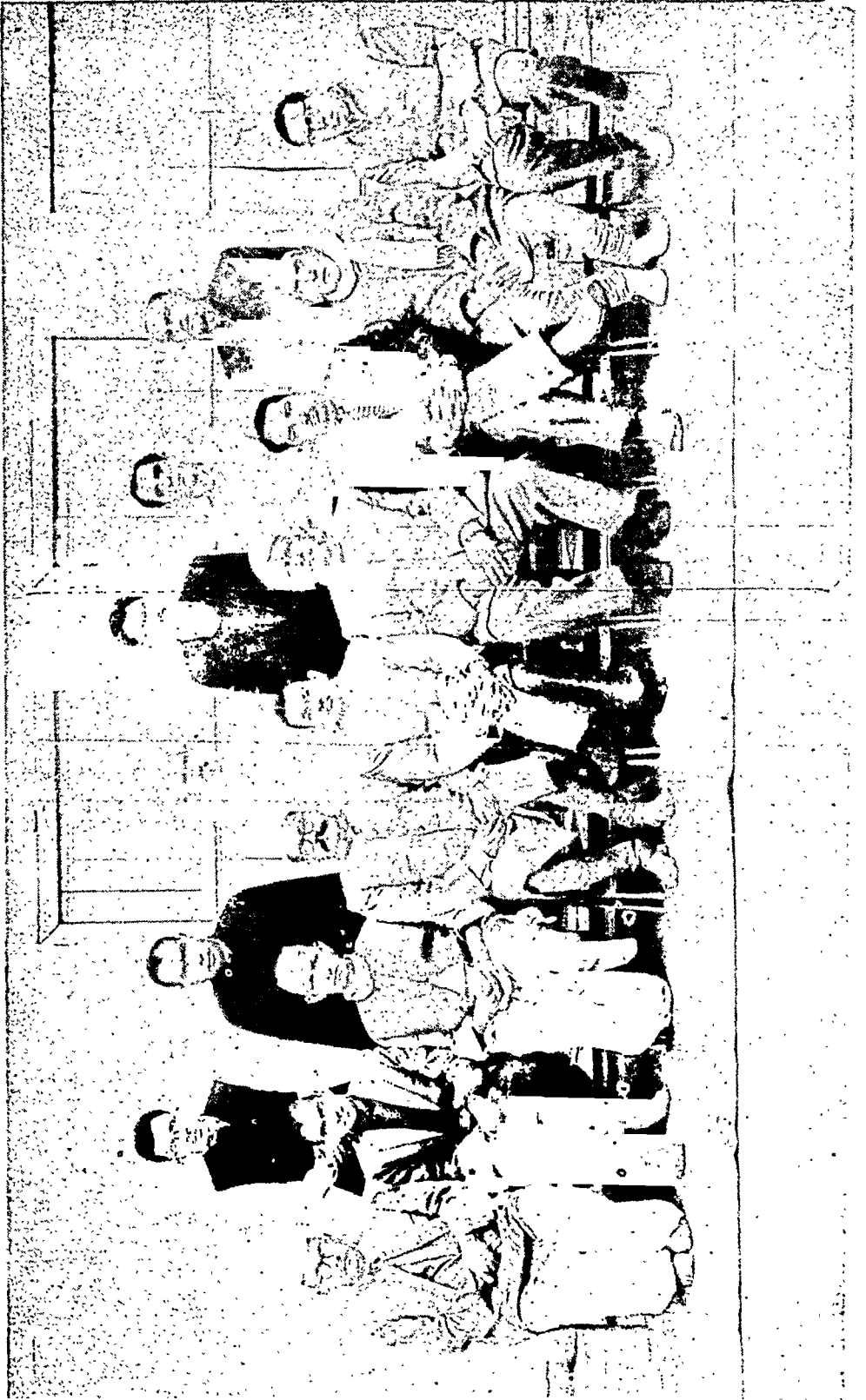
जैन समाज, मुरादाबाद

समाज की कुछ स्वर्गीय विभूतियां

वैद्यराज पं० शंकर लाल
मुरादाबाद

पं० पन्न लाल बाकलीवाल
मुरादाबाद

पं० चुन्नीलाल
मुरादाबाद

मुंशी बाबू लाल
मुरादाबाद

ला० जानकीदास

मुरादाबाद बाजार गंज में लाला जानकी दास एक अच्छे सम्पन्न व्यक्ति हुए हैं। उन्होंने अपने मकान में ही ऊपर एक चैत्यालय की स्थापना की। उक्त चैत्यालय में पहले पाठशाला भी चलती थी पर अब नहीं है। चैत्यालय में उनके दत्तक पुत्र श्री कमल कुमार पूजन-पाठ का प्रवन्ध करते हैं।

श्रीमती गंगा देवी

आप जैन समाज मुरादाबाद की एक प्रमुख समाजसेवी महिला कार्यकर्त्ती रही हैं। आपने यहाँ एक जैन महिलाश्रम भी स्थापित किया था। स्वतंत्रता संग्राम में देश भक्ति की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने जेल यात्रा भी की और जैन स्त्रियों के सामने राष्ट्र भक्ति का आदर्श उपस्थित किया।

मुन्शी गैन्दन लाल

मुरादाबाद जैन समाज के उत्साही समाज सेवी कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने एक जैन स्वयं सेवक दल की स्थापना की थी। उनके नेतृत्व में एक स्वयं सेवक दल हस्तिनापुर मेले में भी गया था और प्रशंसनीय कार्य किया। स्वतंत्रता आन्दोलन में उन्होंने जेल यात्रा भी की।

बाबू काली चरण वकील

जैन समाज मुरादाबाद के बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले, सहृदय, सरल स्वभावी व्यक्ति थे। उन्होंने और वैद्य विष्णु कान्त जैन ने यहां दिनांक २४-९-३२ को जैन युवक मन्डल की स्थापना की थी। वे अल्पायु में ही स्वर्गवासी हो गये। उनके दत्तक पुत्र डा० अर्जुन लाल अच्छे विद्वान हैं।

हकीम बसन्त राय

मुरादाबाद अनाज मन्डी में उनकी अनाज की दूकान थी। अनाज के कारोबार के साथ ही अपने अनुभव के द्वारा धर्मार्थ रूप से रोगियों की चिकित्सा करते थे। हजारों रोगियों को उनके द्वारा लाभ पहुंचा।

ला० गौरी शंकर

मुरादाबाद जैन मंदिर और जैन पाठशाला को उनके द्वारा वहुत लाभ पहुंचा है। वेदी-प्रतिष्ठा के समय उन्होंने जैन पाठशाला मुरादाबाद को एक गाँव दान में दिया, जिससे पाठशाला के संचालन में वहुत सहायता मिलती रही है।

ला० गनेशी लाल

जैन पाठशाला के लिये गांव की कुछ आमदनी वरावर देते रहे।

ला० नारायण दास

मंदिर को आसे वल्लम आदि चान्दी और पीतल का वहुत सा सामान दिया जो मंदिर और समाज के आज तक उपयोग में आ रहा है।

ला० कल्लू मल

उन्होंने लोहागढ़ मंदिर के प्रवंधक के रूप में वहुत दिनों तक कार्य किया और चांदी की पालकी आदि सामान मंदिर को दिया तथा मंदिर के वहुत से भाग में संगमरमर का फर्श लगवाया।

श्री धर्मकीर्ति सरन

वह नगर के सार्वजनिक कार्यों में वहुत भाग लिया करते थे, सेवा समिति मुरादावाद के वर्षो तक कोषाध्यक्ष रहे तथा अग्रवाल कन्या विद्यालय के मैनेजर रह कर कार्य किया। वहुत वर्षो तक जीलाल मंदिर मुरादावाद में नित्य भावपूर्ण पूजन करते रहे। आज भी नगर निवासी उनकी लगन और उनके सेवा कार्यों को याद करते हैं।

इसके अतिरिक्त और भी अनेक समाज सेवी, धर्म परायण और दानी व्यक्ति हुए हैं। उन सभी का उल्लेख करना सम्भव नहीं है।

मुरादावाद जैन समाज के वर्तमान कार्यकर्ता

बाबू जय कृष्ण एडवोकेट

आप मुरादावाद के प्रसिद्ध ऐडवोकेट तथा वर्षों से सरकारी वकील, लॉ लेक्चरार और वार एसोसियेशन के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। मुरादावाद जैन समाज के वर्षो तक सभापति के पद पर कार्य किये। जैन मंदिर सम्वन्वी अचल सम्पत्ति के सम्वन्व में अनेक मुकदमें आपने किये और जैन जाति को उपकृत किया। मंदिर की चल-अचल सम्पत्ति की रक्षा करने में आपकी सेवायें प्रशंसनीय है। आप अहिक्षेत्र के उप सभापति और रू० कु० जैन परिषद् के सभापति हैं। आप निश्चयनय को मानने वाले आध्यात्म प्रेमी व्यक्ति है। समाज मान्य हैं, आपकी अवस्था लगभग ६० वर्ष की है।

वैद्य विष्णु कान्त

आपका जन्म १९ फरवरी, सन् १९१६ को मुरादावाद नगर के प्रतिष्ठित वैद्यराज श्री शंकर लाल जी के यहां हुआ। आपने हिन्दी, संस्कृत, वंगला, गुजराती आदि भाषाओं की शिक्षा प्राप्त की और अपने पूज्य पिता जी के श्री चरणों में रह कर आयुर्वेद शास्त्र का अध्ययन किया। मुरादावाद नगर में अपने पिता द्वारा संस्थापित ७१ वर्ष पुराने आयुर्वेदीय औषधालय तथा वैद्य कार्यालय के आप अध्यक्ष हैं और ख्याति प्राप्त चिकित्सक हैं। आपने मुरादावाद जैन समाज के साधारण सदस्य, निर्वाचित सदस्य, मन्त्री, उप सभापति आदि अनेक पदों पर रह कर तन्मयता से सेवा की। नगर वैद्य सभा के वहुत वर्षो तक मन्त्री और उपाध्यक्ष रहे। जिला वैद्य सभा के मन्त्री

समाज के कुछ वर्तमान कार्यकर्ता

पं० विष्णु कान्त जैन
मुरादाबाद

प्रो० प्रकाश चन्द्रजैन
मुरादाबाद

श्री रामकुमार शास्त्री
मुरादाबाद

जैन धर्म के आदर्श एवं कर्मठ संत

जैन धर्म भूषण स्व० ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी

रह कर भी आपने कार्य किया। जनता सेवक समाज के आप प्रतिष्ठित सदस्य हैं। सेवा समिति के उपाध्यक्ष और तिलक धर्मार्थ औषधालय के निरीक्षक हैं। आप नगर की समाज सेवी संस्थाओं के प्राण समझे जाते हैं। २० वर्षों तक आपने आयुर्वेद जगत के प्रमुख पत्र 'वैद्य' मासिक का सम्पादन प्रकाशन किया। आप दि० जैन परिषद् के सक्रिय सदस्य हैं। हिन्दी के लेखक, कवि और साहित्यकार हैं। आपके समाज सुधार और धर्म प्रेम सम्बन्धी कार्यकलापों से सभी परिचित हैं।

प्रो० प्रेम चन्द

धर्म के प्रति अनन्य आस्थावान, धार्मिक लगन रखने वाले अत्यन्त उत्साही नवयुवक हैं। स्थानीय हिन्दू डिगरी कालेज में प्राध्यापक का कार्य करते हैं। कोई भी समाज सेवा का कार्य हो तन मन धन से अग्रणी रहने वाले उक्त नवजवान को पाकर हमें गर्व है। मुरादावाद जैन समाज के उपाध्यक्ष तथा मन्त्री रह कर आपने समाज की सक्रिय सेवा की है।

श्री नन्द किशोर

आपने मुरादाबाद जैन समाज के मन्त्री भूखनसरन के साथ अनेक वर्षों तक उप मन्त्री रह कर कार्य किया। आप एक उत्साही और लगन के साथ कार्य करने वाले व्यक्ति हैं। आपकी आयु इस समय लगभग ५५ वर्ष है।

श्री राज कुमार

आप मुरादावाद जैन समाज के उत्साही, क्रान्तिकारी कार्यकर्ता हैं। आपने शास्त्री परीक्षा पास नहीं की है, परन्तु धार्मिक योग्यता के कारण शास्त्री के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपने मुरादावाद में भक्तामर स्तोत्र का पाठ प्रारम्भ करा कर समाज में एक नई स्फूर्त्ति उत्पन्न की है। व्यवहार-कुशल तथा धार्मिक प्रवृत्ति वाले समाज सेवी व्यक्ति हैं। आपकी अवस्था लगभग ५५ वर्ष है।

इसके अतिरिक्त

मुरादावाद जैन समाज के सर्वश्री ला० फकीर चन्द ला०, मुन्नी लाल हलवाई, ला० रामचन्द्र, वैद्य पूर्ण चन्द्र, ला० जैन दास, ला० शिखर चन्द, ला० राम कुमार, ला० राम किशोर, बा० अवध विहारी लाल, वा० श्रीचन्द, श्री शीतल चन्द, ला० शान्ति प्रसाद, ला० वावू राम, वा० इतरसेन रि० तहसीलदार आदि उत्साही एवं लगन से कार्य करने वाले कार्यकर्ता हैं। मेरठ निवासी श्री सुरेशचन्द्र भी कई वर्ष तक स्थानीय पुलिस ट्रेनिंग कालेज में इन्सपेक्टर अध्यापक रहे हैं, धार्मिक प्रवृत्ति के सज्जन हैं।

उक्त महानुभाव अपने कार्यकलापों द्वारा युवकों को प्रेरणा प्रदान कर जैन समाज की वहुमूल्य सेवा कर रहे हैं।

(२) अमरोहा (जिला मुरादाबाद)

अमरोहा जिला मुरादावाद का एक प्रमुख और पुराना नगर तथा तहसील है। जो दिल्ली-मुरादावाद लाइन पर रेलवे का स्टेशन है। नगर की संख्या ७५ हजार है। यहां मुसलमानों की भी काफी संख्या है।

अमरोहा की कुल जैन संख्या २४० है, जिनमें ६३ पुरुष, ५६ स्त्रियां, १२१ वालक-वालिकाएं व शि० पुरुष ५९, शि० स्त्रियाँ ४७ हैं। कुल ३७ परिवार है, जिनमें चार अग्रवाल, ३१ खन्डेवाल और २ गहोई परिवार हैं।

जैन परिवार :

सर्वश्री :

१. मुकुट विहारी लाल
अभिनन्दन कुमार वजाज
२. श्याम लाल
३. निर्मल कुमार प्रिंसिपल
४. मंगल सेन
५. मानक चन्द्र
६. नन्द किशोर
७. राम गुलाम
८. राम औतार
९. अवध विहारी लाल
१०. ओम प्रकाश
११. सुभाप चन्द्र
१२. पारवती देवी धर्मपत्नी सिपाही लाल
१३. बुद्ध सेन
१४. हुकम चन्द्र
१५. पदम चन्द
१६. राजेन्द्र कुमार सेठी
१७. राम विलास

सर्वश्री :

१८. पदम चन्द लेखपाल
१९. ज्ञान चन्द धर्म चन्द
२०. मुकुट विहारी लाल सुमेर चन्द्र
२१. वनारसी दास
२२. भूषन सरन
२३. कमल किशोर सुपुत्र नन्द किशोर
२४. यतीस चन्द्र
२५. वैद्य रघुनाथ प्रसाद
२६. जम्बू कुमार
२७. शम्भू कुमार
२८. अमोलक चन्द्र
२९. विश्वम्भर नाथ गहोई
३०. सतीष कुमार गहोई
३१. वाबू राम राम कुमार
३२. श्रीमती जैनवती धर्मपत्नी श्री वनारसी दास
३३. श्रीमती देवी सुपुत्री वनारसीदास
३४. सुरेश चन्द्र गोयल, आपरेटर

जैन समाज, अमरोहा तथा अमरोहा के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति

अखिल भारत-वर्षीय दि० जैन परिषद्
के
दो प्रमुख स्तम्भ
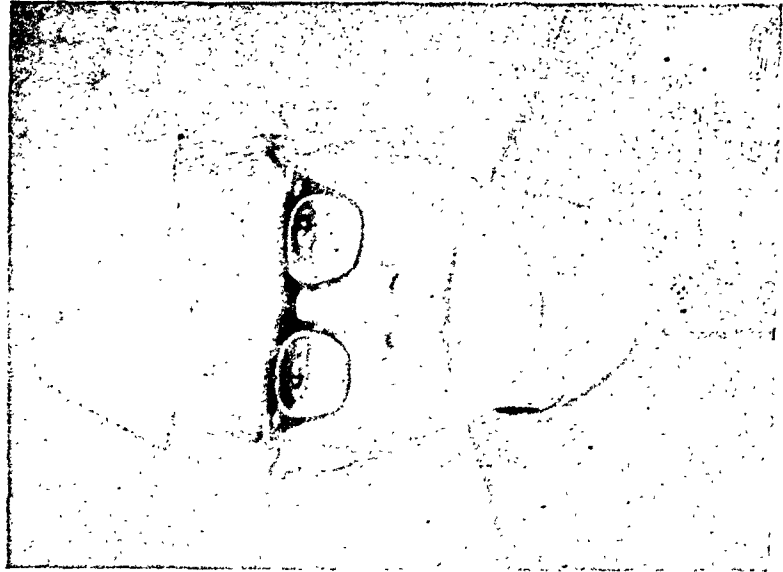
बा० रतन लाल

ला० राजेन्द्र कुमार

जैन मन्दिर

यहां दो जैन मन्दिर हैं, एक बाजार कोट में; दूसरा बाजार जट में है। यहां के दोनों मन्दिर पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध हैं। २५० वर्ष पूर्व यहां एक जैन मन्दिर और था जो अगरवालों का मन्दिर कहलाता था, मन्दिर के पास जैनों के अनेक घर थे। मगर प्रचार न होने से और जैनों से सम्पर्क न रहने से सब सनातन धर्मी हो गये और मन्दिर भी न रहा। मन्दिरों के प्रबन्ध और सामाजिक व्यवस्था के लिए एक जैन सभा है जिसके सभापति श्री मुकुट विहारी लाल जैन बजाज और मन्त्री श्री ओम प्रकाश हैं। प्रतिवर्ष पर्यूषण पर्व की समाप्ति पर रथोत्सव होता है। उत्सव पर विद्वान, संगीतकार और कलाकार बुलाये जाते हैं। जैन अजैन सभी जुलूस में सम्मिलित होते हैं। आस-पास की जैन जनता भी उत्साह पूर्वक सम्मिलित होती है।

जैन संस्थाएं

यहां एक बाल संघ है जो उत्साह पूर्वक कार्य कर रहा है। पहले यहां एक जैन पाठशाला थी, अब फिर चालू हो गई है।

रुहेलखण्ड-कुमायू जैन परिषद की शाखा भी है, उसके मन्त्री श्री राजेन्द्र कुमार हैं। अमरोहा में एक हिन्दू डिगरी कालेज है जिसके प्रधानाचार्य श्री निर्मल कुमार जैन हैं, जो बड़े विद्वान और उत्साही कार्यकर्ता हैं। लगभग ५० वर्ष हुये मास्टर विहारी लाल जैन 'चैतन्य' बुलन्द शहर निवासी यहां राजकीय विद्यालय में अध्यापक थे। उन्होंने अमरोहा की जैन विरादरी का संगठन किया। मास्टर साहब ने एक जैन कोष भी तैयार किया था जो चैतन्य प्रेस बिजनौर से छपा है। उनके प्रयत्न से यहां एक जैन पाठशाला व जैन औषधालय स्थापित हुआ। वह धार्मिक उत्सवों पर बाहर से विद्वानों को बुलाकर प्रभावशाली भाषण कराया करते थे तथा जनता में ट्रैक्ट आदि वितरण कराया करते थे, जिससे जैन समाज में चेतना बढ़ी और जैन समाज की नगर में प्रतिष्ठा हुई।

साहू रघुनन्दन प्रसाद अग्रवाल तथा बाबू मूलचन्द गहोई ने मास्टर विहारी लाल 'चैतन्य' के सत्संग तथा प्रचार से प्रभावित होकर जैन धर्म धारण किया। साहू रघुनन्दन प्रसाद काफी समय तक जैन समाज के सभापति रहे। आप बराबर प्रवचन किया करते थे। कुछ समय से साहू जी के विचार बदल गये हैं और वे अब किसी सम्प्रदाय व धर्म के बन्धन में नहीं हैं। श्री मूलचन्द का देहान्त हो चुका है। उनके लड़के का विवाह जैन कुल में हुआ है और लड़के भी जैन धर्मानुयायी हैं।

प्रमुख व्यक्ति

ला० भूषन सरन जैन अमरोहा के प्रतिष्ठित और अनुभवी सामाजिक कार्यकर्ता हैं और बड़े सज्जन और मिलनसार हैं। आप लगभग २० वर्ष तक अमरोहा जैन समाज के सभापति रहे। अमरोहा की व्यापार कमेटी के अभी भी सभापति हैं। रुहेलखण्ड कुमायूँ जैन परिषद की

मीटिंग में बराबर भाग लेते रहते हैं और आर्थिक सहायता देते रहते हैं। आपकी तीव्र इच्छा समाज संगठन और धर्म प्रचार में रहती है। आप व मुकट विहारी लाल व साहू रघुनन्दन प्रसाद आदि ने धर्म प्रचार का खूब कार्य किया, एक दो वार धार्मिक वाद-विवाद भी कराये।

ला० मुकुट विहारी लाल समाज के प्रमुख व्यक्ति हैं। आप में समाज के हित की बराबर भावना रहती है और जैन सभा के सभापति हैं। उनके सुपुत्र श्री अभिनन्दन कुमार बड़े उत्साही नवयुवक हैं और सामाजिक कार्यों में भाग लेते रहते है। श्री राम विलास, श्री मुकुट विहारी लाल और श्री सुमेर चन्द्र भी बड़े उत्साही कार्यकर्ता हैं।

(३) सम्भल (जिला मुरादाबाद)

सम्भल मुरादाबाद का एक मुख्य नगर और एक ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ एक प्राचीन जैन मन्दिर है। यहाँ जैनियों के केवल चार-पाँच घर हैं। पहले यहाँ के व्यक्तियों में अच्छा धार्मिक उत्साह था। लगभग ३० वर्ष पूर्व यहाँ एक रथ-यात्रा उत्सव भी हुआ था। कुछ अन्य धर्मावलम्बियों को जैनियों की इतनी कम तादाद में होने पर इतना बड़ा जुलूस और व्याख्यान सभा का प्रयत्न सहन न हो सका। सम्भल के आर्य समाजी लोगों ने शास्त्रार्थ की चुनौती दे दी। जैन बन्धुओं ने चुनौती सहर्ष स्वीकार कर ली और निश्चित तिथि को शास्त्रार्थ का प्रबन्ध किया गया। पं० राजेन्द्र कुमार जी न्यायतीर्थ व और भी एक-दो विद्वानों को बुलाया। शास्त्रार्थ में इतना जबर्दस्त जन-समूह एकत्रित हुआ कि जैसा सम्भल के इतिहास में कभी न हुआ होगा। उस शास्त्रार्थ में जैन धर्म की विजय हुई और धाक जमी। काल के प्रभाव से अब जैन बन्धुओं में शिथिलता आई। संख्या भी कम रह गई।

संख्या ४९, पुरुष १२, स्त्री ११, बालक-बालिकायें २६, परिवार ४, शि० पुरुष १२, शि० स्त्री ११, चारों परिवार खन्डेलवाल हैं।

१. श्री कपूर चन्द, २. श्री सनत कुमार, ३. श्री राम कुमार, ४. डा० पन्ना लाल।

विगत विभूतियाँ

मुन्शी बाबू लाल वकील, श्री स्वरूप चन्द्र, ला० बाबू राम आदि प्रसिद्ध व्यक्तियों ने यहाँ जन्म लिया पर उनका कार्य-क्षेत्र अन्यत्र रहा।

मुन्शी बाबू लाल वकील का कार्य-क्षेत्र मुरादाबाद रहा और श्री स्वरूप चन्द्र का बम्बई। श्री स्वरूप चन्द्र बाल्यावस्था में ही बम्बई चले गये थे। वहाँ जाकर पुस्तक लेखन का कार्य करते रहे। "भोज और कालिदास" नामक उनकी लिखी पुस्तक बम्बई के श्री वैंकटेश्वर प्रेस में छपी है। वे साहित्यिक व्यक्ति थे, पर अधिक दिनों जीवित न रहे। बहुत थोड़ी अवस्था में ही उनका परलोकवास हो गया।

प्रमुख व्यक्ति

डा० पन्ना लाल यहाँ प्रैक्टिस करते हैं और उनकी गणना यहाँ के प्रसिद्ध चिकित्सकों में है।

(४) कुन्दरकी (जिला मुरादाबाद)

यह एक अच्छा कस्वा है। यहाँ नोटीफाइड एरिया है। दो जैन मन्दिर हैं, पर व्यवस्था संतोषजनक नहीं है। साहू कुंज बिहारी लाल, श्री चांद विहारी लाल आदि धनपति और धर्म-प्रेमी जन यहाँ हुए हैं। अब श्री जसवन्त राय, श्री ब्रजवासी लाल, श्री कमल कुमार आदि रहते हैं।

कुल संख्या ५९, पुरुष १९, स्त्री १४, वालक-वालिकायें २६, शिक्षित पुरुष १६, शिक्षित स्त्रियाँ १३। ८ परिवार हैं, और सभी खन्डेलवाल हैं।

१. साहू सूरज विहारी लाल, २. साहू जसवन्त राय, ३. आनन्द किशोर, ४. ब्रजवासी लाल, ५. संजय कुमार, ६. सुमत प्रसाद, ७. शम्भू दयाल, ८. कमल कुमार।

(५) हरियाना (जिला मुरादाबाद)

कुन्दरकी से दो मील पर यह एक ग्राम है। यहाँ प्राचीन जैन मंदिर है। जैन वन्धुओं के लगभग १० घर हैं।

कुल संख्या ६९। पुरुष १९, स्त्री १५, वालक-वालिकायें ३५, परिवार १०। शि० पुरुष १८, शि० स्त्री ११।

सर्वश्री

१. युगमन्दर दास, २. महावीर प्रसाद, ३. छोटे लाल, ४. लक्ष्मी चन्द, ५. पवन कुमार, ६. भूकन लाल, ७. सरनवीर, ८. केशव दास, ९. प्रेम प्रकाश, १०. निर्मल कुमार।

विगत विद्वान

हरियाना के ला० श्याम लाल तथा श्री कपूर चन्द धर्म-प्रेमी प्रसिद्ध पुरुष थे। श्री श्याम लाल का जैन धर्म सम्वन्धी ज्ञान विशाल था। वे किसी भी समाज के व्यक्ति के सामने अपने धर्म की विशेषताएँ रखते और उसे परास्त करते रहे। ऐतिहासिक जानकारी भी उनकी अच्छी थी।

ला० केशोसरन स्वतंत्रता संग्राम के वीर सिपाही थे। उन्होंने मुरादावाद आकर जिलाधीश के कार्यालय के सामने सत्याग्रह किया और जेल यात्रा की।

प्रमुख व्यक्ति

श्री प्रेम प्रकाश आदि अच्छे उत्साही, धर्म-प्रेमी और प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति हैं, जो हरियाना ग्राम की उन्नति व प्रगति में सतत सचेष्ट हैं।

(६) बहजोई (जिला मुरादाबाद)

यह बड़ा कस्बा है। यहां अनाज की मन्डी और शीशे के कारखाने है। यहाँ जैनियों के लगभग १८ परिवार हैं। एक मंदिर की भी स्थापना कई वर्ष हुए की जा चुकी है। ला० विहारी लाल सर्राफ तथा ला० मुकट लाल यहाँ के अच्छे सम्पन्न और गण्यमान्य व्यक्ति रहे हैं।

कुल संख्या १२१। पुरुष ३१, स्त्री २५, बालक बालिकायें ६५, परिवार १८, शि० पुरुष ३०, शि० स्त्री २३।

सर्वश्री

१. प्रद्युम्न कुमार, २. राजमल, ३. कल्यान कुमार, ४. छोटे लाल, ५. शान्ती लाल, ६. सोम प्रकाश, ७. मुकुट विहारी लाल, ८. पवनजय कुमार, ९. पूरन चन्द, १०. पदम चन्द, ११. डोरी लाल, १२. दौलत राम, १३. राम स्वरूप, १४. मनफूल कुमार, १५. मोतीराम १६. जय कुमार, १७. प्रेम चन्द, १८. मुरारी लाल।

(७) बिलारी (जिला मुरादाबाद)

विलारी जिला मुरादावाद की तहसील है। यहाँ की कुल जैन संख्या १३ है; जिनमें पुरुष ४, स्त्री ७ और बालक वालिकायें २ हैं तथा ३ जैन परिवार हैं।

१. साहू पदम चन्द्र (साहू वृजरतन), २. साहू वृजभूपण शरण, ३. साहू कस्तूर चन्द्र।
यहाँ पर एक जैन मन्दिर तथा जैन इण्टर कालेज है।

राम रतन इण्टर कालेज

राम रतन इण्टर कालेज विलारी की सन् १९४८ में रायसाहब साहू राम रतन, डा० वृजरतन भूतपूर्व सिविल सर्जन व उनके परिवार द्वारा २५००० रुपया दान देकर स्थापना हुई। सर्वप्रथम एक मिडिल स्कूल के रूप में चलाया गया। सन् १९४९ में सरकार द्वारा हाई स्कूल की मान्यता प्राप्त हुई और सन् १९५५ में इण्टर को मान्यता मिली। यह विद्यालय विज्ञान तथा साहित्यिक विषयों में मान्यता प्राप्त किये हुये है। इस वर्ष वाणिज्य, कला, संगीत में मान्यता मिलने की आशा है। वैसे इन तीनों विषयों में हाई स्कूल तक मान्यता प्राप्त किये हुये है। इस समय लगभग १२०० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जिसमें लगभग २०० कन्याएँ हैं।
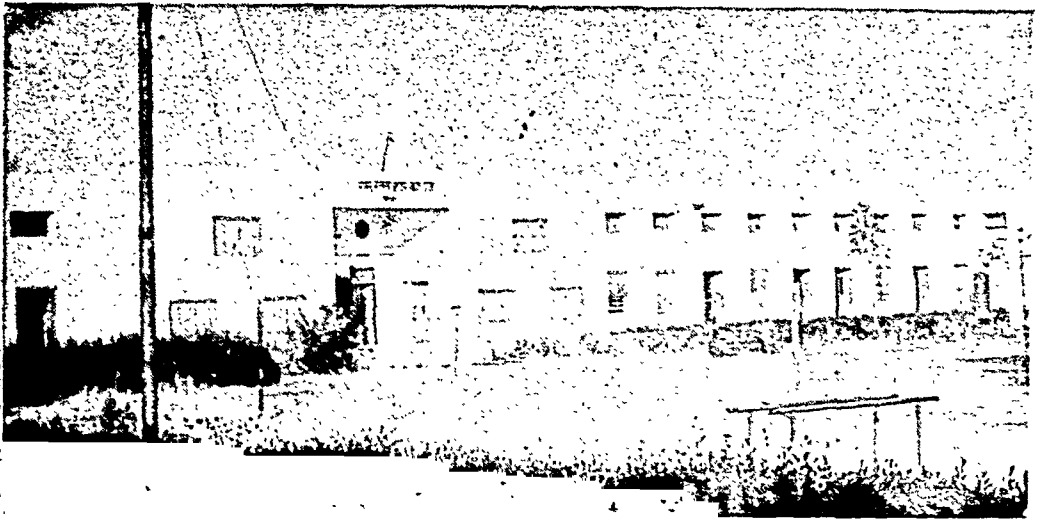
जैन इन्टर कालेज, बिलारी

डा० ब्रजरतन (सिविल सरजन)

साहू पदम चंद जैन

राय साहब के छोटे भाई डा० वृज रतन जैन, भूतपूर्व सिविल सर्जन ने लगभग ५००० रु० दान देकर विद्यालय के लिए भूमि खरीदने का प्रवन्ध किया था। पिछले पाँच वर्षों से आपके पुत्र साहू पदम चन्द्र की देख-रेख में विद्यालय सुचारु रूप से प्रगति कर रहा है, और वह ही आजकल इसके प्रवन्धक हैं।

राय साहब साहू राम रतन

राय साहव साहू राम रतन जैन का जन्म एक धनाड्य परिवार में हुआ। वह शुरू से ही प्रगतिशील किसान व जन सेवक रहे। आपने मुरादावाद में शिक्षा प्राप्त की। जिले में सवसे पहला ट्यूववेल आपने ही लगवाया था। आपके ही प्रयत्न व दान द्वारा यहाँ कालेज की स्थापना हुई, जो आपके ही नाम पर चल रहा है। आपका स्वर्गवास १४ अगस्त सन् १९४९ में हुआ था।

साहू पदम चन्द जैन

आपका जन्म १८ नवम्वर सन् १९१८ को हुआ। आपने झांसी, चन्दौसी व कृषक कालेज कानपुर में शिक्षा प्राप्त की। अब आप उत्तर प्रदेश के एक कुशल और अनुभवी किसान हैं। सन् १९५१ और ५२ में आपने जिले में सबसे अधिक गन्ना व आलू पैदा करके जिले में पहला स्थान ग्रहण किया। सन् १९६० में उत्तर प्रदेश फार्म लीडर्स प्रतिनिधि के रूप में विश्व का दौरा किया, इस सिलसिले में भारत से हर राज्य से एक प्रतिनिधि था। चार मास तक अमेरिका के फार्मों व अनुसंधान केन्द्रों का निरीक्षण किया। कोलम्विया विश्वविद्यालय में सहकारिता की विशेष शिक्षा ग्रहण की और जापान में धान की उन्नतिशील खेती के सिलसिले में रहे।

आप राम रतन विद्यालय के प्रवन्धक हैं। आपके एक पुत्र थल सेना में लेफ्टीनेन्ट के पद पर हैं और दूसरे कोचीन में नौ सेना की आफीसरों की प्रशिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

(८) रतनपुर कलां (जिला मुरादाबाद)

मुरादावाद नगर से लगभग ६-७ मील की दूरी पर गांगन नदी के किनारे वसा हुआ रतनपुर कलां एक कस्बा है। यहाँ पर अति प्राचीन जैन मंदिर है जिसका कि जीर्णोद्धार हो चुका है। विगत में यहाँ श्री राम कुमार सेठी, हकीम इन्दरमन, ला० प्यारे लाल, ला० वावूराम, ला० बांके लाल आदि प्रमुख धर्म-प्रेमी व्यक्ति रहे हैं।

श्री राम कुमार जी सेठी साहित्यिक विचारधारा के व्यक्ति थे, इन्होंने 'अकलंक चरित्र' नामक काव्य की रचना की थी। सेठी जी अल्पायु में ही दिवंगत हो गये थे।

वर्तमान में यहाँ के धर्मप्राण व्यक्तियों में सर्वश्री वैद्य जयकुमार, जौहरी लाल, फकीर चंद व पदम चंद जी के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

यहाँ की जनसंख्या ३३ है। ९ परिवारों में विभक्त उक्त संख्या में पुरुष १३, स्त्री ८, वालक-वालिका १२, शिक्षित पुरुष १२, शिक्षित स्त्री ८ हैं। सभी परिवार खन्डेलवाल हैं। परिवार के प्रमुख व्यक्तियों के नाम हैं :—

सर्वश्री १. जय कुमार वैद्य, २. अर्जुन लाल, ३. व्रज रतन लाल, ४. वावू राम ५. राज कुमार, ६. मुकुट लाल, ७. राम स्वरूप, ८. हुकुम चन्द, ९. पदम चन्द

(९) डियोढी (जिला मुरादाबाद)

यह एक ग्राम है। यहां पर कोई जैन मन्दिर नहीं है।

कुल संख्या २९, पुरुष ९, स्त्रियां ८, वालक-वालिकायें १२, परिवार ५, सभी खन्डेलवाल हैं। शि० पुरुष नौ, शि० स्त्री पांच।

परिवार

सर्वश्री:

१. नेम चन्द
२. महेन्द्र कुमार
३. महावीर प्रसाद
४. टेक चन्द
५. रघनन्दन शरन

ड्यौढ़ी में वैद्य टेक चन्द जैन आयुर्वेदिक चिकित्सा करते हैं। आप धर्म प्रेमी और सज्जन हैं।

(१०) दहेली (जिला मुरादाबाद)

इस ग्राम में जैन संख्या १९ है। पुरुष ५, स्त्री ५, वालक-वालिकायें ९, २ परिवार खन्डेलवाल हैं। शि० पुरुष पांच, शि० स्त्री तीन।

प रवार

१. श्री व्रज रतन जैन
२. श्री विष्नु चन्द्र

(११) चन्दौसी (जिला मुरादाबाद)

यह मुरादावाद जिले की सर्व प्रसिद्ध अनाज मण्डी है। यहाँ एक विशाल जैन मन्दिर है, पर जैनियों की संख्या वहुत कम है। यहाँ सेठ शोभा राम, सेठ कल्याण राय आदि कई धर्म-प्रेमी

व्यक्ति हुए हैं। अब उनकी सन्तानें हैं। यहाँ के रहने वाले अनेक जैन वन्धु जैन धर्म त्याग चुके हैं, पर नाम के साथ फिर भी कई व्यक्ति जैन लिखते हैं। यहाँ जैन धर्म का बिलकुल प्रभाव नहीं है। प्रचार की आवश्यकता है।

कुल संख्या ७७। पुरुष २५, स्त्री १६, वालक ३६, परिवार ७, जिनमें ६ अग्रवाल और १ खंडेलवाल हैं, शि० पुरुष १६, शि० स्त्री १०।

सर्वश्री

१. विजय कुमार, २. ज्योति प्रसाद, ३. आंगन लाल, ४. शिखर चन्द, ५. सलेख चन्द, ६. सुलतान सिंह, ७. ईश्वरी प्रसाद।

(१२) ढौलारी (जिला मुरादाबाद)

यहाँ एक जैन मन्दिर है, उसके जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। पूजन-पाठ होता है।

कुल संख्या ५४। पुरुष १९, स्त्री ११, वालक २४, शि० पुरुष १७, शि० स्त्री ११। सभी सातों परिवार खन्डेलवाल हैं।

परिवार

१. अमोलक चन्द्र, २. कल्लूमल, ३. मुन्ना लाल, ४. ईश्वर प्रसाद, ५. वाबू राम, ६. नवरतन लाल, ७. लालता प्रसाद, ८. नवल किशोर।

लाला विन्द्रा प्रसाद, लाला फूल चन्द, वैद्य हीरा लाल, लाला टीका राम, ललिता प्रसाद, मुन्ना लाल तथा वैद्य अमोलक चन्द्र धर्म प्रेमी और उत्साही कार्यकर्ता रहे हैं।

उपरोक्त स्थानों के अतिरिक्त मुरादाबाद जिले में निम्न लिखित स्थानों में भी जैनियों की साधारण संख्या है:

वीजना

यह एक छोटा-सा ग्राम है। यहां जैनियों का सिर्फ एक घर है।

धनौरा मन्डी

यह अनाज की मन्डी है। यहां जैनियों के १२ घर हैं। जैन धर्म शाला और एक प्राइमरी स्कूल है। यहां के जैन वन्धु अधिकतर लोहे के व्यौपारी हैं। यहां का जैन मन्दिर छोटा-सा है, पर अच्छा वना हुआ है जिसमें धातु की केवल एक मनोरम प्रतिमा है। प्रतिवर्ष

पर्यूषण पर्व की समाप्ति के उपलक्ष्य में रथयात्रा महोत्सव होता है जिसमें अमरोहा आदि स्थानों के वहुत से जैन वन्धु सम्मिलित होते हैं। यहां श्री रतन लाल, श्री फकीर चन्द, श्री नेमिकुमार वैद्य, और श्री मन्नी ओम प्रकाश जी अच्छे उत्साही धर्म प्रेमी सज्जन हैं।

किशौली

यह भी वहजोई के निकट एक ग्राम है। यहां जैनियों के एक-दो घर हैं।

राजस्थल

यह एक ग्राम है। यहां स्व० ला० सिपाही लाल ग्राम पंचायत के प्रधान रहे। स्वतंत्रता संग्राम में वरावर भाग लेते रहे। ५० ग्रामों की कांग्रेस कमेटी के प्रधान भी रहे। धर्म प्रेमी और उत्साही व्यक्ति थे। अव उनके भाई प्यारे लाल धनवान व्यक्ति हैं। ग्राम पंचायत के प्रधान हैं। यहां केवल एक ही घर शेष रह गया है। मन्दिर नहीं है।

नगला वाराह

यह एक छोटा सा ग्राम है। यहां विशाल जैन मन्दिर है। वैद्य शोभा राम यहां के प्रमुख व्यक्तियों में हैं। अच्छे अनुभवी वृद्ध वैद्य हैं, साधु स्वभाव, परोपकारी और धर्म के ज्ञाता हैं। आप जैन धर्म सम्वन्धी एक पुस्तक लिख रहे हैं। आपकी सभी सन्तानें सुयोग्य एवं उच्च शिक्षित हैं। आपके वड़े पुत्र वैद्य ज्ञान चन्द नेत्र विशेषज्ञ हैं और अत्यन्त मृदु स्वभावी एवं सेवा भावी व्यक्ति हैं। जैन धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान हैं। यहां जैनियों के तीन-चार घर हैं।

●●

जैन जनगणना जिला बदायूँ (सन् १९६५)

क्रम संख्या	स्थान	परिवार संख्या	पुरुष	स्त्री	बालक	बालिका	कुल योग	पुरुष शि०	पुरुष अशि०	स्त्री शि०	स्त्री अशि०
१	बदायूं नगर	२	२	२	३	३	१०	२	—	२	—
२	उझानी	१४	४१	२८	४५	४३	१५७	४०	१	२८	—
३	बिलसी	२५	२९	३६	४०	३६	१४१	२७	२	३०	६
४	बिसौली	५	८	४	९	६	२७	६	२	३	१
५	मंझारा	२	४	३	४	१	१२	३	१	—	३
६	नगला नाहर	४	८	९	५	८	३०	८	—	९	—
७	सुन्दर नगर	२	२	३	१	२	८	२	—	३	—
८	सतेनी	४	८	५	९	८	३०	४	४	५	—
९	अम्यापुर ब्लाक	१	१	—	—	—	१	१	—	—	—
१०	सहसवान	३	४	४	४	२	१४	४	—	३	१
११	किरारी	१	३	१	१	१	६	२	१	—	१
१२	कादर चौक	१	१	१	२	—	४	१	—	१	—
१३	सरहरा	३	३	४	९	—	१६	३	—	—	४
१४	राजस्थल	१	१	१	—	—	२	१	—	—	१
	योग	६८	११५	१०१	१३२	११०	४५८	१०४	११	८४	१७

जिला बदायूँ

जिला वदायूं रुहेलखण्ड का एक छोटा जिला है। इस जिले में केवल एक जैन पाठशाला विलसी में है तथा विलसी व उझानी में जैन मन्दिर हैं। जिला वदायूं में अधिकतर जैन बन्धु खन्डेलवाल हैं और ग्रामों में खेती का कार्य करते हैं। जिला वदायूं में विलसी, उझानो, विसौली, नगलानाहर, राजस्थल, सरहरा, कादर चौक, किरारी, सहसवान, अम्बियापुर, सुन्दर नगर, मझारा आदि ग्रामों में जैन बन्धु रहते हैं।

कुल संख्या ४५८। पुरुष ११५, स्त्री १०१, वालक १३२, वालिकाएँ ११०, परिवार ६८। शिक्षित पुरुष १०४, स्त्री ८४, अशिक्षित पुरुष ६१, अशि० स्त्री १७।

(१) बदायूँ नगर

वदायूं में कुल २ जैन परिवार हैं जिनमें २ पुरुष, २ स्त्री, ६ वालक-बालिकायें हैं। कुल संख्या १० है। शिक्षित पुरुष २, शिक्षित स्त्री २।

१. विनोद कुमार, २. पी. सी. जैन गर्ग।

वदायूं जिले का केन्द्र होने की वजह से कभी-कभी जैन अधिकारी व राजकीय कर्मचारी आते रहते हैं। वदायूं एक प्राचीन नगर है, इसका प्राचीन नाम वोदमयूत था। मुसलमानों के समय से विगड़ कर वदायूं हो गया। १२ वीं शती के अन्त के लगभग इस नगर पर मुसलमानों का अधिकार होने के पूर्व यहां दो-अढ़ाई सौ वर्ष तक राष्ट्रकूटवंशी राजपूतों का राज्य रहा था।

(२) उझानी

कुल जैन संख्या १५७। पुरुष ४१, स्त्री २८, वालक-वालिका ८८, शिक्षित पुरुष ४०, शिक्षित स्त्री २८। परिवार १४ हैं, और सभी खन्डेलवाल हैं।

१. बनारसी दास, २. राम स्वरूप, ३. वावू राम, ४. रतन लाल, ५. मनोहर लाल ताराचन्द, ६. त्रिवेणी सहाय, ७. प्यारे लाल, ८. राजेन्द्र कुमार, ९. सन्मत कुमार, १०. राम करन लाल, ११. नन्द किशोर, १२. सुन्दर लाल, १३. मिश्री लाल, १४. अजित कुमार, १५. हुकम चन्द।

यहाँ एक छोटा-सा दिगम्बर जैन मंदिर भी है, जो जैन मुहल्ले में स्थित है। इसकी व्यवस्था जैन समाज उझानी करती है। भादों के माह में यहाँ वार्षिक उत्सव भी होता है। यहाँ के जैन अधिकतर व्यापारी वर्ग के हैं। यह मंदिर लगभग १०० वर्ष प्राचीन होगा।उझानी एन. ई. रेलवे का स्टेशन भी है। ग्राम प्राचीन है।

श्री रतन लाल जैन

आप उझानी जैन समाज के प्रमुख व्यक्ति हैं। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं। आप कपड़े के व्यापारी हैं तथा उझानी कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी हैं।

श्री कुमार जैन

आप उझानी म्यूनिस्पल बोर्ड में वाटर वर्क्स के इन्जीनियर हैं। आपकी गिनती कुशल इन्जीनियरों में की जाती है। आप बहुत ही सरल स्वभाव तथा मिलनसार हैं एवं धार्मिक कार्यों में रुचि रखते हैं।

अग्रवाल जैन धर्मशाला

यहाँ पर एक जैन धर्मशाला भी है जो अग्रवाल जैन धर्मशाला के नाम से प्रसिद्ध है। इसके मैनेजर श्री मूलचन्द जैन हैं।

(२) बिलसी (जिला बदायूँ)

कुल जैन संख्या १४१। परिवार २६, पुरुष २९, स्त्री २९, बालक-बालिकायें ७६, शिक्षित पुरुष २७, शिक्षित स्त्री ३०। (अग्रवाल परिवार १, शेष खन्डेलवाल हैं)।

सर्वश्री/श्रीमती

१. जगमोहन, २. बाबू राम, ३. पुष्पा देवी, ४. बाला प्रसाद, ५. कचन लाल. ६. मूलचंद ७. वैद्य श्याम लाल, ८. बाबू राम, ९. सरस्वती देवी, १०. चांद विहारी लाल, ११. निहालचन्द, १२. सुन्दर लाल, १३. सेवती लाल, १४. कस्तूरी देवी, १५. गेन्ना देवी, १६. श्री किशन १७. हंशा देवी, १८. प्रेम चन्द, १९. प्यारे लाल, २०. कलावती देवी, २१. चमेली देवी, २२. राम स्वरूप, २३. गुहन्दे देवी, २४. ज्ञान प्रसाद, २५. पुष्प कुमार, २६. ज्योती प्रसाद अग्रवाल।

विलसी काफी पुराना कस्वा है। यहाँ पर तीन दिगम्बर जैन मंदिर है। भादों के माह में वार्षिक उत्सव और साथ ही महावीर जयन्ती भी बड़े जोर-शोर एवं उत्साह से मनायी जाती है। यह कस्वा अपने जिले में जैन धर्म का प्रारम्भ से ही केन्द्र रहा है। यहाँ पर जैनों के वार्षिक महोत्सवों, पर्वों के अतिरिक्त प्रतिष्ठायें, रथ-यात्रा, उत्सव आदि भी होते रहते हैं। इनअवसरों पर

जिले के समस्त जैन यहाँ एकत्र होकर धर्म-लाभ करते हैं। यहाँ पर विवाहों में जैन पद्धति अपनाई जाने लगी है। दहेज की कुप्रथा को दूर करने को यहाँ के जैन कटिवद्ध हैं।

यहाँ जैन परिषद् की स्थापना भी हो चुकी है। यह समाज की सेवा एवं अपने उद्देश्यों, कर्त्तव्यों की ओर विशेष तौर से सजग हैं।

दि० जैन मंदिर

यह मदिर जैन मुहल्ले में स्थित है। इसका निर्माण लगभग २५० वर्ष पूर्व हुआ माना जाता है। कस्वे के स्थानीय मंदिरों में सबसे प्राचीन व बहुत विशाल है। यहाँ की जैन समाज के द्वारा इसका प्रवन्ध चलाया जाता है। यहाँ नित्य-प्रति शास्त्र सभा होती है जिसमें काफी संख्या में पुरुष, महिलायें एवं वच्चे धर्म-लाभ करते हैं। श्री ज्वाला प्रसाद इसके अध्यक्ष एवं श्री अमर चन्द मंत्री हैं।

दि० जैन मंदिर साहबगंज

यह मंदिर चौ० तोता राम ने साहवगंज में स्थापित कराया था। लगभग ९० वर्ष पुराना है। इसका प्रवन्ध जैन समाज विलसी द्वारा किया जाता है। श्री प्रकाश चन्द इसके प्रवन्धक हैं।

दिगम्बर जैन चैत्यालय

यह स्व० सेठ नन्हू मल जैन द्वारा स्थापित कराया गया था और उन्हीं की वाटिका में स्थित है। लगभग ८० वर्ष प्राचीन वाताया जाता है। इसमें भगवान पार्श्वनाथ की अत्यन्त मनोहर प्रतिमा विराजमान है।

महावीर जैन पुस्तकालय एवं वाचनालय

यह पुस्तकालय लगभग ५० वर्ष से जैन समाज की ही नहीं वल्कि पूरे कस्वे की सराहनीय सेवा करता चला आ रहा है, यहां नियमित रूप से पत्र पत्रिकायें आती हैं एवं अच्छी-अच्छी पुस्तकें भी हैं। यह मुख्य वाजार में स्थित है।

जैन धर्मशाला

यह सरकारी वस स्टैन्ड के पास स्थित है और लगभग ५० वर्ष पुराना वताया जाता है। यहां यात्रियों के ठहरने के लिए उचित व्यवस्था है एवं एक वाटिका भी है। इसका प्रवन्ध जैन समाज द्वारा किया जाता है। श्री ज्वाला प्रसाद जैन इसके मैनेजर हैं।

जैन विद्यालय

इस विद्यालय में वच्चों को जैन धर्म की शिक्षा दी जाती है इसके प्रवन्धक श्री श्याम लाल वैद्य हैं।

जैन समाज, बिलसी
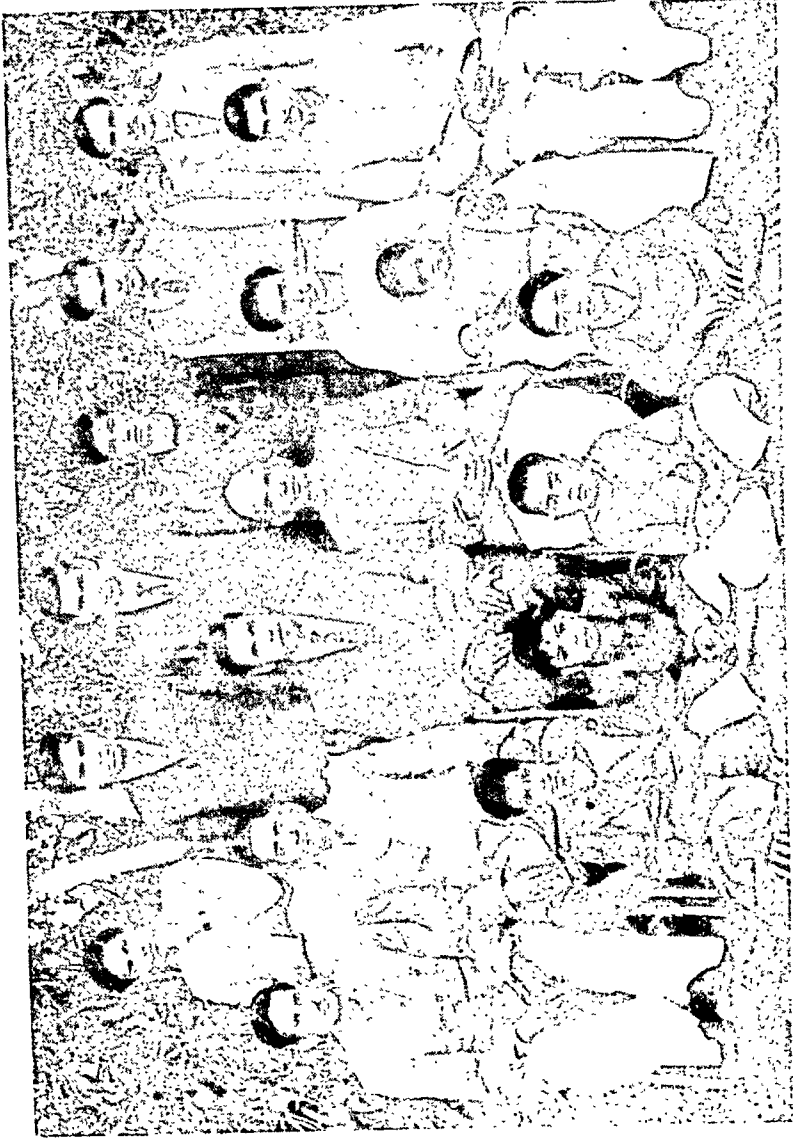
जैन स्त्री समाज, बिलसी

मन्दिरों एवं संस्थाओं के व्यवस्थापक

१. दि० जैन मन्दिर—श्री ज्वाला प्रसाद (प्रेसीडेन्ट)
२. दि० जैन चैत्यालय, श्री अमर चन्द जैन (मन्त्री), श्री जग मोहन लाल जैन (व्यवस्थापक)
३. दि० जैन मन्दिर साहब गंज, श्री प्रकाश चन्द जैन (प्रवन्धक)
४. जैन धर्मशाला, श्री ज्वाला प्रसाद जैन (प्रवन्धक)
५. श्री महावीर जैन पुस्तकालय, श्री श्याम लाल जैन (प्रवन्धक)
६. जैन विद्यालय, श्री श्याम लाल जैन (प्रवन्धक)

प्रमुख व्यक्तियों के परिचय

श्री जगमोहन चन्द जैन

आप जिले के प्रमुख व्यक्तियों में से हैं और विलसी म्यूनिस्पिल वोर्ड के तीन वार अध्यक्ष चुने गये हैं। इस प्रकार आप लगभग १४ वर्ष तक इस पद पर रहे हैं। आपने एक अंग्रेजी विद्यालय की नींव डाली थी, जो कि अव इन्टर कालेज है। आप कई वर्षों तक उसके मन्त्री रहे हैं और उसके आजीवन सदस्य हैं। गर्ल्स हाई स्कूल के भी कई वर्षो तक प्रेसीडैन्ट रहे। आप नि:स्वार्थ सामाजिक सेवाओं के लिये इस जिले में प्रसिद्ध हैं। आप गल्ले तथा तेल के व्योपारी हैं।

श्री अमर चन्द

आप उत्साही नवयुवक तथा दि० जैन समाज के मन्त्री हैं। आपने यहां जैन परिषद की स्थापना की है एवं उसके मन्त्री हैं। इस कस्वे के इन्टर कालेज के आजीवन सदस्य हैं। आप धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि लेते हैं।

श्री ज्वाला प्रसाद

आप दि० जैन समाज के पिछले कई वर्षो से प्रधान हैं और जैन धर्मशाला के प्रवन्धक हैं, आप धार्मिक कार्यो में विशेष रुचि रखते हैं।

ला० नन्हू मल

स्व० नन्हूमल विलसी के एक बहुत प्रभावशाली व्यक्ति थे। आप नित्य नियम से मन्दिर में पूजन करते थे। गरीवों की सहायता करने में सदैव तत्पर रहते थे और उनको भोजन कराते व वस्त्र आदि देते थे तथा अकाल पड़ने पर वगैर नाम की इच्छा से हर प्रकार की सहायता करते थे। अहिक्षेत्र के दि० जैन परिषद अधिवेशन के सभापति थे। उस क्षेत्र में उनकी उच्च

मान्यता थी। उनके सुपुत्र श्री जगमोहन लाल जी तथा उनके दूसरे सुपुत्र श्री असर चन्द जी एम० ए० समाज के प्रत्येक कार्य में भाग लेते रहते हैं।

श्री श्याम लाल

आप जैन विद्यालय एवं जैन पुस्तकालय के प्रबन्धक हैं, आप जैन धर्म में विशेष रुचि रखते हैं और उसका प्रचार कार्य करते हैं। आप निस्वार्थ धार्मिक सेवा करते हैं।

आपका एक के० एन० कोल्ड स्टोरेज एण्ड आइस फैक्टरी है जिसकी स्थापना ११ मार्च, १९६५ को हुयी।

(४) बिसौली

बिसौली एक छोटा कस्वा है यहां जैनों की बहुत कम संख्या है।

परिवार ५, पुरुष ८, स्त्री ५, वालक १५, कुल जैन २८, शि० पु० ६ शि० स्त्री ३।

सर्वश्री १. इन्द्रसेन अग्रवाल
२. मुकुट लाल
३. आनन्दी लाल
४. आशा राम
५. सूरज मल

५) मझारा

परिवार २, पुरुष ४, स्त्री ३, वालक ५, कुल संख्या १२, शि० पु० ३,

१. श्री नन्दा लाल खन्डेहवाल।
२. श्री बनारसी खन्डेलवाल।

(६) नगलानाहर

नगला नाहर एक छोटा ग्राम है। यहां जैन परिवार ४, पुरुप ८, स्त्री ९, वालक १३, कुल संख्या ३०, शि० पु० ८, शि० स्त्री ९। सभी खंडेलवाल हैं।

परिवार :—

१. श्री शोभा राम।
२. श्रीमती चमेली हीरा लाल।
३. श्री चेत राम।
४. श्री राम प्रसाद।

(७) सुन्दर नगर

यह एक छोटा ग्राम है। यहां जैन परिवार २, पुरुष २, स्त्री ३, वालक ३, कुल संख्या ८ शि० पु० २, शि० स्त्री ३।

१. श्री वाबू राम। २. श्री कस्तूर चन्द रोशन लाल।

(८) सतेनी

परिवार ४, पुरुष ८, स्त्री ५, वालक १७, कुल संख्या ३०, शि० पु० ४, शि० स्त्री ५।

१. श्री प्रकाश चन्द।
२. श्री कपूर चन्द्र।
३. श्री मानक चन्द।
४. श्री पूरन चन्द्र।

(९) अम्बियापुर ब्लाक (बिल्सी)

परिवार १, पुरुष १, कुल संख्या १, शि० पु० १।

१. श्री राम वाबू।

(१०) सहसवान

कुल संख्या १४, पुरुष ४, स्त्री ४, वालक ६, परिवार ३।

श्री छंगे लाल प्रमुख व्यक्ति हैं।

(११) किरारी

परिवार १, पुरुष ३, स्त्री १, वालक २ योग ६, शि० पुरुष १।

श्री दीप चन्द प्रमुख हैं।

(१२) कादर चौक

परिवार १, पुरुष १, स्त्री १, वालक २, योग ४, शि० पु० १, शि० स्त्री १।

१. श्री पी० सी०, वी० डी० ओ०।

(१३) सरहरा

परिवार ३, पुरुष ३, स्त्री ४, वालक ९, कुल संख्या १६, शि० पु० ३।

प्रमुख व्यक्ति श्री कपूर चन्द एवं श्री सोहन लाल हैं।

(१४) राजस्थल

परिवार १, पुरुष १, स्त्री १, योग २।

जैन जनगणना जिला रामपुर (सन् १९६५)

क्रम संख्या	स्थान	परिवार संख्या	पुरुष	स्त्री	बालक	बालिका	कुल योग	पुरुष शि०	पुरुष अशि०	स्त्री शि०	स्त्री अशि०
१	रामपुर नगर	७८	१२४	११३	९१	११९	४४७	११६	८	१०३	१०
२	विलासपुर	१७	३७	२७	२४	३९	१२७	२१	१६	१५	१२
३	मसवासी	९	२३	१९	२३	२५	९०	२२	१	१३	६
	योग	१०४	१८४	१५९	१३८	१८३	६६४	१५९	२५	१३१	२८

जिला रामपुर

स्वराज्य प्राप्ति से पहले रामपुर रुहेलखंड डिवीजन का प्रमुख नवावी राज्य था और रुहेले पठानों का यहाँ शासन था। अभी तक नवावी काल का नवावी परिवार, किला, शाही मस्जिद व शाही महल आदि मौजूद हैं। इस जिले का रहन-सहन और सभ्यता वहुत कुछ मुसलमानी है। ब्रिटिश काल में रामपुर मशहूर रियासत मानी जाती थी। १९४७ में नवाब की रियासत के विलयन के वाद रामपुर उत्तर प्रदेश का अलगजिला वना दिया गया। इस जिले में रामपुर, विलासपुर, मसवासी आदि नगर व ग्राम हैं, जहाँ जैनों का निवास है। रामपुर जिले में अधिकांश घराने खंडेलवाल हैं, कुछ अग्रवाल परिवार भी हैं, सब मिल-जुल कर रहते हैं। अब आपस में व्याह शादी भी होने लगी हैं। इस जिले की कुल जैन संख्या ६६४ है जिनमें १८४ पुरुष, १५९ स्त्रियाँ, १३८ वालक और १८३ बालिकायें हैं।

(१) रामपुर नगर

मुरादावाद से १७ मील है। रेलवे स्टेशन है, कपड़े आदि के कारखानें हैं। रामपुर जिले का केन्द्र है। रामपुर के नवाव साहव भी अब अन्य नागरिकों की तरह रामपुर में रहते हैं।

रामपुर की कुल जैन संख्या ४४७ है जिनमें १२४ पुरुष, ११३ स्त्रियों और २१० वालक वालिकायें हैं। इनमें ११६ शिक्षित पुरुष और १०३ शिक्षित स्त्रियाँ हैं। यहाँ पर कुल ७८ जैन परिवार हैं जिनमें २७ अग्रवाल और ५१ खंडेलवाल परिवार हैं।

जैन परिवार

सर्वश्री

१. राजेन्द्र प्रसाद
२. आनन्द प्रकाश
३. शान्ती स्वरूप
४. ओम प्रकाश
५. शीतल प्रसाद
६. राजेन्द्र कुमार
७. विजय पाल

सर्वश्री

८. त्रिसला सती गुलाव सिंह
९. परजन कुमार
१०. महावीर चन्द्र
११. त्रिलोक चन्द्र
१२. राजेन्द्र कुमार
१३. रघवीर शरण
१४. राम भरोसे लाल

सर्वश्री

१५. देवराज
१६. श्रेयांस प्रसाद
१७. राम औतार
१८. जौहरी लाल
१९. वशेश्वर दयाल
२०. कुबेर चन्द्र
२१. सुरेन्द्र कुमार
२२. पं० होती लाल
२३. जगन्नाथ
२४. सुरेन्द्र कुमार
२५. जिनेन्द्र कुमार
२६. चन्द्र प्रकाश
२७. सिपाही लाल
२८. कपूर चन्द्र
२९. बाँके लाल
३०. श्रीमती कलौरा देवी
३१. सुरेश चन्द्र
३२. दीप चन्द्र
३३. विशुन कुमार
३४. प्रकाश चन्द्र मुंशी
३५. मनोहर लाल
३६. राजेन्द्र कुमार
३७. मुकुट लाल
३८. अवध कुमार
३९. जय कुमार
४०. राम भरोसे लाल
४१. देव चन्द्र
४२. प्रेम किशोर
४३. नेमी चन्द्र
४४. संतोप कुमार
४५. सीताराम
४६. वांके लाल

सर्वश्री

४७. कृष्ण पाल
४८. कपूर चन्द्र
४९. प्रकाश चन्द्र
५०. बृज रतन लाल
५१. संतोष कुमार
५२. फकीर चन्द्र
५३. भूषण लाल
५४. बृजवासी लाल
५५. मोती लाल
५६. याद करन
५७. जय कुमार
५८. कैलाश चन्द्र
५९. ज्ञान चन्द्र
६०. धर्म चन्द्र
६१. कुबेर चन्द्र
६२. सुमेर चन्द्र
६३. वृजवासी लाल
६४. भगत लाल
६५. कल्याण कुमार "शशि"
६६. रतन लाल
६७. राज कुमार
६८. आनन्द कुमार
६९. आनन्द किशोर
७०. लक्ष्मी प्रसाद
७१ विमल कुमार
७२. अक्षय कुमार
७३. रतन लाल
७४. श्याम विहारी लाल
७५. नेमी चन्द्र
७६. श्याम विहारी
७७. धर्म दास
७८. गोपी चन्द्र

जैन इंटर कालेज, रामपुर

श्री कल्याण कुमार (शशि)
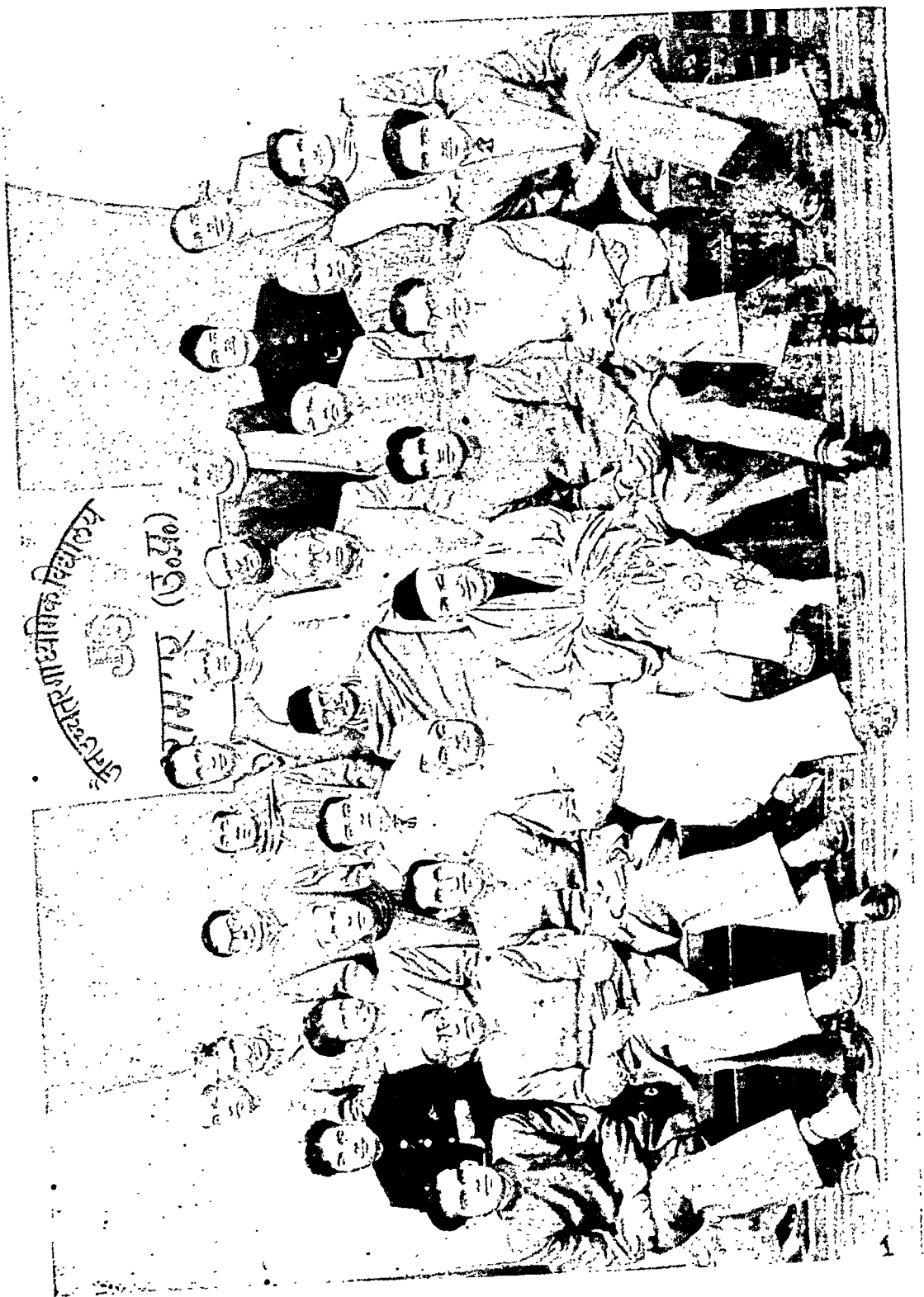
जैन समाज, रामपुर

जैन मन्दिर

रामपुर में नवाबी शासन के समय से एक दिगम्बर जैन मन्दिर है। मुसलमानी राज्य होने के कारण हिन्दुओं और जैनों के मन्दिरों पर बड़ी पाबंदी और रुकावट थी। इसलिये उस समय मन्दिर का ऊंचा शिखर नहीं बन सका। मन्दिर की व्यवस्था सुन्दर . । हर एक भाई और बहन प्रति दिन मन्दिर में दर्शन पूजा करने के लिये आते हैं तथा रात्रि भोजन के त्यागी हैं। यहाँ की शिक्षित समाज में धार्मिक भावना अच्छी है। मन्दिर जी से संबन्धित शहर से बाहर एक रमणीक जैन बाग है। पर्यूषण पर्व के बाद प्रत्येक वर्ष रथयात्रा बड़ी धूम-धाम से निकलती है। वहां पर ही अभिषेक पूजा आदि का कार्य क्रम बड़े उत्साह से संपन्न होता है। हजारों जैनेतर व्यक्ति भी इस समारोह में सम्मिलित होते हैं।

जैन समाज रामपुर की संस्थायें

१ जैन इन्टर कालेज
२ जैन बेसिक विद्यालय
३ कन्या विद्यालय
४ सार्वजनिक जैन वाचनालय
५ जैन बाग तथा क्रीणा स्थल
६ जैन क्लब
७ जैन परिषद शाखा

उक्त संस्थायें अच्छे ढंग पर चल रही हैं। सब के पृथक पृथक मंत्री हैं और वे अपने अपने विभागों का प्रबंध करते हैं। बेसिक विद्यालय तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में जैन और जैनेतर ११०० छात्र शिक्षा प्राप्त करते हैं। बालिकाओं के विद्यालय का संचालन भी जैन समाज रामपुर के प्रतिष्ठित सदस्यों के हाथ में हैं।

जैन इण्टर कालेज

रुहेल खण्ड कुमायूँ की शाखा परिषद स्थापित होने पर यहां पर परिषद ने जैन कालेज बनाने की भावना पैदा की। पहले यहां पर केवल एक छोटी पाठशाला थी। श्री कपूर चन्द, सुमेर चन्द्र एडवोकेट, कल्यान कुमार 'शशि', विमल चन्द आदि सज्जनों ने समाज के सहयोग से वहां एक जैन इन्टर कालेज की स्थापना की जो कि अच्छी उन्नति कर रहा है। इस जिले में केवल एक ही जैन इण्टर कालेज है। कालेज में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध ठीक है। जैन अजैन विद्यार्थी सभी परिषद परीक्षा बोर्ड की धार्मिक परीक्षा में बैठते हैं। कालेज का अपना नया भवन बन रहा है जिसकी लागत का अन्दाजा करीब डेढ़ लाख रुपया है। इस विद्यालय में ४० अध्यापक और १० कर्मचारी कार्य कर रहे हैं, तथा १,२०० विद्यार्थी हैं। कालेज का वार्षिक बजट डेढ़ लाख के करीब है। इस तरह कालेज खूब उन्नति कर रहा है। कालेज के मन्त्री श्री पारस दास तथा सहायक मंत्री कल्याण कुमार 'शशि' हैं।

सामाजिक कार्य कर्ता तथा प्रसिद्ध व्यक्ति

१. श्री आनन्द कुमार एडवोकेट—अध्यक्ष शिक्षा समिति, भूतपूर्व वित्त मन्त्री रियासत, अध्यक्ष जिला परिषद, रामपुर आदि (अब उनका स्वर्गवास हो चुका है)

२. श्री कपूर चन्द्र—अध्यक्ष जैन समाज, रामपुर

३. श्री सुमेर चन्द्र एडवोकेट—उपाध्यक्ष, जैन समाज, रामपुर एव मन्त्री श्री अहिक्षेत्र

४. श्री पारस दास—शिक्षा मन्त्री जैन समाज, रामपुर

५. श्री कल्याण कुमार 'शशि'—सहायक मैनेजर, इन्टर कालेज तथा कन्या विद्यालय

६. श्री विमल चन्द एडवोकेट—मुख्य मन्त्री जैन समाज, रामपुर

७. श्री गोपी चन्द्र—प्रधान, मेला कमेटी, अहिक्षेत्र

८. श्री लक्ष्मी प्रसाद एडवोकेट

९. श्री वांके लाल वैद्य

श्री टेक चन्द्र, श्री श्याम विहारी लाल, श्री कुवेर चन्द्र व खण्डेलवाल बुक डिपो नगर के प्रसिद्ध व्यापारी हैं, और श्री कल्याण कुमार 'शशि' रामपुर के ही नहीं वरन् समस्त जैन समाज के प्रसिद्ध हिन्दी कवि है, श्री सीता राम सदस्य नगर पलिका एवं भूतपूर्व चेयर मैन और वड़े उत्साही, कुशल एवं प्रभावशाली सामाजिक कार्य कर्ता हैं। लाला वाँके लाल वैद्य पुराने समाज सेवी व्यक्ति हैं।

रामपुर नगर में लग-भग एक दर्जन वकील-एडवोकेट हैं, यथा:- सर्वश्री:- नन्द किशोर, रघुवीर शरण दिवाकर, सुमेर चन्द्र, विमल चन्द्र, विमल कुमार, सुरेन्द्र कुमार, केवल कुमार, मुनीश कुमार, रतन लाल, देवेन्द्र कुमार, सुरेन्द्र कुमार, श्याम सुन्दर दिवाकर और लक्ष्मी प्रसाद जी।

रामपुर में जिले के वाहर के अनेक सज्जन भी राजकीय सेवा आदि के प्रसंग से रहते रहे हैं और इस समय निम्न सज्जन हैं :—

सर्वश्री :- सुरेन्द्र कुमार मुंसिफ, जिनेन्द्र कुमार पी०एच०डी० लेकचरार राजा डिग्री कालेज रामपुर, जिनेन्द्र कुमार असिस्टैन्ट इंजीनियर केन्द्रीय सरकार, कमल कुमार जीवन वीमा निगम डेवलपमेन्ट अधिकार विलासपुर, निर्मल कुमार डाइरेक्टर उत्तर प्रदेश गन्ना सहकारी समिति रामपुर, गोपी चन्द्र जिला इंजीनियर पी० डब्लू० डी० रामपुर तथा श्रीमती माधुरी देवी एम० ए० वी० टी० प्रिंसिपल कन्या विद्यालय रामपुर इत्यादि।

(२) विलासपुर (जिला रामपुर)

विलासपुर जिला रामपुर में एक कस्वा है और रामपुर जिले की तहसील है। यहाँ एक जैन मन्दिर है।

यहाँ १७ जैन परिवार हैं जिनमें ३७ पुरुष, २७ स्त्रियाँ एवं ६३ बालक वालिकायें हैं। २१ शिक्षित पुरुष और १५ शिक्षित स्त्रियाँ है।

जैन परिवार

सर्वश्री

१. मोती चन्द्र खंडेलवाल, २. हकीम श्याम लाल, ३. राज कुमार, ४. ज्ञान चन्द्र, ५. नानक चन्द, ६. अयोध्या प्रसाद, ७. खन्ना लाल, ८. गुन्नी लाल, ९. लक्ष्मी राम, १०. धन कुमार, ११. विमल कुमार, १२. कस्तूर चन्द्र, १३. राम कुमार, १४. पन्ना लाल, १५. जिले सिंह, १६. लडूमल, १७. मूल चन्द्र।

(३) मसवासी (जिला रामपुर)

मसवासी जिला रामपुर में एक छोटा कस्वा है। यहाँ पर एक जैन मन्दिर है जो कुछ समय तक वन्द रहा। श्री विष्णुकांत जी जैन वैद्य मुरादावाद व श्री राजकुमार जी आदि के प्रयत्न से मंदिर खुल गया है और वहां के सब भाई मन्दिर में दर्शन पूजन करने जाते हैं।

मसवासी की कुल जैन संख्या ९० है जिनमें २३ पुरुष १९ स्त्रियां और ४८ बालक बालिकायें है। इनमें २२ शिक्षित पुरुष और १३ शिक्षित स्त्रियाँ हैं।

जैन परिवार

सर्वश्री

१. सुन्दर लाल, २. ख्याली राम, ३. असरफी लाल, ४. मदन लाल, ५. ईश्वरी प्रसाद, ६. जगत नाथ, ७. राम कुमार, ८. गेन्दन लाल, ९. विहारी लाल।

अकबराबाद

यहाँ पर प्राचीन जैन मन्दिर है तथा कई जैन परिवार हैं। श्री ईश्वर चन्द्र जी यहाँ के योग्य कार्यकर्त्ता हैं।

नया गांव

यह एक छोटा ग्राम है। यहाँ पर एक जैन परिवार है।

बढ़ापुर

एक छोटा सा ग्राम है। यहाँ पर एक जैन परिवार है।

जैन जनगणना जिला बरेली (सन् १९६५)

क्रम संख्या	स्थान	परिवार संख्या	पुरुष	स्त्री	बालक	बालिका	कुल योग	पुरुष शि०	पुरुष अशि०	स्त्री शि०	स्त्री अशि०
१	बरेली नगर	३१	५३	४६	३८	४८	१८५	५१	२	३१	१५
	योग	३१	५३	४६	३८	४८	१८५	५१	२	३१	१५

जिला बरेली

ब्रिटिश राज्य से पूर्व रुहेल खंड में रुहेलों का राज्य था। इसी लिये यह क्षेत्र रुहेल खंड कहलाता है। ब्रिटिश राज में रामपुर को जहाँ नवाबी राज्य था छोड़ कर रुहेल खंड में छह जिले थे। स्वराज्य प्राप्ति के बाद रामपुर को अलग जिला बना दिया गया है और अब रुहेल खंड या बरेली डिवीजन (कमिश्नरी) में सात जिले : बरेली, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, पीलीभीत, बदायूं और शाहजहांपुर हैं। रुहेल खंड में हिन्दुओं तथा मुसलमानों की संख्या लगभग बराबर है। जिला बरेली में पांच तहसीलें हैं। जिले की जन संख्या लगभग ५ लाख है। जिला बरेली के मुख्य नगर: फरीदपुर, बरेली, आंवला, फतेहगंज हैं। प्रसिद्ध जैन तीर्थ अहिक्षेत्र इसी जिले की आंवला तहसील के कस्बे रामनगर के निकट स्थित है जहां प्राचीन जैन पुरातत्व की पर्याप्त सामग्री खुदाई में प्राप्त हुई हैं। जिला बरेली में जैनियों की संख्या बहुत कम है। बरेली में केवल एक दिगम्बर जैन चैत्यालय है। इस जिले में और कहीं जैन मन्दिर, जैन स्कूल, धर्म शाला आदि नहीं हैं। जिले की कुल स्थाई जैन संख्या १८५ है तथा ३१ जैन परिवार हैं।

(१) बरेली नगर

बरेली की जन संख्या करीब चार लाख है। बरेली रुहेल खंड का सबसे बड़ा शहर और कमिश्नरी का मुख्यालय है और मुरादाबाद-लखनऊ लाइन पर उत्तर रेलवे का जंकशन है। यहाँ पर फरनीचर का बहुत बड़ा कार-बार है और लाखों रुपये का फरनीचर बाहर भेजा जाता है। दियासलाई, कत्था, टर्पेन्टाइन, रबड़, शक्कर और कैम्फर आदि के कई बड़े बड़े कारखानें हैं। सिंचाई आदि के उच्च राजकीय कार्यालय तथा एक मानसिक चिकित्सालय है।

बरेली में पहले जैनों की बहुत कम संख्या थी। ३०-४० साल से बाहर से जैन बन्धुओं के आ जाने से अब जैनों के ३१ परिवार तथा कुल जैन संख्या १८५ है। जिनमें ५३ पुरुष, ४६ स्त्री तथा ८६ बालक बालिकायें हैं। प्रायः सभी पुरुष और स्त्रियां शिक्षित हैं।

जैन परिवार

सर्वश्री

१. विश्वम्भर दयाल, एडवोकेट
२. हीरालाल सतीश चन्द्र, कालटैक्स
३. चक्रेश्वर दास, ठेकेदार
४. जिनेन्द्र कुमार जैन एडवोकेट

सर्वश्री
५. कुन्दन लाल एम० ए० पी० एच० डी०
६. शतीश चन्द्र मेरठवाले
७. शिखर चन्द्र
८. प्रमोद कुमार एडवोकेट
९. विनोद कुमार एडवोकेट
१० रवीन्द्र कुमार ओवरसियर
११. चन्द्र कान्त दलाल कैम्फर फैक्टरी
१२. अमोलक चन्द्र
१३. पतीन कुमार, मोटर वर्क्स
१४. प्रकाश चन्द्र, प्रकाश मोटर वर्क्स
१५. सुरेन्द्र कुमार प्रो० वरेली कालेज
१६. देवेन्द्र कुमार

सर्वश्री
१७. जे० पी० जैन एम० ई० एस०
१८. रवी दत्त
१९. जगदीश्वर प्रसाद मुनीम
२० डा० महेश चन्द्र
२१. नेमी चन्द्र इनकम-टैक्स
२२. रिषभ कुमार रि० इन्जीनियर
२३. श्रीमती कुमारी सरोजनी
२४. जुगमन्दर लाल
२५. वी० डी० जैन पुलिस विभाग
२६. महावीर प्रसाद
२७. कैलाश चन्द्र
२८. राम चन्द्र सहाय ओवरसियर, इत्यादि।

जिले का हेड क्वार्टर होने के कारण यहां पर वड़े वड़े जैन अधिकारी आते रहते हैं। यहाँ के जैन भाइयों में वड़ा प्रेम और उत्साह है। हर साल महावीर जयन्ती वड़े उत्साह से मनायी जाती है और रथोत्सव भी होता है।

दि० जैन चैत्यालय

लगभग १०-१२ वर्ष हुये यहाँ जैन चैत्यालय की स्थापना की गयी थी। चैत्यालय श्री विश्वम्भर दयाल एडवोकेट के मकान के ऊपर के कमरे में हैं। मंदिर जी का प्रवंध जैन समाज करती है। यह मंदिर जिला परिपद कार्यालय के पास है। यहाँ पर सव भाई दर्शन पूजन करते हैं। वरेली वड़ा शहर होने के कारण जैन भाई दूर दूर रहते हैं। नगर में एक जैन नगर वसाया जाने की आवश्यकता है जहाँ वच्चों की प्रारंभिक और धार्मिक शिक्षा के लिये जैन स्कूल व जैन औपधालय आदि भी वन सकते है।

जैन परिषद शाखा

श्री उग्रसेन जी काशीपुर की प्रेरणा से वरेली में महावीर जयन्ती के अवसर पर जैन परिपद शाखा स्थापित की गयी जिसके सभापति श्री वी० डी० जैन और मंत्री डा० कुन्दन लाल जैन हैं।

स्व० लाला हीरा लाल जैन, जो वड़े सज्जन और धर्मात्मा थे, के प्रयत्न से वरेली में जैन सभा की स्थापना हुयी थी जिसके सभापति लाला हीरा लाल जी थे। जैन सभा होने से जैन

संगठन का श्री गणेश हुआ और जैन चैत्यालय वनाने की भावना पैदा हुयी। अव जैन सभा के सभापति श्री वी० डी० जैन एडवोकेट, मंत्री डा० कुन्दन लाल और उपमंत्री चक्रेश्वर दास जी हैं।

२. जैन मिलन की स्थापना पांच छः वर्ष हुये श्री लोक नाथ जैन इन्जीनियर की प्रेरणा से हुयी थी। जैन मिलन की बैठकों में बरेली के सब जैन अधिकारी, वकील, डाक्टर तथा अन्य शिक्षित सज्जन प्रति माह किसी एक सज्जन के निवास स्थान पर एकत्रित होते हैं तथा मेरीभावना का पाठ करते हैं॥ मिलन में जैन स्त्रियां भी शामिल हैं। मिलन के मन्त्री श्री शम्भू शरण जैन एडवोकेट हैं।

बरेली में कोई जैन स्कूल, धर्मशाला, औषधालय काफी प्रयत्न करने पर भी न वन सका।

विगत जैन बन्धुओं का परिचय

स्व० लाला हीरालाल का जन्म मेरठ ज़िले के सिसाना नाम के ग्राम में एक प्रसिद्ध जैन कुल में हुआ था। लगभग ३५-४० वर्ष हुये उन्होंने वरेली में कालटैक्स की एजेन्सी का कार्य शुरू किया और उसमें उन्हों ने इतनी उन्नति की कि लाला जी की गिनती नगर के प्रमुख नागरिकों में की जाने लगी। वे वहुत ही मिलनसार तथा धर्मात्मा पुरुष थे। जो जैन वन्धु वाहर से आते थे उनका वह हृदय से आतिथ्य सत्कार करते थे तथा दान देने में सव से आगे रहते थे। चैत्यालय न होते हुये भी प्रति दिन पूजन पाठ आदि घर पर ही करते थे। उनकी प्रेरणा से वरेली में जैन सभा व जैन मन्दिर की स्थापना हुयी जो आज सुचारू रूप से चल रहे हैं। वह अपने भाइयों और रिश्तेदारों की सहायता करने में तत्पर रहते थे। अन्त समय तक वे जैन सभा के सभापति रहे तथा उत्सव के लिए एक रथ बनवाने की इच्छा भी उन्होंने प्रकट की थी। उनके पुत्र श्री शतीशचन्द्र जी ने अपने पिताजी की स्मृति में एक सुन्दर रथ वनवाया है।

श्री शतीश चन्द्र जी अपने पिता की तरह वड़े सज्जन और मिलनसार हैं तथा सामाजिक कार्यों में भाग लेते एवं पूरी सहायता देते रहते हैं।

स्व० वा० दयाचंद्र पुलिस की सर्विस से अवकाश प्राप्त करने के वाद वरेली में ही रहने लगे थे। आप डी० आई० जी० पुलिस के पी० ए० रहे। वरेली में जैन भाइयों को एक स्थान पर लाने में उनका सबसे वड़ा हाथ रहा। जैन चत्यालय की स्थापना और उसके प्रवन्ध का सारा भार उन्हीं के कंधों पर रहा। बरेली जैन सभा के वह अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक प्रधान मन्त्री रहे। जैन अनुष्ठानों एवं उत्सवों का उन्होंने सफल आयोजन किया। जैन भाइयों की सहायता के लिये वे हर समय तत्पर रहते थे।

प्रमुख व्यक्ति व कार्य-कर्ता

श्री विशम्भर दयाल जैन लगभग २५-३० वर्ष से वकालत करते हैं और बरेली के प्रसिद्ध एडवोकेट हैं। सामाजिक और धार्मिक कार्यों में रुचि लेते हैं। आपने अपना ऊपर का कमरा जैन चैत्यालय के लिये प्रदान करके बरेली में जैन मन्दिर की नींव डाल दी है। आप नजफगढ़ जिला रोहतक के रहने वाले हैं।

श्रीमती पुष्पावती जैन एडवोकेट सार्वजनिक कार्यों में भाग लेती रहती हैं। कुछ समय तक आप आनरेरीमजिस्ट्रेट भी रहीं। आप बरेली की स्त्री समाज की उपाध्यक्ष है।

डा० कुन्दन लाल बरेली कालेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हैं तथा जैन धर्म के उच्च कोटि के विद्वान और वक्ता हैं। आप बरेली जैन समाज के प्रमुख कार्य-कर्ता हैं, मूलतः महरौनी (झाँसी) के निवासी हैं, अब बरेली में ही अपनी कोठी बनवा ली है।

बा० रिषभ दास रिटायर्ड इंजिनियर बड़े सज्जन, धर्मात्मा तथा सामाजिक कार्यों में अग्रसर रहते हैं। श्री जिनेन्द्र कुमार एडवोकेट, श्री चक्रेश्वर दास आदि अच्छे कार्यकर्ता हैं।

इनके अतिरिक्त यहां तीन अन्य एडवोकेट—श्री विनोद कुमार, श्री प्रमोद कुमार और शम्भू दयाल, दो डाक्टर—डा० शिखर चन्द मेडिकल आफिसर उत्तरी रेलवे तथा डा० महेश चन्द्र तथा बहुत से इन्जीनियर और उच्च पदाधिकारी प्रत्येक राज्य विभाग में हैं। सेना में भी कई मेजर तथा कैप्टन आदि हैं। एयर फील्ड में भी एस० डी० ओ० और ओवर सियर आदि हैं।

जैन समाज बरेली

ला० हीरा लाल

श्री नरेशचंद

श्री विशम्भर दयाल एडवोकेट

श्री अहिच्छत्रा तीर्थ के सम्पूर्ण दर्शन

श्री अहिच्छत्रा तीर्थ के धर्मशाले

अहिच्छत्रा जी

बरेली जिले की आंवला तहसील के कस्बे रामनगर के बाह्य भाग में सुप्रसिद्ध जैन तीर्थ अहिच्छत्रा है। इस स्थान पर २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ पर पुराण प्रसिद्ध महा उपसर्ग हुआ था और उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यहीं भगवान पार्श्वनाथ के प्रथम समवसरण की रचना हुई थी। किसी समय यहां एक विशाल एवं रमीणक नगर था, किन्तु अब जङ्गल में यत्र तत्र फैले प्राचीन टीले और ध्वस्त खंडहर ही शेष हैं। इनके अतिरिक्त एक भव्य एवं विशाल जैन मन्दिर है जिसमें पांच वेदियां हैं। एक वेदी तिखाल वाले बाबा की कहलाती है जिसमें भ० पार्श्वनाथ की प्रतिमा तथा चरणचिन्ह स्थापित हैं। अन्य वेदियों में भी मनोज्ञ जैन प्रतिमायें विराजमान हैं। उपसर्ग स्थान पर एक दर्शनीय छत्री (निर्षधिका) का भी निर्माण हो चुका है। एक शिखर बन्द मन्दिर रामनगर कस्बे में भी है। क्षेत्र पर एक विशाल धर्मशाला भी है जिसमें यात्रियों के लिये आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हैं। क्षेत्र पर बिजली भी आगई है और रेवती बहोड़ा खेड़ा, से जहां निकटतम रेल स्टेशन है, क्षेत्र तक पक्की सड़क भी बन गई है। आंवला रेल स्टेशन से क्षेत्र लगभग ६ मील है। क्षेत्र के निकट ही एक राजकीय विकास खण्ड की भी स्थापना हो चुकी है। प्रतिवर्ष चैत्र बदी ८ से १२ तक इस क्षेत्र पर भारी जैन मेला होता है।

इस तीर्थ क्षेत्र की व्यवस्था एक प्रबन्ध कारिणी कमेटी करती है जिसके सभापति श्री सुमत प्रकाश जैन शाहादरा (दिल्ली) हैं, उप सभापति श्री जय किशन एडवोकेट मुरादाबाद, तथा श्री विजेन्द्र कुमार दिल्ली है, मुख्य मन्त्री श्री सुमेर चन्द्र एडवोकेट रामपुर हैं, सहायक मन्त्री श्री हरीश चन्द दिल्ली, कोषाध्यक्ष श्री टेकचन्द रामपुर, मेला मंत्री श्री गोपीचन्द रामपुर, प्रचार मंत्री श्री नन्दकिशोर मुरादाबाद हैं तथा २३ अन्य सज्जन कार्य समिति के सदस्य हैं। क्षेत्र का आय-व्यय का बजट लगभग बीस हज़ार रुपये वार्षिक का होता है।

वस्तुतः अहिक्षत्रा तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने तथा रामपुर आदि निकटवर्ती स्थानों के जैन बन्धुओं ने गत कई वर्षों में इस क्षेत्र के संरक्षण, उन्नति, विकास और प्रचार में प्रभूत योग दिया है। फल स्वरूप सहस्त्रों यात्री प्रति वर्ष इस तीर्थ की यात्रा करने आते हैं।

जैन जनगणना जिला शाहजहाँपुर (सन् १९६४)

क्रम संख्या	स्थान	परिवार संख्या	पुरुष	स्त्री	बालक	बालिका	कुल योग	पुरुष शि०	पुरुष अशि०	स्त्री शि०	स्त्री अशि०
१	शाहजहाँपुर	७	१२	४	७	१०	३३	१२	—	३	१
	योग	७	१२	४	७	१०	३३	१२	—	३	१
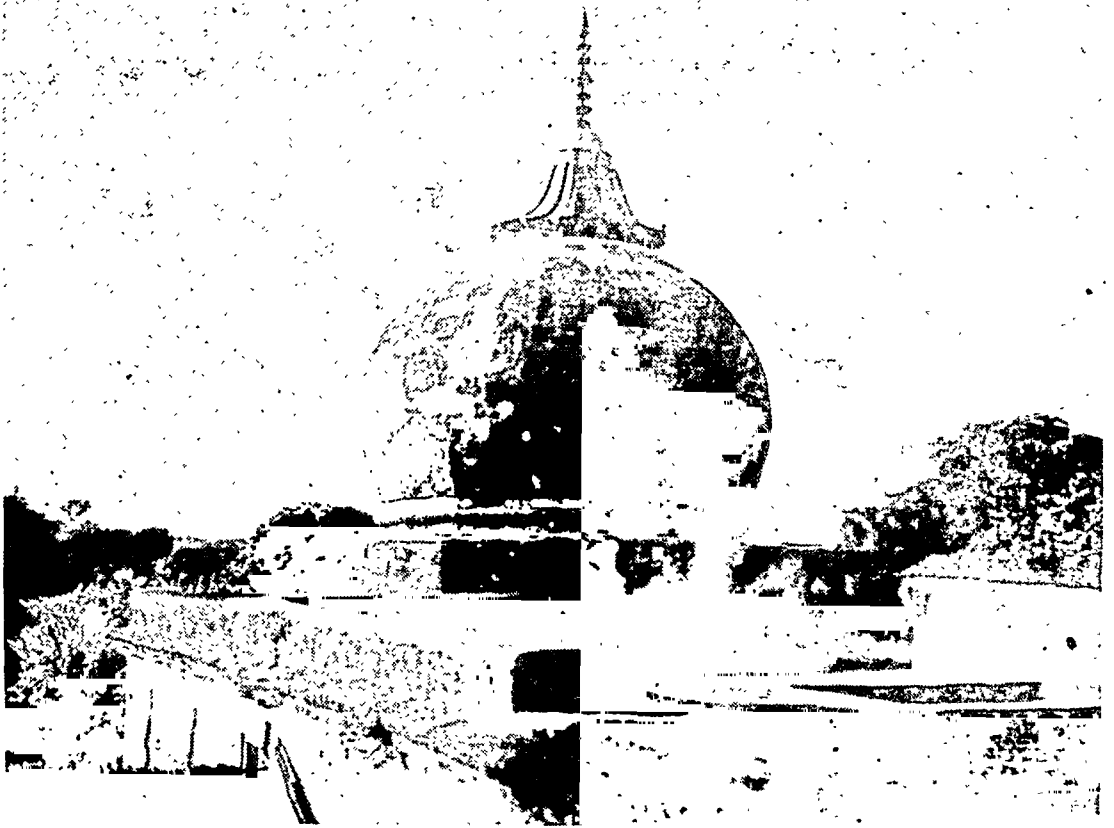
जैन मंदिर, शाहजहां पुर

ला० प्यारेलाल जी
शाहजहां पुर
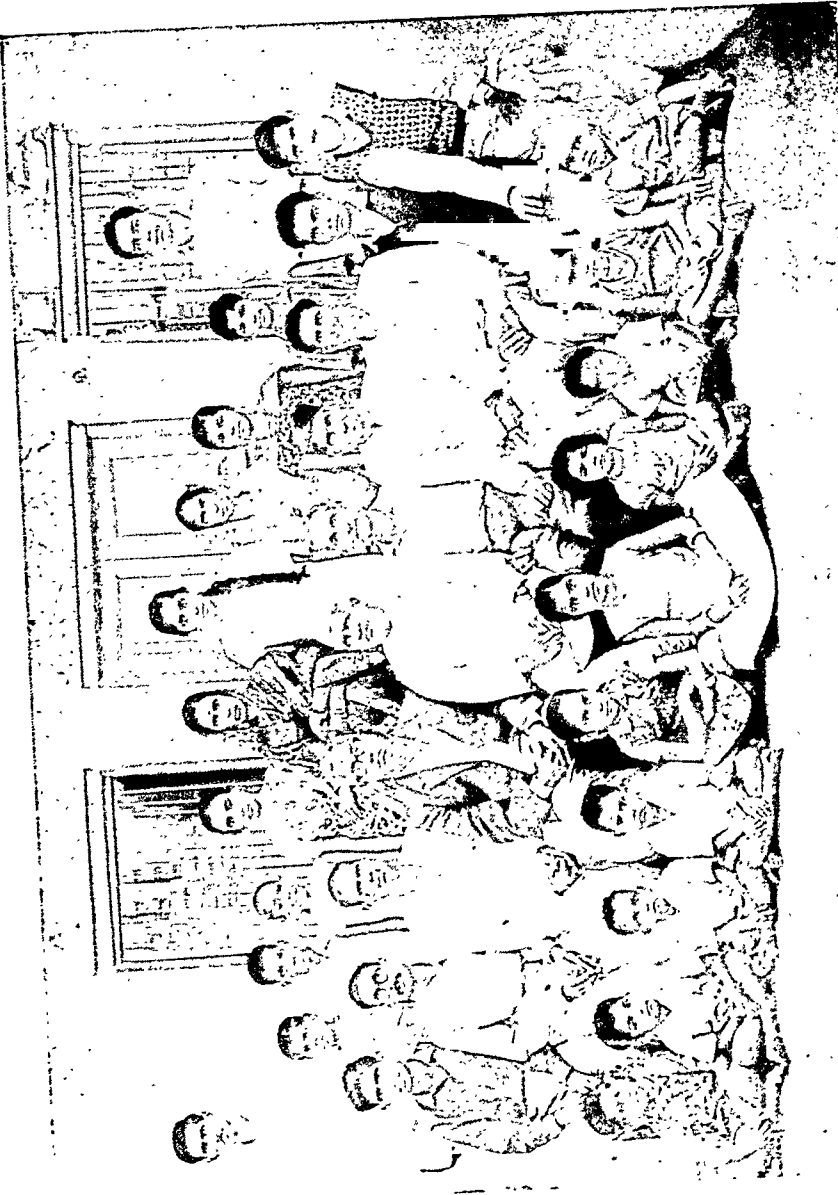
जन समाज शहजहाँ पुर

शाहजहांपुर मुरादाबाद-लखनऊ लाइन पर रेलवे स्टेशन है। यहां राज्य की तरफ से बहुत बड़ी अॉर्डिनेंस फैक्टरी है जिसमें सेना और पुलिस की हजारों वर्दियां मशीन द्वारा प्रति दिन तैयार होती हैं। फैक्ट्री में कई हजार आदमी काम करते हैं । शाहजहाँपुर में मुस्लमानों की संख्या अधिक है। शाहजहाँपुर में १२ जैन पुरुष, ४ स्त्रियाँ, १७ बालक-बालिका कुल ३३ संख्या जैन है। शिक्षित पुरुष १२, शिक्षित स्त्रियाँ तीन है। सब ७ जैन परिवार हैं।

शाहजहांपुर जिले का केन्द्र होने के कारण समय समय पर यहाँ जैन मुनसिफ, मजिस्ट्रेट, इन्जीनियर आदि आते रहते हैं।

शाहजहांपुर के जैन मन्दिर का पता कैसे चला

शाहजहांपुर में एक प्राचीन जैन मंदिर नंदी के पार मुहल्ला सरायकाइयां में स्थित है। कहा जाता है कि यह मन्दिर लखनऊ वालों का बनवाया हुआ था जो बहुत वर्षों से बन्द पड़ा रहा और मंदिर का किसी को पता नहीं था। मन्दिर के पास लाला प्यारे लाल खन्डेलवाल रहते थे जो बहुत साधारण स्थिति के थे। एक दिन रात्रि को उन्हें स्वप्न हुआ कि तुम्हारे पास में भगवान का एक जैन मन्दिर बन्द पड़ा है, तुम उसकी रक्षा करो, तुम्हारे सभी संकट दूर हो जायेंगे। सुबह उठते ही प्यारे लाल जी ने मन्दिर को खोला और भगवान के दर्शन किये और मन्दिर की सफाई की। वह जैन धर्म से अभी तक अनभिज्ञ हैं किन्तु उनको इतनी अटल श्रद्धा हो गई कि जब भी उनके ऊपर कोई संकट आता तो भगवान की पूजन ध्यान करते ही उनका संकट दूर हो जाता है। आज वह और उनका परिवार खूब उन्नति कर रहा है। वह नित्य प्रति भगवान का पूजन-प्रक्षाल कर खाना खाते हैं और स्वयं मंदिर जी की सफाई भक्ति भाव से करते है।

मन्दिर का जीर्णोद्धार

श्री उग्रसेन जी ने १९५१ में शाहजहाँपुर में सीमेन्ट एजेन्सी का कार्य करना शुरु किया और उन्होंने मंदिर के जीर्णोद्धार कराने का निश्चय किया। उस समय बाबू रिषभदास जी इन्जीनियर शाहजहाँपुर में थे सबके सहयोग से जीर्णोद्धार का कार्य हुआ।

जीर्णोद्धार में निम्नलिखित सज्जनों ने सहायता प्रदान की : —

५०१) बा० रिषब दास इन्जीनियर

४८०) का सिमेंट श्री उग्रसैन जी काशीपुर

५०१) बूंदी की जैन फर्म से

३००) फुटकर सहायता

दिल्ली निवासी ला० कुन्दन लाल मैदा वालों ने मंदिर पर सोने का कलश चढाया और पहली बार शाहजहांपुर में जल कलश का जुलूस निकाला गया।

जैन परिवार

१. ला० प्यारे लाल भगवान दास खण्डेलवाल
२. श्री नरेश चन्द गर्ग
३. श्री रोशन लाल
४. श्री सत्येन्द्र कुमार गर्ग
५. श्री माम चन्द सिंघल आर. डी. जैन कनट्रैक्टर
६. श्री विपिन कुमार सिंघल
७. श्री नरेन्द्र कुमार गर्ग
८. श्री एन० के० जैन गर्ग

शाहजहाँपुर जिले का केन्द्र होने के कारण यहाँ समय समय पर जैन आफिसर्स आते जाते रहते है। इस समय भी शहजहाँपुर जिले के खुदागंज थाने के स्टेशन आफिसर श्री महेशचन्द्र जैन (मेरठ निवासी) तथा अन्य कई राजकीय कर्मचारी जैनी यहाँ रह रहे हैं। मंदिर की व्यवस्था हो जाने से सब भाई बहन पर्व आदि पर एकत्र होते है और धर्म लाभ उठाते है।

शाहजहाँपुर में बच्चों आदि के लिये रात्रि पाठशाला की बड़ी आवश्यकता है।

जैन जनगणना जिला पीलीभीत (सन् १९६५)

क्रम संख्या	स्थान	परिवार संख्या	पुरुष	स्त्री	बालक	बालिका	कुल योग	पुरुष शि०	पुरुष अशि०	स्त्री शि०	स्त्री अशि०
१	पीलीभीत	६	९	५	१९	—	३३	६	—	५	६
२	पूरनपुर	२	३	१	३	—	७	३	—	१	२
	योग	६	१२	६	२२	—	४०	९	—	६	८

जिला पीलीभीत

पीलीभीत जिले में जैन वहुत हो कम संख्या में हैं। जिले का केन्द्र होने से समय समय पर यहाँ जैन आफिसर्स आते रहते हैं। इस जिले में केवल पूरनपुर में एक जैन मन्दिर है।

इस जिले को जैन संख्या ४८ है जिनमें १७ पुरुष, ७ स्त्रियां और २४ वालक हैं तथा कुल परिवार संख्या १० है। पीलीभीत नगर की कुल जैन संख्या ३३ है जिनमें ८ पुरुष, ५ स्त्रियां और १९ वालक हैं तथा जैन परिवार छः हैं।

(१) पीलीभीत नगर

जैन परिवार

सर्वश्री

१. नन्द कुमार, २. भूषण लाल, ३. कामता प्रसाद, ४. जम्बू प्रसाद, ५. विमल चंद, ६. कमलेश्वर कुमार।

पीलीभीत में श्री सुन्दर लाल, श्री प्रेम चन्द्र और श्री धनेन्द्र कुमार जी योग्य कार्यकर्ता हैं। श्री विनोद कुमार जो जे० आई० पी० एस० कुछ साल तक एस०एस०पी० तथा आई० जी० रहे। आप १९६५ में बदायूं में एस० पी० थे। आप श्री विशाल चन्द जैन स्पेशल रेलवे मजिस्ट्रेट सहारनपुर वालों के सुपुत्र हैं। आप वहुत ही योग्य और सज्जन हैं। जनता एवं कर्मचारी गण सभी आपके प्रशासन की योग्यता एवं व्यवहार कुशलता की प्रशंसा करते हैं। आज कल आप लखनऊ में एस० पी० सी० आई० जी० हैं।

(२) पूरनपुर जिला (पीलीभीत)

पूरनपुर की कुल जैन संख्या ७ है जिनमें ३ पुरुष, एक स्त्री और ३ वालक हैं। जिनमें सभी शिक्षित हैं। यहाँ पर दो जैन परिवार हैं।

१. श्री राम भरोसे लाल, २. श्री रामदेश

पूरनपुर एक छोटा कस्वा है, यहाँ एक जैन मन्दिर भी है।

जैन जनगणना जिला नैनीताल (सन् १९६५)

क्रम संख्या	स्थान	परिवार संख्या	पुरुष	स्त्री	बालक	बालिका	कुल योग	पुरुष शि०	पुरुष अशि०	स्त्री शि०	स्त्री अशि०
१	नैनीताल नगर	२	२	२	३	३	१०	२	—	२	—
२	काशीपुर	२५	२४	३२	१५	१०	८१	३२	—	२०	५
३	हलद्वानी	१२	२०	१७	१२	१६	६५	१३	७	१०	७
४	रामनगर	४	९	९	८	६	३२	९	—	६	३
५	जसपुर	१२	१६	१७	१४	१९	६६	१६	—	१२	४
६	वाजपुर	६	११	९	१२	९	४१	१०	१	५	४
७	गदरपुर	१	५	२	२	२	११	५	—	२	—
८	घनौरी	२	२	३	३	२	१०	४	४	५	—
९	टनकपुर	२	५	१	—	२	८	४	—	१	—
१०	खरमासा	१	२	१	४	३	१०	३	—	१	—
११	रुद्रपुर	१	३	१	१	१	६	२	१	—	१
	योग	६८	९९	९४	७४	४६	३४०	१०४	१००	६४	२४

जिला नैनीताल

जिला नैनीताल कुमायूं कमिश्नरी का दक्षिण-पूर्वी जिला है। इसका उत्तरी भाग पहाड़ी क्षेत्र है जिसके दक्षिण में भावर प्रदेश (तहसील हलद्वानी) है। भावर के दक्षिण में नीची भूमि वाला तराई प्रदेश है जिसका पूर्वी भाग थड़ुवाट और पश्चिमी भाग भुक्साड़ कहलाता है। जिले के दक्षिण पश्चिमी कोने में काशीपुर तहसील है जिसका वहुभाग मैदानी है।

नैनीताल जिले में पांच तहसीले हैं (१) नैनीताल (२) हलद्वानी (३) किच्छा (४) खटिमा (५) काशीपुर। जिले के मुख्य नगर: हलद्वानी, काशीपुर, राम नगर, वाजपुर, जसपुर, काठगोदाम, लाल कुआँ, गदरपुर, किच्छा आदि हैं।

(१) नैनीताल नगर

नैनीताल जिले का केन्द्र स्थल है। इसकी ऊंचाई समुद्र से लगभग ६५०० फीट है। हलद्वानी से वसें हर समय नैनीताल जाती हैं। वृटिश राज्य काल में ग्रीष्म ऋतु में उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय मुख्य अधिकारी और कार्यालय तथा गवर्नर आदि यहां रहते थे। जाड़ों में काफी वर्फ पड़ता है। नैनीताल झील की अधिकतम लम्वाई १५६७ गज, अधिकतम चौड़ाई ५०६ गज, अधिकतम गहराई ९३ फुट, न्युनतम २० फुट, चारों तरफ का घेराव ३९६० गज (२ मील से कुछ अधिक) है। ताल के किनारे नैनी देवी का मन्दिर है। नैनीदेवी के नाम तथा ताल के किनारे पर वसने वाला यह नगर नैनीताल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कहा जाता है कि मूलतः इस ताल का नाम त्रिऋषि सरोवर था और इसे सुप्रसिद्ध मान सरोवर का लघुरूप माना जाता है। सन् १८४० ई० के लगभग वैरन नामक एक अंग्रेज की दृष्टि इस ताल पर पड़ी और तदनन्तर कुछ ही वर्षों में यह नगर वसना प्रारंभ हो गया। धीरे धीरे यह संयुक्त प्रदेश (अव उत्तर प्रदेश) की ग्रीष्म कालीन राजधानी वन गया।

यात्री लोग किश्तियों मे वैठ कर झील की सैर करते हैं। झील के किनारे २ मील लम्वी माल रोड हैं जो घूमने के लिये सवसे अच्छा स्थान है। नैनीताल में कई वहुत अच्छे कालेज और स्कूल हैं जिनमें क्रिश्चियन कालेज और विरला जी का वच्चों के स्कूल देखने योग्य हैं। इन दोनों विद्यालयों में अँग्रेजी ढंग से शिक्षा दी जाती है। नैनीताल में एक लाख से ज्यादा यात्री प्रति वर्ष गर्मियों में सैर करने भारत के कोने २ से आते हैं। यहाँ पर गवर्नमेन्ट हाउस देखने योग्य है तथा यहाँ से हिमालय की चोटी जहाँ पर हर समय वर्फ जमा रहता है, दिखाई देती है, जो सिलवर लाइन कहलाती है।

जैन परिवार

१. श्री आर०सी०जैन ए. डी एम. २. श्री कैलाश चंद जी, फारेस्ट कंजर्वेटर

नैनीताल में कोई स्थाई जैन परिवार नहीं हैं। समय २ पर जैन आफिसर जिले का केन्द्र होने के कारण आते रहते हैं।

करीब ६ वर्ष हुये श्री उग्रसेन जी काशीपुर वालों मे नैनी देवी के मन्दिर में २४ तीर्थंकरों की श्याम वर्ण की एक प्रतिमा देखी थी, उस समय वावू जय प्रसाद जी जैन इन्जीनियर वड़ौत निवासी वहाँ पर रहते थे तथा साहू शान्ति प्रसाद जी व वावू लक्ष्मी चन्द्र जी आदि परिवार सहित रामपुर हाउस नैनीताल में ठहरे हुये थे।

श्री उग्रसेन जी ने, वावू जय प्रसाद जी इन्जीनियर को अपने साथ ले जाकर चौवीस तीर्थंकरों की प्रतिमा (चौवीसी) दिखलाई। उन्होंने कहा, वड़ा आश्चर्य है मुझे आज तक इस प्रतिमा का पता नहीं हुआ। साहु शान्ति प्रसाद जी व वावू लक्ष्मी चन्द्र जीने भी उस प्रतिमा को मन्दिर में जाकर देखा था। तीन साल हुये उग्रसेन जी फिर नैनीताल गये किन्तु देवी के मन्दिर में से उस जैन प्रतिमा और दूसरी कई अजैन प्रतिमाओं की चोरी उसके कुछ पहले ही हो गयी थी।

नैनीताल में जैन भवन की आवश्यकता

नैनीताल में हर साल सैकड़ों जैन स्त्री पुरुष सैर करने के लिये आते हैं। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहाँ पर निरामिष भोजन कम मिलता है और ऐसे सज्जनों को जो अकेले आते हैं खाने आदि की वड़ी असुविधा होती है। अतः नैनीताल में जैन भवन वनवाने की वड़ी आवश्यकता है जिसके लिये श्री उग्रसेन जी जैन काशीपुर, श्री शिखर चन्द्र रानी-मिल मेरठ और सेठ राम गोपाल जी हलद्वानी. जमीन प्राप्ति की कोशिश में कई वार नैनीताल गये। सेठ रामगोपाल जी जमीन के लिये वरावर कोशिश कर रहे हैं। भवन के लिये जमीन मिल जाने पर जैन भवन वन जाने की आशा है।

(२) काशीपुर

सातवीं-आठवीं शताव्दी में काशीपुर में परमार वंश का राज्य था। दिल्ली में मुसलमानी राज्य की स्थापना के समय इस प्रदेश पर कटेहरिया राजपूतों का अधिकार रहा जो सैकड़ों वर्षों तक मुसलमानों का डट कर वड़ी वीरता के साथ मुकावला करते रहे।

नगर की स्थापना व नाम-करण कुमायूं के चांद राजा वाज वहादुर चंद के तराई के सूवेदार काशीनाथ अधिकारी ने सन् १६३९ में किया था। नगर से एक मील पूर्व की ओर उज्जैनी नाम का प्राचीन गाँव है जहाँ उजैनी देवी का मन्दिर, द्रोण सागर नाम का पांडव कालीन तालाव,

अनेक मन्दिरों एवं एक विशाल किले के भग्नावशेष हैं। सातवीं सदी में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने जिस गोविषाण नामक राज्य और उसकी राजधानी का वर्णन किया है, विद्वानों के अनुसार वह राजधानी इसी स्थान पर स्थित थी। चीनी यात्री के अनुसार उस समय यहाँ ३० बौद्धेतर देव मन्दिर थे, जिनमें से कई जैन मन्दिर भी अवश्य रहे होंगे।

यह प्राचीन स्थान हिन्दुओं का भी तीर्थ स्थान है, जो सतयुग में कश्यप आश्रम, त्रेता में श्रवण तीर्थ, द्वापर में कौरव-पाडवों के युद्ध-विद्या गुरू द्रोणाचार्य के नाम पर द्रोण सागर और कलान्तर में उज्जनका या उजैनी कहलाया। इसका सर्व प्रथम नाम कश्यप आश्रम है और प्रथम तीर्थंकर भ० ऋषभदेव का अपर नाम भी कश्यप था। कैलाश पर्वत जाते हुये वह कुछ समय यहाँ ठहरे होंगे। भगवान पार्श्वनाथ भी कश्यप गोत्री थे, उनका विहार इस ओर हुआ ही था। काशीपुर के आस पास दूर दूर तक फैले हुए खंडरात की खोज की जाय तो अनेक जैन अवशेष मिलेगें, ऐसी संभावना है।

काशीपुर हिमालय की यात्रा का द्वार कहलाता है। यहाँ से सुरमणीक सीतावनी, जहाँ पर महाराज राम, सीता और लक्ष्मण आये थे, उत्तर में ३०-३१ मील पर स्थित है। पवनसुत हनुमान ने दूनागिरि से संजीवनी वूटी ले जाकर लंका में मूर्छित लक्ष्मण की प्राण रक्षा की थी। इसी प्रदेश में नारायण कृष्ण ने वाणासुर का संहार किया वताया जाता है। पितृ भक्त श्रवण कुमार अपने वृद्ध और अंधे माता-पिता को गंगोत्तरी एवं जमनोत्तरी आदि उत्तराखंड की यात्रा और देव दर्शन करवा कर लौटते हुए यहीं पर ठहरे थे। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने श्री बद्री नारायण की यात्रा से लौटते हुए सं० १९१२ विक्रमी में यहीं द्रोण सागर पर शरद् ऋतु में चतुर्मास निवास किया था।

काशीपुर जिला नैनीताल का सवडिवीजन और मुख्य स्थान है। यहाँ पर सवडिवीजनल मजिस्ट्रेट और मुंसिफ आदि की अदालतें हैं। कृषि विभाग और कोलीनिजेशन के राजकीय कार्यालय हैं। श्री महेन्द्र पाल जैन एवं श्री शान्ति प्रसाद जैन काफी समय तक यहीं पर सव-डिवीजनल मजिस्ट्रेट रहे और दोनों महानुभावों ने जैन मंदिर और धार्मिक कार्यों में पूरा सहयोग दिया। यहाँ पर जिला नैनीताल का छोटा कारागार भी है एवं उत्तर पूर्वीय रेलवे का जंकशन स्टेशन है। काशीपुर के आस-पास में विस्थापितों के लिए राज्य ने भूमि प्रदान की है और उन्होंने यहाँ पर वड़े-वड़े फार्म वना लिए हैं जिनमें गन्ना, धान, गेहूँ, चावल आदि की काफी उपज होती है। यहाँ पर एक शकर मिल भी है।

काशीपुर ने गत १५-२० वर्षों में काफी उन्नति की है और जनसंख्या १२-१३ हजार से वढ़कर ३० हजार तक पहुंच गयी है। यहाँ पर अनाज की मंडी है तथा काशीपुर नरेश के नाम पर छावनी में उदयराज हिन्दू इन्टर कालेज है।
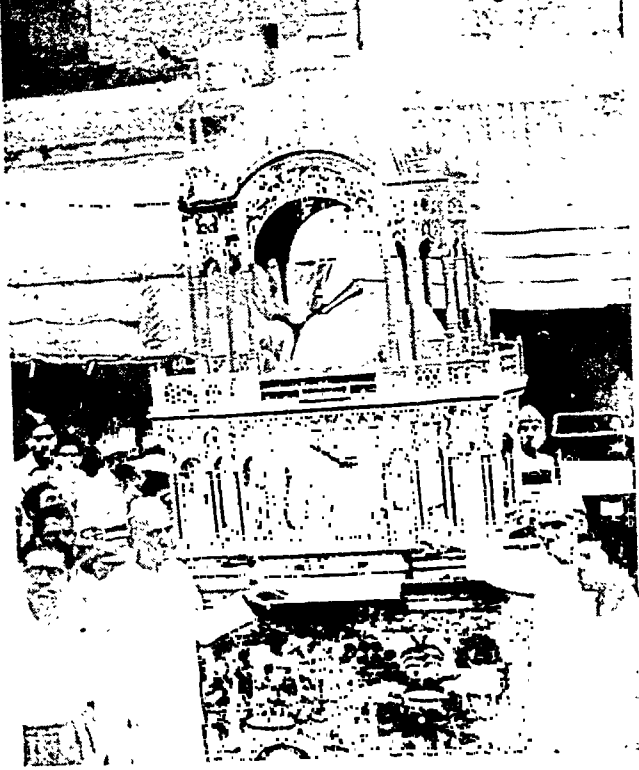
जैन रथयात्रा, काशीपुर १९६०

जैन समाज काशीपुर

श्री जे० पी० जैन, चीफ इंजीनियर
उत्तर प्रदेश

बा० उलफत राय जैन

श्री ऋषभ दास (इंजीनियर)
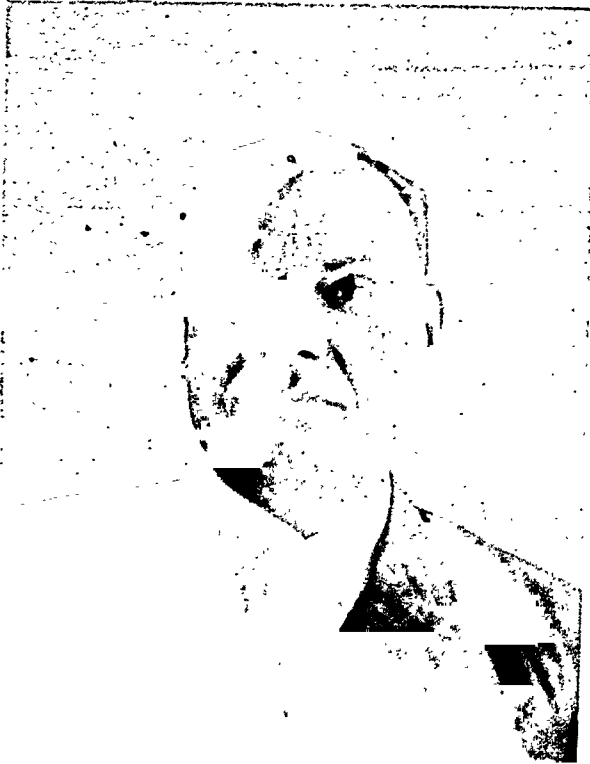
शिखर चन्द जैन (मेरठ)

काशीपुर में अभी तक एक श्रावक मुहल्ला है और उस मुहल्ले में रहने वालों की रिश्ते-दारियां अभी तक नेहटौर आदि के जैन परिवारों में हैं, किन्तु अब वहां कोई जैन परिवार नहीं हैं। काशीपुर में पहले लाला नन्द किशोर जी जैन मुरादाबाद निवासी का केवल एक जैन परिवार था। वे और उनके सुपुत्र श्री रामरतन जैन मन्दिर जी की देखभाल करते रहे। काशीपुर जिला नैनीताल का सब-डिवीजन होने की वजह से समय-समय पर यहाँ जैन अधिकारी और राजकीय कर्मचारी आते रहते हैं। सन् १९४६ में बाबू रतन लाल पुलिस विभाग में सब-इंसपेक्टर होकर आये। बाबूजी धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे तथा बाबू सूरजमल जैन दादरी (जिला मेरठ) निवासी ओवरसियर (पी. डब्लू. डी.) काशीपुर आये जो धार्मिक कार्यों में रुचि लेते रहे। सन् १९४९ में श्री उल्फत राय जैन ओवरसियर आये। श्री आशाराम जैन नहर विभाग में काफी समय तक स्टोरकीपर रहे। श्री केशरी मल जैन पानीपत वाले पूजा-पाठ आदि में काफी रुचि लेते थे। अब वे दिल्ली चले गये हैं। यहां पर तराई कोलोनाइजेशन का राजकीय कार्यालय खुल जाने से समय-समय पर जैन इंजीनियर व ओवरसियर भी आते रहते हैं।

सन् १९५० में लाला राजेन्द्र कुमार बिजनौर वालों ने काशीपुर के पास धनौरी ग्राम में एक विशाल जैन फार्म स्थापित किया तथा लाला शिखर चन्द्र रानी मिल मेरठ वालों ने कैलेन्डर फैक्टरी लगायी। सन् १९५० में श्री उग्रसेन ने यहाँ सीमेन्ट एजेन्सी और पेट्रोल पम्प लगाया। लाला अरह दास हिसार वालों ने जवाहर सिनेमा लगाया। इनके अतिरिक्त श्री रामचन्द्र, श्री बाबूलाल पानीपत वाले और श्री डी०एच० गुगरी व श्री बालेश चन्द्र शेरकोट आदि-आदि सज्जन काशीपुर आये। उपरोक्त महानुभावों के प्रयत्न और धार्मिक भावनाओं से काशीपुर के जैन मन्दिर के जीर्णोद्धार की भावना पैदा हुई।

अहिंसा प्रचार समिति की स्थापना

श्री उग्रसेन जी ने जैन अजैन भाइयों के सहयोग से काशीपुर में अहिंसा प्रचार समिति की स्थापना की और कई साल तक काशीपुर चैती के मेले पर समिति ने देवी के मंदिर में पशु बलि रोकने का प्रयत्न किया। आर्य समाज तथा दूसरे कार्य कर्ताओं के प्रयत्न से पशु बलि रोकने का बराबर प्रयत्न जारी है तथा बलि पहले से कम हो गयी है।

पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर काशीपुर

काशीपुर नगर से बाहर छावनी में एक प्राचीन पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर है जो बहुत मजबूत बना हुआ है। मगर अभी तक यह नहीं मालुम हो सका कि मन्दिर जी की कब स्थापना हुयी और किसने बनवाया। मन्दिर जी में केवल भगवान पार्श्वनाथ की एक प्राचीन और मनोज्ञ प्रतिमा है। मन्दिर जी का खर्चा और हिसाब आदि बहुत दिनों तक लाला श्याम लाल हजारी लालजी राम नगर वाले करते थे। मन्दिर जी का जीर्णोद्धार हो जाने पर मंदिर का चंवर, छत्तर आदि सामान जो उनके पास था उन्होंने काशीपुर भेज दिया मगर वे अभी तक बराबर मन्दिर जी

की सहायता कर रहे हैं। मन्दिर जी में अब प्रति दिन बराबर पूजन प्रक्षाल होती है और स्त्रियाँ व पुरुष दर्शनाथ आते हैं। मन्दिर जी में एक आदमी भी रक्खा हुआ है।

मन्दिर जी के जीर्णोद्धार में निम्न सज्जनों ने अपनी ओर से निम्न कार्य कराये :

लाला श्याम लाल हजारी लाल रामनगर वालों ने नई वेदी बनवाई।

लाला राजेन्द्र कुमार जी जैन, विजनौर वालों ने मंदिर जी की रक्षा के लिये लोहे का जाल डलवाया।

लाला राम रतन जी काशीपुर ने एक कमरे का फर्श बनवाया।

श्री शिखर चन्द्र जी जैन रानी मिल मेरठ वालों ने एक कमरे का फर्श आदि।

श्री उग्रसैन राजेन्द्र कुमार जी (सरधना मेरठ) ने शिखर का फर्श बनवाया।

लाला अरहदास जी सिनेमा वाले ने एक कमरे की दीवारों पर मोजाइक कराया।

श्री वालेश चन्द्र जी शेर कोट वाले ने शिखर की दीवार पर मोजाइक कराया।

लाला मोती लाल जी कानपुर वालों ने शिखर का कलश बनवाया।

वेदी प्रतिष्ठा

मन्दिर जी का जीर्णोद्धार हो जाने के पश्चात १९६२ ई० में राजकीय गर्ल्स स्कूल के नये विशाल भवन काशीपुर में प्रथम वार जैन वेदी प्रतिष्ठा का उत्सव शानदार और विशाल मंडप में किया गया। पंडाल लाला श्रीपाल जी गया वालों ने एक रात्रि में तैयार करवाया। काशीपुर के मुख्य मुख्य वाजारों से रथ यात्रा निकाली गयी। रथ की प्रथम बोली श्री श्याम लाल हजारी लाल राम नगर वालों ने ली। प्रतिष्ठा के अवसर पर समाज के चुने हुये विद्वान पं० कैलाश चन्द्र जी शास्त्री, बनारस, बाबू रतन लाल जी, विजनौर, डा० एम० एस० प्रचंडिया, के जैन धर्म पर मार्मिक और प्रभाव शाली व्याख्यानों तथा समाज के प्रसिद्ध गायनाचार्य श्री तारा चन्द्र प्रेमी व श्री सुभाष चन्द्र पंकज के मधुर गीतों ने सभी के हृदय को मोह लिया। उपरोक्त महानुभावों के पधारने और जैन साहित्य और पुस्तकों के घर घर पहुंचाने से जैन धर्म का इस क्षेत्र में इतना प्रचार हुआ है कि काशीपुर की जनता का कहना है कि काशीपुर में आज तक ऐसा सुन्दर, व्यवस्थित और लाभदायक उत्सव और प्रचार नहीं हुआ। प्रतिष्ठा के अवसर पर मुरादावाद, जसपुर, राम नगर, मसवासी, धनौरी, खरमासा, विजनौर, हलद्वानी, धामपुर, अफजल गढ़, काला गढ़, गया, मुलहेरा, झज्जर, मेरठ, दिल्ली, सरधना और वरेली आदि स्थानों से भाई काफी संख्या में पधारे। उत्सव का प्रारंभ और झंडा अभिवादन श्री जे० पी० जैन चीफ इन्जीनियर उत्तर प्रदेश के कर कमलों द्वारा किया गया। झंडा अभिवादन करते हुये इंजीनियर साहब ने जैन धर्म के मूल्यवान सिद्धान्तों और समाज संगठन पर वल दिया। इलाके के सभी जैन आफिसर, इन्जीनियर और ओवरसियर उपस्थित थे। मुरादावाद, दिल्ली, मेरठ की जैन ब्रादरी ने उत्सव का सामान प्रतिष्ठा में तथा झज्झर (रोहतक),

मुलहेडा (मेरठ) की बिरादरी ने सुवर्ण रथ काशीपुर भेज कर उत्सव को चार चांद लगाये। और काशीपुर समाज का उत्साह बढ़ाया। एस० डी० एम० श्री माथुर साहब, स्थानीय पुलिस व काशीपुर की जनता का पूरा सहयोग होने से प्रतिष्ठा का कार्य सानन्द संपन्न हुआ और किसी प्रकार की दुर्घटना अथवा नुकसान आदि नहीं हुआ। उत्सव की समाप्ति पर लाला शिखर चन्द्र जी रानी मिल मेरठ वालों की तरफ से सभी भाइयों को प्रीति भोज दिया गया। इसी अवसर पर रुहेलखंड-कुमायुं जैन परिषद की स्थापना हुई (विवरण के लिये अन्त में देखें)

काशीपुर की कुल जन संख्या ३० हजार है जिनमें जैनों की संख्या ८१ है तथा २५ जैन परिवार उनमें २४ पुरुष, ३२ स्त्रियां और २५ बालक हैं। ३२ शि० पुरुष और २० शि० स्त्रियां है।

जैन परिवार

सर्वश्री

१. राम रतन
२. उल्फत राय
३. उग्रसैन जैन
४. सुरेश कुमार
५. विक्रम सैन
६. आशा राम
७. रघुवीर सिंह
८. सुशील कुमार
९. नगीना चन्द
१०. धर्म दास
११. मुकुन्द लाल
१२. बाबू लाल
१३. राम चन्द्र

सर्वश्री :

१४. अभय कुमार
१५. श्रवण कुमार
१६. प्रेम चन्द्र
१७. हरिश्चन्द
१८. भरतेश्वर दास
१९. बलजीत सिंह
२०. जगदीश प्रसाद
२१. डी० एच० गुगरी (महाराष्ट्र)
२२. बाबू लाल
२३. पलटू मल
२४. पदम सैन
२५. कैलाश चन्द्र

प्रमुख व्यक्ति

लाला शिखर चन्द जी जैन (मेरठ)

ला० शिखर चन्द का जन्म पांचली ग्राम जिला मेरठ में मार्च सन १९१६ में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा सरधना जैन मिडिल स्कूल में हुयी जहां रोजाना अपने गांव से पढ़ने आते थे। सन १९३० में सरधने के एक खद्दर के व्यापारी के यहाँ मुलाजमत शुरु की और सन १९३१ में खद्दर का व्यापार साझे में शुरु किया, तत्पश्चात सन १९४८ में अपना निजी खद्दर भन्डार खोला

और थोड़े ही दिनों में खद्दर के व्यापार में काफी उन्नति की। सन १९४९ में रानी मिल मेरठ में कैलेन्डर फैक्टरी लगायी। मेरठ जिले में सर्व प्रथम आपने कैलेन्डरिंग का काम शुरू किया। इसके बाद मेरठ में दस कैलेन्डर फैक्टरियां और लग गयी और मेरठ खद्दर की मशहूर मन्डी हो गया। सन १९४५ में पिलखवा जिला मेरठ में कैलेन्डर फैक्टरी लगायी। इसके बाद काशीपुर जिला नैनीताल में कैलेन्डर लगाया। काशीपुर में शुरू से ही छपायी और खद्दर का काम काफी होता था। कैलेन्डर का काम होने से खद्दर के व्यापार में काफी उन्नति हुयी। इसके बाद नेंहटौर, खैराबाद और ठाकुरद्वारा आदि स्थानों में भी कैलेन्डर फैक्टरियां लगायी।

सन १९४७ में प्रेम इन्जीनियरिंग वर्क्स के नाम से मशीनों को काम शुरू किया और १९६० से शुगर मशीनें बनाने का काम बड़े पैमाने पर करके शुगर मिल्म को मशीनों की सप्लायी कर रहे हैं। सन १९५६ में आपने रूस की यात्रा की और वहां से व्यापार का काफी ज्ञान हासिल किया।

रानी मिल मेरठ में आपका बनाया हुआ संगमरमर का सुन्दर शिखर बंद जैन मन्दिर है जिसकी जनवरी १९६९ में प्रतिष्ठा कराई। आपने अहिक्षेत्र में भी मन्दिर का शिखर व कमरे आदि बनवाये। आप में धर्म और परोपकार की भावना है। काशीपुर के मंदिर को बराबर सहायता देते हैं। हस्तिनापुर में पानी की बड़ी टंकी बनवाकर वहां पर पानी की समस्या को हल किया। आपको तीर्थ यात्रा का बड़ा शौक है। आपके पुत्र श्री प्रेम चन्द जी और राज कुमार जी भी आपकी तरह धर्म प्रेमी और कार्य कुशल है।

श्री उग्रसैन जी जैन

उग्रसेन जी जैन मन्त्री अ०भा० दि० जैन परिपद परीक्षा बोर्ड १९५० में काशीपुर आये और यहां पेट्रोल पम्प लगाया तथा सिमेन्ट का बिजनेस शुरू किया। काशीपुर रहते हुये आप बराबर परिपद परीक्षा बोर्ड और सामाजिक कार्यों में लगे रहते थे। काशीपुर में महावीर जयंती, दीपावली और चतुरदशी आदि के उत्सव कराकर जैन भाइयों में उत्साह पैदा किया और काशीपुर के प्राचीन जैन मंदिर के जीर्णोद्धार की भावना पैदा की। जीर्णोद्धार के लिये करीब १०००० रु० देहली आदि स्थानों से प्राप्त किये।

काशीपुर में बहुत समय से देवी पर पशुबली होती थी। काशीपुर के जैन भाइयों को साथ लेकर पशुबली बन्द करने के लिये काशीपुर और आस पास के गांवों में प्रचार कराया अब पहले से बलि कम होने लगी है तथा अजैन जनता भी पशु बलि को बुरा समझने लगी है। बलि रोकने के लिये काशीपुर की आर्य समाज तथा जैन भाई प्रति वर्ष बराबर प्रचार कर रहे है।

काशीपुर के आस पास की जनता जैन धर्म की बाबत बहुत कम जानती थी, आपने पोस्टर, पैमफलेट तथा ८-८) १०-१०) रु० मूल्य की पुस्तकें वितरण कराकर जैन धर्म का प्रचार किया।
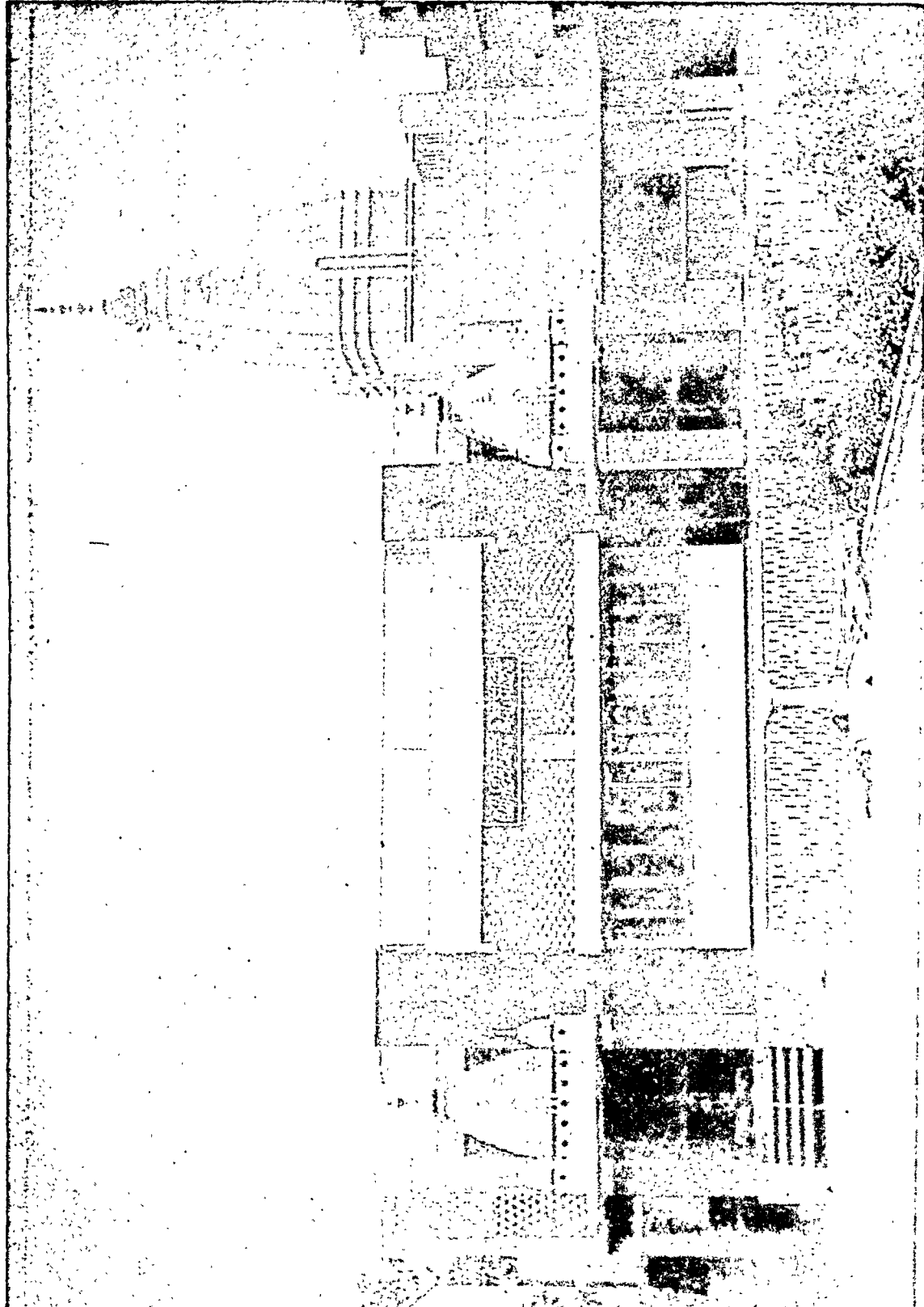
नवनिर्मित कलापूर्ण श्री दि० जैन मन्दिर रानी मिल, मेरठ।

श्री १००८ श्री भगवान महावीर की मनोज्ञ प्रतिमा
(श्री दि० जैन मन्दिर रानी मिल, मेरठ)

काशीपुर वेदी प्रति ठा के अवसर पर आपने इस क्षेत्र का संगठन और जैन धर्म प्रचार के लिये रूहेलखण्ड—कुमायूं जैन परिषद की स्थापना कराई और प्रमुख सज्जनों की प्रचार समिति वनाकर अमरोहा, वरेली, रामपुर, नहटौर, धामपुर, अहिच्छेत्र आदि में मीटिंगें कराकर इलाके का संगठन कराया तथा धामपुर की जैन विरादरी का मन मुटाव दूर किया। रूहेलखण्ड—कुमायूं की जैन गणना करायी तथा अव आपने रूहेलखण्ड-कुमायूं की प्रस्तुत डायरेक्टरी तैयार कराकर प्रकाशित कराई है।

आपने ही शाहजहाँपुर मे जैन मंदिर का, करीव ४०००रु० इकट्ठा करके, जीर्णोद्धार कराया तथा देहली से जैन प्रतिमा जो लाकर हलद्वानी में जैन मंदिर की स्थापना कराई। १९६० में आपके नौजवान पुत्र राजेन्द्र कुमार जी का अचानक देहांत हो जाने पर भी आप पहले की तरह सामाजिक कार्यों में लगे रहे। अव आप देहली, अफजलगढ़, अमरोहा, विजनौर, खरखरी आदि से करीव ४००० रुपया इक्ट्ठा करके जसपुर के मंदिर जीका जीर्णोद्धार करा रहे हैं। काशीपुर में आपको स्थानीय जैन समाज और खास कर श्री राम रतन जी, वा० उलफत राय, श्री पदमसैन जी आदि का तथा जैनेतर भाइयों का पूरा सहयोग रहा। यद्यपि पुत्र का देहान्त हो जाने से आप कानपुर चले गये हैं मगर रूहेलखण्ड-कुमायूं के भाइयों और स्थानीय जैन समाजों से आपका पहले की तरह सम्वन्व वना हुआ है।

वाबू उलफत राय जैन

करीव २०—२१ वर्ष से काशीपुर रहते हैं। आप चार पांच साल काशीपुर में ओवरसियर रहे, इसके वाद कई साल तक ठेकेदारी का काम किया। अव आपने दस साल से आदर्श प्रिंटिंग प्रेस के नाम से प्रेस लगाया हुआ है। आप वड़े उत्साही और निडर कार्य कर्त्ता हैं, समाज और पब्लिक के हर एक काम में आपका हाथ रहता है, सभी सस्थाओं की सहायता करते रहते हैं। आपका जैन मंदिर के जीर्णोद्धार और वेदी प्रतिष्ठा में काफी हाथ रहा। आप काशीपुर मे सर्व प्रिय हैं, वाहर से आने वाले भाइयों की आवभगत और सत्कार करते हैं। आप रुहेलखन्ड-कुमायू जैन परिषद के मंत्री हैं और काशीपुर जैन मन्दिर के प्रवन्धक हैं।

ला० राम रतन जैन

ला० नन्द किशोर जी क्लाथ मरचेन्ट के सुपुत्र हैं। काशीपुर के प्रमुख व्यक्तियों में है। प्रारम्भ से काशीपुर में आपका ही जैन घराना है जो मंदिर की रक्षा, पूजा, प्रक्षाल, व्यवस्था करता आया है। आप में धर्म की सच्ची भावना एवं लगन है, वेदी प्रतिष्ठा और मंदिर के जीर्णो-द्धार में आपका पूरा सहयोग रहा। आप जैन मंदिर जी के कोपाध्यक्ष है।

अन्य कार्यकर्ता :—

श्री विक्रम सेन जी

आप वहुत ही अनुभवी, दूरदर्शी नम्र और सरल परणामी है। अव आपने मेरठ में अपना कारखाना लगा लिया है।

लाला श्रीपाल जी

कुशल व्यापारी और अनुभवी व्यवस्थापक हैं। अब आपने गयाजी और कानपुर में भी कलेन्डर फैक्ट्री लगा ली हैं, काशीपुर वेदी प्रतिष्ठा के मंडप के वनाने और प्रवन्ध मे आपका विशेष हाथ था।

श्री प्रकाश चन्द जी

आप वड़े उत्साही और कार्य कुशल नवयुवक है।

लाला पदम सेन जी

आप वहुत ही उत्साही युवक है, काशीपुर केलेन्डर फैक्ट्री के मैनेजर हैं, फैक्ट्री की उन्नति में आपका विशेष हाथ है। सामाजिक और धार्मिक कामों में केलेन्डर की तरफ से और अपनी तरफ से दिल खोल कर दान देते हैं और सवसे आगे रहते हैं। आप में इतना उत्साह है कि ६ दिन तक केलेन्डर का कार्य वन्द करके केलेन्डर के सव कार्यकर्ता तन मन धन से वेदी प्रतिष्ठा के काम में जुटे हुये थे। आप जसपुर के मंदिर में वेदी वनवा रहे हैं।

लाला वाबूलाल जी

आप वहुत ही सज्जन और धर्मात्मा है जव तक काशीपुर में रहे मंदिर जी में प्रतिदिन पूजा प्रक्षाल किया करते थे। प्रतिष्ठा के समय वेदी की शुद्धि और पूजा का कार्य आप स्वयं करते और कराते थे। तथा प्रतिष्ठा के तमाम स्टाक के भन्डारी थे।

लाला पलटूमल जी

वेदी प्रतिष्ठा के समय वाहर से प्रतिमा जी, रथ और सामान आदि लाने का श्रेय आपको ही है।

(२) हलद्वानी (जिला नैनीताल)

हलद्वानी जिला नैनीताल का सव से वड़ा नगर है। यहां सवजी और अनाज की मंडियाँ हैं। शरद ऋतु में नैनीताल से जिले के कार्यालय हलद्वानी आ जाते हैं। हल्दु वृक्षों की वहुतायत के कारण संभावतया इसका नाम हलद्वानी पड़ा।

पहले यहां कोई जैन परिवार न था, ६०—७० वर्ष से सेठ राम गोपाल जी, सेठ रामस्वरूप जी आदि शिकारपुर जिला वुलन्दशहर से यहां व्यापार के लिये आये और तव से हलद्वानी रहते है और जैन धर्म पर पूरी श्रद्धा रखते हैं। सरकारी जैन कर्मचारी व आफिसर भी यहां आते रहते हैं। आज कल श्री राज बहादुर जी जैन एस० डी० एम० वड़े सज्जन और धर्मनिष्ठ हैं, प्रतिदिन मंदिर जी में दर्शन करने आते हैं और मंदिर के कार्य में भाग लेते है। अव यहां १२ जैन अग्रवाल परिवार हैं—२० पुरुष, १७ स्त्रियां, २८ वालक बालिकायें, कुल ६५ जैन संख्या है, जिनमें १३ पुरुष शिक्षित और १० स्त्रियाँ शिक्षित है।

जैन परिवार

१. सर्वश्री सेठ राम गोपाल, २. सेठ राम स्वरूप, ३. वासदेव, ४. दीवान चन्द, ५. आदीश्वर प्रसाद, ६. राकेश चन्द, ७. रामेश्वर दयाल, ८. कुलवन्त राय, ९. वनवारी लाल, १०. चन्द्र प्रकाश, ११. चैतन लाल ओवर सियर, १२. रामजी लाल

इनके अतिरिक्त सर्वश्री राज वहादुर एस० डी० एम०, कैलाश चन्द्र एस० डी० ओ०, नरेश चन्द्र ओवरसियर, और रतन लाल एकाउन्टैन्ट अस्थायी निवासी हैं।

जैन मन्दिर

हलद्वानी में रेल बाजार के चौराहे पर एक दि० जैन मंदिर करीव एक साल से वन रहा है। शिखर व घंटा-घर वन चुका है, कुछ काम अभी वाकी है। मंदिर जी के लिये सेठ राम स्वरूप जी ने वहुत समय से जमीन जिसमें कई दुकान व वगीचा आदि है दी हुयी थी तथा मंदिर जी के लिये १०,०००) रु० दिया हुआ था। सरकारी तथा और कुछ अडचनों से मंदिर का कार्य शुरू नहीं हो सका था। काशीपुर वेदी प्रतिष्ठा पर सेठ राम गोपाल जी से हलद्वानी में मंदिर वनवाने की वात शुरू हुयी। इस सम्वन्ध में उग्रसेन जी तथा वा० उलफत राय जी कई वार हलद्वानी गये। यहां वा० चेतन लाल जी जैन ओवरसियर आदि वड़े उत्साही कार्यकर्त्ता हैं। करीव २ साल हुये वा० चैतन लाल जी व ला० राम स्वरूप जी और उग्रसेन जी देहली गये और देहली के लाल मंदिर जी से हलद्वानी के लिये एक मनोग्य जैन प्रतिमा तथा आवश्यक वर्तन आदि हलद्वानी लाये और हलद्वानी में जैन मंदिर जी की स्थापना हो गयी। वा० चेतन लाल जी और उनके सुपुत्र प्रतिदिन भाव पूर्वक पूजा करते हैं। देहली से प्रतिमा जी आदि दिलाने में ला० जगादर मल जी तथा ला० हरीषचंद जी गोटे वालों ने पूरी सहायता की। ला० हरीषचंद जी ने मंदिर जी के शिखर के लिये सोने का कलश देने का वचन दिया है। आपको हलद्वानी के मंदिर जी से वड़ी लगन है। मंदिर जी में रोजाना पूजा प्रक्षाल होतीं है, सव स्त्री वच्चे शाम को आरती करते है। वहां के भाईयों का वच्चों की धार्मिक शिक्षा के लिये पाठशाला खोलने का विचार है। अध्यापक मिलते ही पाठशाला चालू हो जायेगी।

संस्थायें

हलद्वानी में वर्द्धमान जैन मंडल नाम से जैन परिषद शाखा है जिसके सभापति लाला वास देव जी जैन है।

प्रमुख व्यक्ति

सेठ राम गोपाल जी

हलद्वानी के प्रमुख व्यक्ति है आप इन्टर कालेज के सभापति तथा सार्वजनिक कार्यो में अग्रसर रहते हैं। हलद्वानी और नैनीताल के सरकारी अफसरों में आपका वड़ा प्रभाव है तथा आप

वड़े गंभीर दानी है और अतिथि सत्कार करते हैं। आपने अपनी कोठी में नित्य पूजन पाठ के लिये स्थान वनाया हुआ है। मंदिर जी के वनवाने में आपका सहयोग रहता है और प्रति दिन मंदिर जी में दर्शन करने जाते हैं। आपने काशीपुर वेदी प्रतिष्ठा के लिये ५०१ रु० स्वयं प्रदान किये थे। ला० शिखर चंद जी रानी मिल मेरठ वाले नैनीताल में एक जैन भवन वनवाना चाहते हैं। उसके लिये शिखर चंद जी, उग्रसेन जी तथा सेठ जी कई वार नैनीताल गये। जमीन न मिलने के कारण अभी तक योजना कार्यान्वित न हो सकी। अगर कोई सज्जन सेठ जी को उत्साहित करते रहे तथा आते जाते रहें तो नैनीताल में जैन भवन वन सकता है। सरदार वाजार में आपका आढत आदि का वड़ा व्यापार है तथा कारखाने हैं।

सेठ रामस्वरूप जी

आप वड़े नम्र और सज्जन हैं आपकी और आपकी स्त्री की जैन धर्म में पूरी श्रद्धा है। जैसा कि ऊपर लिखा गया है आपने हलद्वानी में जैन मन्दिर के लिए १०,००० रु० और अपने मकान के पास रेलवाजार में जमीन व दूकान आदि दी हुई थी। आपकी तीव्र इच्छा मंदिर वनवाने की थी। मगर जव तक समय नहीं आता काम नहीं होता। अव तक करीव २५००० रु० लालाजी मन्दिर जी में लगा चुके हैं। हलद्वानी में आलू की सवसे वड़ी मन्डी है और आप आलू के थोक व्योपारी हैं।

श्री रणवीर सिंह, उनके पुत्र एवं धर्मपत्नी भी उत्साही सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

वा० चेतनलाल जैन ओवरसियर

वा० चेतन लाल जैन जिला मेरठ के रहने वाले हैं और कई साल से हलद्वानी में ओवरसियर हैं। आपका तवादला भी हो गया था मगर आपने प्रतिज्ञा ली हुई है कि जव तक मंदिर पूरा न वन जायेगा मैं हलद्वानी ही रहूंगा। आप वहुत ही नम्र सज्जन हैं, नित्य नियम से दोनों वक्त न केवल स्वयं करते हैं वल्कि दूसरों को हर समय पूजन आरती आदि के लिए प्रेरणा करते रहते हैं। अगर यह कहा जाये कि हलद्वानी में जैन मंदिर आपके ही अथक प्रयत्न का फल है तो वेजा न होगा।

श्री वासदेव जी जैन (पंजाव नेशनल वैंक) कुमायूं जैन परिषद के मंत्री तथा समाज के लगन शील कार्यकर्त्ता हैं। मन्दिर जी के वनवाने में आप का पूरा सहयोग रहा। जैन मंडल हलद्वानी को स्थापना में भी आप का हाथ रहा।

(४) राम नगर (जिला नैनीताल)

रामनगर काशीपुर से उत्तर की तरफ १७ मील दूरी पर है। यहां से हिमालय पर्वत शुरू होता है और पहाड़ जाने के लिये कई सड़क जाती हैं। रामनगर करीव ३५–४० फिट की
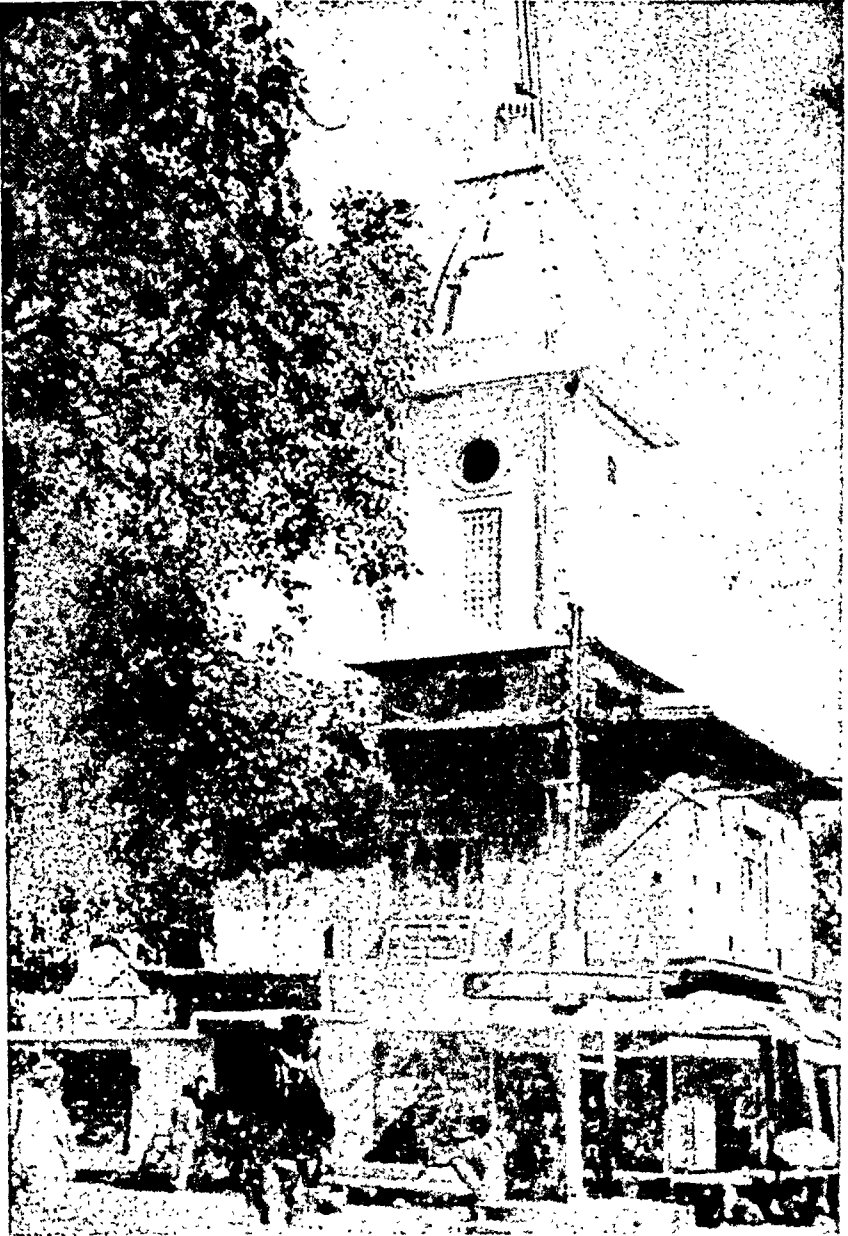
दि० जैन मन्दिर, हलद्वानी
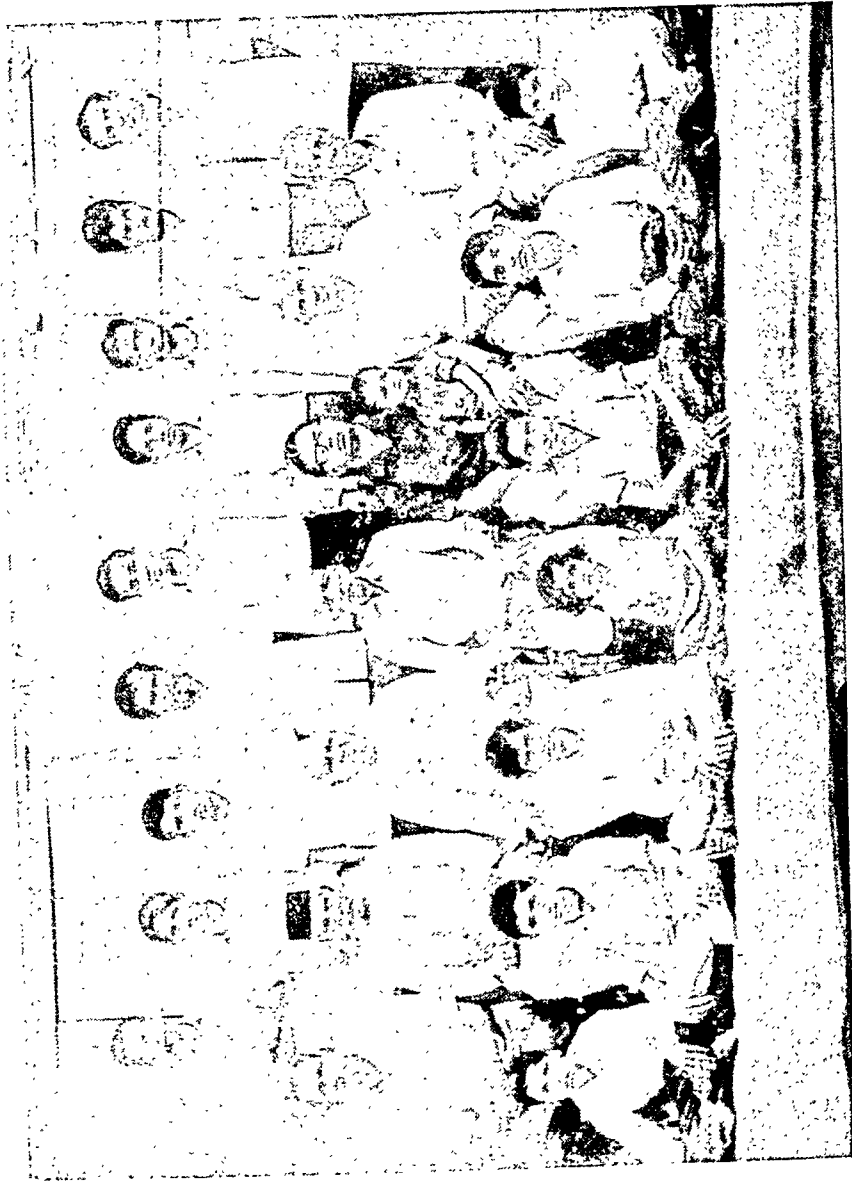
जैन समाज, हल्द्वानी

ऊंचाई पर खूबसूरत नगर है। यहां पर वन विभाग, सिंचाई आदि के कर्मचारी रहते हैं और य: सब्जी की मंडी है।

रामनगर में एक प्रसिद्ध घराना लाला श्याम लाल हजारी लाल जी का है जो पहले जै। थे उनकी अभी तक रिश्तेदारियां नहटौर आदि में है। जैन मंदिर काशीपुर के पहले आप ही खजांची थे। उनके सुपुत्र ला० कृष्ण कुमार दीपावली, चतुर्दशी आदि पर जैन मंदिर जी काशीपुर आते हैं और बराबर जैन मंदिर जी में वार्षिक सहायता देते हैं तथा काशीपुर मंदिर जी की नवीन वेदी आपने ही बनवाई है। प्रतिष्ठा के समय रथ की बोली भी आपने ही ली थी तथा प्रतिष्ठा के कार्य में आपने हर प्रकार की पूरी सहायता प्रदान की। आप बड़े नम्र और सज्जन हैं। रामनगर में आप आढ़त के बड़े व्यापारी हैं। ला० श्याम लाल जी नगरपालिका के अध्यक्ष रहे थे।

ला० हुलास चन्द जी

आप सहारनपुर के रहने वाले हैं। करीब २० साल से रामनगर में रहते हैं और स्टेशनरी की दुकान करते हैं आप बड़े सज्जन और धर्मात्मा हैं।

श्री ऋषभदास जी इंजीनियर

आप कई साल तक रामनगर में सिंचाई विभाग के इन्जीनियर रहे। रामनगर रहते हुए आपने काशीपुर के मंदिर के जीर्णोद्धार तथा वेदी प्रतिष्ठा के लिए दिल खोलकर सहायता प्रदान की।

श्री विक्रम चन्द्र जी धारीवाल

आप रामनगर इन्टर कालेज में प्रोफेसर हैं, बड़े नम्र और धर्म के श्रद्धालु हैं। हर रविवार को काशीपुर जैन मंदिर में दर्शन करने आते हैं।

श्री डी० सी० जैन

आप स्टार पेपर मिल के कामर्शियल मैनेजर हैं।

रामनगर में ४ जैन परिवार हैं— ९ पुरुष, ९ स्त्रियाँ तथा १४ बालक-बालिकायें। कुल ३२ जैन जनसंख्या है, जिनमें ९ शिक्षित पुरुष और ६ शिक्षित स्त्रियां हैं। समय समय पर जैन आफिसर व कर्मचारी भी आते रहते हैं।

जैन परिवार

१. ला० श्यामलाल हजारी लाल, २. बा० हुलास चन्द, ३. श्री विनय चन्द धारीवाल, बी० ए०, एल० टी०, ४. श्री डी० सी० जैन, कामर्शियल मैनेजर, स्टार मिल।

(५) जसपुर (जिला नैनीताल)

जसपुर जिला नैनीताल में काशीपुर से ८ मील दूरी पर है। यह एक पुराना कस्वा है, लकड़ी की वड़ी मन्डी है।

यहाँ एक प्राचीन पारसनाथ दि० जैन मंदिर है। अब मंदिर जी का जीर्णोद्धार हो रहा है। जीर्णोद्धार के लिए श्री उग्रसेन जी द्रव्य का प्रवन्ध कर रहे हैं। ५०१ रु० श्री प्रेमचन्द जी जैन, जैना वाच, देहली, २५० रु० ला० शिखर चन्द राजेन्द्र कुमार जी अफजलगढ़, १५१ रु० जैन पंचायत विजनौर मारफत वा० रतन लाल जी, १०१ रु० ला० भूखन शरन जी अमरोहा, १०१ रु० श्री सतीश चन्द जी फर्म हीरालाल जैन एण्ड को० बरेली, ७१ रु० श्री उग्रसेनजी काशीपुर, ५१ रु० वा० उलफत राय जी ने दिये तथा ५००-६०० रुपया जसपुर के भाइयों ने चन्दा किया तथा २५१ रु० ला० चम्पेलाल प्रेमचन्द दिल्ली और ६०० रु० ला० शिखर चन्द छटखरा वालों ने प्रदान किये।

मन्दिर जी के प्रवन्ध के लिए मन्दिर कमेटी वन गई है जिसके सभापति वा० उलफत राय जी काशीपुर, मंत्री भगवान दास जी मैनेजर स्टेट वैंक जसपुर, खजांजी श्री विजय वहादुर जी, प्रवन्धक अनिल कुमार जी तथा स्थानीय भाई सदस्य हैं।

जसपुर में १० अग्रवाल, २ खन्डेलवाल, कुल १२ जैन परिवार हैं—जिनमें १६ पुरुष, १७ स्त्रियाँ, ३३ वालक-वालिकायें। कुल संख्या ६६ है। शिक्षित पुरुष १६, शिक्षित स्त्रियाँ १३।

जैन परिवार

१. सर्वश्री प्रकाश लाल, २. सन्तलाल गोयल, ३. अनिल कुमार सिंघल, ४. दिनेश कुमार, ५. महावीर प्रसाद, ६. प्रेम चन्द, ७. जय गोपाल वंसल, ८. फकीर चन्द गर्ग, ९. सुमेर चन्द मित्तल, १०. राम स्वरूप, ११. श्रीमती चन्द्रवती वीर चन्द, १२. न्यादरमल विजय वहादुर, १३. भगवान दास।

विजय वहादुर जी के स्वर्गीय पिता श्री राम सरन दास जी को जैन धर्म से वड़ा प्रेम था। ७-८ साल हुए उनका देहान्त हो गया।

(६) वाजपुर

वाजपुर वहुत छोटी जगह है मगर अव राज्य की तरफ से काफी उन्नति कर गया है। यहाँ एक कोआपरेटिव सुगर फैक्ट्री व हाई स्कूल है।

वाजपुर में ६ जैन परिवार हैं जिनमें पुरुष ११, स्त्री ९, बालक-बालिकायें २१, कुल जैन संख्या ४१ है। शिक्षित पुरुष ९, शिक्षित स्त्री ५ हैं।

परिवार

सर्वश्री

१—चन्दगी राम मित्तल
२—ओम प्रकाश मित्तल
३—सन्त प्रकाश
४—लछमण दास गर्ग
५—जुगुल किशोर गर्ग
६—सत्यपाल मित्तल

(७) गदरपुर (जिला नैनीताल)

एक छोटा ग्राम है। यहां ला० फकीर चन्द जी का केवल एक ही जैन परिवार है। जिसमें पुरुष ५, स्त्री २, बालक बालिका ४, कुल संख्या ११, शिक्षित पुरुष ५ स्त्रीयां २।

(८) धनौरी (जिला नैनीताल)

राम नगर सड़क पर धनौरी एक बहुत छोटा ग्राम है।

१९५० में ला० राजेन्द्र कुमार जी जैन विजनौर वालों ने यहां एक फार्म बड़ा जैन फार्म स्थापित किया फार्म खूब उन्नति कर रहा है। अब वहां एक बहुत बड़ा बाग लग जाने से गांव की उन्नति हो रही है। लाला राजेन्द्र कुमार जी ने वहां एक प्राइमरी स्कूल भी स्थापित कर दिया है। यहां २ जैन परिवार, पुरुष २, स्त्री ३, और ५ बालक बालिकायें, कुल १० जैन बन्धु है।

ला० हरीश्चन्द जी बड़े सज्जन और कुशल प्रबन्धक थे। ६ माह हुये उनका देहान्त हो गया। जैन फार्म की तरफ से काशीपुर के जैन मंदिर जी को सालाना तथा आवश्यकतानुसार सहायता मिलती रहती है।

(९) टनकपुर (जिला नैनीताल)

टनकपुर पहाड़ी क्षेत्र है। यह जिला अल्मोड़ा, नैनीताल और पीलीभीत के सन्धिस्थल पर भावर प्रदेश (पर्वतांचल) में स्थित प्रमुख कस्बा है।

टनकपुर में केवल २ जैन परिवार हैं, कुल जैन संख्या ९ है, पुरुष ५, स्त्री १, बालक बालिका ३, शिक्षित पुरुष ४, शिक्षित स्त्री १।

जैन परिवार

१—श्री अरहदास २—श्री देशराज

ला० अरहदास जैन हिसार के रहने वाले है यहां आपका जवाहर सिनेमा है। आप बहुत ही सज्जन एव मिलनसार हैं। पहले आप काशीपुर में रहते थे। आप कई सिनेमा कम्पनियों के मालिक हैं।

(१०) खरमासा (जिला नैनीताल)

खरमासा बहुत छोटा गाँव है। यहाँ पर ओमप्रकाश जी जैन सहारनपुर निवासी का एक फार्म और परिवार है जिसमें २ पुरुष, १ स्त्री और ७ बालक है।

(११) रुद्रपुर (जिला नैनीताल)

रुद्रपुर पहले बहुत छोटा गांव था, अब यहाँ बड़े-बड़े फार्म हैं जिनमें गन्ना, मक्का, गेहूं, चावल, आदि की बहुत अधिक पैदावार होती है।

रुद्रपुर में एक विशाल राजकीय कृषि विश्वविद्यालय है। जिसमें विद्यार्थियों को वैज्ञानिक और आधुनिक ढंग पर कृषि की शिक्षा दी जाती है। विश्वविद्यालय हो जाने से रुद्रपुर एक बड़ी बस्ती बन गई है। रुद्रपुर में बाहर से आए हुए कुछ जैन बन्धू व्यापार और आढ़त का कार्य करते है।

पन्यनगर (फूल बाग) में हवाई अड्डा है।

जिला गढ़वाल

(१) श्रीनगर

गढ़वाल कमिश्नरी के जिला पौड़ी-गढ़वाल का केन्द्रीय स्थल, श्रीनगर, प्रसिद्ध प्राचीन नगर है जो गढ़वाल के परमार नरेशों की चिरकाल तक राजधानी बना रहा। १८०३ ई० में यहाँ भयानक भूकम्प आया। इसके बाद भी भूकम्प के झटके आते रहे और राजप्रासाद ध्वस्त हो गया। पुराने लोगों का कहना है कि राजप्रासाद में जहाँ जो काम कर रहा था वह वहीं दब गया। बहुत समय तक लोग वहाँ जा-जाकर राजप्रासाद के ध्वंसावशेषों में से चीजें ढूंढ़ते देखे गये। इसके बाद आयी गोरख्याली (गोरखा आक्रमण) जिसने गढ़वाल को रौंद डाला और श्रीनगर की श्री को पूरी तरह हर लिया। १८१५ ई० में अंग्रेजों की सहायता से गोरखे निकाल दिये गये, पर राजवंश के हाथ से न केवल दो-तिहाई गढ़वाल ही गया, उनकी राजधानी श्रीनगर भी चली गयी।

इसके बाद से श्रीनगर ब्रिटिश गढ़वाल का एक साधारण नगर बन कर रह गया। लगभग साढ़े पाँच हजार फुट ऊँची पहाड़ी पर उन्होंने नई राजधानी बसायी—पौड़ी। आज से लगभग ७५ वर्ष पूर्व विरही गगा की बाढ़ में पुराना श्रीनगर बहजाने पर पास के ऊँचे पठार पर नया श्रीनगर बसाया गया।

श्रीनगर का प्राचीन जैन मंदिर

अलकनंदा के तट से सटा प्राचीन श्रीनगर १८९२ ई० की गौना बाढ़ में बह गया था। उसमें दिगम्बर जैन मन्दिर भी था, जिससे सिद्ध होता है कि एक समृद्ध जैन समुदाय काफी प्राचीन समय से श्रीनगर में बस चुका था और गढ़वाल के बहुरंगी जीवन में भाग लेता आ रहा था। अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर मि० पौ द्वारा नया श्रीनगर बसाने के बाद पुराने श्रीनगर का जैन समुदाय नये श्रीनगर में आ बसा और इसके सबसे बढ़िया हिस्से में, जिसे आजकल ऊपर बाजार कहते हैं, जैनों ने भव्य मकान दूकानें बनवायीं। कुछ समय बाद यहाँ गंगा के समीप, जैन मुहल्ले के पीछे एक अति भव्य दिगम्बर जैन मंदिर बनवाया गया। मंदिर में चतुर्थ काल की बनी प्रतिमा है। इसकी स्थापना कराने वाले दो सज्जन थे—ला० प्रतापसिंह जैन (उनके वंश में श्री रमेश चन्द जी तथा उसकी माता हैं) तथा लाला मनोहरी लाल जैन (ये निःसन्तान मर गये)। १९२५ ई० के लगभग मंदिर में मूर्ति स्थापित की गयी जिसके कुछ समय बाद ही लाला प्रतापसिंह का निधन हो गया और लाला मनोहरीलाल जैन श्रीनगर छोड़कर नजीबाबाद जा बसे।

इसके बाद मंदिर को लाला मनोहरी लाल के भाई श्री अभिनन्दन प्रसाद, नजीबाबाद निवासी ने सम्हाल लिया। उनका कुछ वर्ष पहले निधन हो गया। वर्तमान में श्रीनगरवासी श्री कृष्ण कुमार जैन, अरविंद बिस्कुट फैक्ट्री, मंदिर के मैनेजर हैं। मंदिर में तीन मूर्तियां थीं। हाल ही में मंदिर में

चोरी हो गई। चंवर, छत्र, बरतन तथा दो मूर्तियाँ चोर उठा ले गये। रथयात्रा कभी नहीं निकली, पुजारी की भी व्यवस्था नहीं है। कई वर्ष से पूजन प्रक्षाल भी नहीं होती, मंदिर के तीन मकान हैं। एक स्थानीय कन्या राजकीय इण्टर कालेज के पास ५० रुपये मासिक पर किराये पर है, दूसरे मकान का किराया स्वर्गीय अभिनन्दन प्रसाद के पुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार जैन (नजीबाबाद) ले रहे हैं, और तीसरा मकान एक अन्य जन परिवार के पास है।

ला० मनोहरलाल, अभिनन्दन प्रसाद के ही कुटुम्ब के भाई भौतिकशास्त्र के प्रसिद्ध जैन विद्वान प्रोफेसर घासीराम जैन हैं जो विक्टोरिया कालेज, ग्वालियर में प्राध्यापक थे और वर्तमान में मेरठ में निवास कर रहे हैं।

मंदिर अति विपन्न अवस्था में है, अधिकांश भाग खंडहर हो चुका है। वर्षा का पानी अन्दर आने से गर्भगृह खराब हो चुका है और सामान भी बेकार हो गया है। श्रीनगर के मंदिर जी के जीर्णोद्धार की शीघ्र आवश्यकता है। आशा है श्री वीरेन्द्र कुमार जी नजीबाबाद इस तरफ ध्यान देंगे, वह आसानी से यह कार्य करा सकते हैं। १९५७ की गर्मियों में बदरीनाथ से लौटते हुए साहू शांतिप्रसाद जैन मंदिर में दर्शन करने आये थे और इसके जीर्णोद्धार को कह गये थे। १९६७ की गर्मियों में वालचंद हीराचंद नामक विख्यात व्यापारिक प्रतिष्ठान के सेठ रत्नचंद भी इसके दर्शन कर चुके हैं।

श्रीनगर में बिड़ला राजकीय डिग्री कालेज, राजकीय इंटर कालेज, कन्या राजकीय इंटर कालेज, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, पोलीटेकनीक स्कूल, संस्कृत विद्यालय आदि संस्थाएं हैं। इस वर्ष से इंजीनियरिंग डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ हो गया है। पहले यहां नोटी-फाइड एरिया कमेटी थी, उस के स्थान पर हाल ही में म्युनिसिपैल्टी हो गयी है।

वर्तमान में यहां का व्यापार गन्ना, कपड़ा आदि उपभोग्य वस्तुओं तक ही सीमित है। अपार प्राकृतिक साधन होते हुए भी कारखाने नहीं हैं। अलकनंदा के तट पर एक ऊंचे पठार पर एक विस्तृत सुरम्य घाटी में, समकोण पर काटती सड़कों तथा सुन्दर जलनिष्कासन व्यवस्था का यह नगर विशाल सम्भावनाओं से परिपूर्ण है। गर्मियों में १०८ डिग्री तक तापमान, पर्याप्त वर्षा तथा जाड़ों में कुहरा और हिमालय की शीतल हवाएं चलती है। आसपास की ऊंची पहाड़ियों पर जनवरी-फरवरी में हिमपात भी हो जाता है।

नया श्रीनगर बसते समय अग्रवालों (वैष्णव) के भी कई समृद्ध परिवार थे। इन की संख्या अब गिनी-चुनी रह गयी है। हाल ही में सिक्खों का एक भव्य गुरुद्वारा भी यहां बना, सिक्खों के हिमालयवर्ती तीर्थ हेमकुण्ड का यात्रा-मार्ग श्रीनगर से ही हो कर जाता है। बदरी-केदार के यात्रा मार्ग भी यहां से गुजरते हैं।

नगर में शिव, हनुमान, गरुड़, लक्ष्मी-नारायाण, गणेश आदि के मंदिर हैं। स्थानीय दि० जैन मंदिर की बगल के विस्तृत भूभाग में कन्या राजकीय इंटर कालेज का स्थायी भवन बनने वाला है। नगर में सार्वजनिक निर्माण विभाग तथा जिला मंडल के विश्रामालय हैं और पर्यटक केन्द्र

साहसी-उद्योगी लोगों के लिए नगर विशाल सम्भावनाओं से भरा है। दिल्ली-ल्हासा सड़क पर यह मुख्य पड़ाव है, साथ ही गढ़वाल की सबसे बड़ी घाटी भी। नगर के विकास का व्यापक सम्भावनाएं हैं। यहां बाहर से ला कर जैनी भाइयों को बसाने की बहुत आवश्यकता है जिससे मंदिर की व्यवस्था ठीक हो तथा धर्म की प्रभावना हो सके। श्रीनगर से टिहरी नगरी ३५ मील दूर हैं। दोनों के मध्य मोटर सड़क बनी है। टिहरी के जैन परिवार कभी कभी मंदिर जी में दर्शन करने को श्रीनगर आते रहते हैं। कोटद्वार तथा ऋषिकेश उत्तर रेलवे के दो पर्वतीय स्टेशन हैं। यहां से आने वाले दोनों मोटर मार्ग श्रीनगर में आकर मिल जाते हैं।

जैन परिवार

सर्वश्री १. राजेन्द्र प्रसाद, २. सोहन लाल, ३. कृष्ण कुमार, ४. रमेश चन्द्र, ५. सुखवीर प्रसाद, ६. मोहन लाल, ७. अमर लाल, ८. ठाकुर प्रसाद, ९. वल्लूमल मेहता।

उपर्युक्त परिवार अभी तक संस्कारों की दृष्टि से भी दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के अनुयायी हैं और इनकी आर्थिक स्थिति भी प्रायः अच्छी है।

यहाँ कुछ ऐसे जैन परिवार भी थे जिन्हें शासन ने 'मेहता' का खिताब दिया था। इनमें कई ने स्थानीय गढ़वाली कन्याओं से विवाह कर लिया। तब से दिगम्बर जैन सम्प्रदाय से ये कटते गये। इनकी संतानों के विवाह भी जैन समुदाय के बाहर होते गये। इनके वर्तमान वंशज पुनः दिगम्बर जैन धर्म की ओर झुक रहे हैं, कई स्वयं को जैन भी लिखने लगे हैं। हम सबका प्रयास इन्हें अपने समाज के घनिष्ठ सम्पर्क में लाने का है, पर मंदिर की जीर्ण दशा, धार्मिक शिक्षा के अभाव तथा स्थानीय जैन समाज के पराभव के कारण अपेक्षित स्थिति उत्पन्न नहीं हो पाई है।

वर्तमान में श्रीनगर (गढ़वाल) के उल्लेखनीय व्यक्ति श्री रमेशचंद्र जैन हैं। आप एम. ए., रिसर्चस्कालर एवं पत्रकार हैं। आपकी पत्नी भी सुशिक्षित हैं। परिवार में वृद्ध माता तथा एक शिशु है। श्री रमेश चंद्र उत्साही नव-युवक हैं और सामाजिक कार्यों में रुचि रखते हैं।

(२) पौड़ी गढ़वाल

पौड़ी, लैंसडाउन, दुगड्डा तथा कोटद्वार—इन स्थानों से जैनों के संबंध में विवरण अप्राप्त है।

(३) चमोली

जोशीमठ नगर—बद्रीनाथ धाम से १८ मील दूर, यहां एक जैन परिवार श्रीचंडी प्रसाद का है।

गोचर—हवाई अड्डा है। यहाँ समीप में धनपुरा नामक प्राचीन बस्ती है जिसमें कई वर्ष पूर्व जैनियों के २५० घर थे। कालप्रवाह में पड़कर ये सभी धर्मच्युत हो गये और स्थानीय विवाह कर लिए। गणेश, दुर्गा आदि लौकिक देवी-देवताओं की ये पूजा करते हैं। ये चौधरी नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्हें जैन धर्म में पुनः दीक्षित करना आवश्यक है। इस ओर समाज तथा साधुओं का सक्रिय सहयोग आवश्यक है।

रुद्रप्रयाग—यहाँ श्री इन्द्रलाल मेहता तथा श्री मदन लाल मेहता के दो जैन परिवार हैं।

टिहरी जिला

टिहरी नगर जिले का सदर मुकाम है और टिहरी रियासत की राजधानी थी। वैसे अभी प्रशासनिक केन्द्र नरेन्द्रनगर है। यहाँ के राजा मानवेन्द्रशाह दूसरे आम चुनाव से लोकसभा के सदस्य हैं (श्रीनगर इनके निर्वाचन क्षेत्र में आता है)। व्यापार समुन्नत है। नगर भागीरथी तथा भिलंगना के संगम पर एक ऊँचे पठार पर वसा है। यहाँ का प्राचीन भव्य राजप्रासाद खंडहर होता जा रहा है। यहाँ जैनियों के पुराने समृद्ध घराने हैं—

सर्वश्री १. जुगमंदरदास, २. लक्ष्मीचंद, ३. भल्लामल, ४. मित्रसेन, ५. नन्दकिशोर।

बद्रीनाथ का मन्दिर

कई वर्ष पूर्व अलकनंदा के तट पर वद्रीनाथ धाम की यात्रा से लौटे एक साधू से श्री रमेश चन्द्र जी जैन की वातचीत हुई थी। उन्होंने वताया कि वद्रीनाथ के आगे घोर वनों में कई मंदिरों के ध्वंसावशेष विखरे पड़े हैं। कहते हैं वद्रीनाथ में जो मूर्ति स्थापित है वह २३ वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की है जिसे शंकराचार्य ने पास के नारदकुंड से प्राप्त किया था।

बद्रीनाथ जाने का रास्ता

यह धारणायें शंकराचार्य के समय से ही प्रचलित थीं कि नारद कुंड मूर्तियों से भरा पड़ा है। कौन जाने वद्रीनाथ के जंगलों के ध्वस्त मंदिरों और नारद कुंड की मूर्तियों में कोई निकट सम्वन्ध हो। यह सम्भव है कि नारद कुंड की मूर्तियाँ इन्हीं ध्वस्त मदिरों में विराजमान रही हों। पार्श्वनाथ की मूर्ति पर प्रति दिन पंडे लोग चंदन का लेप करके आरती उतारते हैं और दर्शन कराने के लिये कुछ भेंट लेते हैं।

सन् १९५४ में हिन्दू विश्वविद्यालय वनारस के एक जैन प्रोफेसर ने वद्रीनाथ की यात्रा की सन् १९५६ में गोयनका जी ने वद्रीनाथ की यात्रा की। तत्पश्चात् १९५७ में साहू शांति प्रसाद जी, रमा जी और गोयनका जी ने पुनः यात्रा की।

सन् १९५७ में सेठ लालचन्द्र हीराचन्द्र जी वम्वई वालों ने वद्रीनाथ की यात्रा की। उनका विचार यहाँ पर कुछ कार्य प्रारम्भ कराने का था जो अभी तक नहीं हो सका।

श्री देवेन्द्र कुमार जी जैन सुपरिन्टेन्डेन्ट इन्जीनियर (सुपुत्र वा० सुमेरचन्द जी एडवोकेट) ने वद्रीनाथ की यात्रा की। उनका कहना है कि मूर्ति दि० जैन मूर्ति है जिस पर प्रतिदिन चदन का लेप किया जाता है।

श्री जिनेन्द्र चंद जी कागजी लखनऊ वालों को वद्रीनाथ के एक पंडे ने वताया कि वद्रीनाथ के मंदिर में मूर्ति जैनों की ही है।

वद्रीनाथ से १८ मील पहले ही ज्योति मठ है जिसकी यात्रा श्री चन्द्री प्रसाद जी जैन ने की।

●●
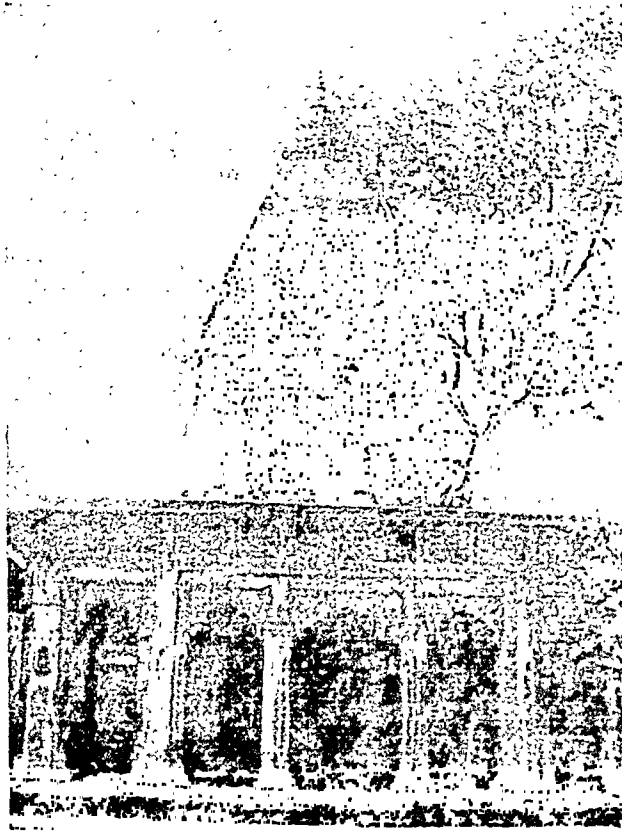
श्री दि० जैन मन्दिर, श्रीनगर

परिशिष्ट

परिशिष्ट (१)

रुहेलखंड-कुमायूँ की जैन जनगणना (सन् १९६५)

क्रम संख्या	नाम जिला	परिवार संख्या	पुरुष	स्त्री	बालक	बालिका	कुल योग	पुरुष शि०	पुरुष अशि०	स्त्री शि०	स्त्री अशि०
१	बिजनौर	२९४	५१७	४८४	४२९	४४०	१८७०	४५४	६३	३८१	१४३
२	मुरादाबाद	२३३	४२७	३५३	३७४	४००	१५५४	३९४	४३	३०९	४४
३	बदायूँ	६८	११५	१०१	१३२	११०	४५८	१०४	११	८४	१७
४	रामपुर	१०४	१८४	१५९	१३८	१८३	६६४	१५९	२५	१३१	२८
५	बरेली	३१	५३	४६	३८	४८	१८५	५१	२	३१	१५
६	शाहजहांपुर	७	१२	४	७	१०	३३	१२	—	३	१
७	पीलीभीत	८	१२	६	२२	—	४०	९	—	६	८
८	नैनीताल	६८	९९	९४	७४	४६	३१३	१०४	१३	६४	२४
	योग	८१३	१४१९	१२४७	१२१४	१२३७	५११७	१२८७	१५७	१००९	२८०

नोट—इस चार्ट में गढ़वाल कमिश्नरी के जिलों को जैन जनसंख्या समुचित सूचना के अभाव में सम्मिलित नहीं हो पाई है।

परिशिष्ट (२)

रुहेलखण्ड कुमायूँ की जैन शिक्षण संस्थाएँ

पोस्ट ग्रेजुएट कालेज	वर्धमान कालेज	विजनौर
डिग्री कालेज	साहू जैन कालेज	नजीवावाद
गर्ल्स कालेज	मूर्ति देवी जैन गर्ल्स कालेज	नजीवावाद
इण्टर कालेज	जैन विद्या मन्दिर इण्टर कालेज	नहटौर
	जैन इण्टर कालेज	रामपुर
	राम रतन इण्टर कालेज	विलारी
	सरस्वती इण्टर कालेज	नजीवावाद
गर्ल्स स्कूल	जैन गर्ल्स जूनियर हाई स्कूल	धामपुर
जैन पाठशाला	जैन पाठशाला	लोहागढ़ मुरादावाद
	वीर पाठशाला	विजनौर
	जैन पाठशाला	नजीवावाद
	जैन पाठशाला	विलसी
	जैन पाठशाला	स्योहारा
	जैन पाठशाला	हलद्वानी
जैन वोर्डिंग हाउस	जैन वोर्डिंग हाउस	विजनौर
जैन ट्रस्ट	साहू जैन ट्रस्ट हे० आ०	कलकत्ता
	श्री देवेन्द्र कुमार जैन ट्रस्ट	कलकत्ता
	श्री राजेन्द्र कुमार जगत प्रसाद ट्रस्ट	दिल्ली
जैन औषधालय	जैन धर्मार्थ औषधालय	नजीवावाद
	होमियोपैथिक औषधालय	नजीवावाद
जैन धर्मशालायें	नहटौर, रामपुर, स्योहारा, अहीक्षेत्र, विजनौर, ऊझानी, मुरादावाद, धनौरा मंडी, विलसी	
जैन लाइब्रेरी	विजनौर, शेरकोट, रामपुर, विलसी	
जैन सभा व मण्डल आदि	अमरोहा, मुरादावाद, हलद्वानी, नजीवावाद, स्योहारा, वरेली, रामपुर, काशीपुर, विलसी	

परिशिष्ट (३)

रुहेलखण्ड कुमायूँ के दिगम्बर जैन मन्दिर

जिला बिजनौर (१२ मन्दिर)	बिजनौर १, नहटौर १, नजीबाबाद २, नगीना १, धामपुर २, कीरतपुर २, अफजलगढ़ १, शिवहारा १, शेरकोट १
जिला मुरादाबाद (१८ मन्दिर)	मुरादाबाद ४, अमरोहा २, कुन्दरकी २, बहजोई १, सम्भल १, बिलारी १, चन्दौसी १, रतनपुरकला १, हरियाना २ दौलारी १ धनौरा मण्डी १ नगलाबाराह १
जिला रामपुर (४ मन्दिर)	रामपुर १, मसवासी १, बिलासपुर १, अकबराबाद १
जिला बरेली (४ मन्दिर)	बरेली १, अहिच्छेत्र २, आमला १
जिला शाहजहाँपुर (१ मन्दिर)	शाहजहाँपुर १
जिला बदायूं (४ मन्दिर)	बिलसी ३, उझानी १
जिला पीलीभीत (१ मन्दिर)	पूरनपुर १
श्रीनगर (१ मन्दिर)	एक प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिर
जिला नैनीताल (३ मन्दिर)	काशीपुर, जसपुर, हलद्वानी

ऐतिहासिक स्थान व जैन तीर्थ

जैन तीर्थ	अहिच्छेत्र (रामनगर)
ऐतिहासिक स्थान	अहिच्छेत्र के खंडरात व किला, जिला बरेली बढ़ापुर का पार्श्वनाथ का किला, जिला बिजनौर मोरध्वज का किला आदि, जिला बिजनौर

परिशिष्ट (४)

रुहेलखण्ड कुमायूं में निम्न स्थानों पर वार्षिक जैन उत्सव होते हैं :–

जिला बिजनौर	नहटौर	असौज वदी २
	नजीबाबाद	असौज वदी १
	धामपुर	फागुन सुदी ८-९
	कीरतपुर	भादों सुदी १५
	अफजलगढ़	भादों सुदी १४
	शिवहारा	भादों सुदी १०
	शेरकोट	भादों सुदी १४
	नगीना	भादों सुदी १४
	धनौरा	भादों सुदी १४
जिला मुरादावाद	मुरादावाद	आश्विन वदी २ एवं ३
	अमरोहा	भादों सुदी १५
	कुन्दरकी	असौज वदी २
	रतनपुर कलां	असौज वदी २
	धनौरा मण्डी	असौज वदी १
जिला रामपुर	रामपुर	असौज वदी में २ के वाद रविवार या मंगलवार में
जिला वरेली	वरेली	चैत्र सुदी १३
	अहीक्षेत्र	चैत्र सुदी १३
जिला वदायूं	विलसी	भादों सुदी १५
	उझानी	भादों सुदी १५
जिला नैनीताल	काशीपुर	भादों सुदी १४

परिशिष्ट (५)

रुहेलखण्ड कुमायूं में जैन परिषद् की शाखायें

नाम	पद	स्थान	जिला
१. श्री रूपचन्द जी जैन	मंत्री	धामपुर	जि० विजनौर
२. श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन	संयोजक	अफजलगढ़	,, ,,
३. श्री सुरेशचन्द जी जैन	संयोजक	कीरतपुर	,, ,,
४. श्री प्रेमचन्द जी जैन	संयोजक	स्योहारा	,, ,,
५. लाला शीतल प्रसाद जी जैन	मंत्री	नहटौर	,, ,,
६. श्री अमरचन्द्र जी जैन एम. ए.	मंत्री	विलसी	जि० वदायूं
७. डा० कुंदनलाल एम.ए.,पी-एच.डी.	मंत्री	वरेली	वरेली
८. श्री रामकिशोर जी जैन	मंत्री	मुरादावाद	मुरादावाद
९. श्री राजेन्द्र कुमार जी सेठी	मंत्री	अमरोहा	जि० मुरादावाद
१०. श्री निर्मल कुमार जी जैन	मंत्री	हरियाना	जि० मुरादावाद
११. श्री विमल चन्द्र जी एडवोकेट	मंत्री	रामपुर	रामपुर
१२. श्री उलफत राय जी जैन,	मंत्री	काशीपुर	जि० नैनीताल
१३. श्री वासदेव प्रसाद	संयोजक	हलद्वानी	जि० नैनीताल

परिशिष्ट (६)

रुहेलखंड-कुमायूँ जैन-परिषद्
की
स्थापना एवम् उद्देश्य

रुहेलखंड कुमायूं में जैनों का कोई संगठन न होने, जैन शिक्षण संस्थाओं के अभाव और साधु सन्तों के न पधारने से जैनों की संख्या विशेषतय: नैनीताल जिले में बहुत कम रह गयी है। बरेली में अहिक्षेत्र भगवान पारसनाथ की तपोभूमि होते हुए भी अब से ३०-४० वर्ष पहले बरेली में कोई जैन परिवार नहीं था तथा जिला बरेली में जैनों की संख्या बहुत ही कम है।

अत: सन् १९६२ में काशीपुर में वेदी प्रतिष्ठा के अवसर पर बाबू रतन लाल जी जैन, बिजनौर भूतपूर्व एम० एल० ए० की अध्यक्षता में धर्म प्रचार एव समाज संगठन के लिए रुहेलखंड कुमायूं जैन परिषद् की स्थापना की गई। स्वागताध्यक्ष श्री जयकिशन जी जैन एडवोकेट मुरादाबाद तथा बा० रतनलाल जी ने जैन संगठन की आवश्यकता पर प्रभावशाली व्याख्यान दिये। परिषद् का मुख्य उद्देश्य जैन धर्म और जैन शिक्षा का प्रचार और जैन समाज को संगठित करना रखा गया तथा परिषद् का प्रधान कार्यालय काशीपुर रखा गया और निम्न महानुभावों की एक कार्यकारिणी समिति का संगठन किया गया।

सर्वश्री

१. बाबू रतनलाल जी	बिजनौर	अध्यक्ष
२. जयकिशन जी	मुरादाबाद	उप-सभापति
३. उग्रसेन जी	काशीपुर	कार्याध्यक्ष
४. उलफत राय जी	काशीपुर	मंत्री
५. सुमेर चन्द्र जी जैन एडवोकेट	रामपुर	सदस्य
६. कल्यान कुमार जी 'शशि'	रामपुर	,,
७. विष्णु कान्त जैन वैद्य	मुरादाबाद	,,
८. शीतल प्रसाद जैन	नहटौर	,,
९. सुमत प्रसाद एडवोकेट	नगीना	,,
१०. जगत प्रसाद	नजीबाबाद	,,
११. भूषण शरण जी	अमरोहा	,,
१२. अमर चन्द्र जी	बिलसी	,,

सर्वश्री		सदस्य
१३. डा० कुन्दन लाल जी	बरेली	,,
१४. गुलाव चन्द्र जी	शेरकोट	,,
१५. राम रतन जी	काशीपुर	,,
१६. विजय वहादुर जी	जसपुर	,,
१७. राम किशन जी	रामनगर	,,
१८. मुकुट लाल जी	वहजोई	,,
१९. डा० पन्नालाल जी	संभल	,,
२०. सेठ राम गोपाल जी	हलद्वानी	,,
२१. रिखवदास इन्जीनियर	रामनगर	,,

समिति के दूसरे कार्यकर्ताओं को प्रवन्ध कारिणी में शामिल करने का अधिकार दिया गया। प्रवन्ध कारिणी समिति ने मुरादावाद, नहटौर, धामपुर, रामपुर आदि २ स्थानों पर जा करके समाज संगठन और धर्म प्रचार का कार्य किया और निम्न स्थानों पर परिषद् की शाखायें स्थापित करके संयोजक नियुक्त किये। धामपुर आदि की विरादरी के मनमुटाव को निपटाया गया एवं पाठशालायें स्थापित करने का निर्णय किया गया।

सन् १९६४ में वावू रिखवदास जी इन्जीनियर की अध्यक्षता में अहिच्छेत्र में परिषद् का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में रुहेलखंड कुमायूं की जैन जनगणना कराने और उसकी डाइरेक्टरी तैयार कराने का प्रस्ताव पास किया गया। इस कार्य के संयोजक वावू उग्रसेन जी काशीपुर नियत किये गये। जनगणना का कार्य १९६५-६६ में काफी पत्र व्यवहार एव परिश्रम के वाद पूर्ण हुआ। डाइरेक्टरी को तैयार करने के लिए सतत परिश्रम करना पड़ा और जैनधर्म से सम्वन्धित प्रसिद्ध तीर्थ आदि के चित्र महान कृतियों का उल्लेख और अन्य सभी चित्रों आदि के संकलन में काफी परिश्रम करना पड़ा।

डाइरेक्टरी में जैन समाज का इतिहास, जैन संस्थाओं, मन्दिरों, उत्सवों, परिवारों आदि का परिचय दिया गया है। विगत महानुभावों की समाज सेवाओं का भी उल्लेख किया गया है।

इलाके में अभी तक जैन शिक्षण संस्थाओं की वहुत कमी है। जैन धर्म और जैन सस्कृति के प्रचार के लिए जैन शिक्षण संस्थाओं की स्थापना अत्यावश्यक है तथा जिन स्थानों पर जैन मन्दिर नहीं हैं वहां पर जैन चैत्यालय स्थापित कराने की जरूरत है। रुहेलखंड कुमायूं के संगठन का कार्य वरावर चालू रखना चाहिए।

●●

परिशिष्ट (७)

रुहेलखण्ड कुमायूँ में जैन परिषद्

का एक

महत्वपूर्ण अधिवेशन

रुहेलखण्ड कुमायूँ जैन-परिषद् की पचवीं बैठक धामपुर (जिला विजनौर) में १२ जनवरी १९६४ को हुई। इससे पहिले मुरादावाद, रामपुर स्टेट, अमरोहा और नहटौर में भी परिषद् की बैठकें हुईं। सभी जगह की जैन समाज ने परिषद् के प्रस्तावों का हार्दिक स्वागत किया और परिषद् की शाखायें स्थापित की गयीं। मुरादावाद में श्री रामकिशोर जी, रामपुर में श्री विमल कुमार जी एडवोकेट, अमरोहे में श्री राजेन्द्र कुमार जी सेठी, नहटौर में श्री शीतल प्रसाद जी संयोजक बनाये गये थे।

धामपुर मीटिंग में बा० रतनलाल जी सभापति, भूतपूर्व एम० एल० ए० बिजनौर, श्री सुमतप्रसाद जी एडवोकेट नगीना, श्री जगतप्रसाद जी नजीबाबाद, श्री राजेन्द्र कुमार जी अफजलगढ़, श्री राजेन्द्र कुमार जी सेठी संयोजक व श्री ओमप्रकाश जी अमरोहा, श्री शीतल प्रसाद जी संयोजक, श्री महेन्द्रकिशोर जी, श्री के० वी० अग्निहोत्री प्रिंसिपल जैन कालेज, श्री सुरेन्द्र कुमार जी, पं० गोपालदास जी नहटौर, श्री नन्दकिशोर जी, वैद्य पूरनचन्द जी, श्री रामकिशोर जी संयोजक, श्री शीतल चन्द जी उपमन्त्री जैन मन्दिर जी मुरादावाद, काशीपुर से श्री उग्रसेन जी कार्याध्यक्ष और उल्फतराय जी मंत्री सम्मिलित हुए।

मीटिंग में सबसे पहिले धामपुर जैन समाज का विधान बनाने पर विचार किया गया और निश्चय हुआ कि २९ जनवरी ६४ को विधान बनाने के लिए मीटिंग की जावे। कुछ आपसी झगड़ों के कारण धामपुर में २-३ साल से रथ-यात्रा बन्द थी। सब भाइयों ने निश्चय किया कि बा० रतन-लाल जी बिजनौर इस मामले का जिस तरह निश्चय करेंगे वह सब भाइयों को स्वीकृत होगा।

इसके पश्चात् उल्फतराय जैन मंत्री ने नहटौर मीटिंग की कार्यवाही पढ़कर सुनाई। श्री उग्रसेन जी ने रुहेलखण्ड कुमायूँ जैन परिषद के प्रस्ताव पर रोशनी डालते हुए शादियों में दिख-दिखावा बन्द करने, शादियों में रात्रि को बारात-चढ़त और रात्रि को बारात का भोजन बन्द करने, जैन स्कूलों में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य रूप से देने तथा जैन कन्या पाठशाला में जैन धर्म पढ़ाने के लिए अध्यापिका रखने की आवश्यकता और परिषद् की शाखा स्थापित करने के प्रस्ताव रखे। परिषद् की शाखा स्थापित की गई और सर्वसम्मति से श्री रूपचन्द जी को संयोजक बना गया।

आगामी मीटिंग मुरादाबाद में करने का निश्चय किया गया। सायं ६ बजे मंत्रियों व संयोजकों की मीटिंग हुई। उल्फतराय मंत्री ने शाखाओं के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए निवेदन किया। सभी सयोजकों ने अपने-अपने विचार प्रकट किये और काय को ठीक प्रकार से चलाने और मैरिज व्यूरो के लिए शादी योग्य लड़के-लड़कियों की सूची तैयार करके भेजने का वायदा किया।

पं० श्रेयांशप्रसाद जी की शास्त्र सभा के पश्चात् पचायत हुई और धामपुर में व्याह-शादियों में देख-दिखावा वन्द करने, वारात का रात्रि भोजन व चढ़त वन्द करने के प्रस्ताव पास किये गए। धामपुर में करीव २० भाई परिषद् के सदस्य वने।

इसके पश्चात् श्री वावूराम जी जैन धामपुर ने अपने सुपुत्र श्री रूपचन्द की आदर्श शादी करने की इच्छा प्रकट की। सव भाइयों ने उन्हें धन्यवाद दिया।

जय ध्वनि के साथ सभा समाप्त हुई।

●●

ध्यानाकर्षण

(कविवर कल्याण कुमार 'शशि' रामपुर)

यह डायरेक्टरी, इस समाज का गौरव दर्शायेगी।
हम क्या हैं, इसका परिचय, जनता को वतलायेगी।

विखरी शक्ति, संगठन का यह नव निर्माण करेगी।
छितराई गौरव - गरिमा में नूतन प्राण भरेगी।

अपने माप दण्ड को ऊँचा स्वयम् उठाना होगा।
अव समाज में नई क्रान्ति फिर से पनपाना होगा।

रचनात्मक कार्यों में यदि, सारी समाज जुट जाऐ।
तो सर्वोच्च शिखर पर अपना विजय केतु लहराऐ।

परिषद् का सुधार निर्झर जागृति पथ पर वहता है।
यह समाज वल शाली हो, उद्देश्य यही रहता है।

आओ परिषद के हाथों को दृढ़-मजवूत वनाओ।
इस गौरव शाली समाज को गौरव से चमकाओ।

●●

विवरण आय व्यय

रूहेलखण्ड कुमायूँ जैन डायरेक्टी

२५०) जैन समाज विजनौर
२०१) ,, ,, अमरोहा
२१२) ,, ,, मुरादाबाद
१५६) ,, ,, रामपुर
५१) अहिक्षेत्रा, द्वारा श्री सुमेर चंद
१७३) जैन समाज वरेली
१५०) जैन समान काशीपुर
७५) जैन समाज कीरतपुर
२००) ला० राजेन्द्र कुमार जी दिल्ली
२००) मेसर्स राजुल ऐण्ड को०
द्वारा साहू शीतल प्रसाद जी कलकत्ता
२००) साहू रमेश चंद जी दिल्ली
१५०) अमर चंद जी विलसी
१०१) श्री अरेह दास जी टनक पुर
१०१) श्री विक्रम सेन जी आनन्द पुरी मेरठ
५१) श्री देवेन्द्र कुमार जी गोयल
इंजीनियर सहारनपुर
५१) श्री प्रकाश चंद जी मेरठ
४०) साहू राजेन्द्र कुमार जी धामपुर
१०१) श्री श्रीपाल जी कानपुर (विज्ञापन)
१०१) श्री रघुनन्दन कुमार कानपुर (विज्ञापन)
२११) छोटे विज्ञापनों व ब्लाकों से प्राप्त

२७७५)

७३०)५० २० रिम कागज
४९०) ४।। रिम आर्ट पेपर
९२१)८५ ब्लाकों की वनवाई
१०००) छपाई डायरेक्ट्री आदि
(अभी हिसाव होना वाकी है)
२७५)७५ पोस्टेज
९५) टाइप खर्च
१५०) वेतन क्लर्क
४२)५० स्टेशनरी
२८०) सफर खर्च
६४)४० फुटकर खर्च
५००) जिल्द वंधाई
४५०) डाक खर्च डायरेक्ट्री भेजने व
पारसल आदि

५००००)

नोट: कतिपय कुछ अन्य सज्जनों ने सहायता के वचन और दिये हैं तथा कुछ सज्जनों ने अपनी फर्म के विज्ञापन छपने भेजे हैं जो डायरेक्ट्री में छप भी चुके हैं। आशा है वे सज्जन सहायता तथा विज्ञापन आदि का रुपया शीघ्र भेजने की कृपा करेंगे।

उग्रसेन जैन